धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग संग्रह

भाग-4

पूज्य परम संत
गुरबख़्श सिंह 'मैनेजर साहिब'

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
जगमालवाली, सिरसा, हरियाणा

प्रकाशक :

सतगुरु सिमरन सोसाइटी

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
डाकघर जगमालवाली, वाया कालांवाली,
ज़िला-सिरसा, हरियाणा-125201
दूरभाष : 01696-286507, 286307 पी.सी.ओ.–286300
ई-मेल : mbajagmalwali@gmail.com

प्रेमसर धाम, गाँव बाजीतपुर ठाकरान, दिल्ली-110039
दूरभाष : 011-27753116

सर्वाधिकार © सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मार्च 2023, 2000 प्रतियाँ

मुद्रण : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110032

पाठकों से बेनती

पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक में संग्रहित सत्संग, इलाकों की आम बोलचाल की भाषा में जनसमुदाय को समझाने के लिए फरमाये गये हैं। इनमें अनेक संतों के द्वारा रचित अनन्य पुस्तकों से व्याख्यान संकलित हैं जिनमें सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है।

मुख्यतः गुरूवाणी के शब्दों का प्रयोग है। यहाँ पर पूर्णतः शुद्ध हिन्दी के शब्दों का प्रयोग नहीं है। आप से निवेदन यह है कि मात्राओं की तरफ ज्यादा ध्यान न दें। खासकर गुरूवाणी के शब्दों का उच्चारण करते समय ' ि ' तथा ' ु ' की मात्राओं का हिन्दी रूपांतरण न करें। इन शब्दों का 'गुरूवाणी' में अपना विशेष महत्व है परन्तु पढ़ते समय इन मात्राओं का उच्चारण नहीं किया जाता तथा हिन्दी में इनका प्रचलन नहीं है।

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी के द्वारा फरमाये गये सत्संगों को यथावत भाषा में लिखा गया है यानि कि जैसा बोला है वैसा लिखा गया है। उसमें कोई तोड़-मरोड़ नहीं की गई है। यह भी कोशिश की गई है कि पुराने धार्मिक ग्रन्थों के विवरण भी यथावत रहें। यदि कहीं भी किसी वाक्य में कोई गलती मिले तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं तथा आपसे अनुरोध है कि त्रुटि को दूर करने के लिए सुझाव अवश्य भेजें। आपका सहयोग अपेक्षित रहेगा एवं कथित त्रुटि को अगले संस्करण में दूर करने का प्रयास होगा।

–प्रकाशक

प्रकाशक की ओर से

सन्त + मत 'संतमत' परमपिता परमात्मा से मिलने का सहज मार्ग है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से ही सन्तमत की शुरुआत हुई है। यह कुल मालिक का अपना बनाया हुआ मानवता के कल्याण का एक सरल मार्ग है। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, देश, कौम, छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच की सीमाओं से परे एवं सहज योग और चिन्तन का मार्ग है। संसार का हर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा एवं जवान कोई भी इस मार्ग को अपना सकता है। संतों के बताये हुये मार्ग पर चलकर, उस परम पिता को इस शरीर रुपी मन्दिर में प्राप्त कर सकता है और कोई ज़रिया मालिक से मिलने का नहीं है। सिर्फ संतों के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही उस करुणामय, दीनदयाल परमपिता परमात्मा की प्राप्ति हो सकती हैः

''राम नाम रत्न धन पूंजी, संतन हथ रखी कूंजी''

''जिस वस्तु को लैन तूं आइआ, राम नाम संतन घर पाइआ''

युगों-युग से कुल मालिक संत का चोला पहनकर, जीवों को भवसागर पार कराने के लिए अवतरित होता आया हैः

''हमरा भरता बड़ा विवेकी, आपे संत कहावै''

''साध रुप अपना तन धारया''

"The Word was made flesh and dwelt amongst us."

सन्त सदैव करुणा की मूर्ती रहे हैं एवं हमें धीरज, विवेक, दीनता का मार्ग बताते आये हैं। उनका उपदेश सबके लिए सांझा उपदेश रहा है। संत फरमाते हैं कि मनुष्य किसी कामिल उस्ताद से नाम की दीक्षा लेकर, प्रेम, लग्न, आधीनता से बन्दगी करके इसी जीवन में परमात्मा के दर्शन कर सकता है तथा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी को हुज़ूर महाराज परम संत सावन सिंह जी से नाम की दौलत मिली तथा पूज्य परम संत मस्ताना शाह बलोचिस्तानी जी की सोहबत एवं मार्गदर्शन प्राप्त करके लगभग 38 सालों तक संतमत सिद्धांतों को शिरोमणी रखते हुये अपने सत्संगों के द्वारा जन-मानस को सरल एवं स्पष्ट तरीके से समझाया है। जहाँ भी, जिस इलाके में गये, उसी इलाके की बोली में सत्संग करके अपनी मधुर वाणी से जिज्ञासुओं की आत्मा को तृप्त किया है। आपने अपने सत्संगों में उच्च कोटि के संतों, महात्माओं एवं विद्वानों के उपदेशों को सरल, बोलचाल की भाषा में समझाकर जीवों का उद्धार किया है। आपकी नूरी ज़ुबान से निकला हर एक शब्द हृदय को मंत्रमुग्ध करने वाला होता था जो कि हर जीव को अटूट शान्ति प्रदान करता था।

इस पुस्तक में, उनके द्वारा फरमाये गए कुछ सत्संगों का संग्रह करके चौथा भाग संगत की सेवा में समर्पित है। आशा है कि संगत इस पुस्तक को पढ़कर, उनके उपदेशों को अमल में लाते हुये जीवन के असली उद्देश्य को प्राप्त करेंगें।

—दास 'वकील'

भूमिका

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी ने प्रकाश पुंज की तरह प्रकाशमान होकर, दुनिया को रूहानियत का रास्ता दिखाया है। उनके मुखारबिंद से निकला हुआ प्रत्येक शब्द जीवन का सोमा एवं दिल की गहराईयों को छू लेने वाले अमृत क्लश की तरह है। जो भी जिज्ञासु-आत्मा उनके सत्संग में गई वह यह अनुभव करती कि प्रत्येक वचन उनके लिए ही कहा गया है। उनके सत्संगों में प्यासी आत्माओं को ठंडक पहुंचती थी। हर जीव भाव विभोर होकर सत्संग सुनता एवं अपने रोम-रोम में आत्मीयता के साथ-साथ परमात्मा की अनुभूती करता था।

आप अलौकिक नूर के स्वामी थे। अलौकिंक तेज से खिलखिलाता नूरी स्वरूप सबका मन मोह लेता था। आप सहज ही हर जिज्ञासु को अपनी मधुर एवं तेजस्वी वाणी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। आपके द्वारा हर संदर्भ में उच्चारित 'बे-ईमान! सोचो! बोलो! सोच लो! देखो! हाय-हाय! फिर बोल भई! जैसे मार्मिक शब्द जीव की अर्न्तआत्मा को छू कर रूहानियत के विषय में सोचने एवं समझने के लिए मजबूर कर देते थे।

'सत्संग संग्रह' नामक इस पुस्तक में दिये गये सत्संगों में मैनेजर साहिब जी ने हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है। पूज्य परम संत मस्ताना शाह ब्लोचिस्तानी जी का वचन था कि ''इतना पढ़ा-लिखा, गुणी एवं समझदार ''मैनेजर'' सतगुरु ने बड़ी ताकत खर्च करके पकड़ा है क्योंकि इससे बड़ा काम लेना है''। पूज्य मस्ताना जी के यह वचन सार्थक सिद्ध हुये एवं इन्होंने अपनी मीठी, अलौकिक तेजस्वी वाणी से जीवों के अन्दर नाम का बीज डालकर भवसागर से पार किया है। सभी सत्संग ज्ञान में परिपूर्ण, स्पष्ट, सरल एवं रूहानियत से लबालब हैं। हर सत्संग में उच्च कोटि

के संतों, महात्माओं तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों का हवाला देकर सहज तरीके से जीवों को समझाया है।

संसार कभी भी संतों से खाली नहीं रहता। सतगुरु की नूरी किरण हमेशा दुनिया के किसी न किसी कोने से अधिकारी एवं व्याकुल जीवों को प्रकाशमान करती रही है। इस मृतलोक में, भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहते हुऐ, पूर्ण कामिल संत या फकीर का सार उद्देश्य हमेशा एक ही रहा है कि जीव अपने निज घर पहुंच जाए। सबने एक ही सत्य, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, शब्द गुरु का उपदेश दिया है। जो महात्मा मंजिले-मकसूद पर पहुंचे हैं उनका एक ही उपदेश, एक ही उसूल एवं एक ही मुददा रहा हैः

जो पहुँचे ते कहि गए तिनकी एकै बात।
सभी सिआने एक मत उनकी एकै जात॥
जो पहुँचे ते पूछिए तिनकी एकै बात।
सब साधुऊँ की एक मत बीच के बाराँ बाट॥

(दादू साहिब)

यह संसार बदलता रहता है और इसकी परिस्थितियां और बोली भी बदलती रहती है। इसी तरह संत भी काल और देश के अनुसार अपना नया रास्ता बना लेते हैं। उनका काम अधिकारी और व्याकुल जीवों को ठीक मार्ग पर डालना है। वे मौके के बादशाह हैं और बादशाह को अधिकार होता है कि जो मर्ज़ी कानून बना ले। लेकिन अन्दर का रास्ता एक ही है जो युगों-युगान्तर से चला आ रहा है और जो मालिक का अपना बनाया हुआ है; वह शब्द की धार या सच्चा नाम है। दृष्टि का एक ही लक्ष्य है शब्द की धार को पकड़कर निज घर पहुंचना। आदमी के दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं।

परमपिता परमात्मा ने स्वयं ही संसार सागर की रचना की है। फंसाने वाला भी खुद और निकालने वाला भी खुद ही है। संतों के रूप में आकर खुद ही जीव को अपने घर जाने का तरीका बताता है। यदि वह न आये तो जीव निज घर जा ही नहीं सकता।

संत जीव को समझाते हैं कि परमात्मा शरीर रूपी मन्दिर में निवास करता है। वह बाहर के मन्दिर, मस्जिद, उजाड़, पहाड़ एवं कन्धराओं में नहीं मिलता। वह कौमों मज़हबों तथा बाहर के भेखों से बहुत दूर है। संत समझाते हैं कि किसी कामिल रूहानी दरवेश की शरण में आकर उनसे नाम रूपी उपदेश लेकर,

दीनता से भजन सिमरण करके, इन्द्रियों के भोगों का त्याग करते हुये, सतगुरू की अनुभूति प्राप्त कर सकता है।

संतमत सहज योग का मार्ग है। इसको हर कोई शख्स, स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा, जवान, बीमार, तन्दुरूस्त चाहे किसी भी जाति, सम्प्रदाय, कौम, मज़हब, देश का हो, अपना सकता है। संतों का उपदेश घर-बार छोड़ने के लिए नहीं कहता बल्कि घर में रहते हुये, प्रारब्ध कर्मों का भुगतान करते हुये, भजन सिमरण के द्वारा अपने मंज़िले मकसूद पर पहुंच सकता है।

पूज्य ''मैनेजर'' साहिब जी ने अपने सत्संगों में बड़ी सरलता और स्पष्टता के साथ-साथ अन्य सन्तों की वाणियों का उल्लेख करते हुए हर एक रूहानी विषय को बाखूबी समझाया है। आशा है संगत इन सत्संगों को पढ़कर एवं उनके द्वारा फरमाये गये वचनों पर अमल करके लाभ उठायेगी।

–दास 'वकील'

अनुक्रम

क्रमांक	सत्संग शब्द	पृष्ठ संख्या
1.	'मिली नर देह यह तुमको'	11
2.	'बलोचिस्तानी पीर की अरदास'	34
3.	'काइआ कामणि अति सुआल्हिओ'	60
4.	'इह जन्म अमोलक हीरा'	80
5.	'कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण दा'	111
6.	'अब मै कउनु उपाय करउ'	143
7.	'इसु गुफा महि अखुट भंडारा'	183
8.	'उदयपुर राणा भजन से लागे मीरा मीठी'	210
9.	'मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई'	236
10.	'रामा रम रामो सुनि मनु भीजै'	263
11.	'आपे दारमदारी मेरा सतगुरु'	287
12.	'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'	318
13.	'रामा हम दासन दास करीजै'	335
14.	'दुनिया न सालाहि जो मरि वंञसि'	355
15.	'अलह अगम खुदाई बन्दे'	393

सत्संग

'मिली नर देह यह तुमको'

सत्संग के बचन

पाठी– मिली नर देह यह तुमको। बनाओ काज कुछ अपना॥

मैनेजर साहिब जी– जिन्ने संत महात्मा रूहानी मण्डलां ते गये ने, ओह ऊपर बैठे साडी हालत नू चगीं तरह देखदे ने, क्या? कि असीं चौरासी लख जिया जून च धक्के खाने हाँ। चौरासी लख जिया जून की है? एह कोंठड़ियां हैं जेल दीयाँ मुकत्तलिफ किसम दियाँ कोठड़ियाँ ने। कदे किसे कोठड़ी च बन्द कर दिन्दे ने, कदे किसे कोठड़ी च, कदे किसे कोठड़ी च, कदे कुत्ते दी, कदे बिल्ले दी, कदे हाथी, कदे घोड़े दी, कदे इन्सान दी, कदे हैवान दी। एह ही नहीं, सुक्ष्म मन्डलां च वी, औथे वी चौरासी है। देवी देवता वी चौरासी दे चक्करां चों न निकले। एह ठीक है कि साडे नालों उच्ची स्टेज ते ने, फस्ट क्लास जेल च समझ लो, पर रहे तां जेली दे जेली। चौरासी लख जिया जून दी तकसीम जेहड़ी काल भगवान ने बनाई है। 30 लाख किसम दे दरख़त ने, 27 लख किसम दे कीड़े पतंगे ने, 14 लख किसम दे पँखी ने, 9 लख किसम दे पानी दे जीव ने, 4 लख किसम दे भूत प्रेत, जच्छ गंधर्व, देवी देवता ते इन्सान ते हैवान। सारी दुनिया ऐस चौरासी लख जिया जून च धक्के खान्दी फिरदी है। एहदे छुटकारे दा खेल मालिक ने आप ही पाया है। काल दे हथ विच वी आप ही दित्ता है। एहदे छुटकारे दा वी इक चान्स रखया है। ओ इन्सानी जामा है। अगर छुटकारा हो सकदा है, जनम मरण दा बन्धन छुट सकदा है, चौरासी तो छुट सकदा है, ताँ एसे जनम च छुट सकदा है। एह सब तो उच्ची जून है। देवी देवते एहदे वास्ते तरसदे ने।

जिस देही को लोचें देव।
सो देही भजु हरि की सेव

एह ही महात्मा चरणदास कैहन्दे नेः

मनुष्य रूप को जन्म दुर्लभ जग माहिं है,
देवन हूं को कठिन, प्राप्त नाहिं है।
सकल देवा यही भांति, मनोरथ नित करें,
मनुष्य जनम को पाय के भव सागर तरें॥

एह ही मुसलमानाँ दी किताबां च आया है कि मालिक ने इन्सान नूं बना के फरिश्त्यां नू हुक्म दिता, ऐनू सिज्जदा करो। क्या? एह फरिश्ते नू कहया, एह देवी देवताओं नालों उच्ची जून है। सो संत कहन्दे ने, एह टाइम है छुटकारे दा, अपना बन्दोबस्त करलै, अपना कम्म बना ले, लेकिन असीं अपना कम्म केहड़ा करदे हाँ, या काम दा, या क्रोध दा, या लोभ दा, या मोह दा, या अहंकार दा। असीं एहनूँ अपना समझी बैठे हाँ, जिन्ने दुनिया दे सामान ने, सब लोभ दे ने, जिन्नियां मान वड़ाईयाँ ने, अहंकार दियां ने, बाल बच्चे मोह दे ने, दुश्मन एहदे क्रोध दे ने। असीं एनां कम्मां च फसे हाँ, समझदे हाँ, अपना कम्म है, सगों उल्टा गिरदे जाने हाँ, उलटे रस्ते च पै गये हाँ। अपना कम्म की है? अपना जेहड़ा असली मकस्द है, असली कम्म है, जेहड़ा संत फकीर कहन्दे ने, कि भक्ति करके अन्दर सतगुरु नू प्रकट करना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तो छुटकारा हासिल करना है। हुन असीं ता चाहुँदे हाँ, किसे दे डन्डा ना मारिये, चाहुँदे हाँ किसे दे डन्डा ना मारिये?

जे डन्डा मारांगे ता ओहदे सट्ट लगुगी, शायद मर भी जावे, जेलाँ च जावांगे, फांसी चढाँगे, मगर क्रोध जबरदस्ती कराउँदा है। सोच लओ! असीं तां चाहुँदे हाँ, असीं की लैणा है मान वडियाई तों, अहंकार जबरदस्ती कराउँदा है। असीं तां कहने हाँ कि सब्र नाल बैठो, बहुतेरा कुछ है पर आह मन ऐसी बला है कि ओह लोभ कि, होर कमा, कि होर कमा, होर कमा। जिन्ना कम्म है, असीं इन्हाँ दा करदे हाँ और मन इन्द्रियां दी गुलामी तों आज़ाद होना सी। जेहड़ी इन्द्री चाहुंदी है, साँनू खिच के लई फिरदी है। अखां दी इन्द्री सोहने सोहने रूप देख के ओधर खिची फिरदी है। कन्ना दी इन्द्री एधर ओधर दीयां गलां सुन के, ओ नट्ठी भज्जी फिरदी है। सोच लओ। जबान दी इन्द्री खट्टे मिठे रसां च इक्क दफा रस लया, कैहन्दी है ओह चीज़ खाणी है। ओह नट्ठी भज्जी फिरदी है। एहनां तो छुटकारा हासिल करना है।

एह साडा अपना कम्म सी। एह घर दा कम्म है जिन्ने असीं कहने हाँ! अगर हुन एह न कम्म होया ऐस जून दे विच। जे हुन वक्त हथों निकल जावे,

पत्ता नीं कद इन्सानी जामा मिले। चौरासी लख भुगत्तन वास्ते युगाँ दे युग बीत जान्दे ने। जे नरकां च चला जावे तां युगां दे युग पया रहन्दा है। स्वर्गां च चला जावे तां युगां दे युग पया रहन्दा है। सपाँ दी उमर दो-दो, तीन-तीन सौ साल दसदे ने। अमरीका चों बलवीर सिंह दी चिट्ठी आई है कि चार हज़ार साल तों इक दरखत खड़ा है। ऐस तरहां कैद है इक जून मुक्कन वास्ते। सोच लओ! कद मुक्की? एह चौरासी लख जिया जून है फिर केहड़ा है जे मिल वी जावे, इस तरह फेर गफलत च गुजारदे हाँ। अग्गे वी गुजारदे आये हाँ। पता नहीं किन्नीं मुदत्त हो चुकी सानू मालिक तो विछड़यां। ऐस तरहां चौरासी लख च धक्के खाने हाँ। एह गुरु नानक साहब कहन्दे नेः

कई जनम भये कीट पतंगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ॥

म.5 (176)

मुश्किल नाल चिरां पिछों मिलया है ऐ वक्त छुटकारे दा है। अपने छुटकारे दा बन्दोबस्त कर लो। अपना कम्म बनाओ। हाँः

पाठी– पचो मत आये इस जग में। ज़ानियो रैन का सुपना॥

मैनेजर साहिब जी– इस दुनिया च पचो नाँ। पचना की हुन्दा है? असीं डाक्टर कोल जान्दे हाँ, ओहनूँ कोई चीज़ पचदी नहीं, ओसे तरहां निकल जान्दी है। ओह दवाई दिन्दा है, फेर कहन्दा है, हुन एह पचन लग गई भई। जदों हजम होन लग गई, इक रूप हो गई।

एसे तरहां जद असीं पैदा होये, मां देखी, प्यो देख्या, भैण भरा देखे। ओन्हां दी गल्लां सुनियां, ओन्हां दे संस्कार लये। बच्चयां नाल खेड्डे, औन्हाँ दे संस्कार लये। स्कूलां च गये, मास्टरां नाल संस्कार लये। कुछ तगड़े हुन्दे गये, अखबार पढ़दे गये, ओह संस्कार लये। होन्दे-होन्दे, होन्दे-होन्दे असीं दुनिया च पच गये। गल सड़ गये, इक रूप हो गये। सिवाये दुनिया दे, साडे अन्दर कुछ नहीं। दुनिया ही दुनिया अन्दर पई है होर कुछ वी नहीं। ओहदे विच गल सड़ गये हाँ। सिवाये ओहदे कुछ नहीं, इक रूप हो गये हाँ। कहन्दे ने, इस दुनिया च पचो नां, इह सुपने मात्र है। जिवें सुपने चे, जद सुपने च हुने हाँ तां ओह सच्च लगदा है। जदों जागदे हाँ, फिर पता लगदा है, ओ हो! इह तां ऐवें ही सी सुपना सी। एसे तरहां ऐ लम्बा सुपना है। अगर संता फकीरां दा हुकम मन के ओन्हां दे

कहन मुताबिक असीं चलिये, भजन सिमरण करीये, अखां दे पिछे तक एनां ही ख़्याल लियाइये ताँ सानूं पता लगदा जान्दा है कि एह दुनिया वाक्य ही सुपना है। जेहड़े ऊपरली स्टेज तक गये अैं, ब्रह्म लोक तक, ओह सूक्ष्म मण्डलाँ विच वी सुपना है। जेहड़े ऐथों अग्गे गये ने, ओह वी कहन्दे एह वी इक सुपना है। इक सच खंड अनामी सच्चा देश है, आह एहदा अपना देश अै, बड़ा शांति दा है, बड़ा खुशी दा है, बड़ा आनन्द है। ओह एहदा अपना देश है, ओह सानू भुल्लया है। कहन्दे ने, सारी दुनियां सुपने मात्र है, एह छड्ड जानी है, कोई नहीं एथे रिहा।

पाठी– देह और ग्रेह सब झूठा। भर्म में काहै को खपना॥

मैनेजर साहिब जी– एह कच्चे, पक्के मकान, महल माड़ियाँ, जमीनां जायदादां, कारखाने, सोच लओ! माँ बाप, भैण भरा, कोई चीज़ दस्सो, कोई चीज़ नाल जान वाली है। सारे ऐथे रह जाने हैं, सब ऐथे रह जाना अैं। कौम मज़हब ऐथे रह जाने अैं। मां बाप, भैण भरा, ऐह देह सब तो प्यारी है एहने भी ऐथे रह जाना है। केहड़ी चीज़ नाल जान वाली है। सोच लओ! असीं रोज़ पढ़दे हां, बाणी च पढ़दे हाँ। मतलब एह हुन्दा है के एहनूँ याद रहे, गल्ल तां आह सी, याद तां रखे। छेती छेती पढ़े कढ़े हो गये।

कुड़ु राजा, कुड़ु प्रजा,

किसे फकीर ने किसे शक्ल च कहता, किसे ने किसी शक्ल च कहता।

कुड़ु सब संसार॥

कुड़ु मन्डप, कुड़ु माड़ी, कुड़ु बैसणहारु॥

फकीराँ ने एहनां तों कम लिया है, नाल तां एनहां ने वी नहीं जाना। बोलो केहड़ी चीज़ है, मन्डप, माड़ियां, कूड़ियां ओन्हां च बैठन वाले, कूड़े, सोच लओ! केहड़ी चीज़ रह गई। अखीर ओह फैसले कर गये।

नानकु वखाणै बेनती, तुध बाझु कूड़ो कूड़ु॥

मालिक तों सिवा सब कूड़ ही कूड़ है होर कोई चीज़ ऐहदे नाल जान वाली नहीं, कोई तां दस्सो। कैहन्दे ने सब भर्म है एह साडे हैं, साडे नहीं, न बच्चे ने, नाँ मां, नां बाप है, नां भैण है, नां भरा है। असी लैन देन दे सम्बन्ध नाल इकट्ठे होये हां, ओह वी मुकाऊणे ने। जद लैना देना मुक्या, कोई किसे दा नहीं।

इक शाहूकार सी, बड़ा लालची सी। मरण लग्या लड़कयां नूं कहन लगा, इक गाय मिणस दो, मेरे नाम ते। लड़कयां ने किहा, पिता जी, गाये ताँ मिणस

देने आं, मुड़के तां नहीं आ जाओगे। मिणसी मणसाईं रह जावे। हाँ, एह तां साडा हाल है। सोच लओ! ऐह हालत दुनिया विच रोज़-रोज़ देखदे हाँ। घर घर देख लो, ऐहो हाल है। कोई, कोई चीज़ नाल जान वाली नहीं। कोई एहदा नहीं। एहदा ताँ इको ही सतगुरु है। एह अपने छुटकारे दा बन्दोबस्त करे, बस एहदा ताँ ओह ही है। हाँ जे ओहनां दे प्यार विच फसू, ओनहां दे प्यार च फसूगा, फिर जन्म मरण दे चक्कर च पऊगा, फिर छेती नहीं मुकदा। जद सतगुरु आहिस्ता आहिस्ता कढेगा, जिन्हां नू नाम मिलया है, लेकिन ओ नफरत कराके कराऊ। किसे तरह नफरत कराये, लड़ाई करवाये घर विच, गरीबी देवे, कुछ करे, पर ओहने बन्दोबस्त ज़रूर करना है एहदे छुड़ावन दा। फिर तकलीफ पाऊ। हाँः

पाठी– जीव सब लोभ में भूले। काल से कोई नहीं बचना॥

मैनेजर साहिब जी– जिन्ने क इस दुनिया विच जीव ने, ओहनां ने दुनिया ही खादी, दुनिया ही पीती, दुनिया ही ऐन्दा दीन ईमान है, दुनिया ही जमा कीती, आखर काल दे हवाले। कोई काल तो नहीं बच्चया। लंका दा राजा सी रावण, सोने दी लंका किसे कम्म आई? बोलो। किसे कम्म आई? विद्वान भी ऐना सी, कि ओहदे मुकाबले विच, कैहन्दे अै, कोई अज तक विद्या भाषी नहीं होया। ओह विद्या किसे कम्म आई? सिकन्दर सारी उमर सारी दुनिया नूं फ़तेह कर के आया। वापिस आ रिहा सी, शीशतान दा इलाका, जिवें रेगिस्तान है, वज़ीर ते बादशाह अग्गे, फौज पिच्छे सी। बादशाह कहन लगा वज़ीर नू, मैंनू ता कुछ बुखार जिहा हुन्दा जान्दा है। कैहन्दा है बादशाह सलामत अग्गे चलो, शायद कोई दरखत आ जावे, धुप पैंन्दी है, दरखत थल्ले आराम करांगे। हुन ओथे छेती दरखत किथे मिले। अग्गे चले, ओथे कोई दरखत नां। ओनहा ने किहा, होर चल, होर चले होर चल, होर चल, अखीर उतर के खड़ गया। कैहन लगा, मैंथों नहीं चल्लया जान्दा। फिर हुन ओथे वज़ीर की करे। ओहनां दिनां च बन्दूकाँ तां हुन्दिया नहीं सी। मामूली हुंन्दियां सी, या तलवारां हुन्दियाँ सी। ओंहना च जरह बखत्तर इक कोट हुन्दे सी जीहदे बाहर लोहा हुन्दा, अन्दर ज़री दीयां ताराँ। ओह ओहदे थले विछाता। लेट गया। हुन उपर धुप दे जिवें ढाल होदीं है ढाल, ओहते ढाल देती। बादशाह ने ज्योतिष्यां तो पुछया सी, कि मेरी मौत कद होऊगी। ओहनां ने किहा जद लोहे दी ज़मीन होऊ ते सोने दा आसमान। ओ समझदा सी कि कद लोहे दी ज़मीन होई, कद सोने दा आसमान होया; मेरी ताँ मौत ही नहीं आऊणी। हुन ओह देखदा है कि थले ताँ मेरे लोहा है, उत्ते ज़री दीयाँ

ताराँ, सोना है। शक पै गया, फौज आ गई, हकीम आ गये। हकीमाँ नू नब्जाँ दिखाईयाँ, कैहन लगे, बादशाह सलामत तेरा टाइम आ गया है। कैहन्दा मेरी माँ नू मिला दयो। कैहन्दे, मुशकिल है। अध्धा राज दे दूं। हुन अध्धी दुनिया दा राज दिन्दा है, माँ नू मिला दयो। कैहन्दे मुशकिल है। सारा राज दे दूं पर माँ नू मिला दयो। पर कैहन्दे कि इक साह नहीं दे सकदे, कैहन्दे साह नहीं दे सकदे। ओहने सारी दुनिया फतेह कीती, ओहदे केहड़े कम्म आई? बोलो! काल तों कोई नहीं बच्चया। बड़े बड़यां नूं रगड़ गया। कबीर साहब कैहन्दे ने–

जगत चबैना काल का–कुछ मुख में कुछ गोद॥

चबैना क्या! जिस तरह असीं दाने भुना के चबदे आँ, पल्ले च हुन्दे ने, कुछ खा गये, कुछ खान्दे होने हाँ, कुछ हथ विच होन्दे ने, ते कुछ पल्ले च होन्दे ने, सारे खा जान्दे हाँ। इसे तरहां सारे जीव त्रिलोकी तक, जिन्ने हन, सब काल दे पल्ले च ने। बागड़ च असीं जाने आँ, औथे शब्द गाऊँदे ने–

इक दिन घोघड़ आसी रे,
तीन लोक चौदह भवन में इस घोघड़ का राज।

चौदह भवन क्या, इन्द्र लोक, शिव लोक, ब्रह्म लोक, जिन्ने जीव ने, सब नू रगड़ी जान्दा है। कोई ओहदे दाव चों नहीं निकलदा।

कबीर सोया क्या करे, सोये हुये अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा सुनी काल की गाज॥

जिन्हूं कैहन्दे ने ब्रह्मा, सृष्टि दा कर्ता है, ओहनू वी खा गया। सोच लओ! जिन्हूं सृष्टि दा कर्ता दसदे ने, जिसम दे भान्डें बणाऊँदा है, ओहदी डयूटी है, ओसनूं वी खा गया।

धरती करते एक डिग, दरिया करते फाल।
ज़मीन दी कदम कर गये, छाल मार के दरिया टप गये।
हाँको परबत फाड़ते,
दड़का मार के पहाड़ सिट्टता।
सो भी खाये काल।

ओहना नू वी खा गया, कोई ना ओहदे तो बच्चेया। ओह बड़ी बला है त्रिलोकी तक जीव, किसे नू नहीं छड्डदा। फकीर जेहड़े ऊपरली मंजलां च चले गये ने, देखदे ने, काल की बुरा हाल करदा है, ओह आ के पिटदे ने। तां पिटदे ने आ के कि बुरा हाल देख के कोई शायद मन जाये। दादू साहब कैहन्दे ने–

काल न सूझे कन्ध पर, मन चितबे बो आस॥

कैहन्दे ने ओह सिर ते खड़ा है, कन्ध्या ते खड़ा है।

काल न सूझे कन्ध पर, मन चितबे बो आस।
दादू जीव जाने नहीं, कठिन काल की फास॥

कैहन्दा है, लग्या पया है कि आह बना लां, आह बना लां। ओह याद ही नहीं। ओहदीआं फाँसियां तगड़ियाँ ने। बाणी विच वी आउन्दा है–

जम काल घड़ी मोह ते नाले, अन्ध न आंखे सीझे है॥

ओह इस ताक विच है, काल ते यमदूत, जेहड़े सिपाही ने, इस ताक विच ने कि कद एहदा टाइम खतम होवे, मैं एहनूँ हड़प कराँ। सोच लओ! बाणी च रोज़ पढदे आँ, ओह हर वक्त इस ताक विच ने, भई एहदा टाइम खतम होवे। असीं गफलत विच बैठे हाँ दुशमन ते, दुशमन ते एथे गफलत करदे हाँ। आह ताँ कदे सोचया ही नहीं, ओह सब ते खड़ा है। ओहदा इको ही बचाव है कि किसे कामिल संत दी शरण च ओहदा सिमरण बक्शया होया। जे अन्दर शब्द गुरु नू प्रकट करले ताँ एस वरगी रीस कोई नहीं। एस तों डरदा है, ओहदी भक्ति तों, बाकी किसे तों नहीं डरदा।

दादू काल ग्रासन का कहिये, काल रहस है सोई।
काल रहस सिमरण सदा बिन ग्रास ना होई ॥

बस एसे तों डरदा है, बाकी किसे होर तों नहीं। इक शब्द गुरु दी भक्ति तों डरदा है, बाकी किसे तों नहीं डरदा। सब नू हड़प कर गया। जपाँ, तपाँ, तीर्थां, वर्ता वालयाँ नू तां समझदा ही कुछ नहीं। ओह पुन्य दान वाल्यां नू ताँ समझदा हीं कुछ नहीं।

पुन्य दान जो बीजदे, सब धर्मराज के जाई।
बिन सतगुर जम काल न छोड़े, दूजे भाये खोआई।

ज़रूर जमदूतां दे हथ चढ़ू।

पाठी– तृष्णा अग्नि जग जारा। पड़ा सब जीव को तपना॥

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया दे जीव आशा तृष्णा च सड़दे पये ने। कोई कैहन्दा है, वक्त है, विषय विकार भोग लै। ओहनूँ विषय विकार भोगन दी लगी पई है। किसे नू जमीनाँ जयदातां दी लगी पई है। किसे नू बच्चयाँ दे इन्तजामा दी लगी पई है। अगे तों अगे, अगे तों अगे, बल्कि अजे पुत्र पोता हुन्दा नहीं, पहलां ही इन्तजाम करदा है। सोच लओ! किसे नू देशां दी लगी पई है। किसे नू कौमां दी लगी पई है। सारी दुनिया आशा तृष्णा च सड़दी पई है, कोई ना

बचया सारी दुनिया सड़दी पई है। इन्तजाम तां दस वीह साल दा चाहिदा सी एस उमर दा, एह लग्या पया अगे तों अगे, अगे तों अगे, अगे तों अगे। अगर अन्दर जावे तां शांति आ जावे। अग्गां बुझ जान। एह आशा तृष्णा ही है जेहड़ी एहनूँ लई फिरदी है, होर की चीज़ है? हाँः

युगा दे युग बीत गये। किन्ने परलों हो चुकियाँ ने। किन्ने महापरलों हो चुकियां ने? कितने सतयुग बीत गये? कितने त्रेता बीत गये? कितने द्वापर बीत चुके ने? कितने कलयुग बीत चुके ने? साडा छुटकारा ना होया, साडी खलासी ना होई। जे खलासी हुन्दी, ताँ असीं ऐथे ना बैठे हुन्दे। सोच लओ! असीं जप वी कीते, तप वी कीते, पूजा पाठ वी कीते, सोच लओ! कबूल नहीं होये मालिक दी दरगाह च। ओह सानू राह नहीं मिलया जेहड़ा सही सी छुटकारे आला। करदे हुन वी आँ, हुन वी कदे नहीं विचारिया, एहना नाल कोई फायदा होया कि नहीं होया। क्यों, क्यों असीं चौरासी च फिरदे हाँ? क्यों चौरासी च फिरदे आँ? एह आशा तृष्णा लई फिरदी है। ठीक भक्ति ऐसी मिली नहीं, जेहड़ी आशा तृष्णा नू मारे। आशा तृष्णा नू पूरी करन वास्ते खोटे खोटे कर्म करदा है, इक दूजे दा गल वढ्ढदा है। जद एह कम करदा है फिर नरकाँ च जान्दा है। फिर नरकाँ च ओथे दुःख भोग के फिर केहड़ा आदमी दी जून मिलदी अै। फिर एसे तरह गफलत चे वक्त गुजार जान्दा है। दुनिया दे ठेकयाँ दा तां सब ने कम्म लया है पर अपने छुटकारे दा ठेका किसे न लया। देख लओ! हाल! अपने, दुनिया दे भले दा वी लिया, पर काहदा भला कीता एहने, सोच लवो! या रोटी दा, या कपड़े दा। बोलो! केहड़ी चीज़ दा कीता। सब ओथे ही रह गये जिसम, आत्मा दा की बणया? नाँ अपना कीता। असली दया एह है। इक महात्मा ने लिखया हैः

अपने जीव की कुछ दया पालो, चौरासी का फेर बचालो॥

एह कम्म किसे नां कीता। जे एह कम्म करे तां सतगुरु एहदे पिछे-पिछे कम्म करदा फिरदा है। ओह औसे ते खुश है, जेहड़ा अपने छुटकारे दा बन्दोबस्त करदा है, ओहदे सारे कम्म करदा है। फिर कुदरती याद आ गया।

प्यारा इक स्टेशन मास्टर सी। सत्संग ते गया। मौके सिर कोई वचन हुन्दा है। सच्चे पातशाह ने फरमाया, कि सारी दुनिया पराया कम्म करदी है, अपना कोई नहीं करदा। अपना भजन सिमरण है। ओहनूं कोई चोट लगी, अन्दर कमरे च वड़ गया। हुन ओह प्रेमी सी वैसे वी, पहलां तां बड़ा सखत सी। हुन रात दी ड्यूटी, आम तौर ते जेहड़े स्टेशन मास्टर ने; असिस्टेंट स्टेशन मास्टर नू दे दिन्दे ने लेकिन

ओह रात दी आप रखदा। "मैं जागूंगा, भजन सिमरण करूंगा।" ओहना ने बहुत कहना। कहना, नां। हुन नाल असिस्टेंट स्टेशन मास्टर वी सी। हुन औथों निकले नाँ। प्रेमियां नूं किहा, कोशिश कीती, न निकल्या। सच्चे पातशाह कोल अर्ज़ कीती। कैहन लगे, "उठाओ भई," ओहने दरवाज़ा ही ना खोल्या। सच्चे पातशाह कैहन लगे "अच्छा भई एहनूँ बैठा ही रहन दयो।" हुन इक तां चाबियाँ ओहदे कोल, ओहदी जगह ड्यूटी नहीं कोई दे सकदा, वैसे वी इक अफसर ने आऊणा सी। ओह अंग्रेज़ अफसर सी, ओहने किसे दा चंगा रिकार्ड लिखया ही नहीं सी। ओहदी तां किहा, भई एह तां हुन बस गया। सुबह जद उठया ओह वी समझ गया, बस हुन मैं गया ते सारयां नू फिक्र पै गया कि ओह गया। असिस्टेंट स्टेशन मास्टर वी नाल, जद ओहनूँ मिल्या। ओह की कहन्दा है, "तू बड़ा अच्छा आदमी है। तूने रात हमारी बड़ी सेवा की है। तुम हमारी भला जान बचा ली" ओह सोचे मैं की सी। "नहीं भई, तूने गर्म पानी कर-कर के हमें दीया। तुमने यह किया, तुमने वह किया।" ओह अखीर कहन लगा "मैं रजिस्टर।" "और कौन से रजिस्टर रह गये, रात तुम दिखा तो सारे गये थे।" जे करे, तां सतगुरु एहदे सारे कम्म करदा है। पर एह नां कपट नाल नां करे, रीस नाल नां, अन्दर प्रेम नाल सचाई होवे तां सारे सतगुरु कम्म करदा है। एह नहीं भई नहीं करदा, सारे कम्म करदा है। साडे नालों ज़्यादा फिक्र है साडा। एह भजन सिमरण करे ओहदे सारे कम्म करदा है। "नाम देव दी छप्परी बनाई, धन्ने दीयां गउआं चारियाँ"

अग्गे सुनदे सी, हुन एह सामने देखियां ने कई गल्लां। सामने देखदे रहे आँ। जे भजन सिमरण करे तां एह ओसदे सारे कम्म करदा है। हाँ एह बे फिक्र हो जान्दा है, सगां ओहदे ते सिट्टे तां सही। हाँः

पाठी– नहीं कोई राह बचने की। जले सब नर्क की अगिना॥
जलेंगे आग में निसदिन। बहुरि भोगें जनम मरना॥

मैनेजर साहिब जी– एह ही ता नहीं, दुःख भोग के, नरक भोग के फेर केहड़ा एहदा छुटकारा हो जान्दा है। पहलां तां ऊं सड़ूगा, औथों निकलूंगा, फेर चौरासी भुगतनी पैंदी है एहनूँ। पहलां दरखत वगैरा बनूंगा। तीह लख किस्म दे दरखत वगैरा ने, फेर कीड़े पतंगे बनुंगा, फेर पंखी बनूंगा, फेर पानी दे जीव बनूंगा, फेर किते जा के इन्सानी जामा मिलदा है। ऐने दुःख भोग के इन्सानी जामा मिलया। ऐने दुःख भोग के किड्डे किड्डे नरक भोगे, इन्सानी जामा मिलया, फेर वी ग़ंदग़ी खा खा के चलया गया। केहड़े लेखे आया, बोलो! बोलो! किनयाँ मुशकिलाँ दे बाद मिलया, बोलो! फेर वी इसे तरहां

बर्बाद करके चलया गया, केहड़े लेखे आया। एहो ग्रन्थ साहब च गुरु अंगद साहब कैहन्दे ने–

लख चउरासीह जोनि सवाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई।

इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै। सो आइ जाइ दुखु पाइंदा॥ (व 15 प 3)

फेर दुःख उठाऊगा, फैदा की आया? हाँ, सोच लओ! किन्ने दुःख पा पा के किते आदमी दी जूनी मिली सी। जद एह चंगे कर्म करदा, कुछ भक्ति च लगदा, कुछ तड़प हुन्दी है, ताइयों आदमी दी जूनी मिलदी है। किसे मौके पुकारदा मालिक अग्गे, ताईयों आदमी दी जूनी मिलदी है। चंगे कर्मा दा फल एहनूँ की मिलया, भक्ति दा ओस दा; नकली दा। आदमी दी जूनी मिली। हुन एहने तरक्की करनी सी, छुटकारे दा बन्दोबस्त करना सी। उलटा जिवें एह मिसाल है, पिछली वी गिल गवाली, ओह वी गवाली। ओह विषय विकारां विच भोग भोग के बर्बाद कर लया और नरकाँ दा अधिकारी बन गया। सोच लओ! हाँः

पाठी– भटकते वे फिरें खानी। नहीं कुछ ठीक उन लगना॥

मैनेजर साहिब जी– काल भगवान ने पैदायश दे चार ज़रिये बनाये ने, चार खानां।

अण्डज, जेरज, सेतज, उत्तपज

अण्डज ओह है, जेहड़े अण्डयां तों पैदा हुन्दे ने, पंखी, ज़मीन ते रींगन वाले जानवर। जेरज बच्चे पैदा हुन्दे ने इन्साना दे, ओन्हा दे इर्द गिर्द जेर हुन्दी है। सैतज, जेहड़े पसीने ते पैंदा होन्दे ने, जुआँ, वीर वहुटिआं, ज़मीन दे पसीने तों पैदा हुन्दियां ने, भूंगे, आदक। उत्पज हैं घास फूस वग़ैरा। सोचो! जद बच्चा पैदा हुन्दा है, औहदे इर्द गिर्द जेर है, जहरीली चीज़ है। ओहनू खड्डयां च दबाऊने आँ, ताकि कुत्ता वी मुंह न पा जावे, पागल नाँ होजे, सानू नां कट्टे, सानू वी पागल कर दू। ऐड्डा परहेज़ ओस जेर तों अै। जद माँ दे पेट च असीं जेर च सीगे, ओहदा कदे ख़्याल कीता कि ओह जेर साडे उते वी रही है। हुन ज़रा आँडा गिरदा है जदों, जदों ज़मीन नूं साफ करदे हाँ। सोच लओ! जद अंडे च लिपटे सी। क्यों साफ करदे सी, गंदी चीज़ है। जदों असीं लिपटे सी गंद च सीगे? हुन जद ज़रा पसीना आऊँदा है जदे नहाऊने हाँ, साबुन लाने हाँ। जद जुआं बने बैठे सी, ओहदा की सोचया है, बोलो! नहीं तो फेर तैयार है। कदे फेर ऐस चौरासी च अन्डज, जेरज, सेतज खानाँ चे रुढ़दा फिरुगा। हुन किन्ना साफ करदा है जुआँ ते, जद जुआँ बणया बैठा पसीने च पिया सी, ओस वेले की हाल सी, ओदों कदे सोचया। हाँः

पाठी– कहूं क्या दुख वह भोगे। कहन में आ नहीं सकना॥

मैनेजर साहिब जी– कहन्दे, जेहड़े, जेहड़े दुःख उठाऊँदा है। जेहड़े जेहड़ियाँ तकलीफां पाउँदा है। ओह कहन सुनन तो परे है। पहलाँ तां सोचो, जेर दे विच लिपटया आया, जेर दे विच लिपटया आया। ज़रा क होशियार होया, बीमारी कोई है, इलाज कोई है, नां किसे नू दस सकदा है। सोच लओ! नाँ किसे नूं दस सकदा, रो पैंदा है। जे दरखताँ नू लईये ओहना नूं वी तकलीफ हुन्दी है निकलदा है नां रस? तकलीफ ओहनां नूं वी है, बोल नहीं सकदे। तकलीफ ओहना नूं वी है, बोल नहीं सकदे। जान ओहना च वी है, ओह बेजुबाने होये पये ने। जे ऐथे ऐ अै रो पैन्दा है। है ओहना नूं वी तकलीफ। फिर पढ़ना पढ़ाना चाहुन्दा नहीं, खेडना चाहुन्दा है, एह वी तकलीफ। जवानी, ओहनूँ मस्ती च गुजार दिन्दा है, सोच लओ! किसे नूँ कोई वी देख लो, ऐथे ही मौत दे बाद, जेहड़े खोटे कर्म करदा है, नरकां च जान्दा। पहलां मरदे नू देखो, अड़ाट पाऊँदा मरदा है। उस वेले वी तकलीफ, फेर नरकां च चलो, नरक वी परे, ऐथे ही देख लो होर। हज़ारां गऊआं रोज़ जिव्हां हुन्दीयां, सोच लओ! साडे ही भैण भरा ने। हजारों बक्करियां, सोच लओ! ओह रोज़ कत्ल हुन्दीयां ने। हज़ारां मुर्गियां दे काँ काँ कर दिया दे गले कट्टे जान्दे ने। अगर थोड़ा बहुत सुख है तां आदमी दी जूनी च है। ऐथे वी देख लो, ऐथे वी किहनूं सुख है, किसे दी रण्डी है, किसे दी नौह रण्डी है। किसे नू कर्जे वसूली दा दुःख है, किसे नू कर्जे देन दा दुःख है। कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं, कोई कढ़ो, की की दसिये कोई तां कढो, कोई सुखी होवे।

धनवन्ते दुखिया सभी निर्धन दुःख का रूप॥
साध सुखी सहजो कहे पायो भेद अनूप॥

जेहड़ी विद्या पिच्छे असीं फिरदे हाँ, पढ़ के सुख पावांगे।

न सुख विद्या के पढ़े न सुख वाद विवाद॥
साध सुखी सहजो कहे लागी सुन्न समाध॥

अन्दर जान्दा है, शांति एहदे अन्दर है, बाहर नहीं। फकीरां ने शांति देखी है। ओहना ने आके होका दिता है, कि शांति तेरे अन्दर है। ओह हमेशा कायम है। एह बाहरली दो दिन दी है, दो दिन नहीं दो दिन दी मस्ती; एह एस च मस्त फिरदा असली चीज़ भुल गया। कैहन्दा जेहड़े-जेहड़े दुःख भोगदा है, कैहन सुनन तों परे ने, दस नहीं सकदे, ला ध्यान ने। अगर अन्दर जावे, फकीराँ दा हुक्म मन के भजन सिमरण करे, अन्दर जावे, अन्दर सतगुरु प्रकट करे, ओह नाम बक्श दे, ओह नाम शांति देन वाला एहदे अन्दर है। हाँः

नउ निधि अंम्रितु प्रभु का नाम देही महि इसका विस्रामु॥

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु॥ (मः 4/40)

अगर नाम नुँ प्रकट करले, ओस च शांति है, बाकी किते नहीं। फकीरां ने देख्या, तजुर्बा कीता, तजुर्बा करके फेर ग्रंथा शास्त्रां च लिखया है।

संतन की सुणि साची साखी। सो बोलहि जो पेखहि आखी॥

ओहनां देख के तजरबे करके ताँ लिखया है। असीं दुनियाँ दे तजरबे तां मँनें, फकीराँ दे तजरबे किसे ना मँनें। सोच लओ! फकीराँ वाले किसे ने ना मँनें।

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ। बिनु नामै ध्रिग जीवासु॥

ओह नाम एहदे अन्दर है, जे ओहना दा कुझ ना मन्नया, ओहना दी इज़्ज़त कीती, फकीरां दी, ओहना दे ग्रँथा दी इज़्ज़त कीती, ओहना दे पिच्छे सिर वी कटवाऊण नूँ तैयार हो गये, पर ओह शांति न लई, जिन्हाँ पिच्छे ओहना कढया, ओह शांति न लई। सोच लओ! ठेके लैके बैठ गये कौमां मज़हबां दे। जेहड़ा कम्म सी ओह कीता ही ना। हाँ

पाठी– दया कर संत और सतगुरु। बतावें नाम का जपना।

मैनेजर साहिब जी– जेहड़े संत महात्मा मालिक दी दरगाह च गये, ओह अजीब देश है, ओथे अजीब खुशी है, अजीब शांति है, अजीब आनन्द है, अजीब प्रेम है। ओथे जाके ओहना दा एस दुनिया च औण नूं दिल नहीं करदा। गुरु गोबिन्द सिंह कैहन्दे ने–

द्वै ते एक रूप ह्वै गयो। चित न भयो हमरौ आवन कउ॥

चुभी रही सुरत प्रभ चरनन मह।

ज्यों त्यों प्रभ हम को समझायो। इम कह कै इहं लोक पठायो॥

(बचित्र नाटक अध्याय 6)

पहलां मालिक तों मैं अड्ड सी, जद भक्ति करके अपने देश पहुँचया, मालिक दे नाल मिलिया, ओहदे चरणा च गया, मालिक कोले गया, ओहना नूं मिलया, साडा इस दुनिया च आऊण दा दिल नहीं सी। मालिक ने ज्यूँ त्यूँ करके सानूं भेज्या, "तूं ताँ सुख और शांति दे देश च पहुँच गया है, साडा सनेहा लै के जा।" गुरु अंगद साहब कैहन्दे ने–

जिनि तुम भेजे, तिनही बुलाय सुख सहज सेती घरि आउ॥

क्या? ओह बुलाउन्दा पया है, कि खुशी और शांति दा देश है, औथे चलो, सुख माणों। असी एहनां देशां च फस गये, ओह चीज़ ही कोई और है। ओहना

तजुर्बा कीता, क्या? तेरे अन्दर ओह खुशियाँ दा दाता है, तेरे अन्दर ओह भुखां गँवाऊण वाला नाम है।

साचा नामु मेरा आधारो।

साच नाम आधारु मेरा जिनि भुखां सभि गवाईआ॥

सोच लओ! नाम तां जपदे जपदे, पाठ करदे करदे, पूजा करदे करदे मुद्दतां निकल गईआं, पर ओह तां कदे सोचया ही नहीं।

साचा नामु मेरा आधारो।

साच नाम आधारू मेरा जिनि भुखां सभि गवाईआ॥

ओ भुखां गवाऊण वाला केहड़ा है ओह तां कदी सोचया ही नां। सोच लओ! जे मीराँ ने देखया, ओहने होका मारया–

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पायो।
जिसको पाये दुःख सुख भूले, मन आनन्द रे समाइयो।
जिसकी चोरी कभी न होवै, ऐसो धन मैंने पाइयो।
खर्चूं लाख खत्तम नहीं होवै, दिन दिन बढत सवाइयो ॥

जिन्हां दे असीं मान ते फिरदे हां, कर्मा धर्मा दे, पुन्न दान दे, जपां तपां दे, ओह तां रस्ते च ही यमदूत ही खोह लेन्दे ने, कैहन्दी है, मैं ओह धन पाया, जीहदे यमदूत नेड़े नहीं आउन्दे, काल नेड़े नहीं आउन्दा। रोज़ वाणी च पढ़दे हाँ, विचारदे नहीं:

कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसहि, तिन जमु जागाती लूटै।
निरवाण कीरतनु गावहु करते का, निमख सिमरत जितु छूटै ॥

निवार्ण कीर्तन कहो सच्ची बाणी कहो, सच्चा नाम कहो। जीहदे च अमृत है, ओह काल नहीं खोह सकदा, बाकी सब खोह लैन्दा है। एह कर्म धर्म वी कीते, ओह लेखे च नहीं आउन्दे। बोलो! इको ही लेखे, इक तों ही डरदा है एह, बस शब्द गुरु दी भक्ति तों। होर किसे तो नहीं डरदा। जे थोड़ी वी होवे तां वी डरदा है। एह राह ही नहीं पैन्दा, ओस राह ही नहीं पैन्दा नाम आले तां जेहड़ी शांति वाली चीज़ है, राह ही नहीं पैन्दा कि बाहर बाहर ही नट्ठया भज्या फिरदा हे, बस ओसे खुशी च मस्त है। सोच लओ! बाणी कैहन्दी है साफ–

कर्म, धर्म पाखण्ड जो दीसहि

एह सब पाखण्ड है। रिद्धियां सिद्धियां सब पाखण्ड है। असीं रोज़, वाणी च पढ़दे आं–

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ।
नदरी किसे न आवऊ न किछु पीआ न खाउ।
भी तेरी कीमति न पवै हउ केवडु आखा नाउ॥ (14 म : 1)

नाम ऐडी उच्ची चीज़ है रिद्धियां सिद्धियां सब ऐथे ही है थल्ले ही रह जान्दियां ने। ऐ नां समझ, ओहनां कोले नाम आ गया। ओह बड़ी उच्ची चीज़ है, छुटकारे वाली चीज़ बड़ी उच्ची है। हज़ारों पुन्य दान जप तप उलटे रस्ते ने एहदे वास्ते।

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझै को थाइ न पाई॥
नाम बिहूणै माथे छाई॥ (412 म : 1)

बगैर सच्चे नाम दे, बगैर गुरु दे, शब्द गुरु कहो, सच्चा नाम कहो, शब्द कहो, सच्ची वाणी कहो सब उल्टे रस्ते ने। एहदे मथ्थे सिवा एहनूँ कोई नहीं पुच्छदा। सबनाँ दा इक्को ही उपदेश है, कि तेरे अन्दर ओह सच्चा सतगुरु है। तेरे अन्दर सच्चा नाम है, ओहनूँ प्रकट कर, बस ओह शांति देन वाला है, बाकी कोई नहीं। हाँः

पाठी– न माने जुक्ति यह उनकी, सुरत और शब्द का गहना।

मैनेजर साहिब जी– एह ठीक है कि रस्ता औखा है, लेकिन दुनिया नालों फिर वी सुखाला है। जे करन लग जावे तां दुनियां नालों फिर वी सुखाला है। औखिआई तों वगैर कोई चीज़ नहीं मिलदी। सोच लओ! औखिआई तों वगैर कोई चीज़ नहीं मिलदी, मेहनत करके ही मिलदी है। ओह सानू सही रस्ता दस्दे ने, जेहड़ा युगां युग तों आ रिहा है मालिक दे मिलन दा। जेहड़े नवें रस्ते, असीं बनाये ने, असीं बनाये ने, एह असीं भूले हाँ। जे गुरु नानक साहब ने दस्सया ताँ ओह ही रस्ता, जे कबीर साहब ने दस्सया तां ओह ही रस्ता, जे मुसलमानाँ ने दस्सया तां ओह ही रस्ता। क्या? कि सारी दुनियां शब्द तों पैदा हुई है।

सबदे धरती सबदे आकाश...।

शब्द कहो, नाम कहो, जेहड़े रस्ते असीं आये हाँ, ओसे रस्ते असीं जाना है। ओह रस्ता अज दा नहीं, जद तों दुनियां बनी है, तद दियां वाणियाँ है। किसे संत फकीर दा बनाया नहीं, किसे औलिया पैगम्बर दा बनाया नहीं। ओह मालिक दा अपना बनाया होया है। कुदरती तौर ते इक धार आ रही है, जेहड़ी सब नू ज़िन्दगी ते ताकत दे रही है। नाम कहो, लहर कहो, शब्द कहो, ओह कुदरती आवाज़ है,

रेडियो बेवज़ दी तरहाँ सारे ही है। जिवें एत्थे कलकत्ते दी आवाज़ है, बम्बई दी है, होर-होर जगह दी है। रेडियो पया है, सविच लाऊने अैं, सुन लैन्दे आँ, ऐसे सुनाई नहीं दिन्दा। एसे तरहाँ ओस मालिक दी कुदरती आवाज़ सारे ही है।

चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पातालं॥
सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं॥

(1275 म : 1)

ओह रेडियो वेवज़ दी तरह सारे है। ओहदे सुनन दां ज़रिया एहदे अन्दर अै, जिनूं गुरु अमरदास जी ने किहा है–

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए।
औथे अनहद सबद वजहि दिन राती गुरमती सबद सुणावणिआ।

(124 म : 3)

नौ दरवाज़े केहड़े, एह असली मन्दिर है। एहदे नौं दरवाज़े; दो अक्खां दे, दो कन्ना दे, चार, दो नक्क दे, छी, एक मुंह दा, सत, दो टट्टी पेशाब दे, एह नौ दरवाज़े चों ख़्याल नू तोड़ो। अखां नाल देख देख के संस्कार लै के अन्दर वाड़ी जान्दे अै। कन्न नाल गल बात सुन-सुन के अन्दर संस्कार वाड़ी जाने ओं, ज़बान नाल खट्टे मिठे दे। मेन दरवाज़े तिन ने।

नउ दर ठाके, कि एहनां नूं बन्द कर लै। "नउ दर ठाके धावतु रहाय।"

फेर मन नट्ठया भज्या फिरदा है। हुन अखाँ नूँ बन्द करके बह जाओ, फेर कन्नां नूँ बन्द करके बह जाओ। फेर नट्ठया भज्या फिरदा है एहनूँ रोको। "नउ दर ठाके धावत रहाय, दसवै निज घरि।" दसवां एहदे अन्दर है। ओथे अनहद शब्द, जद तूं ओथे ख़्याल नूँ टिकाएँगा, तां ओह कुदरती आवाज़ जेहड़ी फनाह तों परे अै। असीं वी सों जाने हाँ, ओह सोन्दी नहीं ओह हर वक्त जारी है। पर ओहदे सुनन दा ज़रिया कित्थों मिलदा है, गुरमती शब्द सुणावणिआ, कोई गुरुमत वाला फकीर मिले, जीहने अन्दर सतगुरु प्रकट कीता, शब्द गुरु प्रकट कीता, जीहने ओह आवाज़ सुनी है। एह ही मुसलमान फकीर ने किहा है–

चश्म बन्दो, गोश बन्दो लब बबन्द।
गर ने बीनी सरे हक्क बर मन बरबन्द॥ (मौलवी रूम साहिब)

अक्ख बन्द कर ले, कन्न बंद कर ले, मुंह बन्द कर ले, कैहन्दे अै, फेर अगर मालिक दा राज न खुले ताँ मैंनू आ फड़। ऐही कबीर साहब ने कहया है–

आँख, कान, मुख बन्द कराओ। अनहद झींगा शब्द सुनाओ॥

ओहदे वास्ते फकीर की दसदे ने? नाँ जपां दी लोड़ अै, नां तपां दी लोड़ अै, नां जंगला च जान दी लोड़ अै, ना बाल बच्चे छड्डन दी लोड़ अै, नां कम्म काज छडन दी लोड़ अै, नां ओह कुछ मंगदे ने, मुफ्त नाम बख्शदे ने, केहडा? सिमरण, जेहड़ा मालिक दे हुकम दा है। ओह इक सचिव अै, जेहड़ा एहनूँ जोड़दा है शब्द नाल। जद एह सिमरण कर कर के अपने आप नूं होर ख़्यालां तों खाली कर दिन्दा है, ख़्याल अखां दे पिच्छे इकट्ठा हो जान्दा है, ओथे आवाज़ आनी शुरू हो जान्दी है। एथे कुदरती रोशनियां ने, जोतां ने, जेहड़ी असीं बाहर देखदे आँ ओह जोत अन्दर आवे। ओह ही गुरु है, ओह शब्द इक लहर है, ओहदे विच जोत अै। ओसे नूं गुरु गोविन्द सिंह ने किहा है–

जागत जोत जपै निस बासुर, एक बिना मन नेक न आनै॥

(सवैये पा. 10/33)

ओस तों बिना किसे होर नू नां मनां। जेहड़ा औस जोत नू देखदा है, ओ खालसा है।

"पूर्ण जोत जगै घट मै, तब खालसा ताहि नख़ालस जानें॥"

(पा. 10/33)

गल्लां नाल नहीं मरदा, ओह जोत आवे। गुरु गोविन्द सिंह दा वचन है–

जागत जोत जपै निस बासुर, एक बिना मन नेक न आनै।
पूर्ण जोत जगै घट मै, तब खालसा ताहि नख़ालस जानें॥

(पा. 10/33)

जीहने ओस जोत नू देख लिया, ओस नाम नाल ताल्लुक पा लिया ओह नामधारी अै ओह सत्त ताकत अै, ओह सनातनी अै। ओह सब मैंलां साफ करन वाला तीर्थ अै नाम दा, ओह आर्य है। ओह ओथे जा के श्रेष्ठ बन गया, औथे जाके नाम नूं अन्दर प्रकट करना, ओस बाणी नू प्रकट करना एह ही सच्चा सौदा है, ओह सत्त ताकत है। जीहने ओस अपनी सूरत नूं ओस शब्द च लाया, ओह राधा स्वामी अै। जे बन गया ताँ सब कुछ है, नहीं तां कुछ वी नहीं। डीगां ही डीगां ने। कम ताँ एहने एह करना सी आ के। होर होर फोकट धर्मा च फिरुगा। पर एह नहीं मनदा। इक महात्मा ने लिखया है–

फोकट धर्म पकड़ कर जूझे। बूझे न शब्द जुगत पारा॥
पानी मथे हाथ कछु नाहीं। क्षीर मथन आलस भारा॥

जेहड़े तां बाहरले फोकट ने, ओह पानी दा मंथन है। ओहना च निकलदा कुछ नहीं। ओह क्षीर दा मंथना है, ओह राम एहदे अन्दर है, रमी हुई ताकत। जिवें दुध चों घी कढदे हां, कि एहदे अन्दरों निकले, ख़्यालात निकलन, हिरदा पवित्र होवे, अक्खां दे पिच्छे ख़्याल इकट्ठा होवे ताँ चीज़ मिले। रिड़क के मिलदी अै, ऐवें नहीं मिलदी। मेहनत दा सौदा है। सोच लओ! बगैर मेहनत किसे नू नहीं मिल्या।

'बिन मेहनत किसे ना पाया रब्ब दा नाम ख़ज़ाना'

आसान तो आसान एह ही रस्ता, लेकिन एह दुनिया दे कमां च होशियार है।

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि॥ (1376 मः5)

जे चलदा फिरदा वी करे तां बैठना ते अजे फेर वी दूर रहया, जे बैठे तां अन्दर, एहदे वरगी गनीमत, आला चीज़ है। जे चलदा फिरदा वी करे तां एहदे ख़्याल पक जाउ, अन्दर ख़्याल चला जाउ। जे रोज़ बिठावे ते एहदे वरगी रीस ही कोई नहीं। आहिस्ता-आहिस्ता मन लगदा है। असीं ता मेहनत दे चोर हाँ, मन दे कहे लगदे हाँ, फकीराँ दे नहीं। हुकम मन्न के बैठे, इक न इक दिन एहनूँ तसल्ली मिलदी है। हाँ–

पाठी– बिना सतगुर बिना करनी। छूटे नहिं खान का फिरना॥

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु मेहर करदा है, तां एहनूँ कामिल फकीर मिलदा है। फेर एहनूँ मेहनत दी लोड़ है। जे मेहनत ना करे, जे पहली जमात च सारा साल बैठा रहे भावें चार साल बैठा रहे, तां नहीं पास हुन्दा। जे मेहनत करुगा तां कुछ खट लैन्दा है।

बिन मेहनत किसे ना पाया, रब्ब दा नाम ख़ज़ाना।

मस्ताना जी फरमाया करदे सी, जिन पाया मेहनत नाल पाया। मुफ्त दा किसे नू नहीं मिल्या, मुफत दा किसे नूं नहीं मिल्या। देख लओ! किड्डीआं–किड्डीआं मेहनतां कितीयाँ गुरु अमरदास जी ने। एह ठीक है कि ओहनां ने बाडी तों कम्म लया, मगरों लेकिन एह वी कुछ करे तां कुछ तां होवे। ओस स्टेज तक नहीं पहुँचदा। बहाने मारन लग जान्दा है कि ओहनां ने दुनियां नूं तारना सी। ते तूँ काआदे वास्ते आया हैं, सोच लओ! तूँ काआदे वास्ते आया हैं, मेहनत वास्ते। ओहनां नूं एह ख़्याल थोड़ा सी, असीं तारना है, सोच लओ! ओहनां

ने मेहनताँ कितियां, तां पाया, ओस स्टेज ते पहुँच गये, एह करे, एह पहुँच जावे। मस्ताना जी फरमाया करदे सीः

"नींद जबल दी फटावीं"—जबल कैहन्दे ने जिसम नूं।

"मास हड्डां दा खावीं"—एहनूं चज्ज़ नाल रोटी ना दे।

"सब रोज़ करार हटावीं"—सुख नाँ दे।

जिन्ने सुख ने सब माया दे जाल ने। एह तां समझदा है, सुख कर के भजन करूं, नहीं कर सकदा।

"जैते सुख संसार के, सभी माया जाल"

फकीराँ ने जिन्हां ने मेहनता कितीयां ने, बादशाहियाँ च रह के वी एह तन नू सुख नहीं दित्ता। दुनियाँ तो छिपा के ताँ वी मेहनताँ कितीयां ने तां पाया है।

"बहदत नाँ घटावीं"—क्या? भजन सिमरण दा वक्त नां घटायीं।

ओहनां दा एह उपदेश अै। सोच लओ! मस्ताना जी हुन साडे सामने उपदेश दे के गये ने। दिन पर रात सानू जगाई रखदे, रात नूं सौण नहीं दिन्दे सी। काहदे पिच्छे करदे कि एहनूँ आदत, पवे। सोचो! जे सुखाला हुन्दां तां क्यों करवाऊँदे, बोलो! हाँ समझदे फेर वी कोई नाँ। हाँ जीः

जे रात नूं जागे वी, मालिक दे ख़्याल विच, चाहे टुटया फुटया जागे, तां वी सिमरण होवे, कदे किताब पढ़ ले कदे कोई न कोई, तां वी देखे, खुशियां ही खुशियां एस नूं ओन्दीयां ने। अन्दर शांति आऊँदी जान्दी है। करके ताँ देखो? हाँ। हुन तुसीं नवम्बर च कनक बीज़ी अै, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, अप्रैल पंज महीने दे बाद कटणी अै। किसे ने नवाँ बीज लिआंदा, ओहदा तजुर्बा कीता पंज महीने। पंज महीने तां कीता, चाहे निकले चाहे ना निकले एह तिन्न महीने वी करके वेखे, बैठे ताँ सही दो वक्त। तिन्न महीने वी करके देखे, एहनूँ मिलदी है या नहीं मिलदी चीज़। एहदी तसल्ली कीती पर ओहदी तसल्ली नहीं करदा! सोच लओ! हाँ जीः

पाठी– कहो लग मैं कहूँ उनकी। कोई नहीं मानता कहना।

मैनेजर साहिब जी– फकीराँ ने बथेरे होके मारे पर किस ने मन्या! मस्ताना जी साड्डे सामने फरमाया करदे सी कि दो पाई दा आदमी आ जान्दा है ओहदी मन्न लैन्दे हैं, साडी कोई नहीं मन्नदा। दो पाई दे आदमी दी मन्न लैणगे, साडी कोई नहीं मन्नदा। फरमाया करदे सी, "पढ़े तो हैं नहीं असीं।"

तुलसी साहब ने किहा है नाः

"माया को माया मिले कर कर लम्बे लम्बे हाथ"

मस्ताना जी फरमाया करदे सी–

"हर की सुने लम्बे लम्बे हाथ, क्या? मस्ताना गरीब को कोई न सुने बात।"

हां साडी कोई लम्बे लम्बे दो, माया आल्यां दी मनणगे साडी कोई नहीं मन्नदा। जिन्ने फकीर आये ने सब रोन्दे गये ने।

दादू कहत पुकारी कोई माने नाहि हमारी।
पन्डित काज़ी वेद कतेबा पढ़ पढ़ मुए लवारी।
वह तीरथ वह हज को जाते बूढ़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील बीचारी।
हिन्दू तुर्क ईसाई तीनों करम धर्म पचहारी।
नूर जहूर खुदा हम पाया उतरै भवजल पारी॥ (दादू साहिब)

कि मैं नूर जहूर खुदा देख्या है। मैं कैहन्दा हां, आओ भई, तुसीं देखो। तुसीं थोड़े दिन तजुर्बा कर के देखो, पर कोई नहीं मन्नदा। कोई तपां च लग्या पया है, कोई जपां च लग्या पया है, कोई पढ़न पढ़ावन चे लग्या पया है। सब एसे तरहां लगे होये अै पर एह गल किसे न सुनी। हाँ, कि जे गुरु नानक साहब आया तां कुराहिया है, जे कबीर साहब आये तां क्या? जुलाहा उलटा ज्ञान चलाऊँदा है। हुन गुरु नानक, गुरु नानक साहब हुन्दी पई अै। हुन कबीर साहब, कबीर साहब हुन्दी पई अै, जद असीं बागड़ च जाने आं। मौके सिर किसे ने नहीं फायदा उठाया, उठाया होउगा, उठाया होउगा फिर सारे लगे रहन्दे ने। फेर ओह गल ही नहीं रैहन्दी। जीहने अन्दर नाम दा बीज ही नहीं पाया, ओहने गाहां उगना ही की अै। एह मौके ते ही हुन्दा है। बस फेर ताँ कौमां महजवां दे ठेके ने। हाँ जीः

पाठी– हुये मनमुख फिरें दुःख में। वचन गुरु का नहिं माना॥

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनियां मनमुख है, मन दे मतहित है। सारी दुनियां दा गुरु परमेश्वर है तां एक ही है। असीं सारे मन दे पिछे चलदे हाँ।

मन अंतरि बोलै सभु कोई।
मन मारे बिनु भगति न होई॥ (329 कबीर)

मन ही साडा दुशमन है। मन दी डयूटी है। एह काल दा एजेन्ट है। एहदा कम्म की है, भरमाना ते भटकाना जीव नूँ। एह चाहन्दा है कि मेरा ही खाजा बनया रहे जीव, मेरे दायरे तों परे न होवे। साडा कोई दुशमन नहीं, अगर है ताँ एह ही है। गुरु नानक साहब कैहन्दे ने–

"मनु मैगलु साकतु देवाना बन खंडि माइया मोहि हैराना''

(मः1/415)

कि मन इक मस्त हाथी दी तरहां है, जेहड़ा मोह माया ते विषय विकारां दे जंगला च भटकदा फिरदा है। कदी स्त्रियां दा प्यार, कदे बाल बच्चयां दा मोह, कदे जमीनां जयदातां दा लोभ, सोच लओ! एहनां च फसया है। कदे राग कदे रंग, कदे तमाशयां च लई फिरदा है।

इत उत जाहि काल के चापे॥
गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥ **(मः1/415)**

एह काल दा एजैन्ट अै। कोई विरला एहदे दायरे चों निकल्या है। गुरुमुख ओह है। मनमुख ते गुरुमुख दी पहिचान गुरु अमरदास ने बड़ी सोहनी मिसाल दित्ती है, क्या?

"से मनमुख जो सबदु न पछाणहि।" **(मः3/1054)**

जिन्हाँ ने अन्दर शब्द गुरु नूं प्रकट नहीं कीता, ओह सारे मनमुख ने, कौमां दी कौमां, मज़हब दे मज़हब, सोच लओ! सब मनमुख ने, कोई विरला ही गुरुमुख निकलूगा। अगर सारी दुनिया चों निकलनगें ताँ मसां दो चार, जेहड़े मन दे दायरे चों निकले ने। फैसले ही कर गये ने।

"से मनमुख जो सबदु न पछाणहि।"

सोच लओ! गुरु अमर दास दा वचन है। कोई विरला ही निकलूगा, जेहड़ा गुरुमुख है। सारी दुनियां ही मनमुख है। मनमुखां दा कहा मनूँगी, गुरुमुखां दा नहीं मनदी, जेहड़ा मालिक दी दरगाह चों हुकम लै के आउन्दे ने, ओहनां दा वचन नहीं मन्नू ते इक दूजे दे मनमुख दा मन्नू, सोच लओ! हाँ

जे कौमां मज़हबां दे झगड़ियां च खड़े करो, डांगा चक्क के हुन तैयार, सारे तैयार अै, होर पासे तां तैयार। जे भजन सिमरण कहो ताँ मौत पै गई। बस चल अन्दर, ते एहदे वास्ते मौत अै। हाँ ओस वचन तों परे काल ही काल है। ओहना दे वचन ते परे काल ही काल है।

सतिगुरु शब्द अलंघ कर, जन कोई सिख जाई।
दादू पग पग काल है, जहाँ जाई ताँ खाई॥

सोच लओ! ओस वचन तों परे सब काल ही काल है। कोई किसे दा नहीं, सब छड्ड जाने ने। बस एहनूँ चाहिदा है कि भजन सिमरण करे। आपदे छुटकारे दा बन्दोबस्त करे। बस।

पाठी– पुजावे आप को जग में। गुरु की सेव नहिं करना॥

मैनेजर साहिब जी– कैहन्दे ने, सारी दुनियां ज़रा क दो लवज़ सिख जावे, ताँ बस महन्त बन के बह जान्दे ने। अपनी पूजा शुरू करा लैन्दा है पर जेहड़ा असली कम्म, ओह कीता ही नाँ।

गुरु की सेव क्या है? गुरु की सेवा नहीं करना, एह क्या है? ओह की कैहन्दे ने संत महात्मा आ के, ईर्खा छड दे, बैर विरोध छड्ड दे, सब नाल प्रेम कर, निन्दा चुगली छड्ड दे, एह विषय विकार छड्ड दे, सोच लओ! एह तां करदे नहीं, जे करे, एहदी रुह उपर नूं चली जावे। जे एह गल्लां छड्डे, रात नूं बैठे, कुछ टाइम देवे एहनूँ पत्ता लगन लग जे। एह तां छड्डदा ही नहीं। ईर्खा छड्ड, द्वैत छड्ड, बैर विरोध छड्ड, सोच लओ! निन्दया चुगली छड्ड, काम क्रोध, विषय-विकार छड्ड। घट खा, घट सौ, रात नू जाग, एह गुरु दी सेवा है। अगर एह करे। गुरु दी सेवा क्या है? कि अन्दर सतगुरु नूं प्रकट करना है। पहले फकीरां दे चोले च आउन्दा है। एस तरहां अन्दर आ के मिलदा है। एस तरहां अन्दर आके मिलदा है, फेर गाइड करदा है कि आह रास्ता है। तेरा आह शब्द है। एथे अनेकों ही शब्द ने जिवें रेडियो च सारे ही शब्द ने, कलकते दा, बम्बई दा, इंग्लैंड दा, अमरीका दा, अफ्रीका दा। एसे तरहां इन्द्र लोक, ब्रह्म लोक, शिव लोक। एह अपने आप पहुँच नहीं सकदा। पर एहनूँ पता नहीं केहड़ा है। जिस चोले च आउन्दा है, एस नू पकड़ाऊँदा है। एहनूँ पकड़ भई, की, एह है असली मेरा रूप, एह पकड़। जिन्हां नू कोई ब्रह्म लोक आला मिलया ओहने ब्रह्म लोक आला पकड़ाया। शिव लोक आला मिलया, ओहने ओह पकड़ाया। एह अपने आप नहीं ओहनूँ पकड़ सकदा। दुनियां ने समझ रखया है कि माया दी सेवा करती, होर ना असली है। तन नाल सेवा करन दे नाल हिरदा नींवा हुन्दा है, दीनता आउन्दी अै, गरीबी आउन्दी अै। अहंकार मिटदा है। एहदा एह फायदा है, तन नाल ठीक किसे प्रेमी दे खास लग जावे साध संगत विच, ओहदा फायदा ओहनूँ मिलदा है। भजन सिमरण दा इवजाना मिलदा है। लेकिन असली केहड़ी सेवा है, ओ भजन सिमरण करके, ख़्यालात नूँ कढ के अन्दर सतगुरु नूँ प्रकट करना। एह मददगार फैक्टर ने, मददगार चीज़ाँ ने। लेकिन असली भजन सिमरण है।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुर दीया बताये।

एह आसान ते आसान है।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुर दीया बताये।

तुसीं जप करो, तप करो, प्राणायाम करो, बीबीयां कर ही नहीं सकदीयां। एहनूँ बच्चा वी कर सकदा है, बुढ्ढा वी कर सकदा है, कमज़ोर वी कर सकदा है। ख़्याल जोड़ना है, ख़्याल तोड़ना है, अन्दरों। मन्जे ते पया ख़्याल नहीं करदा, "ओ मुन्डया खेत वाह आईं।'' सोच लओ! मन्जे ते पया, एथे तां सौ बहाने लाउन्दा है? मेरे हड्ड दुखदे ने। कम्म च पया पया नहीं करदा ओ मुण्डया फलाना कम्म कर के आईं। ख़्याल गया ना ओथे। ख़्याल जोड़ना है, ख़्याल जोड़ना है। गल्ल तां आह, बोलो! आसान ते आसान है। बीमार तन्दरुस्त सब कर सकदे अैं। बच्चा बुढ्ढा सब कर सकदे अैं।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुरु दिया बताये।
स्वांस-स्वांस सिमरण करो इक दिन गुरु मिल जाये॥

दुनियां का कम्म वी बगैर सिमरण ते नहीं हुन्दा। जिन्ना सिमरण करोगे, ओनी कामयाबी, एसे तरहाँ मालिक दा कम्म वी, एह भजन सिमरण दे नाल होना, मालिक नूं मिलना, ऐसे नहीं। एह आसान ते आसान रसता है। सौ बहाने लाउन्दे ने, "मैरियां लतां दुखदियां ने, मैतों बैठया नहीं जान्दा।" हुन दस्सो असीं की करीये, जोड़ना इक ख़्याल है, हुन बोल, जोड़ना ख़्याल है। एह तां इक साधन है पहला बिठौण दा, ताकि एहनूँ प्रैक्टिस होजे। बच्चे नूँ असीं पढ़ाऊँने आँ ओहनूँ कहने आँ, देख भई, एह कायदा फड़, एथे फट्टी रख, एथे दवात रख, एथे कलम रख। ओह लिखन लग जान्दा है। जद लिखन लग गया, पढ़न लग गया, अलफ-अलफ, बे-बे करदा है फेर ओहनूँ लोड़ है, फेर ओहनूँ लोड़ है, फेर ओहनूँ लोड़ है। एह पहला साधन सी, एह सिमरण दा, एहनूँ बिठौण दा, कि एहनूँ आदत पवे। एहनूँ होश आ जावे कि अैं बैठी दा है। असली ताँ ख़्याल नू जोड़ना है। जद ख़्याल पक गया ताँ बस। हाँ जीः

पाठी– फिक्र नहीं जीव का अपने। पड़ेगा नर्क में फुकना॥

मैनेजर साहिब जी– मस्ताना जी फरमाया करदे सी कि जीव वेगर्ज़ हो के बैठ गया है, मालिक नू बुढ्ढे दी तरहाँ, जा बह जा दरवाज़े च, तैनु रोटी पहुँचा दयांगे। बस एह हाल होया पया है। सारी दुनियां नूँ गफलत दा नशा चढ्या होया है। किसे नूँ होश नहीं, मोह गाया दे नशे च सारी दुनियां फंसी पई है।

माइआधारी अति अन्हा बोला
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला।

ओहदा फिक्र ही कोई नहीं। सब बेगरज होई पई है। एहनूँ याद ही नहीं,

कद मेरा हिसाब होना है। याद एह भी नहीं कि कदे नरकाँ च जाना पैणा है। कि जे कोई मरदा, हाय हाय करदा देखदा वी है, तकलीफ पाउन्दा वी देखदा, बड़ी तकलीफ पाई, ओस वेले दुःख उठाऊँदा है। दो मिनट बाद कैहन्दा है, बस, मरण आला होर ही सी। ओह कैहन्दा है तूँ नहीं मरना हाले। सोच लओ! ओथे ग्राही ग्राही दा हिसाब है—स्वांस-स्वांस दा हिसाब है।

''लेखे स्वांस-ग्रास है। लेखे खाना खाओ॥''

बाणी कैहन्दी अै साफ कदे विचारदे हाँ?

''लेखे स्वांस-ग्रास है। लेखे खाना खाओ॥''

ग्राही ग्राही दा हिसाब है, ओथे देना पैन्दा है। एथे हिसाब मंगदा है, ओथे वी देना पैन्दै। आहे वी देखदे ने, एने स्वांस दिते सी, किथे लाये ने। तैनु चांस दित्ता सी कुछ खटन वास्ते, कुछ खट्ट के लें लिआया हैं।

पाठी– समझ कर धार लो मन में। कहे सतगुरु निज बचना।

मैनेजर साहिब जी– असीं तां तुहाडे फायदे दी गल कहती, हुन तुसीं जानों भई तुहाडा कम्म जाने। असीं ता तुहाडे फायदे वास्ते कह छड्डया है। जेहड़े अधिकारी होणगे, समझ लैणगे। तुसीं जानों, तुहाडा कम्म जाने। आखिर वी सब फकीर एह ही कह के गये ने। जान्दे वक्त मसताना जी ने दरवाज़े ते लिखा छड्डया, कि, बेनती है कि स्वांस स्वांस सतगुरु दा सिमरण करो। मनोंगे, सुख पाओंगे, नहीं तां असीं तुहानू कहता। आत्मा जेहड़ी जेल च है, ओह जाने, ओहदे अन्दर वाला राम जाने। सब फकीरां ने होके मार मार के गये। किसे ने सुनी नां। अखिर एह कह गये कि असाँ तुहाडे फायदे दी गल्ल कहती, तुसी जानों हुन अपना विचार लो।

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग

'बलोचिस्तानी पीर की अरदास'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– सच्चे सौदे में बाहर गुरु की काट की है। क्यों की गई? कि सतगुरु क्या चीज़ है? गुरु एक ही है।

एक ही की सेव सब ही को गुरुदेव एक।
एक ही सरूप सभै एक जोत जानवो॥

उसकी जोत सभी में काम कर रही है। शब्द गुरु कहो या राम गुरु कहो। जैसे किसी ने डाक्टरी की। हम उसको डाक्टर कहते हैं। है तो हमारे जैसा ही। हाथ पैर हमारे जैसे हैं, ज़बान हमारी जैसी है। सभी कुछ हमारे जैसा है। डाक्टर क्यों कहते हैं? क्योंकि उस शिक्षा का नाम डॉक्टर है। इसी तरह जो मनुष्य अपने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट कर ले उसी का नाम गुरु था। बाद में नकलें ही नकलें चल पड़ी। गद्दी पर गद्दी चल पड़ीं। एक की कई-कई चल पड़ी गुरु ही गुरु हो गये। दुनिया उलझन में पड़ गई। अब यहाँ सच्चे सौदे में आकर इस बात को स्पष्ट किया है कि सतगुरु है क्या चीज़? मस्ताना जी कहते थे सतगुरु अन्दर है। ना बाहर हुआ ना होगा।

सतिगुर मेरा सदा सदा न आवे न जाए।
ओहु अविनाशी पुरख है सब महि रहिआ समाए॥

मस्ताना जी सच्चे पातशाह के आगे नाचते थे। उन के नाचते-नाचते सच्चे पातशाह जब इशारा करते तो नाचना बन्द कर देते। एक दफा वह नाचते-नाचते गये। जब सच्चे पातशाह ने इशारा किया तो बन्द हो गये। सच्चे पातशाह ऊपर चले गये वह फिर नाचने लगे। कहने लगे ना ऐसा सतगुरु आया ना आयेगा। बाहर उस वक्त सतगुरु बोलते थे। यहाँ आकर स्पष्ट किया। इसलिए सच्चे पातशाह का वचन था कि ना ऐसा मस्ताना आया ना आयेगा। ये उनका वचन है। ना ऐसा मस्ताना आयेगा। मस्ताना किसे कहते हैं? ये उनको खिताब मिलता है जिस के

अन्दर दुनिया का कोई ख़्याल ना हो। ना आखरत का ना बैकुंठ का।

"जब लग बैकुंठ की आस, तब तक न हो दर्शन की आस" वह अपने घर नहीं पहुंच सकता। हाफ़िज़ साहब ने तो यहाँ तक लिखा है कि अगर सचखंड का भी ख़्याल है। सचखंड के आशिक हमेशा बेपरवाह रहते हैं। वहाँ से भी दूर रहे, कोई ख़्याल न हो, कोई इच्छा न हो ये एक रूहानी खिताब है। नाम तो उनका खेमामल था। यह रूहानी खिताब है। हम तो यूं ही हर एक को मस्ताना कह देते हैं। यूं ही कोई पागल फिर रहा हो हम कह देते हैं कि ये बड़ा मस्ताना है। हमारे कहने से नहीं बनता। एम.ए. की डिग्री कोई एम.ए. ही दे सकता है। जिस समय रानी इन्द्रमती अन्दर गई, क्या देखती है, कबीर साहब सतपुरुष की जगह काम कर रहे हैं। जब गुरु अर्जुन साहब अन्दर गये, क्या देखते हैं सतपुरुष की जगह गुरु राम दास काम कर रहे हैं। गुरु तो एक ही है। वह है शब्द गुरु। परन्तु जिस चोले में आता है वही नाम पड़ जाता है। जैसे किसी ने डाक्टरी की। फलाना डाक्टर वह डाक्टरी से पड़ा। उस शिक्षा से पड़ा, उसी तरह जहां शब्द गुरु आता है, वहाँ नाम पड़ जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी ने देखा कि सतपुरुष की जगह गुरु रामदास जी काम कर रहे हैं, वहाँ फरमाया।

"हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥"

कि मालिक से रामदास नाम पड़ा। उन्होंने तसल्ली करके लिखा। इसी तरह जब मस्ताना जी भजन सिमरण करके अन्दर गये क्या देखा कि सतपुरुष की जगह परम सन्त सावन शाह काम कर रहे हैं। वहाँ इन्होंने कहा कि सावन शाह कुल मालिक हैं। उन्होंने तसल्ली की। उन्हीं परम सन्तों का बख्शा हुआ खिताब है कि आप तो कोई मस्ताने हो। ये उनका बख्शा हुआ खिताब है। वहाँ पर और भी मस्ताने थे। एक बोरियों व टाट के कपड़े पहने हुये आया मथा टेकने लगा। सच्चे पातशाह ने पूछा कि ये कौन है? जी मस्ताना है। कोई मस्ताना नहीं। मस्ताना एक ही है, वह है बलोचिस्तानी। जो बलोचिस्तान से रूहें लेकर आता है। कोई मस्ताना नहीं। ये उनका वचन है। फकीरों की खुशी लेनी आसान नहीं है। फकीरों के पास बड़े-बड़े रहम हैं। खुशी लेनी आसान नहीं। मस्ताना जी जब भी आते सच्चे पातशाह से कभी न कभी कोई न कोई खुशी का वचन बुलवाते। कभी गवर्नर, कभी पलटू, कभी बादशाह, कभी पीर, कभी कुछ...।

एक दफा गंगाराम माली डेरे से आया। कहने लगा कि पलटू कहां है? हम हैरान कि क्या कहता है। फिर उसने कहा कि सच्चे पातशाह ने ये वचन फरमाया

था और पलटू का खिताब दिया था कि जब कभी लेना कोई न कोई खुशी का वचन लेना। ये उनका वचन है कि ऐसा मस्ताना आया ना आयेगा। सच्चे पातशाह आप जैसा सतगुरु आया ना आयेगा। खैर भई आप जैसा मस्ताना आया ना आयेगा।

किसी महापुरुष या पूर्ण ताकत का जन्म दिन मनाने का मतलब क्या होता है कि हमें पता लगे, कि उन्होंने क्या क्या मेहनतें कीं? किस तरह मालिक को मिले। उन्होंने क्या-क्या शक्तियाँ थी? कौन-कौन सी शक्तियाँ उन्होंने पैदा कीं और कोई मतलब नहीं होता। पहले थोड़ा उनके जन्म दिन पर रोशनी डालते हैं फिर ये बतायेंगे कि उनकी शिक्षा क्या थी?

मस्ताना जी का नाम असली जो है वो खेमामल है। राजपूत खत्री घराने में पैदा हुए। उनका गाँव कोटड़ा रियासत कुलात थी। उनके पिता का नाम पिल्लामल, माता का नाम तुलसीबाई था। पिल्लामल के यहाँ सिर्फ चार लड़कियाँ थीं। लड़का कोई नहीं था। कई फकीरों के पास गये। एक फकीर ने कहा, भाई लड़का तो हो जायेगा लेकिन आप को काम नहीं देगा। वो कहते लड़का हो, काम दे या ना दे। लड़का तो हो! खैर साल बाद लड़का हुआ, खुशियाँ मनाई गईं। बचपन से ही हंसमुख थे। भक्ति भाव का शौक था। अभी तीन साल की उम्र थी कि उनके पिता जी चोला छोड़ गये उन दिनों में शादियाँ अक्सर छोटे-छोटे बच्चों की हो जाती थीं, रिश्ते तो साल-साल दो-दो साल के बच्चों के हो जाते थे। उनका रिश्ता उनके पिता जी कर गये लेकिन अभी उनकी छोटी उम्र थी।

उनकी हलवाई की दुकान थी। अब माँ के पास चार लड़कियाँ व एक लड़का है। उनकी पालना करनी है। जो पैसा था, वह धीरे-धीरे खत्म होता गया। इनको भक्ति भाव का शौक था। कभी किसी साधू के पास बैठ जाते, कभी किसी के पास, कभी किसी के पास। एक दिन की बात कि माँ ने कहा जब कि उनकी उम्र आठ नौ वर्ष की थी, कि सारा दिन आप काम तो कोई करते नहीं, फकीरों के पास रहते हो। वो कहने लगे माता क्या काम करें? जा कुछ कमा कर लाओ। उस बेचारे को क्या आये। आगे गये तो साधू मिल गये उनके पास फिर बैठ गये। साधुओं ने कहा भई हमें रोटी दो। मस्ताना जी ने कहा चलो घर। उनको रोटी खिलाई। रोटी खाने के बाद वे दक्षिणा माँगने लगे। वह कहां से दें, उन्होंने धोतियाँ माँग लीं। माँ के गले पड़ गये, उनके पास जो कुछ जेवर था वो बेच कर उनकी धोतियाँ ले दीं।

एक बार इसी तरह वह एक पण्डित के पास चले गये। वह सत्यनारायण की पूजा करता था। वहाँ गये। कहने लगे दादा हमें भी ये बताओ कि पूजा कैसे करें।

कि काका बड़ी दक्षिणा देनी पड़ती है। ये कहा कि आपको ठाकुर देंगे, आप एक गाय दान कर दें। कहने लगे अच्छा। घर गये, गाय ले आये और ठाकुर लिया। उन्होंने मज़ाक-मज़ाक में पत्थर पकड़ा दिया। अभी कुछ बना नहीं था। गाय उसको दे आये। उसकी पूजा करने लगे। माँ ने कहा कोई काम करो। कि हमें काम तो कोई आता नहीं। अभी उनकी उम्र दस-ग्यारह साल की थी, कि उनको खोया दे दिया भई जा यह खोया बेच आ। खोये के पेड़े बना के ले गये। आगे एक साधू मिल गया कहने लगा भई ये क्या है? खोया है। मुझे कुछ दोगे? ले लो! वो खाते खाते सारा ही खा गया। अब उनको फिक्र पड़ा कि मां को क्या दूं! साधू कहने लगा कि काका आप बादशाह बनोगे। कि हमने सोचा कि घर में खाने को दाने नहीं, बादशाह कैसे बनूँगा। हम वहाँ से चल दिये। भई ये तो टाल-मटोल कर दूसरी तरफ चला गया! आप एक जमींदार के पास गये, कनक निकलवाई। कुछ वहाँ से दाने लिए घर चले गये। मां को दिये। इसी तरह शुरू से ही रहे। जब आप ठाकुर की पूजा करते थे, पूजा करते-करते इतनी शक्ति आ गई कि हर रोज़ एक रुपया तकिये के नीचे आने लगा। इसी समय में माँ ने आपकी शादी कर दी। एक लड़का हुआ। आप पूजा करते-करते उसमें मस्त हो गये, शक्ति आ गई। आप किसी को बाल तोड़ कर दे देते तो उनकी बीमारियाँ दूर हो जातीं। आपने गाय रख ली। धीरे-धीरे सोने की मूर्ति बना ली। चर्चा होने लगी कि आप बड़े करामाती फकीर हैं। एक दिन की बात है कि आप बैठे थे। एक फकीर आकर कहने लगा कि जब तक आपको कोई कामिल मुर्शद नहीं मिलता आप नरको में जाओगे। सोचने लगे भई नरकों में कैसे जाऊंगा? किसी को बाल तोड़ कर देते हैं, उसकी बीमारी चली जाती है, रुपया तकिये के नीचे आ जाता है, नरकों में कैसे जायेंगे? खैर कहने लगे, अच्छा बैठो, आपके लिए चाय बनाते हैं। आपको फिक्र कि चाय बनाने जायेंगे पीछे से ये फकीर कहीं सोने की मूर्ति न उठा ले। हिसाब से कुंडी लगाई। बाहर ताला लगाया। चाय बना कर ले आये। जब अन्दर आकर देखा तो कुछ भी नहीं बहुत हैरान हुए। कुछ दिनों के बाद फिर सपने में वही फकीर दिखाई दिया कि आप कामिल मुर्शद कोई नहीं ढूढ़ते हैं, आप तो नरकों में जायेंगे। फिर फिक्र में पड़ गये, कि क्या करें? जितनी पास में गायें थीं बेचकर चल दिये। जंगल में गये। गरनाल, तपोवन वगैरह फिरते रहे। एक मुसलमान फकीर के पास गये। वो कहने लगा कि कैसे आये हो? कहा जी खुदा लेना, अल्लाह लेना। वो कहने लगा ओहो! ओहो!! ओहो!!! एक हिन्दू मिला हमें जो कहता अल्लाह लेना। दुनिया आती है, कोई कहता है पुत्र लेना है, कोई कहता है पुत्री लेनी

है, कोई कहता है पैसा लेना कोई कुछ...। कोई ग्राहक नहीं, कोई ग्राहक नहीं। वो कहता भई बात यह है कि मेरे पास एक मन्त्र है, अगर जपे तो हवा में उड़ने लगे, कहते हम ने वो भी किया। पर फिर सोचा हवा में उड़े सिद्धि तो पहले भी थी हमारे पास। रुपया आ जाता था। हवा में उड़ कर करेंगे क्या? आगे एक और जगह गये। वहाँ क्या देखा? एक फकीर कहने लगा मैं एक तरकीब बतलाता हूँ। अगर ये मन्त्र पढ़कर शंख बजाओ तो मिठाई का थाल आ जाता है। क्या? वह पा कर करेंगे क्या? क्योंकि जिसको भक्ति का शौक शुरु से ही हो, जिसको लगन हो वह कहीं न कहीं बैठा ज़रूर रहता है। कहीं बनी सुनी कभी कहीं। आखिर उन्होंने गुरु ग्रंथ साहब सुना कि नाम कोई चीज़ है, नाम कोई ख़ज़ाना है, नाम एक दौलत है जिसको गुरु नानक साहब ने कहा नाम ख़ज़ाना लधा। मैं नाम ख़ज़ाना पाया जो फकीरों की जायदाद है।

"खर्च ख़ज़ाना नाम धन ऐ भगतन की रास।"

वो एक दौलत है। वो क्या चीज़ है? बानी के अन्दर आता है कि वो बहुत ऊंची चीज़ है। वो बहुत ऊंची चीज़ है।

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवउ न किछु पीया न खाउ॥
भी तेरी कीमति न पवै हउ कै वडु आखा नाउ॥ (मः1/14)

अगर कोई पंछी हो के सारे आसमानों की ख़बर ले आवे, बिना खाये पिये जिंदा रह सके, बड़ी-बड़ी शक्तियाँ आ जायें, फिर भी यह समझो ना कि उसके अन्दर नाम आ गया। कहते हैं कि ऐसी ऊंची चीज़ है आपने कहा नाम ही चीज़ है।

आपको फिर किसी ने पता दिया कि भई फकीर आगरे है। आप आगरे गये। तलाश की। कोई पता नहीं लगा। आखिर फिर वही फकीर सपने में आया कहने लगा अब आप थक चुके हो। यह सच्ची तड़प व लगन पर है। मालिक किसी न किसी फकीर के रूप में रहता है।

जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे। हरि गुण गावहि रसन रसेरे।
उसतति करहि परहरि दुखु दालदु। जिन नाहिं चिंत पराई हे।

कि जुगां जुग से मालिक का कायदा यह है कि उसके भेजे हुये फकीर दुनिया में रहते हैं। वह हमें मालिक के मीठे प्यारे वचन सुनाते हैं। वे हमें मालिक

का कुछ सुना कर उसकी ओर लगाते हैं। हमारे दुख दूर करते हैं। कौन से? यह नहीं भई बीमारियाँ दूर करते हों, या भूखों को रोटी देते हों, या कपड़ा देते हों। यह तो साहूकार कर सकते हैं। यह सारा ही माया का काम है। कौन से दुख दूर करते हैं? हमारी आत्मा का जो जन्म-मरण के बन्धनों में पड़ी है। आपको तलाश तो वही थी। अन्दर लगन वही थी कि भई हमारे कर्म झूठे, कर्मों के बन्धन से निकलें, चौरासी से निकलें कि जो कभी नरकों में जाते हैं, कभी स्वर्गों में जाते हैं। कभी कहीं धक्के खाते हैं। ये सच्ची तड़प पर है। मालिक किसी न किसी फकीर में ज़रूर रहता है। अब कहा अब थक चले हो व्यास आओ। आपको व्यास का पता न था। आप स्टेशन पर गये। वहाँ मालिक आप बन्दोबस्त करता है। एक बाबू मिला कहने लगा कहाँ जाना काका जी? व्यास जाना। अच्छा, वहा गाड़ी में बैठो गाड़ी में बैठा हमें व्यास आकर उतार दिया। आपने पूछा यहाँ कोई फकीर है। पता लगाया कि स्टेशन से दो तीन मील दूरी पर है। आप वहाँ गये। जब पहुँचे पता लगा कि परम सन्त आज थेड़ी गये हैं। सच्चे पातशाह थेड़ी नये-नये आये थे। वहाँ रास्ते का पता नहीं। पूछा बठिंडे को आये बठिंडे एक सिपाही मिला। सिपाही कहने लगा कहां जाना है? कि मैंने इस तरह सरसे जाना है। वो कहने लगा नहीं आपको फौज में भर्ती करना है। ये उठा हुक्का मेरा! उसने दो टिकटें मंगवा लीं। हुक्का उठाया। मुझे उसने सरसे उतार दिया। सरसे में पूछा तब उन्होंने कहा कि सच्चे पातशाह तो थेड़ी हैं। आप थेड़ी पैदल गये उस वक्त परम सन्त सावन शाह अपने सेक्रेटरी के साथ दो-चार प्रेमी और थे, बाहर शाम के समय घूमने गये थे, बातें कर रहे थे। कि बलोचिस्तान सिंध में कुछ रूहें पड़ी हैं गुरु नानक साहब कबीर साहब की चिताई हुई, उनकी संभाल करनी है। जुगों जुग से हम मालिक से बिछड़े हैं और हमारे कर्मों पर मैलें चढ़ी हुई। जब वह सतगुरु किसी रूप में आता है, किसी के अन्दर नाम का बीज डालता है, उसकी जिम्मेदारी वहाँ पर जाती है। वह सतगुरु तो एक ही है जिसे हम शब्द गुरु, राम गुरु कहते हैं। राम कहते हैं। रमेता सो रामा। वह शब्द रूप में सारे रमा है। जितने भी रूहानी फकीर हुये हैं। उन्होंने एक ही गुरु माना।

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला।
सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥

ये ही तुलसी साहब कहते हैं :

सुरत शिश शब्दा गुरु मिल मार्ग जाना हो।
अलख आकाश ऊंधा कुआं ता में सुरत समाना हो॥

ये ही कबीर साहब ने कहा है :

शब्द गुरु को कीजिए बहुतक गुरु लवार।
अपने अपने स्वाद में ठौर ठौर बटमार॥

है तो शब्द सारे ही, ज़र्रो ज़र्रो में है। वो मालिक की कुदरती आवाज़ है। गुरु का शब्द ग्री धातु से निकला है। जिसका मतलब ही शब्द है। अब वह शब्द देह धार कर आता है। ये ही ईसा ने कहा है :

"The word was made flesh and dwelt amongst us."

वह कभी किसी चोले में आता है। कभी किसी चोले में आता है।

आदि अंत एकौ अवतारा सोई गुरु समझिये हमारा

अगर वह किसी चोले में न आये तो गुरआई झूठी है। वह शब्द काम करने वाला है। वह कभी किसी चोले में कभी किसी चोले में आकर ज़रूर काम करता है।

ब्रह्म बोले काया के ओल्हे काया बिना ब्रह्म किआ बोले।

हमारे साथ बात नहीं कर सकता बिना चोले के। अब मेरी आवाज़ छोटी है। स्पीकर की ज़रूरत पड़ी। सारी संगत ने सुना। इसी तरह वह सुक्ष्म से सुक्ष्म आवाज़ है। वह अति सुक्ष्म है। उसको हमारे समझाने के लिए हमारे जैसा चोला ढालना पड़ता है।

प्रभ जी बसहि साध की रसना॥

यही गुरु नानक साहब जी ने कहा है :

ज्यों बुलाये त्यों नानक दास बोले॥

वह जैसे अन्दर हुकम करता है। वह बाडी बोलती है। कभी किसी चोले में कभी किसी में आकर संभाल करती है। वहाँ परम सन्तों ने फरमाया कि ये उसी तरह है जैसे कि एक अफसर चला जाता है, जो बाकी का काम होता है, दूसरा जो आने वाला है, वह संभाल लेता है। फिर वह चला जाता है। तीसरा आकर संभाल लेता है। वह सतगुरु जिस चोले में आता है, चोला पुराना हुआ दूसरे में आकर काम करने लगा। उसका काम संभाल लिया। जहां जहां उनकी रूहें होती हैं, वहाँ आकर पकड़ता है। सो उन्होंने फरमाया कि कबीर साहब, गुरु नानक साहब की रूह अभी फिरती हैं। स्वामी जी को रूहों की संभाल करनी है। बलोचिस्तान

सिंध में बहुत हैं। इतने में मस्ताना जी वहाँ पहुँच गये। मस्ताना जी ने वहाँ दर्शन किये, भई यह तो वही फकीर है जिसने दर्शन दिये थे। कहने लगे सच्चे पातशाह आप हमें बाबू का रूप धारण करके ले आये। वहाँ मुबारक ज़ुबान से ये वचन निकला कि आप तो कोई मस्ताने हो। फिर उनके साथ बात चल पड़ी कि क्या करते हो और कौन सी भक्ति करते हो? कहने लगे कि सत्य नारायण की पूजा करते हैं। इस तरह रुपया सिरहाने आ जाता था। बाल तोड़ कर दे देते हैं, बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। आप कहने लगे आपको ज़िन्दा सत्य नारायण देंगे वह मूर्ति तोड़ कर ले आओ। जिस तरह गुरु अंगद साहब ने भाई मँझ को कहा कि सुलतान का मन्दिर तोड़ कर आओ, फिर आपको नाम देंगे। अब बाहर के साधनों में से निकालते वह जितने साधन कर्म धर्म, जप, तप, पूजा पाठ सब बेकार हैं। मुक्ति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। अच्छे कर्मों का फल मिल जायेगा। अच्छी जूनि, स्वर्ग मिल जायेगा परन्तु मुक्ति नहीं। यह सभी बन्धन है।

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सम्बन्धु।
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु बंधु।
जह देखा तह जेबरी माया का सम्बन्धु।
नानक सचे नाम बिनु बरतणि बरतै अंधु।

सभी अन्धेर खाते हैं।

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥
ऊजड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझे को थाइ न पाई॥
नाम बिहूणै माथे छाई॥ **(मः1/412)**

कहते अन्दर नाम, सतगुरु के बिना, शब्द गुरु के बिना, शब्द कहो, बानी कहो, नाम कहो, कीर्तन कहो, अकथ कथा कहो, चीज़ एक ही है। भाणा कहो, हुक्म कहो। भाणा कहते हैं किसी मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है जब वह हुक्म करें, हुक्म कब जब वह बोले। उसे कहते हैं शब्द। शब्द की जो लहर है उसे कहते हैं नाम? जो बारीक से बारीक आवाज़ हो जाती है उसे कहते हैं धुन। क्योंकि वह मीठे से मीठा कीर्तन है, इसलिए उसे कीर्तन कहा है। क्योंकि? वह बानी है, इसलिए उसे बानी कहा है क्योंकि उसमें रस है इसलिए उसे हरि रस कहा। क्योंकि शांति देने वाला, अमर कर देने वाला है। इस करके उसे अमृत कहा है। एक ही चीज़ के नाम हैं।

"अम्रितु एकौ शब्दु है। नानक गुरमुखि पाया।"

"नाम के धारे सगले जँत॥"

वह मालिक की कुदरती आवाज़ है। एक ही चीज़ है। उसे अकथ कथा कहा है। जो कभी खत्म नहीं होती। उसे पकड़ना ही सच्चा सौदा है।

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु बीचारि।
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

वह गुरु है। मालिक का रूप क्या है? प्रेम, नाम या शब्द कुछ कह लो, बाहर तीन बातें लगती हैं। मगर अन्दर एक ही है। शब्द मालिक की आवाज़ है। नाम उसकी लहर है। प्रेम शब्द रूप कहो, नाम रूप कहो, प्रेम रूप कहो, सबको ज़िन्दगी व ताकत दे रहा है। प्रेम व नाम अन्दर एक चीज़ है।

प्रेम पदार्थ नाम है भाई, माया मोह विनास॥

जितना बाहर का सामान है, फकीरों ने सब खन्डन किया है। सोचो! कुदरती एक धार आ रही है। दिमाग के द्वारा जब आँखों में आई, देखने लगा। कानों में आई सुनाई देने लगा। ज़ुबान में आई बोलने लगा। हाथ पैरों में आई चलने-फिरने लगा। कई बार आपने देखा होगा। प्रयोग किया होगा कि हम ख़्याल में बैठे हैं। हमारी बैठे-बैठे टाँग सो जाती है या हाथ सो जाता है। अगर उस टाँग पर खड़े हों तो खड़ा नहीं हुआ जाता। हाथ से कोई चीज़ उठायें, उठायी नहीं जाती। थोड़ी देर उधर ख़्याल करें तो वह काम करने लग जाती है। ख़्याल निकलने से वह शक्ति गई, चेतन सत्या निकल गई। वह फिर इसके अन्दर आ गई तो वह काम करने लगी। वही चीज़ इसके अन्दर काम करती है। वह कुदरती धार आ रही है। वह जिस्म में फंसी पड़ी हैं। फिर माँ, बाप, बहन-भाई के सभी के साथ बन्धी हुई है। कौम मज़हब के साथ बन्धी हुई है। ये ही हमने निकालना था, बल्कि इसको और बन्धनों में बांध लिया, कौमों मज़हबों के और-और स्यापों में डाल लिया। फकीर वह बन्धन तुड़वाने आते हैं। हम और आगे से आगे बन्धन डालते हैं। गुरु नानक साहब आये। उन्होंने हमें वो बन्धन तोड़ने के लिए कहा। अगर कबीर साहब आये तो उन्होंने कहा। जो-जो फकीर आए वे बंधन तुड़वाने के लिए आये। हमने ज़्यादा से ज़्यादा बन्धन डाल लिये। सो इसलिए वह सारे बाहर के बन्धन तुड़वाने हैं। उन्होंने कहा भई मूर्ति तोड़ कर लाओ। मन्दिर तोड़ के आओ। जिस तरह गुरु अंगद साहब ने कहा। पहले तो कोई मन्दिर तोड़ना आसान है! शरियत वाले बिगड़ जाते हैं। वे ताने देते हैं। लेने आसान नहीं! परंतु कोई बिरला अधिकारी बेशक करे। शरियत

छोड़नी बड़ी मुश्किल है। दिल सभी का करता है। परन्तु शरियत नहीं छुटती। गुरु नानक साहब आये तो किसने कहा? कुराहिया? यह शरियत वालों ने कहा। और तो किसी ने नहीं कहा। प्रेमी कोई आया उनके पास। कोई बिरला ग्राहक था जो आया और कोई न आया। जो रूहानियत का ग्राहक था वह आया। कबीर साहब आये तो कहा जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है।

सब ते कहुं पुकार पुकारी कोई नहीं माने नर और नारी॥
जगत कहे जुलाहा अज्ञानी हर हर का कुछ भेद न जानी॥
नीच जात और भगत कहाई हर का दर्श कभी ना पाई॥

जिस ने पाया उसको कहते हैं पाया ही नहीं। अंधे हैं, बाहर ठेके लिए बैठे हैं। शरियत को छोड़ना बड़ा कठिन है पर जिसको मालिक हिम्मत दे।

राजा पीपा को मालिक के मिलने का शौक हुआ। उसने पूछा कि कोई कामिल मुरशद? कहने लगे कि भई रविदास है, चमार है। सोचा मैं क्षत्रिय राजपूत प्रजा बिगड़ जायेगी अगर चमार के पास गया। अब उधर लगन लगी हुई थी, कोई पुरानी भक्ति थी। एक दिन छुपके कोई मेला था, गया। तो रविदास ने देखा कि राजा आया है। उसको कुछ दें। वह कुन्ड में पानी डाल रहा था। उसने वह पानी उठाया। फकीर में ताकत है। अपनी तव्वजों डालकर किसी चीज़ को कुछ बना दे। जो मालिक तक पहुँचे हुये हैं वे मालिक का रूप होते हैं। उन्होंने कून्डे का पानी उठाया कहा ले राजा अमृत। अब कुछ फकीर का रोब भी होता है। वह इन्कार न कर सका। पकड़ कर कहने लगा कि मैं तो चमार बन जाऊंगा। खुले बाजु का कुरता था, उसमें डाल लिया और चला गया। भई ओहो मैं तो बच गया नहीं तो चमार ही बना लिया था। घर गया धोबी बुलवाया। कहा भई इस कुरते को जल्दी साफ करो, किसी को पता न लगे। धोबी कपड़ा ले गया। उन दिनों साबुन सोडे नहीं होते थे। ना ही रंग काट होते थे। भाप दे दे कर चूस-चूस कर मैल निकालते, रंग काटते। लड़की छोटी थी। उसे कहा कि ऐसे करके उसे भाप दे-दे कर चूस-चूस कर निकाल दे। चूंकि लड़की छोटी थी। उसे ख़्याल न रहा कि मैं थूक दूं। वह अन्दर करती गई जैसे-जैसे वह अन्दर करती गई। उसमें तव्वजों पड़ी थी। उसके परदे खुलने लगे। अब किसने रोका राजा को? शरियत ने, दुनियादारी ने, कौमी मज़हबी झगड़े ने।

जात पात पूछे नहीं कोइ। हरि कउ भजे सो हरि को होइ॥

शरियत छोड़नी बड़ी कठिन है पर मालिक जिसको हिम्मत दे। मूर्ति तोड़ी, तोड़-ताड़ कर लाकर परम सन्तों के चरणों में रखी। रखी तो बड़े खुश हुये।

नाम बख्शा। कहने लगे जाओ आप बलोचिस्तान जाकर अपनी गुफा बनाकर भजन सिमरण करो। आपको दया मेहर देते हैं। वह आपका साथ देगी। फकीर का वचन ही चीज़ है।

सतिगुरु बचन बचन है सतिगुर पाधारु मुकिति जनावैगो॥

फकीर के अन्दर बैठ कर जहां सतगुरु वचन करता है, वह ही ताकत है, और कोई चीज़ ताकत नहीं है। वह मालिक के भेजे हुए फकीर जो हैं। मालिक का हुकम उनके पास है। जो वचन दें वो पूरा है। जो वचन दें वो ताकत है। जैसे थानेदार कोई हुकम दे वो मानना पड़ता है सबको। वह काम करेगा ये गवर्नमेंट का है। इसी तरह अन्दर वाली गवर्नमेंट का है। बलोचिस्तान चले गये। जाकर गुफा बनाई। गुफा बनाकर बैठ गये। औरत आई तो कहा कुछ कमा कर लाओ खाने के लिए। कहने लगे, लगन थी पूरी कोई सतगुरु की मेहर थी, पुरानी भक्ति थी। उन्होंने आप लिखा वचनों में अभी सच्चा सौदा नहीं बना था। उससे पहले वचन लिखवाये थे। उसमें लिखा था कि बाबा जैमल सिंह को एक मस्ताना मिला सफेद कपड़ों में। उन्होंने फरमाया कि आपकी कोई पुरानी भक्ति है। जो हमारे साथ बात करते हो वरना यहाँ बात करने का हुक्म नहीं। हम भी आगे सावन शाह का रूप धारेंगे। आप को भी सिरसा जाकर काम करना पड़ेगा। पहले अभी सरसे सच्चा सौदा बना नहीं था। पहले लिखा पड़ा था यह वचन। अब का नहीं पहले का लिखा है। अभी सच्चा सौदा शुरू ही नहीं हुआ था। परम सन्त सावन शाह के चोले में थे उस वक्त का लिखा पड़ा है। वह किताब हमारे पास पड़ी है। अब वह पुरानी भक्ति थी जाकर बैठ गये। क्या औरत छोड़नी आसान है? मन कहे आप खानदानी लड़के हो ये क्या काम करते हो। अब मन के साथ मुकाबला कौन करे, यह सबका गुरपीर है।

मन अंतरि बोलै सभु कोई। मन मारे बिनु भगति न होई॥

यह ही है जो हमें भक्ति में नहीं आने देता। यह ही अपने पीछे लगाता है। यह ही कहता है कि आसान काम कर। यह नहीं कहता कि अंदर चल। मन ही कौमों मज़हबों में फंसाता है। जो झगड़े हैं इसी के डाले हुए हैं। जितने कर्म धर्म हैं इसी ने बनाये हैं।

इह मन करमा इह मन धरमा इह मन पंच ततु ते जन्मा॥

क्योंकि पांच तत्व में से निकला है। माया से निकला है। यह बाहर रखता है। अन्दर किसी को नहीं जाने देता। किसी को मालिक की भक्ति नहीं करने देता।

इसका काम जीव को भरमाना और भटकाना है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

मनु मैगलु साकत देवाना। बन खंडि माया मोहि हैराना।
इत उत जाहि काल के चापे। गुरुमुखि खोजि लहै घरि आपे।

(मः1/415)

मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह माया व विषय विकारों के जंगलों में भटकता फिरता है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी कौमों, मज़हबों के झगड़े, कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशे। यह ही लिए फिरता है। कहते हैं, यह काल का ऐजन्ट है। इसका काम जीव को भरमाना और भटकाना है। गुरुमुख इसके साथ मुकाबला करके जीते तो जीते। इसलिए गुरु नानक साहब ने लिखा हैः

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।
मन जीते जग जीत।

मन के साथ उलझना कोई आसान है! बड़े-बड़े फकीरों ने इसके साथ मुकाबले किये। सभी को मार दिया। श्रंगी ऋषि वगैरा जिसने अट्ठासी हज़ार साल तप किया। सिर्फ वृक्ष को जीभ से चाटते और पानी पी लेते। इन जैसी ताकतों को मार दिया। प्राशर पूर्ण योगी होकर आया उसे मार छोड़ा। विश्वामित्र को मार छोड़ा, नारद को मार छोड़ा, विष्णु को मार छोड़ा। बड़ी-बड़ी ताकतों को मार दिया। सभी इसके मातहत हैं। यह कोई छोटी हस्ती नहीं। कहते आप खानदानी लड़के हो, यह काम कर रहा मैं। अब अन्दर से सतगुरु ने बख्शीश की। मस्ताना जी कहते ऐ मन तेरे को ऐसा ख़राब करूंगा कि जो दुनिया देखे। आपने क्या किया? एक गधा मंगवाकर काला मुंह करके, मिठाई मंगवाई, बच्चे पीछे लगवा लिए, बाजार में से निकले। जो कोई गाली निकाले, अब लोगों ने तो गालियां निकालनी थीं, देख क्या करतूत कर रहा है, देख क्या करतूत कर रहा है। अब ये सहना क्या आसान है? उनको जो गाली निकाले उनको कहे कि इसे मिठाई खिलाओ। भई आकर गुफा में बैठ गये। औरत को कहने लगे जाओ कोई और पति कर लो। लड़की ने बाप के पास बात की। बाप ने दूसरी शादी कर दी। लड़के आये, बच्चे खेलते-खेलते आये, आप की औरत का पति दिखायें। दिखाओ भई। वहाँ उनको मथा टेका। मथा टेकते ही उसका पति मर गया। हल्ला हो गया कि मस्ताना जी ने कोई करामात दिखाई है। वह करामाती हो गये हैं। वह कहने लगे मैंने देखी है करामात? तीसरी शादी कर दी। बच्चों को जो आदत पड़ जाये, वह फिर गये

कि आपकी औरत का दूसरा पति दिखायें? कि दिखाओ भई। जब गये दोनों को मथा टेका कि तुम मेरी माता आप मेरे पिता। औरत वहीं खत्म हो गई। अब जो पति था उसको अपनी फिक्र पड़ी कि कहीं मेरे साथ ऐसा न हो। वह कहे कि मुझे बख़्श दो। कहने लगे इस तरह नहीं बख़्शे जाओगे। आप वहाँ चलो नाम लो तो छोड़ेंगे, वरना नहीं छोड़ेंगे। मालिक ने किसी हिसाब से रूहें पकड़नी हैं, जैसे भी हो रूहें जो कि अधिकारी हैं। आखिर उसको ले आये सच्चे पातशाह के पास। विनती की कि ये मेरी औरत का पति है। इसको नाम दो। सच्चे पातशाह हँस पड़े। अच्छा साहब देंगे भई। नाम लेकर गया। भक्ति करने लगे। फिर कहीं कुछ, कहीं कुछ। कहीं पैसे बांटे, कहीं कुछ करें। अब लोग कुशतियां वाले आये। उनको कुशतियां कराते। फकीरों के पास माया आने लग जाती है। वह निकालते हैं। हिसाब से दूर करते हैं। त्याग करते हैं। ये सब को पकड़ लेती है। कोई बिरला ही इससे बचता है।

क्या गृहस्थी क्या त्यागी।
जहां देखो बाहर भीतर घट घट माया लागी।

सब को रगड़ जाती है। कबीर साहब कहते हैं :

कबीर माया मोहनी सुर नर रही लुभाये॥
माया सब को खात है माया कोई न खाये॥
कबीर माया मोहनी मोहे जान सुजान॥
भागे हुं, छाड़े नहीं कस कर मारे बान॥

अगर छोड़कर भी आये तो कहता मैं छोड़ कर आया हूँ। उसके अन्दर पड़ी है बला, गई तो नहीं। यह ऐसी बला है। फौरन पकड़ लेती है। यह ऐसी बला है। कोई बिरला फकीर बेशक निकले। इससे मोह तोड़े तो तोड़े नहीं तो सब को रगड़ी फिरती है। बड़े बड़ों को रगड़े फिरती है। आप ही मालिक बनी हुई है। कभी कुशतियां वाले आये। जो नीचे गिराये उस को देवें, जो नीचे गिरे उसको देवें। बल्कि नीचे वाले को ज़्यादा दें। यहाँ भी कई दफा ज़्यादा देते थे। नीचे गिरने वालों को 'क्यों भई आप ने बला के साथ मुकाबला तो किया। इसी तरह मालिक भी आप को मदद करेगा। अगर मन से हार गये, आपने मुकाबला तो किया'। मन भी आपकी मदद करेगा। धीरे धीरे हल्ला पड़ गया।

एक दफा मसताना जी को ख़्याल आया कि भंडारा करें। मुसलमान कहने लगे कि हिन्दू एक जहानी क्या भन्डारा कर सकता है। वह आप तो दो जहानी

बनते हैं कि हिन्दू तो एक जहानी काफर हैं। इसने क्या करना है। इनके पास कौन सा अल्ला है? कौन सा राम है? मस्ताना जी कहने लगे, जो गैबी राम है, वह काम करने वाला नहीं, वह तो सभी के साथ है। लेकिन वह जब बाडी में आता है, काम करने वाला है। डाक्टरी सभी के अन्दर है। हम बीमार हो क्या? वह हमारा काम करती है, नहीं करती, जब किसी के अन्दर प्रकट हो जाती है तो काम करती है। इन्जीनियरिंग सभी के अन्दर है मगर वह काम नहीं करती। जब प्रकट होती है फिर काम करती है। इसी तरह राम कह लो सतगुरु कह लो, किसी के अन्दर प्रकट हो कर काम करने वाला है। बाकी ग़ैबी कोई नहीं करता। कहते कि परम सन्तों वाला राम है, वह काम करने वाला है। वह सतगुरु काम करने वाला है, वह राम काम करने वाला है। बाकी हमने सभी का आसरा छोड़ दिया है। एक प्रेमी था। जो उनके पास रहता था चौधरी। कहने लगे भाई कैसे करें कि अपने इजाजत ले आयें। डेरे सच्चे पातशाह के पास आये कि जी हम भंडारा करना चाहते हैं। सच्चे पातशाह कहते हैं कि भई करो अपने सतगुरु के यश करो। अन्दर वाला शब्द गुरु ही है जो मौत से छुड़ाने वाला है। बाकी क्या? जब सच्चे पातशाह के पास आये थे, यही कहा था कि हमें मौत से छुड़ाने वाला गुरु लेना है। वह कहने लगे भाई वो गुरु तेरे अन्दर है। दुनिया में तो अन्धेर हो रहा है। बाहर वाले गुरुओं ने अन्दर वाला बिलकुल ही छुड़ा रखा है। आप बने बैठे हैं। उस शब्द गुरु को छुड़ा छोड़ा है। धक्के भी वही खाते फिरते हैं। अगर उसको पकड़वावे तो मालिक भी उनके लिए सब कुछ लिए बैठा है।

निरंकार जो रहै समाइ। काहे भीखिआ मंगणि जाइ॥

क्यों मांगता फिरे मालिक इसके साथ है। माँगने का क्या फायदा! कई दफा मस्ताना जी कहा करते थे फकीर दुकान पर गया, उसको रोटी खिलाई। फकीर ने दो मीठी-मीठी बातें सुनाईं, उस घर भगवान आ गया। उसका उधर काम बन गया। बस आसानी से राम की दुनियां भक्ति माँगती है। अब जिस फकीर को एक पाव आटा न दिया, आपसे माँगता फिरता है। वह आपको क्या देगा। अगर वह मालिक का बने जहाँ बैठे मालिक उसको वहाँ देने को तैयार है। कबीर साहब कहते हैं :

मांगन मरण सामान है, मत कोई माँगे भीख॥
माँगन से मरना भला, ये सतगुरु की सीख॥
घर घर माँगे लाज न लागे॥

दरवेशी कोई जानसी विरला कोई दरवेश॥
घर घर हंडे मंगदा तृग जीवे ध्रिगं जीवेस॥

गैबी राम का काम नहीं करता जो बाडी वाला है। जैसे-जैसे भक्ति करो आपके अन्दर बसने लग जाता है। अगर भक्ति करो ठीक, इसको पता लग जाये। ये काम करे अगर ठीक तालीम इसके अन्दर आने लग जाये तो वह काम करने लगे। इसी तरह ठीक राम हो, वो जपा जाये। वह इसके अन्दर काम करने लग जाता है।

जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास।

राम उसके अन्दर बसने लग जाता है। उन्होंने (सच्चे पातशाह) हुकम फरमाया जाओ करो। एक छोटी-सी कोठरी में थोड़ी-सी बूंदी बना ली। ख़्याल था कि इतनी सी संगत आयेगी और क्या? मुसलमानों ने सुना। उन्होंने हल्ला कर दिया। ऊँटों व घोड़ियों पर दुनिया इकट्ठी हो गई। एक मुसलमान ने देखा मौलवी ने कहा भई यह तो बड़ा ख़राब हुआ। हमारी तो बेइज़्ज़ती हो जायेगी। यहाँ कोई भी नहीं पूछेगा। उसने क्या किया, अफवाहें फैला दीं कि बूंदी के अन्दर सूअर के बाल डाले हुये हैं। ताकि कोई भी न खाये। मगर मिठाई ऐसी चीज़ है, वह लालच ऐसा है, ज़बान का कौम मज़हब भी छुड़ा देता है। कोई भी नहीं पूछता रिश्ते दूसरी कौम में से कर लेते हैं। लोग मेल-जोल भी करने लग जाते हैं। माया ऐसी बला है। बूंदी जिस वक्त सभी को बाँट रहे थे, मस्ताना जी ने क्या किया कि परना उठाया। उठा कर झड़का दिया, कहा! आओ आपको नोट दिखायें। नोट ही नोट गिर गये। अब सभी का ख़्याल उधर हो गया, हर एक को पकड़ाने लगे, किसी को पाँच का, किसी को दस का, किसी को कुछ, किसी को कुछ, किसी को एक, किसी को दो। जब मौलवी ने सुना वह भागा, कहने लगे डालो भई इसको मिठाई। मिठाई दी कहने लगे एक मुट्ठी और दो मिठाई दो। कहता मैं बीस रुपये लूँगा। कहते भई पंच्चीस ले, बीस क्यों ले? सो यह ऐसी चीज़ है माया? सूअर के बाल जो थे वह खत्म हो गये। सो माया ऐसी बला है। सब को नचाए फिरती है। शोर हो गया। जहाँ-जहाँ मस्ताना जी जायें, शोर पड़ जाये इनका मुर्शिद है, रात को तिजोरियाँ भर के दे जाता है। जहाँ जायें रात को भजन करें। आकर खोदने लग जायें भई यहाँ माया दबी हुई है। शोर पड़ गया। वहाँ का एक पीर था, मुसलमानों का माना हुआ। उसको पता लगा वह आया, कहने लगे, भई वहाँ जायेगा तो पता लगेगा। यहाँ तो कुछ भी नहीं। मस्ताना जी व्यास आ गये। पीछे वह भी चल दिया। मस्ताना जी अक्सर साँगले रहा करते थे। गोजरे रहा करते थे। वह प्रेमी यहाँ आया करते थे। वह साँगले प्रेमायों के पास आया, और

कहा कि मैंने वहाँ चलना है। अच्छी तरह रोटी खिलाई और मस्ताना जी को मिलाया। अब वह बड़ा पढ़ा-लिखा था, बड़ा समझदार था। सच्चे पातशाह के यहाँ पेश किया। बातें कीं। सच्चे पातशाह ने सुनाया कि सारी बात, इस तरह अन्दर चीज़ है। हमें पता नहीं हमारे अन्दर क्या है? जेब में कोई चीज़ डालता है। अब मुट्ठी बन्द हो किसी को क्या पता क्या है? या तो उसको पता है जो उसके पास रहता है। वह कहता है कि जेब में ये चीज़ डाली है। या खोले तो पता लगता है। किसी को क्या पता है? इसी तरह इसके अन्दर चीज़ तो सब कुछ रखी है मालिक ने इसके अन्दर, पर इसको पता नहीं। सभी शक्तियाँ, देवी देवते जितनी चीज़ें हैं, त्रिलोकियां, त्रिलोकीनाथ, सतगुरु सभी इसके अन्दर हैं। इसको पता नहीं। यह अन्दर जाये तो इसे पता लगे। फकीरों ने हमारी गवाही के लिए लिख छोड़ा है, पर अन्दर कोई नहीं जाता, कोई नहीं देखता, पढ़ी-पढ़ी जाते हैं। सोचता तो कोई है नहीं। अन्दर देखे तो पता लगे। उसको समझाया। वह मान गया। मुसलमानों की किताबें सारी ही सच्चे पातशाह के पास थीं। उन्होंने स्टडी की थी। सिक्खों के किसी गुरुद्वारे के प्रधान रहे। किसी के मन्त्री रहे थे। कहीं कुछ, कहीं कुछ। सभी की तालीम उन्होंने जैसे भी थी, Practical भी किया। सब कुछ उसको समझाया। वह मान गया। कहने लगा जी मुझे मस्ताना जी वाला नाम दो। कहते भई नहीं आपको कमाई करनी होगी। वह फिर घूम फिर कर वहाँ ही ले आये। नहीं जी मस्ताना जी वाला। वह कोई और चीज़ थी, बख्शीश थी, बख्शीश भक्ति पर होती है। पुरानी भक्ति थी। अब भी भक्ति है। भक्ति ऐसी थी कि जिस बाबत मन ने कोई अड़चन की तो क्या करते? रात को गारा बनाना शुरू कर देते। यहाँ हम देखते रहे हैं। बुढ़ापे में देखते रहे हैं। यहाँ गारा ले जाते, कस्सी के साथ इतनी मेहनत की कि पन्द्रह-पन्द्रह दिन गर्मी में न नहाते। जीवों के पीछे बड़ी-बड़ी मिट्टी चढ़ जाती हमने खुद देखा। पहले पहले हम जाते। अगर किसी के पास कोई चीज़ आ जाये यहाँ तो अगर थोड़ी सी रिद्धि-सिद्धि आ जाये तो वह फूला फिरता है। वह सारी चीज़ आकर भी कहते चलो भाई मैनेजर चले हम गोहा (उपले) इकट्ठा करके लाये हैं। बकरियाँ चरा कर लाये हैं। खुम्बां चुग के लाये हैं। मस्ताना जी पहले पहल आप देखते रहे हैं। सभी की रोटी आप बनाई, सब्जी चीरना। वह जो पुराने हैं, उनको तो देता ही है। सब्जी चीर-चीर कर, वहाँ बैठ कर सभी को खिलाई। यह फकीरों की हिम्मत है। दो पाई का अफसर अभी सिपाई ही नहीं बनता कि चूतड़ कूटने लग जाता है। यह उन्हीं की हिम्मत है। जिनको सतगुरु बख्शीश करता है। वह दीनता उनको ही बख्शता है। गरीबी उन्हीं को बख्शता है। मिलता

ही गरीबी पर है। यूं मिलता ही नहीं। दीनता जितनी हो उतना ही लाभ है। वह मालिक को दया की धार नीचे की ओर जाती है। कबीर साहब कहते हैं :

ऊँचे पानी न टिके नीचे ही ठहराये॥
नीचा हो सो भर पीये ऊँचा प्यासा जाये॥

फकीरों का हथियार यही है। दुनिया के हथियार कौन से हैं? तलवारें, बन्दूकें, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, उनके कौन-कौन से हैं?

गरीबी गदा हमारी। खंना सगल रेनु छारी।
इसु आगै को न टिकै बेकारी। गुरु पूरे एह गल सारी॥

कौन से विकारी ने? ये बाहर नहीं। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार, यह मन।

चरन दास यूँ कहत है, बड़ी दीनता जान॥
औरन की तो क्या चले, लगे न माया बान॥

मन माया का ज़ोर गरीबी पर नहीं चलता। सो गरीबी फकीरों के हिस्से आई है। गुरु नानक साहब धुर धाम से आये। वह कहते हैं :

कहो नानक हम नीच करमां शरण पड़े की राखे सरना॥

बोलो कोई कह के दिखाये अगर कोई और कहे तो डन्डा उठाने को तैयार हो जाता है। सोच लओ! ये गरीबी उन्हीं के हिस्से में आई है। यह लाइन ऐसी ही है। एक फकीर ने लिखा है :

खाक़ आपको समझना, अकसीर है तो यह है॥
इखलाक सब से रखना, तस्खीर है तो यह है॥
सब काम अपना करना तकदीर के हवाले॥
नज़दीक आरफों के, तदबीर है तो यह है॥
वीरां (वीरान) किया जब आपको, बस्ती नज़र पड़ी॥
जब आप नेस्त हम हुए, हस्ती नज़र पड़ी॥
देखा तो ख़ाक सारी ही, आली मुकाम है॥
ज्यों-ज्यों बुलंद हम हुए, पस्ती नज़र पड़ी॥

कहते हैं जैसे-जैसे यह ऊंचा उठता जाता है, वैसे-वैसे यह नीचे गिरता जाता है। जो नीचा होगा ऊंचा चढ़ेगा। यह फकीरी में है। लाइन ही ऐसी है। सो इनके हिस्से आई है गरीबी। यदि मन ने अड़ी करनी तो सारी-सारी रात फिरते रहते। सतगुरु का ख़्याल अन्दर पक्का करने के लिए क्या करते? कि

भई यहाँ से सतगुरु जायेंगे, कहीं झाड़ू दें, कहीं पानी का छिड़काव करते, सारी रात इसी तरह गुजार देते, सिर्फ सतगुरु को बसाने के लिए। मालिक दूर नहीं सतगुरु दूर नहीं।

दुनिया के ख़्याल निकालने बड़े मुश्किल हैं। अगर निकाले तो मालिक पास खड़ा है। मस्ताना जी ने, जिस वक्त दो अप्रैल का भण्डारा था, फरमाया कि एक हिन्दुस्तान के करोड़ों हिन्दुस्तान कर दे तो भी कोई इतबार नहीं करता। कोई नहीं मानेगा कि धुर दरगाह से कुदरती आवाज़ आ रही है। कोई किस्मत वाला सुनता है। सभी फकीरों की एक ही शिक्षा है। हमने उनके जाने के बाद उलट-पुलट बनाई है। किसी ने कुछ बना ली, किसी ने कुछ बना ली है। इसी करके झगड़े हैं। हम कहते हैं मुसलमानों की और है सिक्खों की और है हिन्दुओं की और है। नहीं, एक ही चीज़ है। मुसलमानों में डण्डे बजते हैं। वह कहता है, इसका मतलब यह है। दूसरा कहता है इसका मतलब यह है। सिक्खों की कितनी पार्टियां बन गईं। हिन्दुओं की कितनी बन गईं। यह मन किसी को कुछ कहता है, किसी को कुछ कहता है। सभी मन के दायरे में बैठ बोलते हैं। कोई बिरला गुरुमुख है जो असली तालीम को समझता है। उसको एक बना देगा। सबकी एक ही तालीम है, चाहे हिन्दू हो, सिक्ख हो, चाहे कोई हो, पक्की ही तालीम है। जो अपने घर को जाने की है। उसको सारा समझाया। वह कहे जी वह नाम दो मस्ताना जी वाला। अब उन्होंने सभी ख़्याल निकाले मुकाबला करके अन्दर। अगर सेवा भी की सोचो! गारा ही रहा अन्दर और क्या रहा? बाकी तो सारे ख़्याल निकल गये। यह निकाले तो वह चीज़ आती है। उसे कैसे मिले? बख्शीश कहां से हो? वह मेहनत से होती है बख्शीश।

नाउ नानक बख्शीश नदरि करम होई॥

मेहनत से होती है।

बिनु मेहनत किसे न पाया रब्ब दा नाम ख़ज़ाना॥

बगैर मेहनत के कोई चीज़ नहीं मिलती। वह कहे कि मुझे वह नाम बख्श दो। कि नहीं, आपको कमाई करनी होगी। वह फिर तोड़-मरोड़ कर के ले आवें। कहते भई नही। आखिर जब सत्संग का वक्त हुआ तो वह बोला :

आया हूँ दूर से मेरी किश्ती भर दे नूर से॥

पर वो नाम मुश्किल है। वो मुश्किल है। आखिर खाली गया। अब कहे जी वह नाम लेना है। वह तो नहीं मिलता। दूसरा कमाई करनी पड़ेगी। इसी तरह

एक भक्ति पहली भी थी। आ रहे थे हर साल हर महीने पचास साठ आदमी। व्यास लेकर आते। नाम के लिए तैयार करा लाते। उनको यह सिखलाकर लाते कि भई सोना व रेशमी कपड़े ले जाना मना है। कहा कि यह चीज़ें मत उठाया करो। पर दुनिया कब रहती है। उठा लाये। आगे जब बार्डर पर आये पुलिस वालों ने पकड़ लिया। उन्होंने मिन्नत, खुशामद की भई छोड़ दो। सौ रुपया आपको रिश्वत दे देते हैं। फिर दो सौ कहा कि भई रिश्वत दे देते हैं। कहते कि नहीं। उन दिनों में सौ दो सौ बड़ी चीज़ थी। आज कल के हज़ारों के बराबर था। वह कहें कि हमें तरक्की मिलेगी, इसलिए छोड़ते नहीं। कहने लगे हमें जेल दे दो। प्रेमियों को कहने लगे कि भजन सिमरण पर सब बैठो। सब भजन सिमरण पर बैठ गये। सतगुरु आगे प्रार्थना की। वह सतगुरु तो हाज़िर नाज़िर है। शब्द गुरु साथ ही है। उसने आकर थानेदार को पकड़ा। उसकी बहुत पिटाई हुई। अब वहाँ चोले में आकर काम किया। परम सन्तों के चोले में आकर उसकी पिटाई की। शोर मचाया कि मुझे माफ कर दो। मस्ताना जी के पास आकर माफी मांगे। मस्ताना जी कहने लगे भई वह माफी देंगे। वह ताकत है उनसे ही माफी मांगो। वह कहे, मैं छोड़ देता हूँ। कहने लगे बेशक रखो। जब छोड़ दिया तो आगे भयानक जंगल में आये। एक जगह रात बिताई। फिर दूसरी जगह आये, कुछ पठान आये। उन्होंने मेवे पेश किये। जब मेवे पेश किये, तो आपने कहा कि भई यह क्यों पेश करते हो?

हम आपको पीर समझकर करते हैं। आपने हमें पीर क्यों समझा? आपका सारा माल हमने चुरा लिया था। परन्तु वह हमें ढूंढ़ने पर नहीं मिला। उसी रात वहाँ पर लेटे तो सच्चे पातशाह के दर्शन हुए। वह सतगुरु हर जगह है। वह शब्द गुरु हर जगह है। अगर वह फकीर के चोले में भी आये। परन्तु वह हमेशा साथ है। वह ताकत ज़र्रे-ज़र्रे में है। जहां मर्ज़ी हो आकर खड़ी हो जाती है। गुरु नानक साहब कहते थे कि जब भी बीबी नानकी ने याद किया तो आ खड़े और खाना खाने लगे। भाई जोगासिंह वेश्या पर मस्त हो गये। उसके दरवाज़े पर अन्दरों निकलकर पहरा देने लगे। इसी तरह आपने अर्ज़ की कि पठान आये थे। कहने लगे उन्होंने तो माल चुरा लिया था। वह डाकू थे। हमने उनके पास से उठाकर रखा। यहाँ से जल्दी निकल जाओ। यह भयानक जंगल है। इसका नाम सतगुरु है। अगर शब्द गुरु न आये तो कौन वहाँ से निकाल सकता था? इसका नाम गुरु है। यह शब्द गुरु आये तो गुरवाही है नहीं तो कोई गुरुवाही नहीं। अगर नहीं तो कुछ भी नहीं। वो आता भी है फिर वह तसल्ली भी देता है। लेकिन हमें भरोसा

नहीं होता। भरोसा करके भी दुनिया भरोसा नहीं करती। हमने देखा है कि प्रेमी आते थे और तसल्ली लेकर भी भरोसा नहीं किया। वैद्य गोविन्द राम के यहाँ सुचान में सत्संग हुआ। जब सत्संग समाप्त हुआ, वहां का स्टेशन मास्टर परिचित था। शाम को वहां ले गए। प्रेमी को चाय पिलाई। रात सत्संग हुआ। जब चलने लगे तो टिकटें लीं तो गाड़ी आ गई। जब गाड़ी आयी तब मस्ताना जी एक तरफ खड़े हो गये। बातें कर रहे थे। जब वह बातें कर रहे थे गार्ड ने झंडी दी विसल दी। गाड़ी चल पड़ी। गार्ड ने देखा कि गाड़ी खड़ी है इंजन जा रहा है। वह उसी समय दौड़ा। लाल झंडी दे, विसल बजाये। इतने में इंजन फाटक से निकल सिग्नल तक चला गया। जिस समय ड्राइवर ने देखा उसी समय इंजन को खड़ा किया और फिर वापिस किया। वो जोड़ जो इंजन गाड़ी के साथ था, वह खुल गया था। वह हैरान कि गाड़ी रेवाड़ी से आयी है यह कैसे खुला कोई ऐसी बात है नहीं। फिर जब जोड़ा तब गाड़ी चलाई तो फिर वही हालत।

एक प्रेमीः बाबे कोल खड़ी इंजन नाल जावेगा इंजन चल पड़े गाड़ी वहाँ की वहाँ। वह सभी हैरान थे। जब स्टेशन मास्टर की नज़र पड़ी कि मस्ताना जी व संगत वहाँ खड़ी है। वह गार्ड कहने लगा यह तो कोई और कारण है जिसके कारण गाड़ी चल नहीं रही। वह मस्ताना जी के पास आये। वह स्टेशन मास्टर कहने लगा जी गाड़ी लेट हो रही है। आप गाड़ी में बैठो। मस्ताना जी कहने लगे चलो वरी भई गाड़ी च बैठो स्टेशन मास्टर विचारे दी गाड़ी लेट होनदी पई ए। जब बैठे तो गाड़ी चल पड़ी। इतना विश्वास दिलाया। सभी ने देखा परन्तु मन ने फिर भी विश्वास नहीं किया। थोड़ा हलवा बनाकर भण्डारा किया। तीन दिन तक लूट-लूट हुई। फिर भी मन ने विश्वास नहीं किया। यहाँ सचखंड बन रहा था। उस समय लोगों को वर्षा की ज़रूरत थी। कुछ ईंटें भी कच्ची थीं। मस्ताना जी कहने लगे जल्दी-जल्दी करो, वर्षा तब होगी जब यह काम खत्म हो जायेगा। वह बेचारा जल्दी-जल्दी करने लगा। जब सारा काम खत्म हो गया। वर्षा शुरू हो गई। फिर भी हमें यकीन नहीं आता। अब ताकत क्या करे? बोलो!

वह पूर्ण ताकत जिन रूहों पर आकर पड़ती है, उनको तसल्ली हो जाती है, बतलाती हैं। सोहबत में आकर पता चल जाता है कि यहाँ पर कोई ताकत है। कोई बादशाही ताकत है जिसको सब कुछ पता है। गुरु नानक साहब के समय कोडा राक्षस, सज्जन ठग वगैरह पूर्ण ताकत के समय सुधर गये। यहाँ हज़ारों हुए हैं। सैन्सी, बावरिये जैसे कौमें सीधी हुई हैं।

उनका काम कुत्ते-बिल्ले खाने फिर पीछे आते कि बाबा हमसे गलती हुई है। उनको पता चल गया कि अब यहाँ छुटकारा नहीं है। पता चला भी कि यहाँ सब कुछ है।

बोलो! जिसको आप तसल्ली दें। किसी के बस नहीं। यह रूहें बनी बनाई होती हैं। वह नसीबों वाली होती हैं। तो उन्होंने लिखा है :–

धुरि करमि पाईआ तुध जिन कउ सि नाम हरि कै लागै॥

कहते तो हम सभी हैं। अगर गुरु नानक साहब अब होते हम यह करते। डालियां देते थे। बड़ा कुछ करते थे, अगर कबीर साहब होते तो हम यह करते। अगर होते भी नहीं, करते सिर्फ मन की बातें ही बातें हैं। परन्तु यह नसीबों की बात है। उन्होंने ठीक ही लिखा है।

धुरि करमि पाईआ तुध जिन कउ सि नाम हरि कै लागै।
कहै नानकु तह सुख होआ तितु घरि अनहद बाजै॥

जो नसीब दरगाह से बने हैं। जो जो रूहें बनी होती हैं। उन खास-खास रूहों के लिए आते हैं। उनको आकर पकड़ते हैं। चाहे कितनी ही दूर बैठे हों, वहाँ आकर पकड़ लेते हैं। हमने देखा बम्बई, कलकत्ता से रूहें पकड़ी हुई आईं, पास के रह जाते हैं। क्योंकि उनके नसीबों में नहीं। पाकिस्तान बनने पर जहाँ भी बैठी थीं, वहाँ उनको दर्शन दिये।

एक महात्मा के सत्संग में कोई गया। वहाँ बातें कर रहे थे कि भई ताकत सच्चे सौदे चली गई है। उधर आगरे की तरफ कोई गया था। वहाँ से आये उस समय गदराने सत्संग था। वहाँ आया। यह जहां-जहां उसकी रूह होती है पकड़ लेता है। यह सब उनके इख्तियार में है। वह शब्द गुरु सारे ही व्यापक है। घट-घट की जानने वाला किसी हिसाब से ख़बर देकर उसको पकड़ के ले आना। फिर भी इतबार नहीं करता। यह प्रेमी बैठा है। बाजा बजाता और शब्द गाता। उस समय कीकरांवाली सत्संग था। कहने लगा मैंने जाना है। मस्ताना जी कहने लगे भई आप ने क्यों जाना है? कि कनक को पानी देना है। याद है भई कि कनक को पानी देना है। वह सूख रही है। पानी की बारी है। अच्छा मस्ताना जी कहने लगे फिक्र न कर बैठ। परन्तु मन कहां स्थिर रहता है कि बैठे। अगले दिन कहने लगे कि भई पानी लग गया खूब बारिश हुई। पानी भी लगा, कनक भी हुई फिर भी इतबार नहीं किया। फिर बेईमान गिर गया। बोलो! फिर भी गिर गया, यह नसीबों की बात है। चौधरी ख़्यालीराम कहां है? चौधरी का भाई बीमार पड़ा। आखीरी वक्त आया। घर के

किसी ने भी नाम नहीं लिया। चौधरी के साथ बात करता है या हंसराज के साथ। नाम लिया उसके साथ बात करता है। घर वालों के साथ बात नहीं करता। धर्मराय को ताकत नहीं, हिसाब नहीं मांगता।

धर्मराय हर का किया हरिजन सेवक के नेड़ ना आवे॥
साध संगत धर्मराय करे सेवा॥

जो सभी के फैसले करता है। वह सेवाधारी बन जाता है। कोई कामिल फकीर मिले, ऐसे नहीं। जिन रूहों ने नाम लिया है उनकी जिम्मेदारी सतगुरु पर पड़ जाती है। उनकी संभाल ज़रूर करता है। अगर कोई जीव नरकों में चला जाये, ऐसे खोटे करम किये हों, वहाँ से भी निकाल कर लाता है। गुरु नानक साहब का एक जीव नरकों में चला गया। गुरु नानक साहब जाकर बानी में लिखा हुआ, पर इतबार नहीं आता, अंगूठा डाला सभी नरक वासियों को जाकर निकाल लाए। जिन्होंने नरकों से निकलकर चौरासी भुगतनी थी, गधे, घोड़े, घास-फूस बनना था फिर जाकर मनुष्य जन्म मिलना था। वहाँ जिनको निकाला उनको सीधी मनुष्य जूनी मिली। काल भी जल्दी डर के मारे उन जीवों को नहीं छेड़ता। काल भी उनसे डरता है।

अफरियो यम मारिया न जाई। गुरु के सबदे नेड़े न आई।
सबद सुने तो दुरहु भागे। मतु हारे हरि जी ओ वेपरवाहा हे॥

वह किसी से नहीं डरता। सिर्फ शब्द गुरु से ही डरता है, और किसी से नहीं डरता। वह घोघड़ जिसको कबीर साहब कहते हैं। एक दिन घोघड़ आसी रे।

तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज॥

त्रिलोकी तक इसका राज है। सभी जीवों को खा रहा है। बस शब्द गुरु से डरता है। बाकी किसी चीज़ से नहीं डरता। अब गवाही दे गये और सामने बतला गये कि तेरे जांमन हाँ। फिक्र ना कर जिस चोले में सतगुरु आता है वही चीज़ है। वह शब्द गुरु है और कोई नहीं। अगर चोले में न आवे उस चोले ने तो काम नहीं करना। तसल्ली के लिए अन्दर वैसा चोला डालता है। चोला पाकर अपना असली रूप दिखाता है। भईया, आ भई, आ चल भई, इस तरह चल। यहाँ हमारे जैसा बन कर हमारे से प्यार करता है। जैसे अभी अर्ज़ की थीः-

जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे। हरि गुण गावहि रसन रसेरे।
उसतति करहि परहरि दुखु दालदु। जिन नाहिं चिंत पराई हे॥

कि जुगाँ जुग से मालिक के भेजे हुये संत आते हैं। वह हमें मीठे व प्यारे वचन सुनाते हैं। हमारे अन्दर मालिक से मिलने का शौक पैदा करते हैं। जिनसे अपने

अन्दर मालिक का प्रेम कमाया है, उसके द्वारा ही मालिक का प्रेम अन्दर आ सकता है।

जिन चाखया से त्रिप-तासया ओह रस जाने जिन॥
संत संगत मन बसे प्रभु प्रीतम बख्शंद॥
महापवित्र साध का संगु। जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु॥

उनकी सोहबत में जाकर मालिक का रंग चढ़ता है। फिर शौक पैदा होता है। पता लगता है कि ओहो! मेरी यहाँ पर कोई चीज़ नहीं। ना कौम, ना मज़हब, ना देश। यह मेरा देश नहीं। दुनिया इसमें उलझी पड़ी है। यह इसका देश नहीं, इसकी कौमें नहीं, ना मां है, ना बाप है। सभी लेने-देने के सम्बन्ध से इकट्ठे हुए हैं। इसका देश सचखण्ड अनामी है। इसकी कौम क्या है?

कहु कबीर इहु राम की अंसु।

हमने बाहर कौमें बनाईं। असली देश को छोड़ के यहाँ लड़-लड़ कर मरते हैं। असली चीज़ को भूल बैठे हैं। असली चीज़ को छोड़ दिया है। फकीर हमें यह सब चीज़ें छुड़ाते हैं। आकर हमें तसल्लीयां देते हैं। हमें सिखलाते हैं कि यह तेरा देश नहीं, मज़हब नहीं, सभी प्यार छोड़ दे।

उसतति करहि परहरि दुख दालदु जिन नाहि चिंत पराई हे।

वह कौन-सी चिंता लेकर आते हैं, कि हम तो जन्म-मरण के बन्धनों से निकल गये हैं। यह भी निकल जायें।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।
जीअ दानु दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।

कौन सा जियादान? जियादान कौन सा है? हमें तो पता ही नहीं, पढ़ तो लिया है। जियादान है क्या चीज़? हम मोह माया की बीमारी में फंसे हुए हैं। हमारी आत्मा इतनी कमज़ोर हो चुकी है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह ने इसकी मिट्टी पलीत कर रखी है। उठने की ताकत नहीं। इसके अन्दर इंजेक्शन करते हैं। जैसे कोई ज़्यादा बीमार हो उसके अन्दर इंजेक्शन करते हैं कि जल्दी ताकत आये व दवाई भी देते हैं। अगर मरीज़ दवाई न भी खाये वह जो इंजेक्शन है, खाली नहीं जाता। उसका असर नहीं जाता। इसी तरह फकीर इसके अन्दर इंजेक्शन करते हैं। वह नाम है। अगर सिमरन ना भी करे तो भी वह अन्दर कुछ ना कुछ असर करता रहता है। वह तन व मन में नहीं करते। वह सीधा आत्मा में करते हैं। वह अन्दर बैठे घुल-मिल करते रहते हैं। वह इंजेक्शन अन्दर ही काम करता रहता है। अगर

किसी के अन्दर थोड़ा सा ज़हर का इंजेक्शन कर दिया जाये, वह आखिर किसी न किसी दिन फूट जायेगा। वह ज़हर पैदा कर देगा। इसी तरह नाम का इंजेक्शन, वह मालिक का बख्शा हुआ फकीर ही कर सकता है, बाकी कोई नहीं।

गुर का सबद गुर थै टिकै, होर थै प्रकट न होइ ॥

जो अन्दर दरगाह में जाता है, मालिक के हुक्म से काम करता है। बाकी दो लफ्ज़ तो हर एक बता सकता है। लफ्ज़ कोई काम नहीं करते। अगर लफ्ज़ काम करते, किसी ने राम जपा, तो वह जप कर सभी पार हो जाते। कबीर साहब ने सतनाम जपाया तो सतनाम जप कर सभी तर जाते। गुरु नानक साहब ने वाहेगुरु जपाया, वह जप कर सभी तर जाते। कोई असर नहीं होता। वह कोई चीज़ हुक्म की नहीं। वह इंजेक्शन नहीं। यह ही ईसा ने कहा हैः—

That which is born of the flesh is flesh.

That which is born of the spirit is spirit.

जिस तरह आदमी से आदमी पैदा होता है, बच्चा पैदा होता है। इसी तरह जाग्रत आत्मा से आत्मा जागती है। वह इंजेक्शन है। वह नाम है। वह जिया दान है, उसका नाम जिया दान है। वह असली भक्ति का रंग चढ़ाने वाली है। वह ना भी जपा करे, वह उसके अन्दर घुलमिल-घुलमिल करती रहती है। फिर भी आकर संभालती है। यह नाम है। लफ्ज़ों का क्या है? वह तो यहाँ ही खत्म है। जिस वक्त मौत आई, सोचो! जब इसकी आत्मा निकलती है। निकलती-निकलती जब ज़बान पर आई तो बोलना बन्द हो गया। आंखों में आई तो देखना बन्द हो गया। कानों में आई तो सुनना बन्द हो गया। आगे आंखों के पीछे मन, चित्त, बुद्ध, अहंकार का स्टेशन है। वहाँ चितवना खत्म हो गया। इसके साथ क्या गया? बोलो! यह लफ्ज़ तो यहाँ ही रह गये।

बावन अक्षर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहिं।
ए अखर खिरि जाहिंगे ओइ इन महि नाहिं।

हम पंजाबी हैं। इंग्लैंड जायें तो यह बोली काम नहीं करती। वहाँ की बोली सीखनी पड़ती है। तो काम कर सकते हैं। अमेरिका जायें तो वहाँ की बोली सीखनी पड़ती है। तो वहाँ काम करेंगे। इसी तरह ये बोलियां वहाँ काम नहीं करतीं। वह और बोली है। सुक्ष्म मण्डलों की है। वह सीखनी पड़ती है। वह आगे काम देती है, कोई नहीं देती। ये लफ्ज़ यहीं रह जाते हैं।

द्रिसटमान अखर है जेता, नानक पारब्रह्म निरलेपा॥
वेद कतेब सबहुं ते बाहरा नानक का पातशाहु दिसै जाहरा॥

वह इंजेक्शन करते हें। वह नाम है। वह मुक्ति का दाता है। जब मस्ताना जी अन्दर गये क्या देखते हैं कि सावन शाह ही सतपुरुष की जगह काम कर रहे हैं। तो उन्होंने कहा कि सावन शाह कुल मालिक है। उन परम सन्तों का बख्शा हुआ खिताब है। इस बाडी से सब कुछ निकल गया है। उनका बख्शा हुआ है। मन्डी डबवाली सरदारी लाल साथ था। जब नाचने कूदने लगे मस्ताना जी ने फरमाया कि ठहरो भई! सुनो कि जब फकीर किसी चोले में होता है, जब ताकत चोले में है, उस समय कोई किसी तरह उसे खुश कर ले, नाच कर, कूद कर, चाहे भजन करके, जैसे भी खुश कर ले। उस समय गुड़ देकर सोना भी ले सकता है परन्तु बाद में जैसे सोना तोल कर देखता है, इसी तरह तोल कर देखता है। अभी अधिकारी नहीं बना। उस वक्त खुशी में कुछ कहला लो, नहीं बस। मस्ताना जी रात के समय बाहर सिमरण करने के लिए निकल जाते थे। यह कीमती बात है। याद रखो। हम नाम लेकर रख छोड़ते हैं। नाम का क्या फायदा, अगर उससे काम न लिया। और तो सभी जस हमने किये। यह करो। अन्दर प्रकट करना ही नाम है। अगर यह न किया, जिसके लिए इकट्ठे हुए हैं तो फिर बाकी क्या? अगर जपो तो आप को फौरन तसल्ली मिले। कोई जपता ही नहीं। अगर जपे तो तसल्लीयें मिलें। अगर ढाई घण्टे पूरा वक्त दे, तो फिर हउमैं की बीमारी दूर होती है। यह पूरा वक्त नहीं देता। फिर बीमारी कैसे जाये?

मस्ताना जी कहा करते थे कि आपने मस्ताना नहीं देखा। मस्ताने की देह देखी, मस्ताने का मन्दिर देखा, पर मस्ताना नहीं देखा, पर मस्ताना नहीं देखा। मस्ताना कोई और चीज़ है। मस्ताना कोई और चीज़ है। मस्ताना उस ताकत का नाम है। मस्ताने के अगर तुम दर्शन कर लो तो मुड़ कर घर न जाओ। कामी काम छोड़ दे, क्रोधी क्रोध छोड़ दे, बादशाह बादशाही छोड़ दे, वह ऐसी चीज़ है। उस ताकत पर ही नाम पड़ता है। वह शब्द गुरु। अगर वह असली चीज़ देखे। हम तो जिस वक्त बाहर आते हैं, देखते हैं। वह ही मीठी और प्यारी लगती है। असली चीज़ देखे वह कितनी मीठी और प्यारी है। हम तो बाहर देह के ही गुण गाते हैं। गुरु नानक साहब के आज तक गाते हैं। बीबी नानकी की रोटी कौन खायेगा? फलाना कौन करेगा? वह प्यार की

बातें। वह इतना प्यारा है, अगर देख लें तो पता नहीं क्या है। यह तो हम बाहर के जस करते हैं। अगर अन्दर देखें तो पता नहीं क्या-क्या करता है। ओहो!

मस्ताना जी कहते थे गुरु अन्दर, नाम अन्दर, तीर्थ अन्दर, अमृत अन्दर। भई वो रस लो। अन्दर चलो।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही।
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही।

फिर पता लगता है, अब तो मस्ती है। जब फकीर चोला छोड़ जाता है तो फिर होश आती है। सिमरण सहाई है, सिमरण सहाई है। याद रखो। सिमरण करो सुख पाओगें सेवा या सिमरण दो चीज़ें हैं। याद रखो दो चीज़ें काम देने वाली हैं सेवा या सिमरण। जो जो हम में नुक्स हैं वह दूर करो।

"धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा"

सत्संग

'काइआ कामणि अति सुआल्हिओ'

सत्संग के वचन

पाठी– काइआ कामणि अति सुआल्हिओ पिरु वसै जिसु नाले॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– इन्सान सारी दुनिया का सरदार है।

अवर जोनि तेरी पनिहारी। इसु धरती महि तेरी सिकदारी॥

यहूदी कहते हैं कि मालिक ने आदमी को अपने नमूने पर बनाया है। "Man is made in his own image."

जितनी दुनिया की कार्रवाई है, इन्सान के द्वारा चल रही है। क्या दरिया, क्या पहाड़, क्या जंगल, क्या बीयाबान, मोटरें, गाड़ियां, हवाई जहाज़, दूसरे जहाज़, डाक्टरी, इंजीनियरिंग जो भी है, जितने कारखाने दुनिया के सारे इन्सान के द्वारा चल रहे हैं। इन्सान को चलाने वाली, जिस्म को चलाने वाली चीज़ रूह है, इसके अन्दर है। उसको समुन्द्र कह लो, मुंबा कह लो, जहां से निकली है, आत्मा कह लो, वह सतगुरु, अकाल पुरुष, सतपुरुष वह भी इसके अन्दर है। गुरु अमर दास कहते हैं, काया को, रूह को एक स्त्री के उदाहरण के रूप में पेश करते हैं। इस प्रकार जो रिश्ता है रूह का और मालिक का, वह है ही। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा लेकिन गुरु अमर दास जी रूह को स्त्री के रूप में पेश करते हैं। कहते हैं कि काया के अन्दर रूह है। इसके अन्दर है, जिस्म के अन्दर रहती है। इसका पति अकाल पुरुष सतगुरु भी इसके अन्दर है। दोनों ही अन्दर रहते हैं। युगों के युग बीत चुके हैं लेकिन दोनों का मिलाप नहीं हुआ। यूं कह लो, स्त्री तथा पति एक ही सेज पर पड़े हैं, न स्त्री ने पति का मुंह देखा, न पति ने उधर मुंह किया। दोनों का मिलाप नहीं हुआ। क्यों? वह इसके अन्दर है, वह ढूंढ़ता बाहर। चीज़ इसके अन्दर, ढूंढ़ता बाहर है। यह बाहर बाहर फिरता है तीर्थों पर, ब्रतों में, मन्दिरों में, मस्जिदों में। यह ही कबीर साहब ने कहा है:

मुझ को कहां ढूंढे तू बन्दे मैं हूँ तेरे पास में।
न मन्दिर में, न मस्जिद में, न काशी कैलाश में।
न तीर्थ में, न मूर्त में, न एकान्त निवास में।
खोजी होय तुरन्त मिल जाऊं, एक पल की तलाश में।
कहै कबीर सुनो भई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में।

वह इसके अन्दर, यह फिरता बाहर है।

पिरु सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले॥ (मः 3/754)

कहते हैं अगर रूह का मालिक से मिलाप हो जावे, सुहागिन हो जावे। क्यों नहीं मिलता? पहले तो इसकी तलाश गलत है। वह इसके अन्दर है ढूंढ़ता बाहर है। यह ही पलटू साहब ने एक जगह लिखा है कि लड़का इसकी बगल में है, शहर में मुनादी करता फिरता है। पति तो पलंग पर अन्दर पड़ा है, यह बाहर पिया-पिया करती फिर रही है। चीज़ इसके अन्दर है। पहलां इसकी तलाश गलत है, दूसरे यह नालायक हो चुकी है। इसने मन के साथ प्यार डाला। इसके साथी कह लो, रिश्तेदार कह लो, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं। इंद्रियों के भोग भोगता है, उनके साथ प्यार डाल लिया है, उनके प्यार में फंसी हुई है, उनमें उलझी हुई है। उसको अन्दर नहीं जाने देते। पति के पास नहीं जाने देते। फिर मिले कैसे। अगर उनका प्यार छोड़े, अन्दर जाये, नौ द्वारे खाली करे, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ पर कुदरती तौर पर गुरु का शब्द संभाले। क्या? कुदरती तौर पर, कुदरती दरगाह में से एक आवाज़ आ रही है उस सतगुरु की। शब्द सुनाई दे रहा है, जिसे वेदों ने नाद कहा है। ऋषि-मुनियों ने आकाश वाणी कहा है। मुसलमानों ने कलमा कहा है, कलामें इलाही कहा है। वह शब्द वह नाम कह लो, आवाज़ उस मालिक की अपनी आवाज़ है। धुर दरगाह से आ रही है। उसमें कोई तबदीली नहीं होती। जिसको गुरु नानक साहब ने कहा—

आदि सचु जुगादि सचु। है भी सचु। नानक होसी भी सचु॥ (जपु/1)

हमेशा कायम है। उसमें कभी तबदीली नहीं हुई, कभी कम या अधिक नहीं हुई।

हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई।

यह ही मुसलमान फकीर बाहू ने कहा—

बाहू ए कलमां सानू यार पढ़ाया ज़रा न हुंदा लमा हूँ।

यह ही ईसा ने कहा है–

The grass withereth, the flower fadeth but the word of our God shall stand for ever.

क्या? कि घास सूख जायेगी, फूल मुरझा जायेंगे, सारी तबदीली हो जायेगी, लेकिन जो खुदा का लफ्ज़ है, वर्ड है, कलाम है, वह हमेशा कायम है। उसी ने सारी रचना की है।

सबदे धरती सबदे आकाश। सबदे सबद भइया प्रगास॥
सगली सृष्टि सबद के पीछै। नानक सबद घटे घट आछे॥

अगर यह गुरु अमर दास की तरह ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, वह सुनाई देने लग जाये। वह इसके घर का रास्ता है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभि थाइ॥

यह ही कबीर साहब कहते हैं–

सुरत शब्द में राखिये तब पहुँचे दरबार।
कहैं कबीर तहां देखिये बैठा पुरुष हमार॥

यह बाहर ढूंढ़-ढूंढ़ कर थक गया। यह बाहर जप-जप कर थक गया। अन्दर न गया। जब तक अन्दर वह शब्द नहीं मिलता, इसको वह रास्ता नहीं मिलता अन्दर।

प्राणी हरि जपि जनमु गइओ।
साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइयो।
बिन सबदे अँतरि अँधेरा, न वस्तु लहै न चूके फेरा॥

ये ही कबीर साहब कहते हैं। क्या?

शब्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाय।
द्वार न पावे शब्द का फिर फिर भटका खाये॥

चीज़ इसके अन्दर है फिरता बाहर है, तो कहां मिले?

पिरु सचे ते सदा सुहागणि गुरु का सबदु सम्हाले॥

अगर उस शब्द के साथ ताल्लुक पड़ जावे तो समझो मालिक से ताल्लुक हो जावे।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥

सारी इसकी सेवा, सारी भक्ति प्रवाण हो गई। हाँ जीः

पाठी– हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले॥ (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– और भक्तियां हैं लेकिन जन्म-मरण के बन्धन नहीं काटतीं। हम बहुत भक्तियां करते हैं। लेकिन जन्म-मरण के बन्धन काटने वाली एक ही भक्ति है, शब्द गुरु की, उस सच्चे नाम को प्रकट करने की। नाम कहो, शब्द कहो, वाणी कहो, अकथ कथा कहो, कीर्तन कहो एक ही चीज़ के नाम हैं। भाणा कहो, वह कुदरती मालिक की आवाज़ है। शब्द कहते हैं किसी आवाज़ को, नाम कहते हैं उसकी लहर को, धुन कहते हैं जो बारीक से बारीक हो जाती है। क्योंकि बोली है, इसलिए उसको वाणी भी कहा है। क्योंकि मालिक की कुदरती आवाज़ है जो सब रचना करती है, इसको हुकम भी कहा है, भाणा भी कहा है। एक ही चीज़ के नाम हैं। उसको अन्दर प्रकट करना ही असली भक्ति है। बाकी कोई भक्ति नहीं जो जन्म-मरण के बन्धनों से निकाले। हज़ारों कर्म-धर्म किये, हज़ारों पुण्य दान किये, हज़ारों नेक कर्म किये, जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटे, ज़रूर यम-दूतों के हाथ जाना पड़ेगा।

पुन्य दानु जो बीजदे, सब धर्मराइ कै जाइ।
बिन सतिगुरु जमकालु न छोडई दूजै भायि खुआई॥

यह ही कबीर साहब ने एक जगह लिखा है–

नेम धरम आचार यज्ञ तप यह उरले व्यवहारा॥

यह उरलियां उरलियां चीजां हैं।

जासे मिले अखण्ड मोक्ष सो मार्ग है न्यारा॥
काल जाल से बाचा चाहो, गहो शब्द तत्त सारा॥
कहहिं कबीर अमर कर राखो, जो परखो टकसारा॥

एक ही शब्द गुरु की भक्ति जो है इसको जन्म-मरण के बन्धनों से निकालती है, नहीं तो सबको काल खा गया। त्रिलोकी तक किसी को नहीं छोड़ा। बागड़ में हम जाते हैं, वहाँ शब्द बोलते हैं–

इक दिन घोघड़ आसी रे,
तीन लोक चौदह भवन में इस घोघड़ को राज॥

त्रिलोकी तक उसका राज है। चौदह भवन क्या? ब्रह्म लोक, शिव लोक, किसी को नहीं छोड़ा, सबको खा गया। इतनी बड़ी ताकत है। वह किसी को नहीं छोड़ता। वहाँ से निकालने वाला, बचाने वाला अन्दर सच्चा नाम है। उसकी भक्ति बचाती है। बाकी कोई बचाने वाला नहीं।

सोधत सोधत तत्तु बीचारिओ भक्ति सरेसट पूरी।
कहु नानक इक राम नाम बिन अवर सगल बिधी ऊरी॥

बाकी उरलियां उरलियां हैं। यही महात्मा चरणदास कहते हैं :

चार वेद कीये वेद ब्यास ने अर्थ विचार विचार।
ता मै निकसी भक्ति ही राम नाम तत्त सार॥

उस रमे हुए नाम की, वह नाम रेडियो वेवज की तरह सारे ही है। सारे ही है, जैसे यहाँ रेडियो वेवज हैं। कलकत्ते की आवाज़ है, बम्बई की आवाज़ है, अमरीका की आवाज़ है, सभी यहाँ हैं, लेकिन हम सुन नहीं सकते। जब हम रेडियो लेकर उसका स्विच लगाते हैं, तब सुन लेते हैं। इसी प्रकार उस मालिक की सारे आवाज़ें हैं। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। जब सारे ख़्याल निकाले, सारे ताल्लुक तोड़े, वह अति सुक्ष्म से सुक्ष्म आवाज़ है, तब वह सुनाई देती है। इस देह में से निकले, इसको जीवित मरणा कहते हैं।

जीवित मरै, मरै फुनि जीवै तां मुखांतरु पाये।
दादू पहले मर रहो, पाछे मरे सब कोये॥

मरने का मतलब यह नहीं कि कब्रों में चले जाना। उसमें होता उसी तरह है। जिस वक्त मौत होती है, क्या होता है? देशों के ताल्लुक टूट गये, कौमों के ताल्लुक टूट गये, यारों दोस्तों से ताल्लुक टूट गये, मां-बाप, बहन-भाई से टूट गये। यह उस देह में से निकल गया। इसी तरह यह जीवित ही इस देह में से निकले, जड़ चेतन की गांठ खोले, ख़्यालों को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, जब वह सुनाई देता है। पहले यह सख़्त मेहनत का काम है, वह तब हो सकता है अगर विषय विकार छोड़े, इन्द्रियों के भोगों से दूर हो, मन से मुकाबला करे। पहले सख़्त मेहनत की ज़रूरत है।

दादू रच मिच लागे नाम सिंउ, रात्ते मात्ते होई।
देखेंगे दीदार को सुख पायेंगे सोई॥

दादू साहब कहते हैं पहले सख़्त मेहनत की ज़रूरत है। मन का मुकाबला करने की ज़रूरत है। इनका प्यार छोड़ने की ज़रूरत है, विषय छोड़ने की ज़रूरत है, ख़्याल को अन्दर इकट्ठा करने की ज़रूरत है। जिस तरह एक बीबी लड़की को ससुराल भेजते हैं, मां-बाप को छोड़ना नहीं चाहती, बहन भाई को छोड़ना नहीं चाहती लेकिन जब वह एक दफा हो आये पति का सुख देख ले, फिर किसी को नहीं पहचानती। इसी प्रकार यदि एक दफा भी अन्दर चला जाये,

वहाँ पर ऐसी लज़्ज़त है जो ला ब्यान है, कहने-सुनने के परे है। यह फिर बाहर पहचानता ही नहीं। फिर आने का दिल ही नहीं करता जब वह लज़्ज़त लेता है। क्योंकि उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। इस वास्ते दुनिया की सारी लज़्ज़तें फीकी लगने लग जाती हैं। उसकी आशा तृष्णा समाप्त हो जाती है। मन काबू आ जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सो जाते हैं। हउमै मिट जाती हैं।

पाठी– वाहु वाहु पूरे गुरु की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी॥ (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– अब गुरु अमरदास साहब जिन्होंने मन से मुकाबला किया, देख लो! 72 साल की आयु तक कर्म, धर्म, जप, तप सब कुछ करते रहे। फिर गुरु अंगद साहब की शरण में आये। 12 साल पानी ढोया, दिन रात कड़ी से कड़ी सेवा करनी, रात को खूंटी के साथ केश बांधकर फिर भजन करना। फिर चीज़ को प्राप्त किया। वह प्राप्त करके फिर कहते, ''वाहु वाहु अन्दर अजीब कैफियत है, अजीब हालत है, अजीब लज़्ज़त है।'' बाहर उसका नमूना है ही नहीं। बाहर उसका कोई नमूना ही नहीं। यह ही भीखा साहब कहते हैं–

भीखा बात अगम की कहन सुनन में नाहीं।
जो जाने सो कहे ना कहे सो जाने नाहीं॥

कहते हैं, कहने-सुनने से परे है। वह ऐसी लज़्ज़त है, जिस प्रकार गूंगा गुड़ खाकर बता नहीं सकता इस प्रकार वह बता नहीं सकता। यह ही गुरु अंगद साहब ने कहा–

मिल संखीयां पूछें कोई कंत निशानी॥
रस प्रेम भरी कुछ कहन न जानी॥

कि जिस वक्त लड़की ससुराल गई, आई लड़कियों ने पूछा, ''पति के प्यार का सुख कैसा है।'' क्या बताये? कहते, क्या बतावे? कहने-सुनने से दूर है। उसका बाहर नमूना ही नहीं। बाहर क्या है? मादा। वह मादा नहीं, रुहानियत है, कलामे इलाही है, वांगे असमानी है, गुरु बाणी है, धुर दरगाह से आ रही है।

पूरे गुरु ते उपजी साचि समाणी॥ (मः 3/754)

धुर दरगाह से आ रही है। सच खण्ड अनामी से आ रही है। उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं है। अगर यह उनकी तरह ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, नौ दरवाज़े छोड़े तब उस वाणी के साथ ताल्लुक पड़ जावे। मीठी से मीठी है। इसके अन्दर शांति आ जावे, सब अग्नियाँ बुझ जावें। यहाँ दिल की सफाई की आवश्यकता है। यहाँ दिल की सफाई की आवश्यकता है। जिसने दिल साफ

कर लिया, जिसने सारे ख़्याल निकाले, हृदय पवित्र कर लिया, सब ख़्यालों से दूर हो गया। एक महात्मा ने लिखा है यदि तूने मालिक से मिलना है फिर क्या कर? पहले विषय विकार छोड़, दुनिया के पीछे भागना छोड़ दे, सिमरण कर, साथ में दीनता व नम्रता रख। फिर तुम तरक्की कर सकते हो, नहीं तो नहीं। जिसने यह काम किया वह अन्दर चला गया। उसकी रूह अन्दर लग गई। जब मिलना है, इसको अन्दर से मिलना है, बाहर से नहीं। असली मन्दिर यह जो मालिक का बनाया, यह शरीर है।

हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि प्रगतु होइ।

यह ही ईसा ने कहा है।

"Body is the temple of God."

यह देह ही मालिक का असली मन्दिर है। मालिक ने आप बनाया है। बाहर मन्दिर हमने आप बनाये हैं। यह ही मुसलमान फकीर कहते हैं–

मसजिदे कोरां जे आबोगिल बबद।
मसजिदे साहिब दिलां दर दिल बबद॥

कि जाहिलों की मस्जिद मिट्टी और पानी की बनी हुई है, कि साहब दिलों की यह दिल है।

दिले बदस्त आवर की हज अकबर अस्त।
हज हज़ारो काबा यक दिले बहतर अस्त॥ (मोलवी रुम)

सौ हज करे, एक हज अकबर होता है। कहते हैं फिर किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं अगर दिल की सफाई करे। दिल की सफाई करने के लिए दुनिया के ख़्याल निकालने वास्ते फकीरों का बताया हुआ सिमरण, इससे आला कोई चीज़ नहीं है।

प्रभु के सिमरिन मन की मलु जाये।
अँम्रितु नामु रिद माहि समाइ॥

ख़्यालात को निकालने के लिए ही यह सिमरण है और नहीं। लेकिन नाम कोई और चीज़ है, वह अन्दर जा कर मिलती है। हाँ जीः

पाठी– काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला। **(मः 3/754)**

मैनेजर साहिब जी– देखने को तो यह काया 5-6 फुट की है परन्तु अजीब खेल है इसके अन्दर, अजीब रचना, इसको पता नहीं। सब खण्ड ब्रह्मांड इसके अन्दर हैं। दरिया, पहाड़ इसके अन्दर हैं। देवी-देवते इसके अन्दर हैं। राम, कृष्ण इसके अन्दर हैं। जब कृष्ण भगवान ने विराट स्वरूप दिखाया, देवी-देवते अन्दर दिखाये।

सब इसके अन्दर हैं। एक मुसलमान मौलवी रुम के पास बहस करने वास्ते आया। आखिर फकीरों के साथ होती रही है। फकीरों के मुखालिफ ही रहे हैं वह शरीयत वाले। क्यों? फकीर देख कर कहते हैं। वे किताबें पढ़ कर कहते हैं। तब उन्होंने कहा, जिस वक्त वह आया, अभी बोलने ही नहीं लगा। कहने लगे ''अगर तुम आधी रात को सूरज देखते हो मेरे साथ बात कर, नहीं तो बात न कर।'' अगर आधी रात को सूरज देखता है तो मेरे साथ बात कर, नहीं बात ही न कर। वह कहता हज़रत आधी रात को भी कोई सूरज देखता है!

जुज रुहाने पाक ऊरा शरक नै॥

दर तलू-अश रोजो शक रा फरक नै॥

कि वे पाक रुहें जो अन्दर जाती हैं, वे देखती हैं। उनके अलावा कोई नहीं देखता। जब वह चढ़ता है, दिन रात की तमीज नहीं, हर वक्त चढ़ा रहता है। यही गुरु नानक साहब ने बच्चों को कहा था आधी रात को। 'देखो भई, सूरज चढ़ा है? उन्होंने कहा ''जी नहीं चढ़ा है।'' जब गुरु अंगद साहब से पूछा, वे कहने लगे, ''हां जी, चढ़ा है।'' इसके अन्दर है, इसके अन्दर है। वह चुप करके चला गया। उसने देखा था इसके अन्दर है, सब कुछ है, तसल्ली है, सब कुछ है। यह ही कबीर साहब ने एक जगह लिखा है–

या घट भीतर सूरज चन्दा, याही में नौ लख तारा॥

या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुर द्वारा॥

सब कुछ इसके अन्दर है। यह ही कबीर साहब ने, उनके पास बहस करने के लिए आये, उन्होंने भी यही पूछा–

तेरा मेरा मनवा एक कैसे होई रे॥

कबीर साहब कहते–

मैं कहता हूँ आंखों देखी, तूं कहता कागद की लेखी॥

सारी दुनिया पढ़ा हुआ कहती है और फकीर देख कर कहते हैं। यह आलम फाज़िलों की बात नहीं, यह ज्ञानियों का मजमून नहीं, यह अन्दर जाने वालों की बात है। जो मेहनत करके अन्दर जावे तो वह देखे। सूरज चांद तारे सब कुछ इसके अन्दर हैं। वह सतगुरु इसके अन्दर है, सब कुछ इसके अन्दर है, कोई चीज़ ऐसी नहीं । डॉक्टरी इसके अन्दर से निकली, सोच लो! सारी चीज़ इसके अन्दर हैं। इसी प्रकार वह राम, वह रमी हुई ताकत, वह भी इसके अन्दर है। जिस तरह दूध में घी है, फूल में खुशबू है, मेहन्दी में रंग है, सब कुछ इसके अन्दर है। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो ना हो इसके अन्दर।

पाठी– काइआ अंदरि सभु किछु वसै, खँड मँडल पाताला॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– यहाँ शायद कोई डाक्टर कहे, बहुत मुर्दे चीरे हैं, अन्दर तो कुछ नहीं देखा। जब मुर्दे चीरे पर देखा कुछ नहीं। वे भी ठीक कहते हैं। लेकिन वह मादा नहीं, वह मादा नहीं। वह मन के पर्दे के पीछे है। रेडियो में से आवाज़ आती है, अगर रेडियो को तोड़ो कोई आवाज़ देने वाला नहीं, न आवाज़ है। इसी तरह चीर फाड़ कर कुछ नहीं मिलता। अगर मन काबू करे, मन को मारे, मन को बस में करे, मन के पर्दे के पीछे सब कुछ है।
पाठी– काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– कहते, वह मालिक जो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है, ज़र्रे-ज़र्रे को ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है, वह इसके अन्दर है। सबकी प्रति पालना कर रहा है, वह इसके अन्दर है, बाहर नहीं। जब मिलना है अन्दर। हम फिरते हैं बाहर मन्दिरों में, मस्जिदों में, तीर्थों पर, कभी गंगा पर, कभी यमुना पर, कभी कहीं, कभी कहीं। गुरु अमर दास जिनकी यह बाणी है, वे भी पहले गंगा को ही मुक्ति की दाता समझते थे। लेकिन जब देखा, अन्दर खोजा तो चीज़ अन्दर से मिली। वह असली गंगा भी इसके अन्दर है। अमृतसर भी इसके अन्दर है। वह प्रयाग भी इसके अन्दर है।
पाठी– ''काइआ अंदरि अमृतसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई है॥''
मैनेजर साहिब जी– जो आत्मा की मैलों को साफ करने वाला सब कुछ इसके अन्दर है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।
बैणी संगमु तह परागु मनु मजनु करे तिथाई॥

वह असली प्रयाग भी इसके अन्दर है। बाहर फकीरों ने आकर नमूने बताये हैं। नमूनों में फंस गये हम। असली चीज़ इसके अन्दर है।
पाठी– काइआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– कहते, रूह कब सुहागिन होती है, जब अन्दर नाम को प्रकट कर ले, गुरमुख बने, गुरमुखता का कोर्स करे। गुरमुख कब बनता है? रूह पर तीन शरीर हैं। पहला कारण शरीर है, उसके ऊपर सुक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर स्थूल है जो हम देखते हैं। मन माया के पर्दे हैं। यह सारे पर्दे तोड़, अन्दर जावे, नाम के तीर्थ पर नहावे, अमृतसर में नहावे, अन्दर जावे, नाम को प्रकट करे, तब यह गुरमुख बन जावे, तब मालिक मिलता है, नहीं तो नहीं। जब भी मिलना है अन्दर से मिलना है। नाम प्रकट करने से मिलना है। गुरमुखता का कोर्स

करने की आवश्यकता है। अन्दर जाने की आवश्यकता है। हाँ जीः

पाठी– काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिया जाई॥ (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं वह अलख, अलख कहते हैं जो लखा ना जावे, देखा न जा सके। कहते, वह अलख जिसको दुनिया अलख अलख कहती है, वह भी इसके अन्दर है। दुनिया ढूंढ़ती है बाहर, उन्हें मिला नहीं, इस वास्ते वे कहते हैं अलख, अलख, अलख। अब जब तक न मिले, सुहागिन नहीं होती। वे बाहर ढूंढ़ते रहे, वह मिला नहीं। वे अलख अलख कह कर दूर हो गये। गुरु अमरदास कहते हैं जिसको वे अलख कहते हैं उसे लखना है। उसको लखना है। Invisible (अलख) को visible (लख) करना है। देखने से पूरा पड़ता है। गुरु नानक साहब कहते हैं हमने देखा है।

वेद कतेब सबहूं तो बाहरा॥ नानक का पातशाह दिसे जाहरा॥

ग्रन्थों, शास्त्रों सब से परे है। है ज़रूर हम खुला देखते हैं। यही ईसा ने कहा–

'Be hold the Lord'

यही–

सँतन की सुन साची साखी॥ सो बोले जो पैखे आखी॥

गुरु अमरदास कहते हैं–

अदृष्ट अगोचरू अलखु निरंजनु। सो देखिया गुरमुखि आखी॥

कहते हैं जो इन आंखों से देखा नहीं जाता जो अगोचर, क्या? हाथों से छुआ नहीं जाता, आंखों से देखा नहीं जाता, कानों से सुना नहीं जाता, जिसकी आवाज़, वह इसके अन्दर है जिसको अलख कहते हैं। गुरमुखों ने देखा है। किसी ने नहीं देखा। स्वामी विवेकानन्द मानते ही नहीं थे परमात्मा को, परमहंस राम कृष्ण के पास गये।

"Master have you seen the God."

कि क्या आपने खुदा को देखा? वह कहता है, हाँ मैने देखा, अच्छी तरह देखा, जिस तरह आपको देख रहा हूँ बल्कि उससे अच्छी तरह देख रहा हूँ। उसी वक्त वह मान गया। फिर कहने लगा "मुझे बचा लिया आप ने नहीं तो मैं निंदक हो जाता मालिक का।" काफिर था। वह इसके अन्दर है। लेकिन वे आंखें और हैं, इन आंखों से देखा नहीं जाता।

नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मापिरी॥

वह आंख बन्द पड़ी है। हम को पता नहीं उस आंख का जिसको हम शिव नेत्र कहते हैं। वह खुले फिर मिले। यह खोलता नहीं, अन्दर जाता नहीं, फिर मिले

कहां? वह आंख इसके अन्दर है, वह खोले तो मिले। बाहर कितनी ही भाग दौड़ कर लो, नहीं मिलता। जब मिलता है, वह आंख खोलेगा तो मिलता है। वह इन आंखों से देखा नहीं जाता।

अखीं बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरां बाझहु चलना विणु हथां करणा॥
जीभै बाझहु बोलना इउ जीवित मरना॥
नानक हुक्मु पछाणि कै तउ खसमें मिलणा॥

वह इन आंखों के साथ देखा नहीं जाता। इन कानों से उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती। इस ज़बान से उसका यश नहीं होता। वह कुदरती हुकम है, शब्द है, नाम है, एक बोली है। यह जीवित मरे तो सुनाई देती है। फिर यह देखा जाता है जब वह आंख खुले।

है घट में सूझत नहीं, लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी इस संसार को, भया मोतिया बिन्द॥

क्या? इसके अन्दर है लेकिन उस आंख पर मोतिया बिन्द है। हम आंख पर मोतिया बिन्द का फिक्र करते हैं, उसी वक्त भागते हैं। उसका किसी को फिक्र नहीं। युगों युग से बन्द पड़ी है। वे कान युगों युग से बन्द पड़े हैं। यह ही फिर कहते हैं–

बिन पग चले, सुने बिन काना॥

यह पैर वहाँ काम नहीं करते, ना यह हाथ काम करते हैं, ना आंखें करती हैं, ना ये कान करते हैं। ना कोई चीज़ है। बोली काम नहीं करती। यह स्थूल चीज़ है, अस्थूल में काम करती है। अन्दर सुक्ष्म मण्डलों में वह काम नहीं करती।

बिन पग चले, सुने बिन काना।
कर बिन कर्म करे विधि नाना॥

अन्दर और है चीज़। हाँ जीः

पाठी– मनमुखु मुगधु बुझै नाही बाहरि भालणि जाई॥ **(मः 3/754)**

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जो मनमुख हैं, मन के कहने में चलते हैं, मुगध हैं, गंवार हैं। वे बाहर ढूंढ़ते हैं, बाहर है नहीं। जब मिलना है, अन्दर मिलना है। बाहर नहीं मिलना। चीज़ इसके अन्दर है, फिरता बाहर है, कहां मिले? इसकी तलाश ही गलत है। अगर राह होवे पूर्व को, चले पश्चिम को, चाहे कितना ही दौड़ा जावे दूर ही दूर होते जायेंगे। जितना हम बाहर ढूँढते हैं, उतने दूर ही दूर हैं। दूर ही दूर होते जाते हैं। चीज़ इसके अन्दर है। जब मिलनी है अन्दर ही मिलनी है, बाहर से नहीं। जिसको मिली अन्दर मिली है। जब मिलेगी अन्दर मिलेगी।

पाठी– सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– कहते हैं अगर सतगुरु को, सतगुरु सेवे, क्या? अगर सतगुरु को अन्दर प्रकट करे, उसको शब्द पकड़ावे, कौन सा? जो कि मालिक की कुदरती आवाज़ है। उसके साथ इसकी सुरत लगे तो वह सीधी सड़क है, जनरेली सड़क है जो अनामी से आ रही है। अगर उसकी आवाज़ के पीछे जावे तो वह सीधा दरगाह में ले जाती है। ब्रह्म लोक, शिव लोक, इन्द्र लोक, ब्रह्म देश, पार ब्रह्म देश, सौहँग देश; सब को पार करती मालिक की दरगाह में ले जाती है।

गुरमुखा नो पंथ परगटा दरि ठाक न कोई पाइ॥
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ॥
अनहद धुनी दरि बजदे दरि सचै सोभा पाइ॥

मालिक की दरगाह में ले जाती है सीधी। हाँ जीः

पाठी– काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– कहते, इस काया में बड़े-बड़े खण्ड ब्रह्माण्ड हैं, रिद्धियां-सिद्धियां हैं, बेशुमार ख़ज़ाने हैं, आनन्द, दौलतों के भण्डार हैं पर इनको पता नहीं। अजीब चीज़ है, अजीब ख़ज़ाने हैं, सब कुछ इसके अन्दर रखा हुआ है। यह दुनिया भी इसके अन्दर है, सब कुछ है। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो इसके अन्दर। जो मालिक में गुण और सिफ्तें हैं, सब इसके अन्दर हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो नहीं। हाँ जीः

पाठी– इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥ (मः 3/754)
मैनेजर साहिब जी– कहते हैं, अन्दर नउ खण्ड पृथ्वी, खण्ड ब्रह्मांड इसके अन्दर हैं। दरिया, पहाड़ सब कुछ इसके अन्दर हैं। एक मुसलमान फकीर हुआ है मौलवी रुम, वह कहता–

अन्दरआं बहरो बियाबांब जवाल।
सकता में गरदन्द ओहामो ख़्याल॥

कि इसके अन्दर बड़े-बड़े समुद्र हैं, बीयाबान हैं, जंगल हैं, जिसकी बाबत हम बहम व ख़्याल नहीं कर सकते।

ईं बीयाबां दर बीयाबां हाय उ।
हम चू अन्दर बहरे पुर राक तारे मू॥

कि ये दुनिया इस प्रकार है जैसे कि समुद्र में एक बाल। जो इसके अन्दर ख़ज़ाने हैं, ये दुनिया समुद्र में एक बाल के बराबर भी नहीं। भाई गुरदास ने लिखा है कि रोम-रोम में त्रिलोकी की रचना रखी हुई है। रोम-रोम में त्रिलोकी की रचना

है। हाँ, सोच लो! जहां त्रिलोकी है वहाँ त्रिलोकी नाथ भी है। यह ब्रह्मा, विष्णु इसके अन्दर हैं। सोच लो!

रोम रोम में रखयो कर ब्रह्मण्ड कोट शुमारा।
इक इक ब्रह्मण्ड मै दस दस अवतार अवतारा॥

फकीरों ने देखकर लिखा। रोम रोम में इतना बड़ा खेल है, इसके अन्दर मालिक ने रखा, इसको पता कोई नहीं। फिर ये कहते हैं कि एक आसमान से दूसरे आसमान को पौड़ियां लगी हुई हैं। पौड़ी पौड़ी चढ़कर मालिक की दरगाह में जा सकता है। ये यूं ही नहीं गुरु नानक साहब ने भी लिखा, जब काज़ी रुकनदीन ने पूछा कि खुदा कहां रहता है? उसके महल के कितने दरवाज़े हैं? कितनी खिड़कियां हैं? उस वक्त उन्होंने फरमाया, कहते—

नौ दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल।
हौज़ हयाती पुर भरे, तिस विच कमल अचल॥

यह कोट है बाहर जैसे किले के बाहर होता है, महल के आगे कोट है। इसके नौ दरवाज़े तो बाहर हैं, अन्दर दसवां महल का, अन्दर जाने का है। इसके अन्दर बड़े-बड़े हौज हैं, अमृत से भरे हुए हैं। सबसे आला जो है वह कमल का है, जिसको हम दसवां द्वार कहते हैं। फिर कहते हैं, बावन किंगरे हैं। हर एक किंगरे पर तोपची बैठे हैं।

किंगरे किंगरे तोपची, वड़न न दिंदे किस।

तोपची किंगरे पर होते हैं। महल में उन तोपचियों के लिए सुराख होते हैं। तोपों वाले बैठे होते हैं कि भई दुश्मन हमला न करे, अन्दर न जावे। इसके अन्दर भी तोपची बैठे हैं। किंगरे किंगरे पर बैठे हैं। बोलो! किसी को पता नहीं। वे अन्दर आने नहीं देते। वे बाहर ही बाहर धकेले फिरते हैं। वे बाहर ही बाहर धकेले फिरते हैं। पता ही नहीं, इतना बड़ा खेल इसके अन्दर है।

सौदा करे सो जाने साधो काया गढ़ खूब बाजार।
या काया में धनी बिराजे, तिन का उठ बाहर पहाड़।
या काया में हाट लगाए बैठे शाहूकार।
या काया में चोर फिरत है लुच्चे ढीठ लबार।

सब कुछ इसके अन्दर है। कोई चीज़ ऐसी नहीं। बड़े-बड़े दुश्मन इसके अन्दर पड़े हैं। वे अन्दर नहीं जाने देते। हाँ। सोच लो।

सात समुन्द्र खाईयां नदियां अँत न पार।
कई रखवाले सूरमें प्यादे ते असवार॥

पाठी– इसु काइआ अंदरि नाम नउ निधि पाईये गुर के शब्द वीचारा।

मैनेजर साहिब जी– कहते वह नाम जिससे यमदूत डरते हैं, जो मुक्ति का दाता है, वह भी इसके अन्दर है। जो त्रिलोकी तक सब को खा गया, वह भी इसके अन्दर है।

जीआ रे ओल्हा नाम का।
अवरु ज़ि करम करावनो तिन महि भउ है जाम का॥

हज़ारों पूजा-पाठ, पुण्य-दान, हज़ारों कर्म-धर्म, जप-तप करे, यमदूतों से छुटकारा नहीं होता। यमदूतों से छुड़ाने वाला नाम वह भी इसके अन्दर है। जब मिलेगा अन्दर ही मिलेगा।

काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाइ।

दुनिया बाहर बाहर फिरती है। वह इस दुनिया की चीज़ नहीं। असली नाम इस दुनिया की चीज़ नहीं। न ही लिखने पढ़ने की चीज़ है।

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहीं जानता।
निंह अछर निंह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

पलटू साहब भी यही कहते हैं कि नाम इसके अन्दर है। सभी ख़ज़ाने इसके अन्दर हैं। मीराँ कहती हैं–

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो।
जिसको पाये दुःख सुख भूले मन आनन्द रे समायो॥
जिसकी चोरी कबहूँ न होये ऐसो धन मैंने पाइयो।
खर्चूं लाख खत्म न होय दिन दिन बढ़त सवायो॥

हम गुरुद्वारों में आनन्द साहब का रोज़ पाठ करते हैं।

साचा नामु मेरा अधारो।
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ।

वह भूख गँवाने वाला भी इसके अन्दर है। सोच लो! कभी सोचा ही नहीं। भूख ही नहीं मिटी। यह इसके अन्दर है। वह इस दुनिया की चीज़ ही नहीं। सुक्ष्म मण्डलों की चीज़ है। जब अन्दर जाये तो उसे पता लगे।

पाठी– इस जग महि नाम अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ।

मैनेजर साहिब जी– नाम किसी गुरमुख के अन्दर प्रकट होता है। उसी के द्वारा सीखा जाता है।

पाठी– काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा। **(मः 3/754)**

मैनेजर साहिब जी– हम एक छोटे से घर की सफाई वगैरह का सभी इन्तजाम

करते व रखते हैं। इसके अन्दर बहुत बड़ा खेल है। उसने बादशाह व वज़ीर बना रखे हैं जो इसके अन्दर हैं। उसने नाज़िम, नायव रखे हैं। तहसीलदार भी रखे हैं। जैसे नगरपालिका सारा इन्तज़ाम करती है, इस तरह इसके अन्दर भी सारा इन्तज़ाम है। मालिक ने सब इन्तज़ाम इसी के अन्दर रखा है लेकिन हमें पता नहीं। हमें इतना भी पता नहीं कि रोटी का लुक्मा जो हम खाते हैं कहां जाता है! सोच लो! इतना बड़ा जो खेल चल रहा है, इतना बड़ा जो आडम्बर है, रोम-रोम में त्रिलोकी है। कोई है ना इसका इन्तजाम करने वाला। इसके अन्दर भी सभी कुछ है। बड़े-बड़े समुद्र नदियां इसके अन्दर हैं। कोई उनका इन्तजाम करने वाला भी है। वहाँ भी इतना बड़ा खेल है जो इसके अन्दर है।

पाठी– इहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा। **(मः 3/754)**

मैनेजर साहिब जी– इसके अन्दर अजीब खेल मालिक ने पाया है। काल के हाथ दिया है। काल ने मन एजेन्ट ऐसा छोड़ा है, जो इसको अन्दर जाने नहीं देता। यह उल्टे रास्ते ले जाता है। मन के बिना हम त्रिलोकी तक कोई काम नहीं कर सकते। हमें इसको साथ रखना पड़ता है। अच्छा या बुरा कर्म इसी के साथ करना पड़ता है। भजन भी इसके साथ ही करना पड़ता है।

कबीर मन तो एक है भावें जहाँ लगाये।
भावें गुरु की भक्ति कर भावें विषय कमाये॥

मन को साथ रखना पड़ता है। इसके बिना हम कोई काम नहीं कर सकते। अब यह उल्टे रास्ते चलता है।

मन ही माया उपजै मन ही माया जाई।
मन ही राता राम सिउ मन ही रहा समाये।

मन को समझा कर अन्दर रास्ते पर लायें, क्योंकि यह बाहर-बाहर फिरता है। समझा कर ही सीधे रास्ते अन्दर ले जायें। सोच लो! यह बाहर बाहर फिरता है। अन्दर जाता ही नहीं। इसकी आदत बदलो। अन्दर जाये, सिमरण करके नौ द्वारे छोड़े इसको सभी ख़ज़ाने मिल जायें। जब यह नाम इसको मिल जाये तो अन्दर सारे ख़ज़ाने आ जायें जो कि वह बहुत कीमती चीज़ है। अब यह दुश्मन है फिर यह एक अच्छा मित्र बन जाए। इसको आनन्द आने लगता है। फिर यह आप ही भजन करने को कहता है।

एहो नफस असाडा बेली जे नाल असाडे सिद्धा हू।
जो कोई इस दी करे तबाही उस नाम अल्ला दा लध्धा हू ॥

पहले सब कुछ तबाह करने की आवश्यकता है, मुकाबला करने की

आवश्यकता है। जब एक दफा अन्दर रस लेता है, फिर कहता है, हाँ भई वाह। अब यह उल्टे रास्ते चलता है। बाहर बाहर फिरता है अन्दर नहीं जाता।

ऐ मन मारे साध को, ऐ मन मारे पीर।

देख लो! शृंगी ऋषि वगैरह जिन्होंने, अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किये, वे अन्दर नहीं जा सके। उनको खा गया। बड़ी-बड़ी ताकतों को खा गया। इसी को गुरु नानक साहब ने कहा है :–

पाठी– मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।

मैनेजर साहिब जी– यह छोटी हस्ती नहीं, त्रिलोकी का मालिक है। अगर अपनी स्टेज पर पहुँच जाये, बड़ी हस्ती है।

पाठी– मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– जब यह अन्दर नाम को प्रकट करे, अन्दर रस ले, यह मन एक अमूल्य चीज़ हीरा जवाहरात व रत्न है। अगर नहीं लेता, बाहर यह एक भंगी है। बाहर यह गन्दगी के अन्दर फिर रहा है। इसका कोई मूल्य नहीं। हमें धक्के खिलाता है। अगर यह अन्दर चला जाये तो यह अमोलक वस्तु है। यही महात्मा चरणदास कहते हैं :

मन ने आप गंवाया गिआन बुझाया दीव।
करम लगा भरमत फिरि ओ मिला न अपना पीव॥
दौड़ दौड रस और ही होय रिहा कंगाल।
नातर आगे भूप था ऊंचा बड़ा दिआल॥

यह खुद बादशाह था। त्रिलोकी का मालिक था। विषय विकारों में फंस कर आत्मा को भुला दिया, भुला दिया। खुद अपनी हस्ती को ही भूल गया। इसको होश नहीं रही।

पाठी– गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै, होर सभ भरमि भुलाई। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– गुरु अमर दास जी कहते हैं, गुरमुख बनो। काया खोजो, अन्दर जाओ, शिव नेत्र खोलो, अन्दर के पर्दे तोड़ो, अन्दर नाम प्रकट करो। बाहर सब ही भ्रम है। सिवाये इसके कुछ नहीं। जब तक अन्दर नहीं जाता भ्रमों से नहीं निकलता।

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भरम की काई।

जब तक यह बाहर भ्रमों में है, इसके अन्दर तसल्ली व शांति नहीं आती। ईसा ने कहा है।

"Know thy self and be perfect."

अपने आप को पहचानो और पूर्ण बनो। सिमरण करके ख़्याल को आंखों

के पीछे इकट्ठा करे, अन्दर जावे इसके अन्दर शांति आ जाये। अगर नाम की अन्दर लज़्ज़त ले ले, दुनिया के सारे झगड़े मिट जावें। काम, क्रोध की आग बुझ जावे। शांति आ जावे। सब झगड़े खत्म हो जायें।

हिल मिल खेलूं शब्द में अन्तर रही न रेख।
समझे का मत एक है क्या पन्डित क्या शेख॥

फिर न कोई दुश्मन न दोस्त, न बेगाना, न दुःख, न सुख, न उस्तति न निन्दा की परवाह रहती है। जब अन्दर शांति आ जाए तो किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती। जब मन काबू आ जाये, सभी अग्नियां बुझ जाती हैं।

पाठी– जिस नो देईं सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– अगर इसके कोई पूर्व जन्म के अच्छे कर्म हों, अच्छे नसीब हों, मालिक की कृपा हो, इसको कोई कामिल फकीर मिले, अन्दर नाम प्रकट करे तो है, वरना नहीं। यह अक्ल, चतुराई या पढ़ने-पढ़ाने का काम नहीं। जब भी नाम मिलेगा फकीरों के द्वारा मिलेगा।

जिसु वखर कउ लैनि तूं आइआ।
राम नाम संतन घरि पाइआ।

पलटू साहब भी यही कहते हैं–

सन्त सनेही नाम है नाम सनेही सन्त।
नाम सनेही सन्त नाम को वही मिलावें॥
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें।
जप तप तीर्थ वरत करे बहुतेरा कोई॥
बिना वसीले संत नाम से भेंट न होई।

चाहे जितने भी यत्न करो, नाम नहीं मिलता। जब भी मिलना है, फकीरों के द्वारा ही मिलना है, जिन्होंने अन्दर प्रकट किया है। यह दौलत सीना बसीना आती है, कागजों में नहीं। ग्रन्थों शास्त्रों के अन्दर नाम की महिमा है। जब भी नाम मिलेगा अन्दर ही मिलेगा। हम रोज़ पढ़ते हैं :–

धुरि करमि पाईआ तुध जिनि कउ सि नाम हरि कै लागै।
कहै नानकु तह सुख होआ तितु घरि अनहद बाजै॥

जिन्हें धुर दरगाह से हुकम हो वह इस रास्ते पर चलते हैं। उनके अन्दर अनहद आता है। उनके अन्दर सच्चा नाम आता है।

पाठी– काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– इस काया के अन्दर दो विचित्र पदार्थ हैं, डर व प्रेम। इन

दोनों पदार्थों का हमें पता नहीं। इनके अन्दर विचित्र दौलतें हैं। जिसको मालिक का डर है, उसे प्रेम भी है। जिसको प्रेम है, उसे डर भी है कि कहीं मालिक नाराज़ न हो जाये। जिसके अन्दर ये दोनों दौलतें आ जायें। मालिक उन पर दया करता है। उस पर ही मालिक की दया होती है। नहीं तो किसी पर नहीं होती। एक मुसलमान फकीर के पास दो आदमी नाम लेने के लिए आये। उसने दोनों को दो बटेरे दिये कि जाओ इनको वहाँ मारकर लाओ जहां पर कोई नहीं देखता हो। एक गया झाड़ी के पीछे, मार कर ले आया। दूसरा जहां जाये, उसे ख़्याल आये, यहाँ मालिक देखता है। ये मुझे देखता है, मैं इसे देखता हूँ, ऊपर मालिक देखता है। उसे कहा कि आप क्यों नहीं मार कर लाये? कहने लगा कि जहां मैं जाता था, जिस जगह भी, ये मेरी तरफ देखता था, मैं इसकी तरफ देखता था, फिर ऊपर मालिक देखता था। जो पहला था उसको फकीर ने कहा। ''भई तुम चले जाओ, नाम इसको मिलेगा।'' उसे चीज़ मिलती है जिसके अन्दर मालिक का प्रेम व डर हो। ये उसकी दया पर है। वह कभी पाप नहीं करता, हर जगह मालिक को देखता है। कैसे करे? किसे किसे मारे? सोच लो! गुरु अर्जुन साहब पर गर्म गर्म रेत डाली। मियां मीर ने कहा, ''अगर आप हुकम दें, मैं दिल्ली व लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूं।'' कहने लगे, ''किसकी करेगा? क्या उनके अन्दर मालिक नहीं?'' बोलो! इनके अन्दर मालिक नहीं।

पाठी– काइया अँदरि ब्रह्मा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं ब्रह्मा जो सृष्टि का कर्ता है, वह इसके अन्दर है। मुसलमान उसे मैकाईल कहते हैं। विष्णु जो सारी सृष्टि का पालने वाला राशनिंग आफिसर है, मुसलमान जिसे जबराईल कहते हैं। शिव जो सभी का संहार करता है मौके पर मारता है, मुसलमान इसको इज़राईल कहते हैं, वह भी इसके अन्दर है। सभी इसके अन्दर हैं। कोई ऐसी चीज़ नहीं जो इसके अन्दर न हो। 33 करोड़ देवते भी इसके अन्दर हैं। मालिक ने सब कुछ इसके अन्दर रखा है। वह खुद भी बैठा है।

अवधु अन्धा धुन्ध अंधियारा, कोई जानेगा जाननहारा।
या घट भीतर बाग बग़ीचा, याहि में सींचनहारा॥
या घट भीतर सोना चान्दी, याहि में लगी बाजारा।
या घट भीतर काशी मथुरा, याहि में गढ़ गिरनारा॥
या घट भीतर देवी देवा, याहि में ठाकुर द्वारा।
या घट भीतर आपे लेत है राम कृष्ण अवतारा॥

या घट भीतर तीन लोक है, याहि में सिरजनहारा।
कहें कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा॥

वह भी इसी के अन्दर है। शब्द गुरु जो सभी रचनाएं करने वाला, वह भी इसके अन्दर है। आपने गीता में कृष्ण भगवान की, विराट स्वरूप की, फोटो देखी होगी जिसमें देवी-देवते सभी अन्दर दिखाये हैं। हम बाहर भटकते हैं इसलिए नहीं मिलता।

पाठी– सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– मालिक ने यह खेल पाया है जिसमें आवागमन का चक्कर भी आप ही डाला है। खुद ही फसाया है, काल के हाथ में आप ही दिया है। वह सब कुछ उसके अन्दर है। काल भी अन्दर से ही आता है। यमदूत भी अन्दर से ही आते हैं। हाँ जीः

पाठी– पूरे सतिगुरि आपि दिखाइआ, सचि नामि निसतारा। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं मालिक ने फंसाया आप है। लीला करके देख रहा है। खेल करके देख रहा है, परन्तु निस्तारे की चीज़ भी रखी है। निस्तारा उसका होता है जो अन्दर नाम को प्रकट करे। जिसके अन्दर नाम प्रकट हो गया, वह अपने निस्तारे का प्रबन्ध कर गया। बाकी किसी के निस्तारे का, निस्तारा करने वाला कोई नहीं, आवागमन से छुड़ाने वाला कोई नहीं। जिसकी पूजा करता है उसी के पास आ जाता है। कृष्ण भगवान ने लिखा है, जो भूतों की पूजा करता है वह भूतों के पास जाता है, जो पित्तरों की करता है, वह पित्तरों के पास जाता है, जो देवी-देवताओं की करता है वे देवताओं के पास जाता है, जो मेरी करता है वह मेरे पास आता है। इसी तरह जो शब्द गुरु, उस निश्चल ताकत की, सच्चे नाम की करता है, वह वहाँ जाता है। तब ही गुरु गोविन्द सिंह ने लिखा है–

जागति जोत जपै निस बासुर, एक बिना मन नेक न आनै।

वह शब्द गुरु जो जागती जोत है, उसी को माने और किसी को न माने। उसके सिवा किसी को न माने। देवी-देवता जितने भी हैं, खुद आप चौरासी के चक्कर में हैं। वे आप नहीं निकले, हमें कैसे निकालेंगे।

कबीर सोया क्या करे, सोये हुये अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा, सुने काल की गाज॥

वह बड़ी-बड़ी ताकतों को खा गया। कृष्ण भगवान ने कहा है कि ''हे उद्धव जो कीड़ा जा रहा है, कई बार स्वर्गों का राजा इन्द्र बना। कई बार सृष्टि

का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है। वे आप ही कीड़े बने फिरते हैं, हमें कैसे निकालेंगे? निकालने वाली ताकत जिन्होंने अच्छे कर्म किये उन औहदों पर पहुंच गये, जब अच्छे कर्म का फल भुगता फिर चौरासी तैयार हैं। अच्छे कर्म क्या हैं? अच्छी जून मिल जायेगी, ज़्यादा से ज़्यादा स्वर्गों में चला जायेगा। परन्तु छुटकारा नहीं। छुटकारा कराने वाला शब्द गुरु व सच्चे नाम की भक्ति है बाकी और कोई नहीं।

पाठी– सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– जो रूह मनुष्य जन्म लेकर अन्दर सतगुरु को सेवे, अन्दर सतगुरु को प्रकट करती है, सच्चे नाम को प्रकट करती है, वह धन्य है। बाकी खाली आये, खाली चले गये, अपना जन्म बर्बाद करके चले गये। धुर दरगाह से उनके नसीबों में ऐसे ही लिखा आता है। धक्के खाये और चले गये।

पाठी– विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी। (मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– कहता, हज़ारों भक्ति करे, पूजा पाठ करे, हज़ारों तीर्थों पर जाये, हज़ारों तीर्थों पर जाये, हज़ारों मन्दिर ठाकुर पूजे, हज़ारों पुण्य दान करे, हज़ारों कर्म-धर्म करे, जब तक अन्दर नाम को प्रकट नहीं करता, यमदूतों से छुटकारा नहीं होता। यमदूतों के हाथ ज़रूर आना पड़ेगा। अगर छुटकारा है तो सिर्फ नाम की भक्ति छुटकारा दिलाने वाली है और किसी से डरता नहीं, नाम को अन्दर प्रकट किये बिना यमदूतों से छुटकारा नहीं। ज़रूर उनके हाथ जाना पड़ेगा।

पाठी– नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी। (मः 3/754)

सच्ची वडिआई क्या है? कि मालिक की दरगाह में पहुँचना, पर; जिस पर मेहर करे, वह अन्दर शब्द गुरु, सच्चे नाम को प्रकट करता है। बाकी दुनिया जन्म बर्बाद करके चली गई।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।
हाज़िर नाज़िर ज़िन्दा राम तेरा ही आसरा।

सत्संग

'इह जन्म अमोलक हीरा'

सत्संग के वचन

पाठी– इह जन्म अमोलक हीरा, बार बार नहीओं लभना।
कि बन्दिया इह बार बार नहींओं लभना
कदे सोच ताँ तूँ कीता ई ख़्याल ओए।
आया हत्थ तेरे अमोलड़ा लाल ओए।
भाड़े भंग दे न उमर गुज़ार ओए।
कि बार बार नहींओं लभना।
कहता हूँ कहि जात हूँ, कहाँ बजाऊँ ढोल।
सुआंसा खाली जात है तीन लोक का मोल।
कदे सोच ताँ तूँ कीता ई ख़्याल ओए,
कि बार बार नहींओं लभना।

मैनेजर साहिब जी– हीरा एक पत्थर है। यदि हमें मिल जाए तो हम उसे कितना सम्भाल कर रखते हैं। रेशमी कपड़ों में लपेटते हैं। डिब्बियों में बन्द करके सेफों में रखते हैं। किसी को बताते भी नहीं। उसकी कितनी कद्र है? यदि वह गुम हो जाए तो हो सकता फिर भी मिल जाए, परन्तु हमें इस जन्म की कोई कद्र नहीं। हीरा तो एक पत्थर है, उसकी उदाहरण दी है कि यह कीमती वस्तु है। इसका कोई उदाहरण नहीं। चौरासी लाख जूनें हैं, जिसमें से तीस लाख प्रकार के वृक्ष हैं, सत्ताईस लाख प्रकार के कीड़े पतंगे हैं, चौदह लाख प्रकार के पक्षी हैं, नौ लाख प्रकार के पानी के जीव हैं तथा चार लाख प्रकार के भूत-प्रेत जछ, किनर, गंधर्व, देवी देवते, इन्सान और हैवान हैं। ये सब जूनियों को भोगकर फिर कहीं जाकर आदमी की जूनी मिलती है। यदि नरकों में चला जाए तो वहाँ पर पड़े-पड़े जुगां के जुग बीत जाते हैं। यदि स्वर्गों में चला जाए तो वहां जुगों के जुग पड़ा रहता है। सर्पों की आयु दो-दो तीन-तीन सौ वर्ष की होती है। वृक्ष दो-दो तीन-तीन सौ वर्ष से खड़े हैं। कहते

हैं एक वृक्ष चार हज़ार वर्ष से खड़ा है। मालूम नहीं कितने समय बाद जाकर कहीं आदमी की जूनी मिलती है, जिसकी हमारे पास कदर नहीं। इसकी कद्र पड़ती है फकीरों के पास आकर। कोई कामिल फकीर मिले तब जाकर पता चलता है। एक साहूकार था, उसका एक लड़का था। साहूकार चोला छोड़ गया। बच्चा छोटा था। अब घर पड़े सब पैसे खा पी लिए। और उनके घर में पड़ा था एक लाल। लड़के की मां कहने लगी कि बेटा! यह लाल ले जा। तेरे पिता का मित्र एक सर्राफ है, उसके पास ले जाकर बेच दे। वह लाल को उसके पास ले गया। सर्राफ ने देखा कि लाल नकली है। कहने लगा बेटा! इसे घर ले जा, यह कीमती वस्तु है, ताकि उसका दिल न टूटे। यह कीमती वस्तु है, इसको घर में रख। कुछ पैसे ले जा और गुज़ारा कर और तू मेरे पास आकर काम सीख। जब तू काम सीख जाएगा फिर अपना काम चला लेना, कीमती वस्तु क्यों बेचता है?

अब उसके पास जाकर वह काम सीखने लगा। जब सर्राफ ने देखा कि इसे लालों की परख आ गई है तो कहने लगा, बेटा। लाल तो ले आ। जब वह लाल लाया, देखा, निकाला तो पता चला कि यह तो कूड़ा कंकर है। कहने लगा मां ये तो कूड़ा है। इसी तरह फकीरों की सोहबत में आकर पता चलता है कि जितने हम काम करते हैं वे सब कूड़े हैं। इसका कोई काम नहीं। यह इसे एक समय (चान्स) मिला है। मालिक ने दिया है कि अपनी चौरासी से मुक्ति का साधन कर ले। यह एक चान्स है। और किसी जन्म में यह मालिक के पास नहीं जा सकता। अपनी चौरासी नहीं छुड़ा सकता। यदि छुड़ा सकता है तो केवल इसी जन्म में। जब देवी-देवते कामिल फकीरों की चिताई रूह को देखते हैं, जैसे गुरु नानक साहब आए, कबीर साहब आए, और परम सन्त आए कि वह अपनी दरगाह में जा रहे हैं, वे भी तरसते हैं कि हम यदि इस समय मृत लोक में होते तो हम भी ठीक रास्ता लेकर मालिक के पास अपने घर पहुँचते। परन्तु हमें इसकी कद्र नहीं। हम कौन से काम कर रहे हैं? सोचें! काम तो इसने करना था, अपनी चौरासी काटने का। परन्तु काम कौन से कर रहे हैं? सोच लो! काम कौन से कर रहे हैं? या काम के, या क्रोध के, या लोभ के, या मोह के, या अहंकार के। औरतें इसकी काम की, बाल बच्चे मोह के, ज़मीन जायदाद लोभ की, मान बढ़ाई अहंकार की, दुश्मन इसके क्रोध के, आत्मा का कौन सा काम है? सोच लो! आत्मा का कौन सा काम है? तथा वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इससे जबरदस्ती करवा रहे हैं। यह कैदी है, कैदी। यह कोठड़ी है (जिस्म की ओर संकेत करके) जिसमें हम बन्द हैं। जैसे जेल की कोठड़ियां होती

हैं। कोई कुत्ते की कोठड़ी है, कोई बिल्ले की, कोई किसी शक्ल की है, कोई किसी शक्ल की। इसी तरह सभी ही कोठड़ियां हैं। कभी किसी कोठड़ी में कैद होता है, कभी किसी में, कभी किसी में, कभी किसी में, कभी किसी में। इसी तरह धक्के खाता फिर रहा है। यदि स्वर्ग में जाए तो वहाँ तन-मन का पिंजरा है। यदि नरकों में जाए तो वहाँ भी तन मन का पिंजरा है। यह कैदी है, कैदी है, कैदी है। इसने यह जेल छुड़ानी थी। ऐसे हमसे ज़बरदस्ती करवा रहे हैं काम जेलियों से। जेली से ज़बरदस्ती काम करवाता है न सिपाही? जा भई, वह काम कर, वह काम कर, वह काम कर। इससे भी ज़बरदस्ती करवाते हैं, करना पड़ता है। इसी तरह आत्मा को भी हथकड़ियां लगी पड़ी हैं, जो दिखाई नहीं पड़तीं। जैसे आत्मा नहीं दिखाई पड़ती इसी तरह हथकड़ियां भी नहीं दिखाई पड़तीं। इसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह भी दिखाई नहीं पड़ते। काम कहता है चल मेरा कार्य कर। क्रोध कहता है चल मार डण्डा उसके। लोभ कहता है चल पैसे कमा। मोह कहता है चल बाल बच्चों का पालन पोषण कर। अहंकार कहता है चल मान बढ़ाई प्राप्त कर। सारा दिन मिट्टी पलीत कर छोड़ी है। किसी को चैन नहीं है। जैसे एक बड़ा घना जंगल हो। उसमें डाकू रहते हों। कोई दो चार आदमी फंस जाएं। अब जिस ओर जाते हैं उसी ओर डाकू हैं। जहां जाएं डाकुओं ने घेरा हुआ है। यदि छुपने को दो मिनट समय मिल गया तो मिल गया नहीं तो वह भी नहीं। कहीं चैन नहीं। बेचारे घबराये हुए फिर रहे हैं। इसी प्रकार सारी दुनिया बेचैन कर छोड़ी है इन डाकुओं ने। किसी को पता नहीं, सभी की मिट्टी पलीत कर छोड़ी है। किसी को चैन नहीं दुनिया में, देख लो! यह सब इन्होंने बेचैनी फैलाई है। जितने झगड़े हैं ये सब इनके हैं। जितनी लड़ाइयां हैं ये सब इनकी हैं। सोच लो! यह दुश्मन हैं। अब दुश्मन अन्दर है, सोचो। दुश्मन अन्दर हैं पकड़ो इनको। कोई है पकड़ने वाला? कोई पकड़ सकता है? जब इसे जन्म मिलता है तब फिर उसकी मृत्यु होती है। मृत्यु के समय क्या होता है? यम अन्दर से पीड़ते हैं। सोच लो! यह एक ठगों का टोला है। इसके पीछे लगे हैं यमदूत क्या, काल क्या, यह सब ठगों के टोले में फंसा है? काल एक शक्ति मालिक ने आप ही पैदा की है। जब संसार बना तो दो ताकतें पहले पैदा कीं।

कालु अकालु खसम का कीना, इहु परपंचु बधावनु।

अकाल वह ताकत है जो सच्ची ताकत है। जिसको सतपुरुष कहते हैं। सतगुरु कहते हैं। जो मरन-जन्म से दूर है। जिसको गुरु नानक साहब ने कहा है—

आदि सचु, जुगादि सचु ॥ है भी सचु, नानक होसी भी सचु ॥

वह हमेशा कायम है। काल का दायरा फनाह के दायरे तक है, त्रिलोकी तक है। वहाँ तक मरना जन्मना बना पड़ा है। स्वर्ग नरक बने पड़े हैं। स्वर्ग नरक में डालकर काल ने ऐसा कैद किया है कि इसके निकलने की राह तक ही नहीं छोड़ी। कबीर साहब कहते हैं–

तीन लोक का पिंजरा भइया, पाप पुन दोए जाल।
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल॥

कि त्रिलोकी एक पिंजरा है, जिसमें पाप तथा पुण्य का जाल पाया है। सभी दुनिया का शिकार कर रहा है काल। कबीर साहब ने कहा है–

इक दिन घोघड़ आसी रे, इक दिन घोघड़ आसी रे।
इक दिन घोघड़ आसी रे, तीन लोक और चौदह भवन में
इस घोघड़ का राज।

त्रिलोकी तक उसका राज है। सभी को हड़प कर चला गया। मरते को तो देखो। आम तो हम कह लेते हैं, नर्कों की बात सुनाते हैं कि ऐसे ही कहते हैं, की पता है भी या नहीं? मरते को देखो तुम, किसी को क्या तकलीफ होती है?

जिँदु निमाणी कढीऐ हड्डां कू कड़काइ।

जो उन्होंने ठीक लिखा है कि नहीं लिखा? कितनी तकलीफ होती है? उस समय का क्या बचाव है, बोलो! उस समय सोचा है क्या बचाव है? बचाव तो वह करना है। उस समय का प्रबन्ध क्या है? कौन चौरासी से निकालेगा इसको? कैसे बचे? बोलो! वह कौन सी ताकत है बचाने वाली? किसी ने सोचा है कभी? सोच लो। हम से जबरदस्ती काम करवाते हैं। पहले तो यहाँ पर ही देख लो। फिर मृत्यु के समय कौन छुड़ाएगा? आत्मा अन्दर, यमदूत अन्दर, सोच लो! माता, पिता, बहनें, भाई, सम्बन्धी बाहर। गुरुद्वारे बाहर, मन्दिर बाहर, ग्रन्थ शास्त्र बाहर, तीर्थ बाहर, कौन छुड़ावे, बोलो, उस समय? सोचो! कोई अन्दर होगा तो छुड़ायेगा? देख लो। उसने ऐसा जाल बिछाया है कि इसको बेहोश कर छोड़ा है।

पाप पुंन बीज की पोट॥

यह एक बीज है जिससे संसार चलता है। यदि अच्छे काम करता है तो स्वर्ग में चला जाता है। यदि बुरे काम करता है तो नर्कों में चला जाता है या फिर बुरी जूनियों में चला जाता है। परन्तु फिर भी छुटकारा तो न हुआ। किसी को फर्स्ट क्लास

जेल मिल गई, किसी को सैकिण्ड क्लास जेल मिल गई, किसी को थर्ड क्लास मिल गई। रहा तो जेली ही। यही भगवान कृष्ण ने कहा है–

अच्छे कर्म तथा बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लें दूसरी सोने की समझ लें।

ये हथकड़ियां कैसे छुड़ाओगे? बोलो! छुड़ाना तो यह काम था। इसका यह काम था, भक्ति करके मालिक के पास पहुँचना, काम, क्रोध से छुटकारा हासिल करना, मन इन्द्रियों की गुलामी से आज़ाद होना। इसने यह काम करना था। अब जो इन्द्री चाहती है हमें खींच रही है। आंखों की इन्द्री सुन्दर-सुन्दर रूप देख कर हमें खींचे फिर रही है। कानों की इन्द्री ने इधर-उधर की बातें सुनीं, मीठी-मीठी बातें सुन कर हमें उधर को खींचे फिर रही है। ज़ुबान की इन्द्री खट्टे-मीठे रसों की ओर खींचे फिर रही है। मिट्टी पलीत है बेचारे की। सारा दिन ये ही चैन नहीं लेने देते। सोच लो! अब सोचते हैं हम कि गुज़ारा नहीं होता, गुज़ारा नहीं होता। इन इन्द्रियों के भोग ही पूरे नहीं होते। गुजारे सब के होते हैं। इन्होंने मिट्टी पलीत कर छोड़ी है सारी दुनिया की। सोच लो! सभी इनका काम है। जितना हम काम करते हैं, सब इनका काम है। अपना कोई भी काम नहीं। और देखें, कौन सी मुसीबत है नर्कों की। हमारे जैसे ही बैल हैं। यदि अब हम बैल होते तो हमारे ऊपर लद्दे लादे जाते। हम गड्डे (बैल गाड़ी) के नीचे जुतते कि न जुतते? ऊँटों का हाल देख लो! औरों का हाल देख लो। हमारे जैसी ही रूहें हैं। उसका प्रबन्ध सोचो! भई आगे के लिए क्या है? जब पैदा होता है कोई पशु का बच्चा या आदमी पैदा होता है तो जेर में से निकलता है। जब जेर निकलती है तब कपड़े से साफ करते हो, ज़मीन साफ करते हो, डरते दूर होते हो ताकि छींटा न पड़ जाए। जब जेर में लिपटे पड़े थे तो क्या हाल था उस समय? उसका क्या प्रबन्ध है? बोलो! कौन करेगा उसका? प्रबन्ध तो यह करना था। फिर यह नहीं फिर जितने साधन हैं हमारे बाहर के देख लो, पढ़ना पढ़ाना। कौन प्रबन्ध करेगा उस समय? सोच लो! काल की लपेट में आते समय कौन प्रबन्ध करेगा? कौन छुड़ा सकता है काम, क्रोध से? वह कौन सी ताकत है छुड़ाने वाली? देखना तो यही है। जितने फकीर आए मालिक की दरगाह में जाने वाले : गुरु नानक साहब, कबीर साहब, उन्होंने एक ही होका दिया है कि तेरा सतगुरु तेरे अन्दर है। उस सतगुरु को सारी दुनिया छोड़े बैठी है। मृत्यु के समय, मृत्यु अन्दर, यम अन्दर! अब कौन छुड़ावे? वह अन्दर वाला सतगुरु छुड़ाने वाला है और कोई नहीं छुड़ाने वाला उस समय। उस को सारी दुनिया छोड़े बैठी है। काम, क्रोध, इसके

अन्दर है। अब इस पर मुसीबत पड़ी है। सारा दिन मिट्टी पलीत करते हैं इनसे कौन बचाए? बोलो! कोई पकड़ सकता है उनको? कैसे कैद करोगे? अन्दर वाला सतगुरु बचाए तो बचाए। अब पता नहीं कहां बैठे हैं? कैसे काम कर रहे हैं। सोच लो! समझते हो ना! यह भी पता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह हमारी मिट्टी पलीत कर रहे हैं। पता तो लग गया। यह भी है कि ज़रूर अन्दर हैं, काम इनका होता है सभी। अब कौन बचावे? वह एक ही सतगुरु है जो इन सभी झंझटों से निकालने वाला है। वह इसके अन्दर है।

''तिस रूप न रेख अनहद बाजे सबद निरंजन आप किया।''
एक ही की सेव, सब ही को गुरदेव एक॥
एक ही सरूप सबै एक जोत जानबो॥

कौन सा? शब्द गुरु या राम गुरु। राम कहते हैं 'रमेता सो रामा'। जो चीज़ रमी है। वह शब्द रूप मे सारे ही रमा हुआ है–

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला॥
सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥
सबदु गुरु को कीजीए बहुतक गुरु लबार॥
अपने अपने स्वाद में, ठौर ठौर बटमार॥

उस गुरु को तो सभी छोड़े बैठे हैं। वह ज़िन्दा ताकत इसके अन्दर है। वह ज़िन्दा राम है। वह इसको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है।

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै॥ राम बिना को बोलै रे॥ (भगत नामदेव/988)

जैसे यह बिजली की लहर आती है, मालूम नहीं कहां भाखड़े से, एक एक बल्ब को लगी पड़ी है। इसी प्रकार सबको लगी पड़ी है। सब के अन्दर वही काम करता है। जहां स्विच बन्द करो, बन्द हो जाती है, जहां से खोलो खुल जाती है। इसी तरह वह इसके अन्दर है। जब वह निकला समाप्त। यह समय था, इससे लाभ प्राप्त करने का चौरासी से निकलने का, अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करना था। उस राम को प्रकट करना था। वह राम मुक्ति वाला इसके अन्दर है बाहर नहीं। वह गुरु इसके अन्दर है। ज़िन्दा राम कहो, या शब्द गुरु कहो या सतगुरु कहो, वह है इसको छुड़ाने वाला। जिन्दाराम क्या? गुरु नानक साहब कन्धार में गए। वहाँ यार अली फकीर मिला। उसने पूछा ''पीरे शुमा कदाम अस्त।'' (तुम्हारा गुरु कौन है?) उन्होंने कहा ''पीरे मा ज़िन्दा पीर अस्त'' (मेरा गुरु ज़िन्दा गुरु है) क्या ज़िन्दा गुरु? हाँ! कि मुझे तो ज़िन्दा गुरु पर विश्वास नहीं। क्यों? जो

पैदा हुआ है उसने ज़रूर मरना है। तो गुरु नानक साहब ने फरमाया ''यक खुदा ए पीर अस्त, कि दायम ज़िन्दा अस्त–कुल आलम मुरीद अस्त'' (एक खुदा ही गुरु है जो हमेशा ज़िन्दा है। सारा संसार उसका मुरीद है।) ''बजुज़ खुदा पीर दीगर कदाम अस्त'' (खुदा के बिना और कौन गुरु हो सकता है?)

सतिगुरु मेरा सदा सदा न आवै ना जाइ॥
ओहु अविनासी पुरखु है, सभ महि रहिआ समाइ॥
सो गुरु करहु जि बहुरि न करना॥
ना ओहु मरै ना होवै सोगु।

मरा हुआ गुरु क्यों किया? वह ज़िन्दा कौन सा है? कैसे वह बे मोहताज ताकत है? जैसे यह है (फूल को संकेत करके)

सतिगुरु मेरा बे-मुहताजु॥ सतिगुरु मेरा सचा साजु॥

बाहर के गुरुओं को तो लगी पड़ी है लाओ, लाओ, लाओ। यह बे-मुहताज है, दाता है, मंगता नहीं।

सतिगुरु मेरा सबस का दाता, सतिगुरु मेरा पुरुखु विधाता।

यह किस ने बनाई है चीज़? कपड़ा बनाया, किसी ने सूत काता, किसी ने कुछ किया, किसी ने कुछ किया, किसी ने कुछ किया, किसी ने रंग बनाया, छत्तीस हाथों से निकला है। यह अन्दर बैठा काम कर रहा है। यह शब्द गुरु है। दिखाई नहीं देता। काम करता दिखाई दे रहा है। परन्तु सूरत उसकी दिखाई नहीं देती।

तूँ वरना चिहना बाहरा॥ हरि दिसहि हाजरु जाहरा॥

यह मौत के समय काम देने वाला है। इसके अन्दर भी है। जैसे काम, क्रोध दिखाई नहीं देते, आत्मा दिखाई नहीं देती, मन दिखाई नहीं देता इसी तरह शब्द गुरु का पता नहीं चलता, परन्तु काम कर रहा है। यही छुड़ाने वाला है, बाकी कोई नहीं। सोच लो! मौत के समय कौन काम देगा? बोलो! यहाँ ही ले लो, अभी ले लो। काम, क्रोध, इसके अन्दर हैं। कौन छुड़ावे उनसे? वही कृपा करे तो करे। उनसे बचाए तो बचाए नहीं तो कोई नहीं बचाने वाला। तभी तो गुरु नानक साहब ने कहा है–

सरणि परे गुरुदेव तुमारी। तूं समरथु दिआलु मुरारी।

कि ऐ सतगुरु! मैं तुम्हारी शरण आया हूँ। तू हर तरह समर्थ है, दयालु है। अब दयालु तो है पर दया किस पर करे? यह दीन बने तो वह दयालु बने।

यह तो अहंकार से भरा पड़ा है। मैं ज्ञानी, मैं आलम, मैं फाज़ल, मैं इतना पाठी, मैं यह हाँ, मैं वह हाँ। इसको अहंकार ने मार छोड़ा है। यह अपनी हस्ती को मिटाए, सच्चे दिल से पुकार करे कि ऐ सतगुरु तूं मेरे अन्दर बैठा है, तूं मेरे पर मेहर कर, दीनता तथा गरीबी के साथ, ऊपर ऊपर से नहीं। जितने फकीर गए हैं, दीनता तथा गरीबी से गए हैं।

हरि के भगत सदा सुख वासी॥ बाल सुभाई अतीत उदासी॥

Be like children for they shall enter into the kingdom of heaven.

ईसा ने कहा है—''तुम मासूम बच्चों की तरह बन जाओ तब मालिक की दरगाह में जा सकते हो'' यानि कि हम कुछ नहीं जानते। मालिक! तूँ करे तो करे, मेरे में कोई ताकत नहीं।

मुरारी कहा है राक्षसों को मारने वाले को। जैसे रामचन्द्र ने बाहर के राक्षसों को मारा, क्योंकि वे हमारे तन को ख़राब करते थे। पकाते और खा जाते थे। इसी तरह अन्दर वाला राम अन्दर वाले राक्षसों को मारने वाला है। यह राक्षस हैं, मन, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। इन्होंने सब की मिट्टी पलीत की हुई है। सारे संसार को बेचैन कर रखा है इन्होंने। स्वर्गों में जाओ तो उनको बेचैन कर रखा है। नर्कों में जाओ तो बेचैन किया हुआ है। यहाँ आओ तो यहाँ बेचैन कर रखा है। कोई सुखी नहीं है त्रिलोकी तक। कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं। वह सुख का देश और है— त्रिलोकी से पार है, चौथा देश है।

कहि कबीर हमरा गोविंद॥ चौथे पद महि जिन की जिंदु॥

इसका देश सच्च खण्ड अनामी है। यह सत्तपुरुष की अंश है। यहाँ काल के धक्के चढ़ा है। भटकता फिरता है। कभी कुछ बनता है, कभी कुछ बनता है, कभी कुछ बनता है। मिट्टी पलीत है बेचारे की। ऐसा इसने चक्कर में डाला है कि होश नहीं छोड़ी। सोच लो! किसको होश है?

मनमुख अँधुले सोझी नाहीं॥ आवहि जाहि मरहि मरि जाही॥

सारी दुनिया मनमुख है, अन्धी है, किसी को याद नहीं। जन्मते हैं मरते हैं, जन्मते हैं मरते हैं, जन्मते हैं मरते हैं। अन्धे आए अन्धे चले गए। न जाने किन-किन योनियों से आए, और कौन-कौन सी में जाना है? न जाने कौन-सा देश हो इनका? कोई होश ही नहीं किसी को। सभी ने इस देश को अपना देश समझ रखा है। इन कौमों को अपनी कौम समझ लिया है। इनके पीछे लड़-लड़ के मर गया, मिट्टी के

देशों के पीछे। मिट्टी के पीछे ही लड़ा है और क्या किया इसने? मिट्टी अपनी की परवरिश की और बाल बच्चों की मिट्टी की भी परवरिश की। तथा कौमों, मज़हबों की मिट्टी की भी परवरिश की। मिट्टी मिट्टी के पीछे लड़ कर मर गया। बाकी किया क्या इसने? बोलो! सोच लो! देश भी मिट्टी के। आजकल बच्चे खेलते हैं न! कुप्प बनाते हैं छोटे छोटे। बनाकर एक-दूसरे का गिर जाता है और आपस में लड़ते हैं। हम कहते हैं किसके लिए लड़ते हो, चलो अपने घरों को। यह बड़े कुप्प हैं, इनको फकीर देखते हैं। वे कहते हैं, चल अपने देश को। इसका देश बड़ी खुशी तथा शांति का देश है। जो फकीर वहाँ गए, उनका इस संसार में आने को दिल नहीं चाहता। गुरु गोविन्द सिंह कहते हैं–

द्वै ते एक रूप ह्वै गयो॥ चित ना भयो हमरौ आवन कह॥
ज्यों-त्यों प्रभ हम को समझायो ॥ इम कह कै इह लोक पठायो॥

कि पहले मालिक से मैं अलग था। जब भक्ति करके मैं अन्दर गया, मालिक के साथ मिल गया। जब मैं उस देश पहुँचा तो मेरा इस देश में आने को दिल ही नहीं करता था। मालिक ने जैसे तैसे करके भेजा कि जाओ उनको भी समझाओ। शायद कोई मान जाए, शायद कोई अपने देश का ध्यान कर ले, शायद कोई पहुँच जाए। जो भी वहाँ पर गए, उन्होंने हमारे लिए हमारी हिदायत के लिए, हमारे समझाने के लिए, ग्रन्थों, शास्त्रों में लिख दिया कि ऐसा देश है। ऐसा सुन्दर देश है। हम उनकी बानी पढ़ते गए परन्तु यह ध्यान नहीं किया कि हम भी वहाँ पहुँचें। गुरु अमरदास गए तो वह क्या कहते हैं? हर रोज़ पढ़ते हैं हम–

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीया वाधाईआ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥ (मः 3/917)

कि मैं ऐसी खुशी देखी है, कि मैं ऐसा आनन्द देखा है, जैसे कोई कहता है कि मैं ऐसी गेहुँ निकाली है, इतना झाड़ देती है। ऐसो आराम देने वाली मोटर निकाली है। ऐसी फलां वस्तु निकाली है, सोच लो। उन पर विश्वास करते हैं, परन्तु इनकी बाणी पर नहीं। क्या? कि मैं ऐसी खुशी की वस्तु देखी है, ऐसा आनन्द देखा है कि भीतर सतगुरु को पाया है। कौन से सतगुरु को? कहां पाया है? सहज सेती, सहज अवस्था में जो त्रिलोकी से पार है–

त्रिहुगुणा विचि सहजु ना पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ॥
पढ़ीऐ गुणीऐ किया कथीऐ जा मुढहु घुथा जाइ॥
चउथे पद महि सहजु है गुरुमुखि पलै पाइ॥

कि यहाँ पाया है चौथे लोक में

कहि कबीर हमरा गोबिंद॥ चउथे पद महि, जिन की जिँद॥

कि यहाँ मैं पहुँचा हूँ।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै पाइआ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीया वाधाईआ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥ (मः 3/917)

कुदरती वहाँ राग हो रहे हैं, परियां नाच कर रही हैं। ऐसा आनन्द का देश है। यह कौन-कौन सी परी हैं। जैसे तुम सिनेमा में जाते हो, वहाँ क्या है? वहाँ सुन्दर से सुन्दर वस्तु है, कोई बता ही नहीं सकते। उसके मुकाबले में कोई वस्तु है ही नहीं, बयान से बाहर है। वह खुशी बयान नहीं कर सकते।

मिल सखीयां पूछें कहु कँत निशानी॥
रस प्रेम भरी कुछ कहन न जानी॥

वह कहने सुनने से दूर है। वह इतना आनन्द का देश है पर वहाँ कब पहुँचेंगे? उस देश का किसी को ख़्याल है? सोच लें। इसका देश सच्चखण्ड अनामी। इसको कौम का ही पता नहीं। बाहर की कौमें बना लीं। उन्होंने तो ठीक चलाया था। बाहर कोई न कोई नाम तो रखना पड़ता है। उन्होंने तो ठीक कहा था हम ही भूल गए, बाद में। यहाँ बाहर वालों से पूछ लो। कोई कहेगा मैं आर्य हूँ, कोई कहेगा मैं सनातनी हूँ, कोई कहता मैं खालसा हूँ, कोई कहता है मैं राधा स्वामी हूँ, कोई कहता है मैं सच्चे सौदे वाला हूँ, कोई कहता है मैं फलां हूँ। हैं क्या यह?

कहु कबीर इहु राम की अंसु॥

यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है। काल के देश में आया है। सोचो! एक बादशाह है। उसका एक लड़का है। वह लड़का खोटे कर्म करता है। सिपाहियों के हाथ पड़ा हुआ है। डण्डे खाता है तो उसकी कितनी इज़्ज़त है। बोलो भई! कितनी उसकी इज़्ज़त होगी? यही हाल हमारा हुआ पड़ा है। कर्मों के जाल में यह फंसा पड़ा है। जिस समय मृत्यु आती है। एक फकीर लिखता है–

कर्म भार सिर ऊपर लादा, घेरे फिरे काल का प्यादा॥
पियादों के संग इज़्ज़त खोती, सतनाम कुल की थी गोती॥

जिस समय मृत्यु आई, जितने इसने बुरे काम किए, उनकी गठरी बांधकर सिर पर रखते हैं। आगे आग का समुद्र है, उसके बीच में से निकलना पड़ता है। पीछे काल का प्यादा क्या, यमदूत लगे पड़े हैं। वे डण्डे मारते हैं, सिर पर

बोझा है। आग का समुद्र है, पीछे से डण्डे पड़ते हैं। सतपुरुष का पुत्र यमदूतों से डण्डे खाए? कितनी लाहनत है इसके लिए? बोलो!

मसतकि भारु कलर सिरि भारा॥

किउकरि भवजलु लंघसि पारा॥"

गुरु नानक साहब फरमाते हैं कि जिस समय मृत्यु आई, वे सिर पर गठरी रखते हैं। वह किसी फकीर ने कहा है। यह गुरु नानक साहब ने कहा है। कल्लर कहते हैं नेकी तथा बदी को। जो इसने कमाई है। अब कैसे निकले?

सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा है।

यह छुड़ाने वाला, यहाँ से निकालने वाला एक सतगुरु इसके अन्दर है। वही निकाले तो निकाले बाकी किसी की ताकत नहीं कि निकल जाए। बाकी, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, पीर पैगम्बरों को काल खा गया।

हांको पर्वत फाड़ते समुंद्र घूंट कराए॥

ते मुनीवर धरती गले किया का गरभ कराए॥

कहता है इतने बड़ों को खा गया।

कबीर सोया किया करे सोए होए अकाज॥

ब्रह्मा का आसन डिगा सुणी काल की गाज॥

हम कौन से बेचारे हैं? सोच लो! उसका प्रबन्ध किया है? उसका प्रबन्ध करो? हज़ारों पूजा कर लो, हज़ारों पाठ कर लो, हज़ारों ज्ञान छांट लो, हज़ारों तीर्थों पर नहा लो, कोई छुड़ाने वाला नहीं, कोई काम देने वाला नहीं। हर हालत में यमों के हाथ चढ़ना पड़ेगा, अवश्य चढ़ना पड़ेगा। यह मत कहो कि उनका फल नहीं। फल है, परन्तु यमदूतों से छुटकारा नहीं। कारावास कभी नहीं छूटता, चौरासी समाप्त नहीं होती। चौरासी की समाप्ति तो उस अन्दर वाले शब्द गुरु से ही होती है। साचा नाम कह लो या शब्द गुरु कह लें।

जीया रे ओल्हा नाम का।

अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥

वह साचा नाम, साचा शब्द क्या वस्तु है? अब प्रश्न उठा कि वह है क्या वस्तु? उसने सभी संसार बनाया है।

सबदे धरती सबदे आकास ॥ सबदे सबदु भया प्रगास ॥

बेशक नाम कह लो या शब्द कहो।

नाम के धारे सगले जँत ॥ नाम के धारे खँड ब्रह्मँड ॥

उसको ही भाणा कहा है। बाणी को विचारो तो सही। उसको ही भाणा कहा है और उसे ही हुक्म कहा है। उसे ही अमृत कहा है तथा उसे ही अकथ कथा कहा है। भाणा कहते हैं किसी की मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है? जब वह हुक्म करे।

हुकमी होवनि आकार ॥ हुकम न कहिया जाई ॥

हुकम कब ज़ाहिर होता है? जब वह बोले। उसको कहते हें शब्द। शब्द की लहर को कहते हें नाम। चूंकि वह एक बोली है, इसी कारण बाणी कहा है। चूंकि वह एक राग है, इसी करके इसको कीर्तन कहा है। चूंकि उसमें रस है, इसी करके इसको रत्न कहा है। चूंकि उसमें रस है इसी करके उसको अमृत कहा है। चीज़ एक ही है। चूंकि वह कभी न समाप्त होने वाली कहानी है, इसी करके इसको अकथ कथा कहा है। चीज़ एक ही है। जब तक वह नाम को प्रगट नहीं करते, वह नाम इसके अन्दर है और उसको अन्दर प्रगट करना ही सच्ची भक्ति है–

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगती स्रेसट पूरी॥
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल विधि ऊरी॥

कोई भक्ति पूरी नहीं मालिक की दरगाह में और जनम-मरन के बन्धनों से छुड़ाने वाली कोई भक्ति नहीं। एक ही है–

बिणु नावै दरि ढोई नाहीं तां जमु करे खुआरी।
बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई॥

सोचो! बाणी कहती है साफ। गुरु अमरदास बहत्तर साल की आयु तक तीर्थ व्रत 'जप-तप' सब कुछ करते रहे। इक्कीस बार गंगा स्नान को गए। फिर गुरु अंगद साहब की शरण में आए। बारह वर्ष पानी ढोया। दिन को पानी ढोना, रात को किल्ली से केश बांधने। सोच लो! फिर अन्दर मालिक को पाया है। वह लिखते हैं–

हरि की पूजा दुर्लभ है संतहु, कहणा कछु न जाई॥

कि जो असली पूजा है, जो जनम मरण मुकाने वाली है वह दुर्लभ है, मुश्किल से मिलती है। वह है क्या?

संतहु गुरुमुखि पूरा पाई॥ नामो पूज कराई॥

यदि इसको कोई कामिल फकीर मिले, कोई गुरुमुख मिले। वह कहे तेरे अन्दर सच्चा नाम है, तेरे अन्दर सच्चा सतगुरु है, तू उसकी पूजा कर। वह

नाम लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं।

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहीं जानता ॥
निंह अच्छर निंह रूप दृष्ट नहीं आवता ॥ **(पलटू साहब)**

शब्द कहो या नाम कहो।

सबद सबद सबको कहे, वह तो सबद बदेह ॥
जीभा पर आवे नहीं निरख परख कर लेह ॥ **(कबीर साहब)**
चिहनु वरनु नहीं छाया माया, नानक सबदु पछाणै।

वह मालिक की कुदरती आवाज़ है जो रेडिया वेवज़ की तरह सारे ही हैं। यहाँ रेडियो वेवज़ हैं ना। कलकत्ते की आवाज़ यहाँ ही फिरती है, बम्बई की यहाँ ही फिरती है, इंग्लैंड की यहाँ ही फिरती है, सोच लो! अमरीका की यहाँ ही फिरती है मगर हम जब स्विच लगाते हैं, रेडियो में शीघ्र ही सुनाई देने लग जाती है। है यहाँ ही मगर स्विच से ही सुनाई देने लग जाती है जल्दी। वैसे नहीं सुनती। इसी तरह मालिक की आवाज़ सारे ही है। वह जिसे मुसलमानों ने बांग कहा है, कलमा कहा है, कलाम-ए-इलाही कहा है, बांग-ए-आसमानी कहा है। ईसाइयों ने Word कहा है। हमने नाम कहा है, शब्द कहा है, बात एक ही है। वह है सभी जगह ही।

रोमि रोमि रविया हरि नामु।

वह ज़र्रे ज़र्रे में है।

चहु दिसि हुकमु बरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नामु पातालं॥
सभ महि सबदु बरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं॥

उसका सुनने का साधन इसके अन्दर है। यदि इसको कोई गुरमुखि ऐसा मिल जाए जो उससे सम्बन्ध हो चुका हो। यदि ऐसा फकीर मिल जाए, ऐसा संत मिल जाए, वह इसको तरीका बताये, यह उसके साथ जुड़ जाए। यह उसके घर का रास्ता है बाकी कोई नहीं।

गुरुमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक ना कोई पाइ॥
हरि नामु सलाहनि नामु मनि, नामि रहनि लिव लाइ॥
अनहद धुनि दरि वजदे, दरि सचै सोभा पाइ॥

यह सीधा रास्ता है, सीधी सड़क है; जरनैली सड़क, जैसे हम कहते हैं। वह रास्ता है और कोई नहीं। जुग-जुग से वही रास्ता आ रहा है। वह आज

का नहीं, किसी संत महात्मा का बनाया नहीं, किसी वली पैगम्बर का बनाया नहीं, किसी ऋषि-मुनि का बनाया नहीं, वह मालिक का अपना बनाया हुआ है। जब से दुनिया बनी है, तब से बना है। फकीरों ने आकर उसको दुहराया है। फकीरों ने आकर हमें फिर बताया है परन्तु बाद में हम फिर भूलते गए हैं। फिर फकीरों को आना पड़ता है। फिर मालिक को फकीरों को भेजना पड़ता है। फिर भूल जाते हैं, फिर भेजते हैं। जब तक कोई कमाई वाला रहा, ठीक बताता रहा। बाद में भ्रान्तियां उत्पन्न हो गई हैं। गुरु नानक साहब को सिद्ध मिले। उन्होंने उनको पूछा–

कितु बिधि पुरखा जनमु बटाया॥ काहे कउ तुझु इह मनु लाया॥
कितु बिधि आसा मनसा खाई॥ कितु बिधि जोति निरँतरि पाई॥

कि ऐ महात्मा! तेरा जनम मरण कैसे समाप्त हुआ? तेरा मन कैसे काबू में आया? तेरी आशा तृष्णा कैसे समाप्त हुई? तू कैसे गुरमुख बना? कैसे घर पहुँचा? कैसे तेरे अन्दर नूर प्रगट हुआ? तो उन्होंने फरमाया–

सतिगुरु कै जनमे गवनु मिटाया ॥ अनहति राते इहु मनु लाया ॥

कि जब कोई कामिल फकीर मिला, उसने मेरे अन्दर नाम का बीज डाला, वह सतगुरु के घर जनम है। फिर मेहनत की तो अन्दर अनहद आया। जब वह रस लिया, उसके बराबर कोई भी रस नहीं।

फरीदा सकर खँडु निवात गुड़ माखियों मांझा दुधु॥
सबे वस्तू मिठीयां रब्ब न पुजनि तुधु॥

वह मीठी से मीठी वस्तु है। प्यारी से प्यारी वस्तु है। उसके बराबर कोई लज़्ज़त नहीं। जब आला लज़्ज़त मिल गई, फिर दुनिया की लज़्ज़तें फीकी लगने लगीं। जब ये फीकी लगने लगीं, इनकी आशा तृष्णा ही समाप्त हो गई। काम, क्रोध ही मर गए, सो गए। मन काबू में आ गया। मेरे अन्दर जोत प्रगट हो गई। मैं मालिक के पास पहुँच गया। यह रास्ता जुगों-जुग से आ रहा है। एक ही रास्ता है, एक ही रास्ता है। जब से दुनिया बनी है, तब से यही रास्ता है और कोई रास्ता नहीं। इसको अन्दर प्रगट करना ही सच्चा सौदा है।

सचा सउदा हरि नामु है, सचा बापारा राम॥
गुरुमत्ती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥
इका बाणी इकु गुरु इको सबदि बीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भँडार॥

यदि वह प्रकट हो गया, इसके अन्दर नूर आ गया, तो यह खालसा है, नहीं तो नहीं।

पूरन जोत जगै घट मैं तब खालसा ताहि नखालस जानै।

यदि वह प्रकट हो गया तो वह सत् ताकत है, तो यह सनातनी है। यदि वह प्रकट हो गया। वह नाम का तीर्थ है। सभी मैले साफ करने वाला है। आर्य का मतलब है पाक तो यह आर्य है। हम रोज़ पढ़ते हैं :

भरीऐ हथु पैर तनु देह॥ पानी धोतै उतरसु खेह।
मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दे साबूणु लईऐ उहु धोइ॥
भरिऐ मति पापा के संगि॥ उहु धोपै नावै कै रंगि॥

यह नाम का तीर्थ इसके अन्दर है।

अठ सठि तीर्थ हरि नामु है किल विख काटण हारा॥

वह अमृतसर इसके अन्दर है।

काया अँदरि अमृतसर साचा मनु पीवै भाइ सुभाई है॥

बाहर अमृतसर जाकर तन धो लिया परन्तु आत्मा को धोने वाला तीर्थ इसके अन्दर है। वह कब धोओगे? वह प्रयाग इसके अन्दर है। सब कुछ मालिक ने इसके अन्दर रखा है। यह बाहर धक्के खाता फिरता है। आप भी मालिक इसके अन्दर है। सारी चीज़ इसके अन्दर रख छोड़ी है। हम रोज़ पढ़ते हैं—

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइआ कामणि सदा सुहेली, गुरमुखि नामु सम्हाला॥
काइआ अंदरि आपे वसै, अलखु न लखिआ जाई॥
मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई॥
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए, सतिगुरि अलखु दिता लखाई॥
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा॥
काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाज़ारा॥
इसु काइया अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुरु कै सबदि वीचारा॥
काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलण हारा॥
काइआ अंदरि ब्रह्मा विसनु महेसा सभु ओपति जितु संसारा॥
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गवणु पासारा॥

(मः 3/754)

सब कुछ मालिक ने इसके अन्दर रखा है। कबीर साहब कहते हैं—

सौदा करे सो जाने साधो काया गढ़ खूब बाजार॥
या काया में हाट लगाए बैठे शाहूकार॥
या काया में चोर फिरत हैं लुच्चे ढीठ लबार॥

सब कुछ इसके अन्दर मालिक ने रखा है। हर एक चीज़ इसके अन्दर है। डाक्टरी इसके अन्दर है, इंजीनियरिंग इसके अन्दर है। और इल्म इसके अन्दर हैं। इसी प्रकार रूहानी इल्म भी इसके अन्दर है। भले मानस इसके अन्दर हैं, बदमाश इसके अन्दर हैं। जैसे शहर में होते हैं। भले मानस कौन हैं : शील, क्षमा, संतोष, धैर्य, विवेक, दीनता तथा गरीबी। हमारी लफंगों से यारी है : काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार वे भी इसके अन्दर हैं। सोच लो! हमने लफंगों के सौदे किये, भले मानुषों के तो किये ही नहीं। यहाँ कितने भी बन जाएं भले मानुष, काम, क्रोध के सौदे करके कितनी इज़्ज़त हासिल कर लें। कितनी बड़ाईयां हासिल कर लें। मालिक की दरगाह में लफंगों में शामिल हैं। सोच लो! सोच लो! शील, क्षमा, संतोष, धैर्य, विवेक, दीनता तथा गरीबी, कभी इनका सौदा किया है किसी ने? बोलो! काम, क्रोध तो सबने किये, किसी ने दीनता ग्रहण की, किसी ने हाथ बांधने सीखे? सोच लो! किसी ने क्रोध को मारा? किसी ने प्रेम पैदा किया? यदि मज़हबों की ओर आ जाएं तो उन्होंने ही इसी तरह लड़ा-लड़ा सबको मार छोड़ा है। फिरके बना छोड़े हैं। एक-एक मज़हब के कई-कई फिरके बन गए हैं। एक इधर को ले जाता है, एक उधर को ले जाता है। वहाँ भी पार्टियां बना छोड़ी हैं। उलझनों में डाल छोड़ा है सारी दुनिया को। सोच लो! शांती कहां से आए? जिन्होंने शांती देनी थी उन्होंने ही लड़ा मार दिया है, साधुओं ने। काम तो इसने यह करना था, यह सिखाना था कि यह अन्दर प्रकट करे सतगुरु को, इसके अन्दर शांती आ जाए, सभी ज्वालाएं बुझ जाएं। कबीर साहब कहते हैं—

हिल मिल खेलूं सबद में अन्तर रही न रेख॥
समझे को मत एक है, क्या पंडित क्या शेख॥

हम अभी वहाँ से आ रहे थे। गुरुद्वारे में एक प्रेमी लैक्चर कर रहा था, जो भाई कन्हैया की साखी बता रहा था। सोच लो! भाई कन्हैया की साखी बताता था कि वह सभी को पानी पिलाए जा रहा था। मुसलमान दुश्मनों को भी पानी पिलाता जा रहा था। तो यह शिकायत की गुरु गोविन्द सिंह जी के पास। उन्होंने बुलाया, पूछा : क्यों भई तू दुश्मनों को पानी क्यों पिलाता है? कहने लगा—''जी मुझे तो

वहाँ कोई हिन्दू मुसलमान दुश्मन नज़र ही नहीं पड़ता। मुझे तो तुम ही तुम दिखाई देते हो सभी में। वे कहने लगे अच्छा जहां पानी पिलाता है वहाँ मरहम भी लगा दिया कर।

जाको छूट गिआ भरम उनका ॥ ते आगे किआ हिन्दू किआ तुर्का ॥

कहने लगे हमारी शिक्षा को इसने ही समझा है और किसी ने नहीं समझा। बाकी सब ने लड़ा-लड़ा के मार छोड़ा है। बोलो! उन्होंने प्रेम-प्यार सिखाया है। यह पन्थ के दायरे बना कर बैठ गए हैं।

पंथा प्रेम ना जाणई भूली फिरै गवारि॥
नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंधारि॥

अब यहाँ किस मज़हब का सवाल है? बोलो! कौन सी कौम का सवाल है? कौन-सी निन्दा है? क्या किसी की निन्दा है? क्या किसी की चुगली है? बोलो! क्या है? यह सच्चाई है। सत् ताकत है इसके अन्दर। उसको प्रकट करे तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं। सोच लो! गुरु नानक साहब को चक्कियों पर बिठाया कि ना बिठाया। और भी फकीर बैठे थे। किसी ने गोरख को ध्याया, किसी ने राम को, किसी ने कृष्ण को, किसी ने शिव को ध्याया, किसी ने किसी को ध्याया, किसी ने किसी को ध्याया। कोई नज़दीक आया? जिसने इष्ट को खुश किया था शब्द गुरु को—गुरु नानक साहब ने, अपने आप चक्कियां चलने लग पड़ीं। यदि वे खुश करते तो अपने आप उनकी भी चलतीं। यह डींगों से कुछ नहीं बनने वाला?, चाहे कुछ भी बने फिरो। चाहे सनातनी बने फिरो, चाहे आर्य बने फिरो, चाहे सिख बने फिरो, चाहे राधा स्वामी बने फिरो, चाहे सच्चे सौदे वाले बने फिरो, कुछ बने फिरो। जब तक उसको अन्दर प्रकट नहीं करते तब तक कुछ नहीं बनता। जब तक उसको खुश नहीं करते तब तक कुछ नहीं बनता। डींगों से कुछ नहीं बनता। बस डींगें ही डींगें हैं, बाकी पास और कुछ नहीं। जिसने अन्दर शब्द गुरु को कर लिया खुश, वह सब कुछ बन गया। वह सनातनी भी बन गया, वह आर्य भी बन गया, वह सच्चे सौदे वाला भी बन गया, वह राधा स्वामी भी बन गया, वह सब कुछ बन गया। काम तो इसने यह करना था। और-और उलझनों में सारी दुनिया पड़ी है। सोच लो! यह काम करना था। अब सोचो सारी दुनियां भांग के भाड़े खो रही है कि नहीं खो रही, बोलो! किसी ने देशों के पीछे खोई, किसी ने कौमों-मज़हबों के पीछे खोई, किसी ने लीडरियों के पीछे खोई, किसी ने काम-क्रोध के पीछे खोई, किसी ने कर्मों-धर्मों के पीछे खोई। सब उलझनों में पड़ी है सारी दुनिया।

जितने कर्म धर्म हैं बाहर वाले, सब इसके लिए हथकड़ियां हैं, ''करम धरम सभि बन्धना'' पढ़ते हो न हर रोज़। फिर भी पाप-पुण्य कर लो जी। यह फलां काम कर लो जी, यह धिमकड़ा काम कर लो जी।

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबँधु॥
ममता मोहु सु बँधना पुत्र कलत्र सु धँधु॥
जह देखा तह जेवरी माइया का सनबँधु॥
नानक सचे नाम बिनु बरतणि वरतै अँधु॥

सब हनेर खाता है—

सभि जप सभि तप सभि चतुराई॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिन बूझे को थाइ न पाई॥ नाम बिहुणै माथे छाई॥

सब उलटे रास्ते पड़े हैं। एक ही रास्ता है, बस वह जुगों-जुगों से आ रहा है : उसको सारी दुनिया छोड़ी फिरती है। गुरु नानक साहब ने बताया तो यही ही, कबीर साहब ने बताया तो यही, ईसा ने बताया तो यही, हज़रत मुहम्मद ने बताया तो यही, अब मस्ताना जी ने बताया तो यही। यही रास्ता है और कोई नहीं। यह इसके अन्दर है। जिन फकीरों ने आकर बताया, उन्होंने चन्दे उगाहे न फण्ड उगाहे, ना कुछ मांगा। उनको हमारे पर रहम आता है। गुरु नानक साहब कहते हैं—

जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे॥
उसतति करहि परहरि दुखु दालदु ॥ जिन नाही चिँत पराई हे॥

कि जुगों-जुगों से मालिक के भेजे संत आते हैं। वे आकर हमें ठीक रास्ता बताते हैं। उनको हमारे पर रहम आता है। वे हम से कोई गर्ज़ नहीं रखते। पैसे धेले की कोई गर्ज़ नहीं रखते। जो गर्ज़ रखता है वह फकीर ही नहीं। यह किस का काम है? अब सरकार काम कराती है कि नहीं? बोलो भई! आफिसरों को आप ही कोठियां बना कर दे। आप ही बना कर दे, तब ही वे काम करेंगे। आप ही दफ्तर बना कर दे। आप ही सभी प्रबन्ध करे। उनका क्या मतलब है? यदि इसने काम कराना है तो यह दे। जो फकीर मालिक की ओर से आते हैं उनको मालिक आप दे यदि कराना है। वह क्यों मांगता फिरे? उसको क्या आवश्यकता है चन्दे तथा फण्ड उगाहने की? बोलो भई! यदि उसने करवाना है तो स्वयं कराए। बाकी क्या? अपना प्रबन्ध आप करे। क्या ज़रूरत पड़ी है उसे मांगने की? गुरु नानक साहब ने किसी से मांगा? अभी यहाँ मस्ताना जी ने, अभी चोला छोड़ा है उन्होंने, अभी पन्द्रह साल ही हुए हैं। हज़ारों रुपये के कपड़े बांट दिए, लाखों रुपये का सोना चांदी।

यहाँ मलोट में कितना बांटा है? बोलो! किसी से चन्दा मांगा? मांग-मांग कर तो एक कोठरी भी नहीं बनती लोगों से। सोच लो! मांग-मांग कर तो कोठरी भी नहीं बनती। एक मन्दिर शुरू करते हैं, एक धर्मशाला शुरू करते हैं, एक गुरुद्वारा शुरू करते हैं, एक स्कूल शुरू करते हैं, आयु बीत जाती है, खत्म नहीं होता काम। वही दाता इसके अन्दर है देने वाला। बाहर सब मंगते ही मंगते हैं। एक पार्टी आ गई मस्ताना जी के पास, कहने लगी हमें फलां काम करना है उसके लिए चन्दा दो। मस्ताना जी कहने लगे बैठो, आप चाय पानी पियो। कहने लगे बताओ भई! जिसका आप काम करते हो, जिसका स्थान बनाते हो वह आपको मांगने के लिए भेजता है। वह आपको क्या देगा? बोलो भई! सोचो? आपको क्या देगा? वह दाता आपके अन्दर है। वह देने वाला इनके अन्दर है। उसको सब छोड़ बैठे हैं। देने वाला एक शब्द गुरु है जो सारी दुनिया को बनाने वाला है। बाकी सब दुनिया मंगती है। सोच लो! एक ही दाता है :

सतिगुरु सभ को देत है लेता नांहीं कोए॥
लेता नांहीं कोए सीस को धरे उतारी॥
वही शखस को मिले मरने की करे तैयारी॥

जो जीवता मरे, अन्दर उसको प्रकट करे, उसके लिए सब कुछ लिए खड़ा है। दोनों हाथों से लिए खड़ा है। वह दानी दोनों हाथों से लिए खड़ा है। यदि उसका भजन सिमरण भी करे, यदि ना भी प्रकट हो तो भी इसके लिए सब प्रबन्ध करने को तैयार है। नामदेव की छपरी बनाई कि न बनाई! रोज पढ़ते हैं। धन्ने की गाएं चराईं कि नहीं चराईं! बोलो भई! प्रहलाद की स्तम्भों में आकर रक्षा की कि ना की! बस इसी तरह अन्दर वाला राम है, अन्दर वाला सतगुरु है। सब काम करने वाला है। वह हर प्रकार से समर्थ है। उसको सारी दुनिया छोड़े बैठी है। यदि मुक्ति का दाता है तो वह है और कोई नहीं। यदि जन्म-मरण के बन्धन काटने वाला है तो वह है, और कोई नहीं। संसार में कौन-सी वस्तु मुक्त हे, भई। बोलो!

'जो दीसै सो सगल बिनासै॥'

बाहर के गुरु भी, वह देही गई। सोच लो! मन्दिर ढेरी हो गए। सब कुछ गिर गया। कौन सी वस्तु है? बोलो! रोज हम पढ़ते हैं :

कूड़ु राजा कूड़ु परजा, कूड़ु सभु संसारु॥
कूड़ु मंडप कूड़ माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥

मन्दिरों मस्जिदों में बैठने वाले भी सब झूठे हैं। पुजारी भी झूठे। सोचो भई! कौन सी वस्तु सत्य है। सोच लो! मालिक के बिना सब कुछ ही झूठ है, झूठ ही झूठ है, झूठ ही झूठ है, सब विनाशकारी है। ''मुक्ता सेवे मुकता होवै'' कौन-सी वस्तु स्वयं मुक्त है? एक ही शब्द गुरु मुक्त तथा और कोई भी नहीं। वह शब्द गुरु युगों-युगों से कभी किसी वेष में आया, कभी किसी वेष में आया। फिर हमें समझाया कि तेरे अन्दर बैठा है, भई यह!

आदि अन्त एको अवतारा॥ सोई गुरु समझे हमारा॥

गुरु नानक साहब के वेष में आया, समझाया, वेष पुराना हुआ, फैंक दिया। जो कोई माना, माना नहीं तो बस। फिर गुरु अंगद साहब में बैठ गए। फिर गुरु अमरदास में विराज गए। फिर गुरु रामदास में बैठ गए। कभी कबीर में बैठ गए, कभी कहीं बैठ गया, कभी कहीं बैठ गया। वह समझा बुझा कर अपने रास्ते चले जाते हैं। कोई माना या ना माना, नहीं तो बस। जो खास रूहें हैं, जो मान गया, माना, नहीं तो बस। दुनिया मानती नहीं। यदि गुरु नानक साहब आए तो कहते हैं, गलत हैं। किसने कहा गलत? बोलो, शरीयत वालों ने, जो बाहर बांधे हुए थे। सोच लो! कबीर आया कि जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है। मस्ताना जी अब आए, कोई बोले मुसलमान हैं, कोई बोले जासूस है, कोई कहे कुछ है। जिन्होंने माना, माना, नहीं तो स्वयं जाने। सोच लो! यह शरीयत वाले करवाते हैं, वे पढ़ाते हैं। पलटू को जीवित जलाया, हिन्दू मुसलमानों ने, शरीयत वालों ने। क्यों? भई सत्य का डंका क्यों बजाता है? यह काल का देश है, वह चाहता नहीं कोई बुलाए। जहां-जहां आए उनको ठोकरें लगी हैं। यदि गुरु नानक साहब के चोले में आए तो वहाँ काम किया, तो गुरु अंगद साहब को चोला दिया। वहाँ दान दिया, ठीक है। वहाँ धक्के पड़े, धन के पुजारी खड़े हो गए। यदि वहाँ से निकले तो गुरु अमरदास के चोले में तो उनको धक्के पड़े। उसके बाद तो गुरु रामदास को धक्के पड़े। फिर तो गुरु अर्जुन साहब को सिर देना पड़ा। बोलो! यह कोई ज़रूरी नहीं। कभी कहीं, कभी कहीं, उनका कोई पता नहीं कहां है? परन्तु मिलता किसको है, जो सच्चे मन से पुकार करे उसके आगे, वह इसके अन्दर बैठा है कि ऐ मालिक! मैं युगों-युगों से तुमसे बिछड़ा हुआ हूँ। तू मेरा कोई प्रबन्ध कर। यदि कोई सच्चे दिल से पुकार करे तो वह ज़रूर सुनता है।

पिता कृपालि आज्ञा इह दीनी॥
बारिक मुखि मांगै सो देना॥

हिदरे साच इह करनी सार॥
होर सभ पाखँड पूज खुआर॥

यह सच्चाई पर है। यह सच्चे प्रेम का विषय है, दीनता का विषय है, गरीबी का विषय है, सच्ची तड़प का विषय है। हाँ जी, बोल भई।

पाठी– 'इह जन्म अमोलक हीरा, बार बार नहीओं लभणा
कदे सोच तां तूं कीता ई ख़्याल ओए,
आया हथ तेरे अमोलड़ा लाल ओए,
भाड़े भंग दे ना उम्र गुज़ार ओए।
कि बार बार नहींओं लभणा॥
कि बंदिया इह बार बार नहीओं लभणा।

मैनेजर साहिब जी– सोच लो! सारी दुनिया भंग के भाड़े खोंदी ए कि नहीं खोंदी? देख लो! यदि स्वर्गों में भी चला गया तो क्या हो गया? कृष्ण भगवान ने कहा है, हे ऊधो! यह जो कीड़ा जा रहा है, यह कई बार स्वर्ग का राजा इन्द्र बना, कई बार सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है। फिर क्या लाभ हुआ? यदि आज राजा बन गया, कल को उतर गया राज्य से, तो क्या लाभ है? यदि स्वर्गों में जाकर वह सुख भोगे, फिर चौरासी का चक्र तैयार है तो फिर उसका काम क्या? रोज हम पढ़ते हैं–

इन्द्रपुरी महि सरपर मरणा॥ ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहणा॥
शिवपुरी का होइगा काला॥ त्रैगुण माया बिनसि बिताला॥

सब नाशवान हैं। वह देश भी नाशवान है, वहाँ कहीं सुख नहीं। जैसे यहाँ बड़े अफसर हैं, उनको सुख तो है, धन तो मिला सुख के लिए, परन्तु लाभ नहीं उठाते। जल भुन रहे हैं। वह कहता, हाय! वह इतना सुख क्यों लेता है? हाय! वह क्यों सुख लेता है? इसी तरह वहाँ भी है। स्वर्गों में भी यही हालत है। सुख कहीं नहीं। सुख अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करने में है। सतनाम को प्रकट करने में हे। बाकी कहीं सुख नहीं।

हमारे पास एक नामधारी आया। कहता मैं सत्संग भी करता हूँ, उपदेश भी देता हूँ। लोग सोलह पहरों में अखण्ड पाठ करते हैं मैं सातों पहरों में करता हूँ, परन्तु अन्दर शांति नहीं। अब दौड़े-दौड़े गए, वाणी पढ़ी और विचार नहीं किया, क्या कहते हैं? यदि अन्दर नाम को प्रकट करता तो सुख होता, नहीं तो कहां होता?

नामु मिलै मनु तृपतीऐ बिनु नामै धृग जीवासु ॥

यदि नाम को अन्दर प्रकट करें तो अन्दर शांती आए, वरना कहां से आए? उसमें अमृत है।

नउ निधि अमृत प्रभ का नामु॥ देही महि इसका बिसरामु॥

वह इसके अन्दर है। अन्दर जाए तो नाम मिले, नहीं तो कहां से मिले? बोलो! शान्ती कहां से आए? शांती के मार्ग ही नहीं चले। ऐसे ही भाग-दौड़ में पड़े रहे। सब पढ़ने-पढ़ाने का निशाना क्या है?

नानक पढ़ना गुणना इक नाउँ है बूझै को बौचारी।

भीतर नाम को प्रकट करना ही असली पढ़ना है। उस नाम को प्रकट करना, शब्द को प्रकट करना ही वास्तविक ज्ञान है।

'सो ज्ञानी जिनि सबदि लिव लाई।'

नहीं तो लड़े जाओ, झगड़े जाओ। वह कहता ऐसे ठीक है, वह कहता ऐसे ठीक है। लड़-लड़ कर मर गई सारी दुनिया, बस। वह गन्दगी साफ करने वाला नाम का तीर्थ है। उसी की भक्ति है, बाकी कोई नहीं। वह सतगुरु इसके अन्दर है। वह सब गन्दगी साफ करने वाला है। बाकी सारी उम्र पढ़ता रहा अन्दर सतगुरु प्रकट ना हुआ। यदि सतगुरु न प्रकटे, काम क्रोध ना घटे, ईर्ष्या-द्वैत ना घटी, तो क्या लाभ है बोलो पढ़ने का? हाँ जीः

पाठी– धन जोबन ते हुसन जवानी, तेरी दो दिन दी ज़िन्दगानी ॥

बन्दे तेरी थोड़िआं दिनां दी ज़िन्दगानी,

कर कायम कोई असल निशानीं, इह बार बार नहींओं लभणा।

कि बन्दिआ इह बार बार नहीओं लभणा।...

मैनेजर साहिब जी– यहाँ कितने बैठे हैं पाकिस्तान से आये हुए? उनके पास ज़मीनें थीं, कारखाने थे। सोच लो! बन्दूकें थीं। कौन सी वस्तु काम आई? बोलो! यहाँ ही ले लो, यहीं देख लो, यहाँ ही साथ नहीं दिया, आगे किसने देना है? सोच लो। यहाँ किसी ने साथ दिया है? बोलो! कोई काम आई? आगे कौन काम आएगी? काम आने वाला एक ही सतगुरु है और कोई नहीं। जंगल जाओ, वीरानों में जाओ, वह सच्चा साथी है, वह सब प्रबन्ध करने वाला है। वह ऐसा साथी है जैसे स्तम्भों से निकला प्रहलाद के लिए, वह ऐसा ही है। बस वह साथी है। उसको सारी दुनिया छोड़े बैठी है। यदि यह किसी कामिल फकीर से पूछ कर आराधना करे, वह इसके अन्दर बसने लग जाए, काम देने लग जाए।

जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास।

जैसे विद्या बसने लग जाती है, वह राम भी बसने लग जाता है। काम देने लग जाता है जैसे विद्या देती है। इसका नाम भक्ति है। अन्दर वाला राम हरियाला राम है, हरा कर देता है। बाहर वाला सूखा, सबको जला छोड़ा है। ईर्ष्या, द्वैत, वैर, विरोध की अग्नि में इन सब की रूहें जल रही हैं। सोच लो!

मेरे माधउ जी सत संगति मिले सु तरिआ।
गुर प्रसादि परम पदु पाइआ, सूके कास्ट हरिआ।

कहते सति संगत में जाकर तैरता है। यह कैसे तैरता है? जैसे खड़सूखे वृक्ष होते हैं। अब वह सूख रहे हैं। यदि उनको पानी मिलने लग जाये तो हरे हो जाएंगे। फिर डोडियां निकल आती हैं, फूल निकल आते हैं, फल लगने लग जाते हैं। इसी प्रकार आत्मा सूखी पड़ी है। काम-क्रोध की अग्नि में जल रही है। यदि इसको कोई ठीक रास्ता मिल जाए, यह जैसे-जैसे भजेगा इसके भीतर हरियाली आनी आरम्भ हो जाएगी। काम, क्रोध की अग्नि बुझने लग जायेगी। इसके स्थान पर शील, क्षमा, सन्तोष, धैर्य, विवेक, दीनता तथा गरीबी आने लग जाएगी। अन्दर शांती बसने लग जाएगी। निशानियां मिलने लग जाएंगी इसको। यह जो आत्मा सूखी हुई है हरी होने लग जाएगी। इसका नाम भक्ति है। यदि यह ना हो तो फिर भक्ति करने का क्या लाभ? परन्तु वहाँ तो माथा पच्ची किये जायेगा। वहाँ छः छः घण्टे लगाता है। यहाँ दो घण्टे नहीं लगाता असली वस्तु पर। क्यों? मन शत्रु है। यह कहता मुझे निकाली मिलेगी। यह हमारा शत्रु है, बाकी कोई नहीं दुनिया में। ना कोई कौम शत्रु है, ना कोई धर्म शत्रु है, ना कोई देश दुश्मन है। कोई शत्रु नहीं इसका। यदि कोई शत्रु है तो यह है मन। सारी दुनिया इसके पीछे लगती है। सबका गुरु परमेश्वर यही है, बस।

मनु मैगलु साकतु देवाना॥ बन खंडि माइआ मोहि हैराना॥
इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥
(मः 1/415)

गुरु नानक साहब कहते हैं, 'मन एक मस्त हाथी की तरह है जो मोह माया तथा विष्य विकारों के जंगलों में भटकता फिरता है। कभी स्त्रियों का प्रेम, कभी बच्चों का प्रेम, कभी कौमों मज़हबों के झगड़े, कभी ज़मीनों जायदादों के लोभ, कभी नाच, कभी रंग, कभी खेल तमाशों में लिए फिरता है सारी दुनिया को। यह काल का एजेण्ट है। इसका काम क्या है? भरमाना तथा भटकाना, बस और कोई नहीं। यह इन्द्रियों के वश में पड़ा हुआ है। इन्द्रियां भोग विलास

के वश में जकड़ी हुई हैं। मिट्टी ख़राब है बिचारी आत्मा की। 'गुरुमुखि खोज लहे घरु आपे।' कोई कोई गुरमुख ही अन्दर जाता है और इसको काबू करता है, नहीं तो सारी दुनिया इसके अधीन हुई पड़ी है। सोच लो!

मन अँतरि बोलै सभु कोई। मन मारे बिनु भगति न होई॥

सारी दुनिया इसके अधीन है। सबका गुरु परमेशवर यही है। जो भक्ति यह कहेगा हम वही करेंगे। यह वही कहेगा जिससे झगड़ा न हो। फकीरों ने इससे मुकाबला कर के भक्ति की है। ''मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।'' बस यही शत्रु है, बाकी कोई नहीं। जिसने इसको जीत लिया है, वह बहादुर है।

''मन जीतै जगु जीतु।''

कबीर सोई सूरमा मन से मांडे जूझ।

पांचों इन्द्री पकड़ कर, दूर करे सभ दूझ।

दुनिया में कौन बहादुर है, जो लड़ाई जीते, मल्ल युद्ध जीते, देश जीते। वरना मालिक की दरगाह में कौन है? जो मौत को जीते, काल को जीते, काम, क्रोध को मारे, मन को जीते, इन्द्रियों को वश में करे। वह बहादुर है मालिक की दरगाह में। हम पढ़ते हैं न शब्द। शब्द तो पढ़ते हैं, परन्तु हम उल्टी तरफ ले जाते हैं।

सूरा सो पहिचानिये जो लड़े दीन के हेत।

कौन दीन है? यह आत्मा को स्वतन्त्र कराये, यह दीन है। इसको कौन आजाद कराये आत्मा को? यहाँ यह भी कहा होगा मस्ताना शाह जी ने, कई बार कहा करते थे। देखो भई! आर्यो के लीडर हैं, सनातनियों के लीडर हैं, सिखों के हैं, कांग्रेस के हैं, कम्युनिस्टों के हैं, सोच लो सब के हैं ना! कोई आत्मा का भी लीडर है जिसकी मिट्टी पलीत है? बोलो! कोई आत्मा का भी है जो काम, क्रोध की अग्नि में जल रही है? इसको भी कोई बचाने वाला है? इसका भी कोई लीडर है? बोलो? सबको लगी हुई है। कम्युनिस्ट वाले कहते हैं हमारी पार्टी बढ़ जाए, कांग्रेस वाले कहते हैं हमारी बढ़ जाए, सिख कहते हैं हमारी बढ़ जाए, सनातनी कहते हैं हमारी बढ़ जाए, आर्य समाजी कहते हैं हमारी बढ़ जाए। चलो यदि सब सिख हो जाएं तो फिर क्या बनेगा भई! यदि सब मुसलमान बन गए फिर क्या बनेगा? यदि सब आर्य हो जाएं फिर क्या बनेगा? यदि सब कांग्रेस वाले हो जाएं तो फिर क्या बनेगा? सोच लो! फिर छुटकारा हो जाएगा? जब पाकिसतान बना, कई प्रेमी आए, कहने लगे अब छुटकारा हो जायेगा। मैंने

कहा, क्या? कि वह अलग हो गए हम अलग हो गए। मैंने कहा नहीं छुटकारा होता। प्रत्येक वर्ष शिया-सुन्नी वालों की खटकती है। यहाँ सिख-हिन्दू की खटक गई। इनको अलग करते दोनों को, उधर आर्यों और सनातनियों की लग जाएगी। उधर कोई और पार्टी बना कर खड़ा हो जाएगा। यदि एक तरफ भी रहेंगे तो उनकी और पार्टी से लग जाएगी। यह तो अपना मन है जो करवाता है सब झगड़े। शत्रु तो यह है,? जिसको जीतना है, सोच लो! कोई शत्रु नहीं इसका, बस यही शत्रु है। हाँः

पाठी– धन जोबन ते हुसन जबानी, तेरी दो दिन दी ज़िन्दगानी।
बन्दे! तेरी थोड़ियां दिनां दी ज़िन्दगानी
कर कायम कोई असल निशानी,
इह बार-बार नहींओं लभणा।
बंदिया इह बार बार नहींओं लभणा।
कि बार बार...

मैनेजर साहिब जी– यह कौन सी निशानियां पैदा करता है? या तो राज्य ले लिए या धर्मशालाएं बना लीं, या मन्दिर बना दिये। ऊपर नाम अपना लिख दिया। चलो यह भी अन्त को तबाह हो जाना है। कितने ही पत्थर के बना लो अन्त में तो प्रलय में फिर भी सब नष्ट हो जाते हैं। वास्तविक निशानी यह करनी थी कि दरगाह में जाना था, बस! रविदास कहता है–

जाति भी ओछी, कर्म भी ओछा, ओछा किसब हमारा।
नीच से प्रभु ऊंच किया कहै रविदास चमारा॥

मालिक की दरगाह में पहुँच गया। कहता मालिक ने ऊंचा कर दिया। यह निशानी कायम करनी थी जैसे गुरु नानक साहब ने की, कबीर साहब ने की। यह निशानी कायम करनी थी। युगों-युगों से यह निशानी है। दुनिया पलट जाये, खण्ड ब्रह्माण्ड पलट जाएं, यह निशानी नहीं जाती। यह निशानी है। वास्तविक निशानी कायम करनी थी इसने। यदि यह निशानी कायम कर ले, जहां भी जाए, ब्रह्म लोक में जाए, शिव लोक में जाए, इन्द्र लोक में जाए, सच खण्ड में जाए, सब इसको शाबाशी देते हैं। यह निशानी कायम करनी थी।

पाठी– ज़रा सोच रवां प्यारे दिल जानी; होका मार गए संत रूहानी॥
सच कह गई मौज़ मस्तानी, की बार बार नहींओं लभणा॥
बंदिया इह बार बार नहींओं लभणा॥ बार बार...

दोहा– चंगी वस्तु जे नहीं खरीदणी सी,
ते आया कास नूँ विच बाज़ार ऐवें।
मूर्ख आपणा कम्म तूं विसार बैठों,
चुक्की किसे दी सीस विगार ऐवें।
अजे वी जाग ते कुछ होश कर लै,
तेरी लुट्टी जांवदे चोर घर बार ऐवें॥
दिआ सिंध स्टेशनों रेल छुट्टी,
उमर जांवदी है तेज़ रफतार ऐवें॥"
''ज़रा सोच खां पिआरे दिल जानी॥"

मैनेजर साहिब जी– यदि दो रुपये गुम हो जाएँ सारा दिन चिन्ता फिक्र में रहता है, सोच लो! यह श्वास जो त्रिलोकी की कीमत रखता है।

कहिता हूँ कहि जात हूँ, कहाँ बजाऊँ ढोल॥
सुआसा खाली जात है, तीन लोक का मोल॥

इसकी कोई कदर है हमें? एक-एक श्वास त्रिलोकी जितना मूल्य रखता है। किसी को कदर है? बोलो! उन दो रुपये के लिए कितने श्वास खर्च किये, बोलो! उसकी चिन्ता फ़िक्र में कितने खर्च किये फिर भी मिलने नहीं, उसने चिन्ता फ़िक्र में खत्म किये। जो किसी मूल्य पर नहीं मिलेंगे। वे दो रुपये तो मिल जाएंगे। यह श्वास किसी मूल्य पर नहीं मिलेंगे। एक पुराना प्रेमी था। मस्ताना जी का, पहले से ही जानकार था। अब बहुत गरीबी की हालत में पाकिस्तान से आया, बहुत ग़रीबी की हालत में। पहले तो वहाँ अच्छा था, अमीर आदमी था। अब दिल्ली सदर बाज़ार की सड़क पर पैन ठीक कर के अब वह देता। सारा दिन मेहनत कर के शाम को मुश्किल से रोटी ही मिलती। एक दिन बाहर मस्ताना जी गए, वह पास आया, कहने लगा, जी मेरी एक विनती है। कहने लगे, क्या भई? कि, जो मुझे कोई सट्टा बताओ? मस्ताना जी ने कहा–अच्छा! कहने लगे, हमें तो भई एक सट्टा आता है। क्या? कहा, यह जो श्वास हैं किसी मूल्य पर भी नहीं मिलेंगे। यह जितने मालिक की भक्ति में लगा ले यह तेरे हैं। था तो भक्त ही, परन्तु अब धन ने चक्कर में डाल दिया। गरीबी ऐसी बला है। अब तो ठाठ बाठ में है, फिर सतगुरु की ऐसी कृपा है। बेचारा सेवा करता था, आता था, ठाठ में है। अब तो पांच सात हज़ार रुपये महीने की कमाई है। कई कारखाने चलते हैं। बड़ा लड़का भी मेरे विचार में तीन हज़ार रुपये लेता होगा। सब ठाठ से हैं। यह सट्टा है सोच लो! यह श्वास किसी मूल्य पर नहीं

मिलेंगे, किसी मूल्य पर नहीं मिलेंगे। हाथ से निकले तो बस, फिर पता नहीं कब मनुष्य की जूनि मिले कब न मिले। सोच लो! पहले भी कभी मिली होगी? कितनी देर हमें हो गई मालिक से बिछड़े। पता नहीं यह दुनिया कब की बनी है। युगों के युग बीत गए, प्रलय, महा-प्रलय, पता नहीं कितनी बीत गईं? कभी तो मनुष्य की जूनि मिली होगी? बोलो! किसी ना किसी समय तो कोई कामिल फकीर भी मिला होगा, हम ने कद्र न की। सोच लो! यदि अब हाथ से निकल गया, बस फिर वही हाल है। फिर क्या पता है? फिर क्या मालूम कब आओगे? फिर मालूम है हम कद्र कर लेंगे? बस अब जो संभल जाए, संभल जाए नहीं तो फिर चौरासी तैयार है इसके लिए।

कबीर गुर की भगति बिन, राजा गध्धा होइ॥
माटी लदे कुम्हार की, घास न डारे कोइ॥
कबीर गुर की भगति बिन नार कूकरी होइ॥
गली गली भरमत फिरे, टुक न डारे कोइ॥
उज्जल पहिने कपड़ा पान सपारी खाइ॥
कबीर गुर की भगति बिन, बांधा जमपुर जाइ॥

फरीद साहब जाते थे। एक वेश्या नौकरानी को पीट रही थी। पूछा क्यों इसको पीटती हो? कहती सुरमा दिया था इसको रगड़ने को, इसने मोटा पीस दिया, आंखों में चुभ रहा है। अब फरीद साहब चले गये। जब वह फिर कभी वापिस आए, पूछा वेश्या कहां है? कहते, जी वह तो मर गई। उसकी कब्र पर गए, कब्र खोदी। अब जहां सुरमा चुभ रहा था, उन आंखों में छोटे छोटे पक्षियों ने घोंसले बना कर अंडे दिये हैं। वहाँ फरीद साहब कहते हैं—

फरीदा जिस लोइण जगु मोहिआ सो लोइण मैं डिठु॥
कजल रेख न सहदिया से पंखी सूई बहिठु॥

अवस्था तो इसकी यह है। आखिर तो अग्नि का ग्रास है, कितना ही संभाल लो इसको? अग्नि का ग्रास है, अग्नि का ग्रास है, अग्नि का ग्रास है। कितना ही संभाल लो। ज़रूर जाना है इसने, ज़रूर जाना है, ज़रूर जाना है, कितना ही संभाल लो। यह शरीर के प्यार में ही गल गया। जितना प्रबन्ध इसने शरीर के प्यार का किया है। मिट्टी का किया है, सोच लो! बिस्तर मिट्टी के लिए, खाने मिट्टी के लिए, मकान मिट्टी संभालने के लिए। इसमें ही लग गया। असली वस्तु ही भुला बैठा।

अन्त में यह शरीर अग्नि में ही चला गया। बाकी इसके हाथ क्या लगा? सोच लो! गुरु नानक साहब कहते हैं–

खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न तीजै ॥

कि जिस समय मृत्यु आई, मिट्टी मिट्टी में मिल गई, पानी पानी में मिल गया, अग्नि अग्नि में मिल गई, आकाश आकाश में मिल गया, सोच लो! वायु वायु में मिल गई। शेष क्या रह गया? कहते बहुत समझा समझा कर हार थक गए, कोई नहीं सुनता। जो मनमुख हैं, कहते हैं खाओ, पीओ मौज़ करो, किसने देखा है? कहते पत्थर के दिल उनके बने हुए हैं। जैसे पत्थर पर पानी की बूंद डालो कोई प्रभाव नहीं। वर्षा हो जाए कोई प्रभाव नहीं। इसी तरह हमारे दिल नहीं भीगते। कोई बिरला ही समझता है। हमसे तो कोढ़ी ही अच्छा है जो नाम भज ले। यदि इसको सारी आयु संभाला, संवारा, यदि नाम न भजा तो किस अर्थ? कबीर साहब कहते हैं–

नाम जपत कोढ़ी भला, चोइ चोइ पड़े जो चाम॥
कंचन देहि किस काम की जा मुख नाहीं नाम॥

एक मुसलमान फकीर हुआ है हाफ़िज़, उन्होंने कहा है–

जान बजाना दे वगरना अज़ तो विस्तानद अजल॥
खुद तूं मुनसिफ बाश ऐ दिल ईं निको या आं निको॥

''कि जिस प्रकार इस तन ने तो जाना है, चाहे मौत को दे दो, चाहे सतगुरु के हवाले कर दो। तू खुद ही इन्साफ कर कि मौत को दे देनी अच्छी है या सतगुरु के हवाले करनी अच्छी।'' बोलो! आखिर तो जाना है, जाना है, जाना है। कितनी ही पालना कर लो, कितना ही संभाल लो, इसने जाना है। अग्नि की खुराक है, अग्नि की खुराक है। जो इसमें से लाभ ले लेगा, ले लेगा नहीं तो फिर इसी प्रकार अग्नि में जायेगी ही यह : फिर चौरासी इसके लिए तैयार है आगे। हाँ जीः

पाठी– बन्दे नाम गुरु का जप ले तू'', क्यों दिल से भुलाया है।
इह मानस जन्म मुश्किल से मिला क्यों पा के गंवाया है।
गुज़रा बचपन खेलों में तेरे खेल का क्या कहना।
जब आई जवानी तो निस दिन मस्ती में रहना।
कि तूने मस्ती में रहना।...
तेरी दोनों अवस्था यूं ही गई, क्या कर्म कमाया है,
यह मानस जन्म मुश्किल से मिला, क्यों पा के गंवाया है?
बन्दे नाम गुरु का जप ले तूं क्यों...

क्या है मान जवानी का जवानी सदा ना रहनी है ॥
तूं कर याद बुढ़ापे को बात जब सब की सहनी है।
जिस को भी बुलाया वह दूर गया, कोई पास ना आया है।
यह मानस जन्म मुश्किल से मिला, क्यों पा के गंवाया है।''

मैनेजर साहिब जी– बचपन में तो कहता है मालूम नहीं। जवानी वैसे ही मस्ती में निकाल देता है। जब बुढ़ापा आया रोटी की भी चिन्ता है। कोई पास नहीं आता, यूं चिन्ता फ़िक्र लगी रहती है। अब नाम किस समय जपे, सोच लो! यदि कोई जप सकता है तो जवानी में ही जप सकता है। यह ग़नीमत है जो बुढ़ापे में जपे, जैसे गुरु अमरदास जी ने जपा, नहीं तो मुश्किल है। उस समय तो सौ चिन्ता फ़िक्र हैं। पहले तो कोई नज़दीक नहीं आता। यदि आयेगा भी तो किस समय आयेगा? जब कभी पोता बीमार है, कभी दोहता बीमार है, चलो दादे के पास चलें, चलो नाना के पास चलें। उसको यह चिन्ता फ़िक्र है या रोटी की चिन्ता फ़िक्र है। ठीक लिखा है गुरु अर्जुन साहब ने–

जब लगु जीउ पिंड है साबतु, तब लगि किछु ना समारे॥
जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे॥

कहते हैं जब तक तो शरीर साबत था तब तक तो कुछ ना किया, नाम ना जपा। बुढ़ापे का तो भजन करना ही इस तरह है जैसे मकान को तो आग लग जाए, आग। फिर कहे कुआं खोदो, फिर रस्सी लाएं, फिर डोल लाएं, फिर पानी निकालें, फिर आग बुझाएं। कहते, हो सकता है? सोच लो! सौ चिन्ता फ़िक्र लगती है। सोच लो! मन कहता है बुढ़ापे में करूंगा। बुढ़ापे में यूं भी नहीं होता। ख़्याल ही नहीं टिक सकता। सैकड़ों विपताएँ पड़ी हैं। सारी उम्र की बनी बनाई इज़्ज़त ना कहीं गंवा लूं। लड़के ख़राब ना कर दें जायदाद। यूं ही फ़िक्र में रह जाता है सारी उम्र। जो काम है जवानी में है। जिस तरह जो काम हम बुढ़ापे में नहीं कर सकते, वह जवानी में कर सकते हैं। इसी तरह नाम भी बुढ़ापे में नहीं जप सकते। नाम के जपने का समय भी यही है और कोई नहीं। जैसे कचहरियों में केस आते हैं वह देखते हैं, हर समय सुनते हैं, मुकदमों की बाबत, भई यह ऐसे हो गया, यह ऐसे हो गया? इसी तरह हमारे पास भी केस आते हैं। वह कहते हैं, हाय, क्या करें, मैं नाम तो जपूं, अब मेरा समय यही है। अब क्या करूं मेरी टांगें दुखती हैं, आह! यहाँ दर्द होता है, यहाँ यह होता है। कमर से बैठा नहीं जाता। फिर करे क्या? बोल! सोच लो! हाय! खांसी नहीं छोड़ती। दमा नहीं छोड़ता, यह नहीं होता,

वह नहीं होता। नाम किस समय जपे फिर। फिर तो कलह क्लेशों में ही पड़ा रहता है। सोच लो! किस को बुढ़ापा याद है? किसको याद है? बूढ़ों को देखता है फिर भी याद नहीं आता। उनकी हालत देख कर फिर भी याद नहीं आता। समझता ही नहीं भई मेरे पर भी आएगा कभी। ना मौत याद है ना बुढ़ापा याद है किसी को? सोच लो! याद कर उस बुढ़ापे को, कभी आएगा। यह समय किसी को याद है? बोलो! हाँ जीः

तूं ने मेरी तेरी में सब उमर गुज़ारी है॥
तूं कर याद सदा उस को जो सब के हितकारी है॥
नित नित जो शरण सतिगरु की करे, कोई कष्ट न आया है॥
इह मानस जन्म मुश्किल से मिला, क्यों पा के गंवाया है॥

मैनेजर साहिब जी– यदि यह सतगुरु का भजन करे तो बुढ़ापे में भी खड़ा है साथ। कोई न कोई रूप धार के इसकी सेवा करेगा। यदि लड़के कहना नहीं मानेंगे तो कोई और खड़ा कर देगा। करके देख लो। सबकी संभाल करता है, हमने देखा है। एक कोई बीबी थी। उसके पति ने ज़मीन भी रहन रख दी। शराब पीता था, अफीम खाता था। एक लड़की थी कोई उस समय दस ग्यारह वर्ष की। छोटे-छोटे बच्चे थे। वह घबराई। हमने कहा तूं अपना भजन सिमरण किया कर। बेचारी भजन सिमरण करती। उसने ऐसा भरोसा पैदा किया, उसके जो हिस्सेदार थे वह भी भाग-भाग कर काम करते। लड़की की शादी पर पच्चीस तीस हज़ार रुपया लगाया उसने। ज़मीनें छुड़वा लीं, थोड़े दिनों में ही। जब मस्ताना जी ने चोला छोड़ा था उससे बाद की बात है। ज़मीनें छुड़वा लीं, मकान बना लिया, लड़कों की शादियां करवा दीं। बढ़िया से बढ़िया मकान बना लिये। गांव में नहीं उस जैसे। यह नाम जपे तो सही–वह सब का काम करता है। खुद ही बैठा काम किये जाये। बाडी वाला जो सतगुरु है, बाडी वाला जो राम है, वह काम करने वाला राम है। खुद ही काम करता रहे। जैसे नामदेव की छपरी बनाई, धन्ने की गाएं चराईं। इसके भी कार्य कर सकता है। यदि उनके किये तो इसके भी करे। पर इस पर भरोसा नहीं किसी को आता। यदि इसको ठीक फकीर मिल जाए, यह जपे, सब काम स्वयं करता फिरे। ऐसे थोड़े लिखा है–

सच्चा सतिगुरु सेवि, सच्चुं सम्हालिआ॥
अंति खलोआ आये जि सतिगुर अगै घालिआ॥
पोह न सके जमकालु सच्चा रखवालिआ॥

जिन फकीरों के अन्दर आता है, वह सतगुरु का रूप होते हैं। वहाँ जाते हैं दरगाह में, वह भी इसके साथ है। तब ही गुरु नानक साहब ने लिखा है–

नानक कच्चड़िआ सिउ तोड़ि ढूंढि सज्जन संत पकिआ॥
ओई जींवदे बिछुड़हि ओई मुइआ ना जाही छोड़ि॥
सजण सेई नालि मैं चलदिआं नाल चलँनि॥
जित्थे लेखा मँगीऐ तिथे खड़े दिसँनि॥

बस, इसके दो साथी हैं। या अन्दर सतगुरु या बाहर फकीर जो कहता है अब राम नाम सति कर, अभी नाम को जप ले, या वह साथी है या अन्दर सतगुरु साथी हैं। बाकी कोई साथी नहीं, बाकी सारी दुनिया इसकी दुश्मन है। चाहे कितनी ही सहायता करते हैं बाहर, मौत के समय सब दुश्मन हैं इसके। कोई साथ देने वाला नहीं। सोच लो! कौन सहायता दे सकता है, उस समय? हाँ जीः

पाठी– तज दे मग़रूरी को, याद कर वक्त अखीरी को॥
इक दिन जंगल जाना है, छोड़ कर ऐश अमीरी को॥
राम देवा नसीहत को माने नहीं तूं तो यू ही भरमाया है॥
इह मानस जनम मुश्किल से मिला, क्यों पा कर गंवाया है?
इह मानस...

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग

'कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण दा'

सत्संग के वचन

पाठी– कर ले रे कर ले सौदा, पार लंघण दा,
अगे अग्गे हट्टड़ी बाज़ार भी नहीओं।
आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता,
बार बार जग मांही आवणा नहीओं।

मैनेजर साहिब जी– जितने फकीर मालिक की दरगाह में गये, चाहे हिन्दू हुए चाहे मुसलमान, चाहे सिख, चाहे ईसाई, चाहे किसी मज़हब के हुए, सब का एक ही मत है, सबका एक ही उपदेश है। क्या? पहला यह है–एक यह मूल्यवान जन्म है, सब जूनियों की सरदार जूनी है। इसलिये इसको कहा जाता है, 'नर नरायणी देह'। यह मालिक के मिलने का समय है। ''अवर जोनि तेरी पनिहारी। इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥" यह सब जूनों की सरदार है। यह मालिक के मिलने का समय है। इसके लिए सो वह कहते हैं फिर समय नहीं। यदि मिल सकता है तो इसी जूनि में मिल सकता है और किसी में नहीं। युगों के युग हमें हो गये हैं मालिक से बिछुड़े। कितनी प्रलय, महाप्रलय हो गई हैं? कितने सतयुग बीत गये हैं? कितने त्रेता बीत गए हैं? कितने द्वापर बीत गए हैं? कितने कलयुग बीत गए हैं? हम इसी तरह धक्के खा रहे हैं। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं–

कई जनम भये कीट पतंगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥ चिरंकाल इह देह संजरिया॥

(मः 5/176)

कई जन्म हमने 'कीट पतंगों के लिए, हाथी, घोड़ों के लिए, हिरणों के लिए, सांपों के लिए, वृक्षों के लिए। यह समय है तेरा मालिक को मिलने का

और अपने छुटकारे का प्रबन्ध कर। अब हम किस प्रकार का उपदेश देते हैं? बड़ी विनम्रता से, बड़ी दीनता से। क्या कहते हैं कबीर साहब–

आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता।

क्या ज़रूरत थी उनको कहने की। कौन सा दान मांगते हैं हम से। चने हुए तो चबा लिये नहीं तो ना सही। नीचे पड़े हैं तो नीचे ही पड़े रहे। किसी से कोई वस्तु ली? कौन सा दान मांगते हैं? वह हमारे पीछे कहते हैं, क्या? हाथ बांध कर मालिक का नाम जपाते हैं। वह हम देखते हैं कि हम पर कितनी मुसीबतें आती हैं। सोच लो! कितने कीट पतंगे प्रतिदिन हम पैरों तले मसलते हैं। बैलों की हालत देख लो। ऊंटों की हालत देख लो। बकरों की हालत देख लो। तुम्हारी भी यही हालत होनी है। एक समय शुरू-शुरू की बात है। सच्चे सौदे के साथ एक नाला जाता था। कच्ची सड़क थी। वहाँ से छकड़ा जा रहा था। नाले का पानी टूट कर सड़क पर चला गया और वह छकड़ा फंस गया। अब बैलों पर डंडे पड़ते हैं, वह हिल नहीं सकते। वह मिट्टी ऐसी है कि चिमट जाती है। मस्ताना जी ने दीवार के ऊपर से देखा। देखकर कहने लगे, ''ओह! जब इन को मनुष्य की जूनि मिली थी, यदि यह भजन करते तो इनकी क्यों यह हालत होती, क्यों ऐसी हालत होती? तो वे कहते हैं कि वे देखते हैं कि नरकों में हमारी क्या हालत होती है। भिन्न-भिन्न जूनियों में क्या हालत होती है? कहीं सुख नहीं। यदि कहीं सुख थोड़ा बहुत है तो मनुष्य की जूनि में है। यहाँ भी हालत देख लो, कौन सुखी है? तो वह कहते हैं :

''आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता॥''

हाथ बांध-बांध कर कहते हैं समय है छुटकारे का, कर लो। यह समय है चौरासी में से निकलने का, वह प्रबन्ध कर लो। हम प्रबन्ध तो करते हैं। मंदिरों में जाते हैं, गुरुद्वारों में जाते हैं, पूजा करते हैं, पाठ करते हैं, तीर्थों पर जाते हैं, अन्य स्थानों पर जाते हैं, गिरजा घरों में जाते हैं। सोच लो! कभी हमने सोचा है कि हमारा जाने का असली मतलब क्या है? जाने का मतलब यह है कि मालिक का प्यार आये, अन्दर मालिक प्रकट हो। यदि मालिक प्रकट नहीं हुआ तो उसकी कोई निशानी मिले। यदि कोई निशानी नहीं मिली तो काम, क्रोध, लोभ, मोह में कोई शांती आये। यदि कोई शांती नहीं आई, कोई निशानी भी नहीं मिली, मालिक भी नहीं मिला तो कोई उसकी तड़प ही उठे, उसकी कोई लगन ही लगे, प्रेम ही पैदा हो। यदि यह भी ना हो तो करने का क्या लाभ? सोच लो! फिर करने का क्या लाभ? देखना यह है कि हमारा भजन

ग़लत तो नहीं। देखना है वह छुटकारे का भजन कौन सा है? वह क्या वस्तु है? कौन से रास्ते हमने जाना है, वह क्या ढंग है? सारी दुनिया अपनी अपनी शरीयत में बंधी हुई है।

जब फकीर आये उनकी किसी ने नहीं सुनी। यदि कबीर साहब आये तो कहने लगे, जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है। यदि गुरु नानक साहब आये तो गलत है। बाद में सब पूजते हैं, उस समय किसी ने ना मानी, किसी ने ना मानी, किसी ने ना मानी। कबीर साहब कहते हैं–

सब से कहूँ पुकार पुकारी। कोई नहीं माने नर और नारी॥
जगत कहे जुलाहा अज्ञानी। हरि हरि का कुछ भेद न जानी॥
नीच जात और भगत कहाई। हरि का दरस कबहुं ना पाई॥

अब कबीर, कबीर; कबीर पुकार रहे हैं, उस समय गलत कहते थे। अब नानक, नानक कर रहे हैं। दादू साहब कहते हैं–

दादू कहित पुकारी, कोई माने नाहीं हमारी।
पंडित काज़ी वेद कतेबे, पढ़ पढ़ मुए लबारी।
वह तीर्थ वह हज को जाते, बूढे भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील वीचारी।
हिन्दू, तुर्क, ईसाई तीनों, कर्म धर्म पचहारी।
नूर ज़हूर खुदा हम पाया, उतरे भवजल पारी।

कहते सारी दुनिया, कोई ज्ञानों में फंसी पड़ी है, कोई पढ़ने पढ़ाने में फंसी पड़ी है। कोई मंदिरों में, कोई तीर्थों पर, कोई कहीं। कहते असली वस्तु को कोई पकड़ता ही नहीं। आवाज़ देते हैं, कोई सुनता ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता,
बार बार जग माहीं आवणा नहीओं।
कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण दा,
अगे अगे हटड़ी बाज़ार भी नहीओं।"

मैनेजर साहिब जी– "पूरन है? पूरन बैठा है? तेरे साथ वह भी आया है? इधर आ, वह सुना (पूरन की ज़ुबानी) हमारे गांव पिछले शनिवार को चौधरी करतार सिंह की मृत्यु हो गई। वह इस प्रकार पुकारे जाता था जिस तरह कट्टा पुकारता है। सारे गांव वाले पास बैठे थे परन्तु किसी के मुख से कुछ नहीं निकला। वह ऐसे ही हाथ पांव सब कुछ ऐसे ही मारे जाये, परन्तु किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। उसकी इतनी

चलती थी कि यदि सुखाड़िये (राजस्थान का मुख्यमंत्री) को पत्र लिख देता तो घर बैठे का ही काम बन जाता था।'' वह कहता था, कौन ईश्वर है? मेरा पत्र ही काम करता है, ईश्वर क्या काम करता है। अब उस समय कौन सहायक होगा वहाँ? सुखाड़िया सहायक होगा उस समय बोलो! पहले तो मस्ती में फिरता था, सारा दिन शराब आदि पीता था। उसका भतीजा (चौधरी करतार सिंह का) आया। उसने आकर हालत बताई कि मैं तो बच गया। शुक्र है कहता! अब बोलो, उस समय कौन सहायक है। सोचो तुम! हम बाहर पूजा करते हैं। मंदिरों में जाते हैं, गुरुद्वारों में जाते हैं, सब पाठ करते हैं, सब कुछ करते हैं। ठीक है? जिस समय मृत्यु आई; मृत्यु भीतर, मारने वाला भीतर। अब वह पास पास बैठे हैं सब ही। वह हाय तौबा करता है। सोच लो! वह बता भई, वह जो साथ गया था तुम्हारे वह देख आया था, तुम्हारी दुकान पर आया था (पूरन की ज़ुबानी) एक दिन उनके घर से एक आदमी हमारी दुकान पर आया। आकर कहने लगा, ''जल्दी कर मुझे चारपाई निकाल दे, मुझसे तो उसकी हालत देखी नहीं जाती। मेरा दिल अन्दर से कांप रहा है, जल्दी कर। मैंने फटाफट उसको चारपाई निकाल कर दी।'' वह तो देखने से ही कांप गया। देखकर ही कांप गया, जिस पर बीत रही हो, उसकी क्या हालत?

''जिन्द निमाणी कढ़ूढीए हड्डां कू कड़काए।''

कृष्ण भगवान ने कहा है, ''कि जिस समय मृत्यु आती है, जैसे एक हज़ार बिच्छु इकट्ठे डंक मारे इतनी तकलीफ होती है।'' मुसलमानों की पुस्तकों में आया है। सब फकीरों ने देख कर कहा है। कहते हैं, ''जैसे एक कांटेदार झाड़ी को लेकर गुदा के रास्ते डाल कर मुँह के रास्ते निकालो, इतनी तकलीफ होती है।'' अब इस का प्रबन्ध किया है? फकीर देखते हैं इसके साथ क्या बीतेगी? वह देखते हैं तो रोते हैं आकर कि कर लो, कुछ कर लो, कर लो, कर लो। अपने बचाव का प्रबन्ध कर लो। मृत्यु अन्दर, मारने वाला अन्दर सोचो! अब पास बैठे को पता ही नहीं कि कौन पीड़ता है उसको! क्यों विलाप करता है? बोलो! किसी को पता लगता है। उसका उपाय सोचा है किसी ने? मृत्यु भी अन्दर, मारने वाला भी अन्दर, उस समय अन्दर वाला ही छुड़ा सकेगा कि कोई छुड़ाएगा, बोलो! गुरुद्वारे बाहर, ग्रन्थ शास्त्र बाहर, मंदिर बाहर, तीर्थ बाहर, ठाकुर बाहर, सम्बन्धी बाहर, सुखाड़िये जैसे सब बाहर, बोलो! कौन मदद करेगा वहाँ? उसको खुश किया है किसी ने?

पाठी– कच्ची कच्ची ईंट बालू का गारा,
पक्का पक्का मंदिर चिनवाये क्यों लिया।
आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता...।

मैनेजर साहिब जी– यदि शरीर ना चले तो यह काम नहीं कर सकता। इसके लिए खुराक की ज़रूरत है, कपड़े की भी ज़रूरत है, मकान की भी ज़रूरत है। परन्तु यह इनमें ही उलझ गया। जो असली वस्तु थी, जैसे गुरु अर्जुन साहब कहते हैं :

घटि वसहि चिरणार बिन्द, रसना जपै गोपाल।
नानक सो प्रभु सिमिरिऐ तिसु देही कउ पालि॥

अब इसको पाल पोस कर मालिक का नाम जपना था। वह तो भूल ही गया। पालने पोसने में ही रह गया। ज्यों ठेके लिए हैं मकानों के आगे से आगे, आगे से आगे, कपड़ों के और और। आगे से आगे बनाने के साधन कर लिए, परन्तु वह असली काम तो भूल ही गया। आदमी का पल भर का भरोसा नहीं, वहाँ पांव फिसला बस, गया। सोचो! पांव फिसला और गया। और मकान बनाता है कि पुश्तों तक भी बैठे रहें तो कहता है–''कच्ची कच्ची ईंट बालू का गारा।'' इस की तो अपनी यह हालत है कि अपने लिए बनाता क्या है? बढ़िया से बढ़िया मकान, बढ़िया से बढ़िया, बढ़िया से बढ़िया। वह भूल ही गया; जो काम करना था। (एक आदमी को) पीछे भण्डारा हुआ वहाँ। भण्डारे में उसी समय संदेसा आ गया कि जीप बेची है किसी ने और एक ने ले ली। अब उसके पास दाम पूरे नहीं थे। वह कहने लगा तूं मेरे साथ चल और ले आ। कहा, अच्छा चलो। फिर कहने लगा तू चल मैं कल आ जाऊंगा। घर वाले कहने लगे कि तूं अब चला जा, कल को किराया खरचेगा, आज ही जाकर ले आ। चलो बेचारा तैयार हो गया। वहाँ का सरपंच भी अचानक आया हुआ था। वह कहीं बाहर से आया था जयपुर की ओर से। उसके साथ कोई पंडित उधर का हो लिया। बातों-बातों में उससे लगाव हो गया। कहने लगा, चल यार तू आज हमारे गांव चल। कहने लगा अच्छा। वह जीप में बैठ कर चल पड़ा। आगे वहाँ गंगा नगर के रास्ते में, क्या नाम उसका, पक्के साहरने के पास उनकी जीप दिल्ली वाली बस से टकरा गई। जीप को आग लग गई, सब जल गये, सिर्फ सरपंच बचा। जीप भी गई, बेचने वाला भी गया, खरीदने वाला भी गया। बोलो! एक मिनट का भरोसा नहीं इसका, जिसके पीछे लगा फिरता है; हैं! वह खुश हुआ कि मैं जीप ले ली। सब ही काम समाप्त। एक मिनट नहीं लगता। हाँ जीः

बस इसी तरह ठेके बांध लिये। यदि भक्ति में भी आया, तो कौमों मज़हबों के झगड़े, और-और उलझनों में पड़ गया। लड़ाईयां, मंदिरों, मस्जिदों की लड़ाईयां, वह उसके घर गिराता है कोई प्रदेशों के लिए फंस गया। जो असली काम था, वह भूल ही गये। ना देश साथ जायेंगे। यह अपने देश को भूला फिरता है। ना कौमों

ने साथ जाना है। सोच लो! ना यारों दोस्तों ने साथ जाना है। सोचो! कौन सी वस्तु जाएगी साथ? मंदिर मस्जिद जायेंगे? कोई और वस्तु जायेगी साथ? कौन सी जायेगी? बोलो! जो साथ जाने वाली थी उसका कोई प्रबन्ध ही नहीं किया। बोलो! ऐसे ही उलझनों में मर गया। एक फकीर ने लिखा है :–

तुम जात न जाण गवारा हो।

को तुम आए कहां ते आए, झूठा करत पसारा हो।

कि ऐ गवार! तुझे तो अपनी जात का ही पता नहीं। सोच लो! हमें पता है अपनी जात का क्या है? कोई सनातनी बना फिरता है, कोई आर्य बना फिरता है, कोई खालसा बना फिरता है, कोई राधा स्वामी बना फिरता है, कोई सच्चे सौदे वाला बना फिरता है। कोई कुछ बना फिरता है और कोई कुछ बना फिरता है। असली वस्तु भूल गये। यह है कौन?

कहु कबीर इहु राम की अंसु।

यह राम की अंश है। वह तो भूल ही गया है; यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है। इसका देश सच-खण्ड अनामी; यह तो मिट्टी के देशों के पीछे लड़-लड़ कर मर गया। सोच लो! बच्चे देखते हैं; खेलते होते हैं, बरसात के दिनों में कूप बना कर। वह एक दूसरे के गिरा जाते हैं। हम कहते हैं किस लिये लड़ते हो भई चलो अपने घरों को। इसी तरह फकीर देखते हैं कि वह छोटे कूप हैं, यह बड़े कूप हैं। लड़ लड़ कर मर गये, इसको क्या मिला? इसका देश सच-खण्ड अनामी, यह सतपुरुष का पुत्र।

माटी की बूंद पिण्ड की रचना, ता में प्राण प्यारा हो।

लोभ लहर में मोह की धारा, सिरजणहार विसारा हो॥

यह मिट्टी है और मिट्टी में ही मिल जाना है। सोच लो! इसका कोई भी भेष बना लो, किसी में भी डाल लो, अन्त में तो मिट्टी बनना है इसने। अग्नि की खुराक है, अग्नि की खुराक है, अग्नि की खुराक है। उस समय जातियां कहां जायेंगी। बोलो! उस समय जाति नज़दीक आयेगी?

जात पात न पूछै कोए, हरि को भजे सो हरि का होए ॥

सब रोज़ाना पढ़ते हैं, ऐसे ही दुष्कर्मों में पड़ा है यह। जो काम करना था वह तो किया ही ना। हाँ जीः

पाठी– ''चंगी चीज़ जे नहीं खरीदणी सी,

आया कास नूं विच बाजार ऐवें।

मूर्ख आपणा कम विसार बैठों,
चुक्की किसे दी सीस वगार ऐवें॥"

मैनेजर साहिब जी– सोच लो! या तो मालिक मिलता या कोई उसकी निशानी मिलती, है! या भीतर शांती आती या काम क्रोध ही घटते या उसका कोई प्रेम ही उठता। कुछ न कुछ तो हो, यदि यह भी ना किया तो हाथ क्या लगा?

सो जपु सो तपु सा व्रत पूजा, जितु हरि सिउ प्रीति लगाई॥
क्या जपु क्या तपु क्या व्रत पूजा ॥ जा के रिदै भाउ है दूजा ॥

सोच लो! दूजा भाव लिए बैठे हैं, बाकी क्या? हमारे जप, तप कहां गए? हाँ जीः

पीठा– ''अजे भी जाग ते कुछ होश कर लै,
लुट्टी जांदे चोर घर बार ऐवें।
दया सिंध स्टेशनों रेल छुट्टी,
उमर जांवदी तेज़ रफतार ऐवें॥"

मैनेजर साहिब जी– बस यह है सारी बात, चोर लूट रहे हैं इसको और कुछ नहीं। क्या लूट रहे हैं? यह श्वास रूपी पूंजी इसको मालिक ने दी थी। यह एक अवसर था कि अपने छुटकारे का प्रबन्ध कर ले। यदि अब ना किया तो फिर चौरासी तैयार है।

कबीर गुर की भक्ति बिना, राजा गधा होए।
माटी लदे घुमार की, घास ना डारे कोए।
कबीर गुर की भक्ति बिन, नार कूकरी होए।
गली गली भरमत फिरे टुक ना डारे कोए।
उज्जल पहने कपड़ा, पान सपारी खाए।
कबीर गुर की भक्ति बिन बाँधा जमपर जाए।

यह वस्तु खरीद करनी थी। सब सौदे इसके भीतर हैं। कबीर साहब कहते हैं–

सौदा करे सो जाणे साधो, काया गढ़ खूब बाज़ार।
इस काया में चोर फिरत हैं, लुच्चे ढीठ लबार॥
इस काया में हाट लगाए, बैठे शाहूकार॥

सब कुछ मालिक ने इसके लिए इसके अन्दर रखा है।

''कोई जानेगा जाननहारा, अबधू अन्धा धुन्ध अंधयारा।
या घट भीतर बन और बस्ती, या ही में झाड़ पहारा।
या घट भीतर बाग बग़ीचा, या ही में सींचनहारा।
या घट भीतर कासी मथुरा या ही में गढ़ गिरनारा।
या घट भीतर ब्रह्मा विष्णु, शिव सनकादि अपारा।
या घट भीतर आए लेत हैं, राम कृष्ण अवतारा।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू या ही में गुरु हमारा ॥''

सब कुछ इसके अन्दर रखा है। मालिक ने सब कुछ इसके अन्दर रखा है।

काइया अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला॥
काइया अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइया अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा॥
काइया अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाज़ारा॥
इसु काइया अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुरु कै सबदि वीचारा॥
काइया अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा॥
काइया अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभु ओपति जितु संसारा॥
सचै आपणा खेलु रचाइया आवागवणु पासारा॥

(मः 3/754)

सब कुछ मालिक ने अन्दर रख छोड़ा है। प्रत्येक वस्तु है। इसने सब सौदे बाकी किये परन्तु जो असली था वह ना किया। सोचो! कौन से चोर हैं जो इसको लूट रहे हैं। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं। इसने काम के सौदे किये, क्रोध के किये, लड़ाई झगड़े किये। लोभ के किये। मोह के किये, अहंकार के किये। मान इज़्ज़त ली, इज़्ज़तें लीं, भेष बनाए। कोई और अहंकार में फंसा है! परन्तु जो असली था वह मालिक वाला, वह ना किया। सब कुछ इसके अन्दर रखा है मालिक ने। कोई वस्तु बाहर नहीं। सौदा इसके भीतर है बाहर कहीं नहीं। यह (शरीर की ओर संकेत कर के) असली मंदिर है जिसमें सौदा करना है।

हरि मंदरु एहु शरीरु है ज्ञानि रतनि प्रकटु होइ॥

''Body is the temple of God.''

यही मुसलमान फकीर कहते हैं–

''जाहलों की मस्जिद मिट्टी और पानी की बनी हुई है और साहब दिलों

का यह दिल है जिस में मालिक बसता है।'' इसके अन्दर सौदा करना है। सब कुछ इसके अन्दर है। वह जब मिलना है, अन्दर से मिलना है।

मुझ को कहां ढूंडे बन्दे मैं हूँ तेरे पास में।
ना तीर्थ में ना मूर्त में ना एकांत निवास में।
ना मंदिर में ना मस्जिद में ना कांशी कैलाश में।
खोजी होवे तुरन्त मिल जाऊं पल भर की तलाश में।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूँ विश्वास में ॥

इसको अन्दर विश्वास आता ही नहीं। वह मौत से छुड़ाने वाला सतगुरु इसके अन्दर है। सोच लो। मौत से छुड़ाने वाला गुरु इसके अन्दर है, मृत्यु से छुड़ाने वाला राम, इसके अन्दर है। यमदूत भी अन्दर है। मृत्यु के समय सोच लो विलाप करता है। उस समय वह शब्द गुरु छुड़ाने वाला है बाकी कोई नहीं। उसको खुश ना किया और बाहर सब को खुश किया। गुरु ग्रन्थ साहब क्या कहता है :

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला॥
सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥

कभी शब्द गुरु को खुश किया है? उसको प्रगट किया है? उसका हुक्म माना है? सोच लो! कबीर साहब कहते हैं–

शब्द गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में ठौर-ठौर बट मार॥

यही तुलसी साहब कहते हैं–

सुरत शिष शब्दे गुरु मिल मार्ग जाना हो।
अलख आकाश ऊंधा कुआं तां में सूरत समाना हो॥

यही बिशनोईयों में आता है–

"सबदु गुरु सुरत धुनि चेला।"

उसको तो किसी ने खुश नहीं किया। नानक-नानक तो कहते हो, नानक का पता है क्या था वह? वह शब्द गुरु आया था देह तो नहीं था :

नानक आदि अंगद अमर सतिगुरु सबदि समाइअउ।
धनु धनु गुरु रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइउ ॥

देह तो नहीं थी! वह शब्द हमारे लिए शरीर धारण कर के आया था। यही ईसा कहता है–''The word was made flesh and dwelth amongst us.''

कि वह शब्द शरीर धारण करके आया और हमारे साथ रहा हमें समझाने के लिए! गुरु नानक साहब का चोला पहना, जब वह पुराना हुआ, चोले ने मिट्टी ने पुराना होना ही है! वह छोड़ा, गुरु अंगद साहब के चोले में बैठ कर काम किया। फिर गुरु अमरदास के चोले में काम किया। लेकिन जब भी काम करेगा, ''जुगि-जुगि संत भले प्रभु तेरे।'' वह मालिक फकीरों के चोले में आकर करेगा, नहीं तो नहीं! नहीं तो हमें समझा बुझा नहीं सकता :

ब्रह्म बोले काया के ओल्हे। काया बिन ब्रह्म क्यों बोले।

वह आते हैं हमें समझाने के लिए कि तेरा गुरु, शब्द गुरु तेरे अन्दर है, उसी को खुश कर ले! हमने इस तरह खुश किया है तू उस तरह खुश कर ले, सोच लो! मौत तो दूर पड़ी है, अब यह क्या कहता है? चोर लूट रहे हैं! काम, क्रोध, लोभ मोह, अहंकार इस को लूट रहे हैं। अब यह पता है कि काम भी अन्दर है, लोभ भी अन्दर है, क्रोध भी अन्दर है। कोई पकड़ो, काबू करो इनको। बोलो! कौन करेगा काबू इनको? बड़े-बड़े शृंगी ऋषि जैसे जिन्होंने अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किया, मारे गए पर काबू न आए। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया। प्राशचर पूर्ण योगी होकर आया, काबू न आये। उन्हें काबू करने वाला अन्दर है। उसके आगे बेनती करे। ''शरणि परे गुरुदेव तुम्हारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी।" कि ऐ सतगुरु! तू मेरे अन्दर बैठा है। तू मेरा कोई बन्दोबस्त कर। मैं इन डाकुओं के चंगुल में हूँ। वह कोई बन्दोबस्त करे तो करे नहीं तो किसी की ताकत नहीं। वह बन्दोबस्त करे तो करे नहीं तो किसी की ताकत नहीं। वह बन्दोबस्त करे तो करे। वह कोई कामिल फकीर मिलावे तो मिलावे नहीं तो इसके वश में कुछ नहीं। यह अपने आप नहीं पहचान सकता। वह डाकू भी अन्दर छुड़ाने वाला भी अन्दर सोच लो! एक शब्द गुरु से ही डरता है बाकी किसी से नहीं डरता। हज़ारों कर्म धर्म कर लो यह नहीं डरते किसी से भी।

पुन्य दानु जो बीजदे, सब धरमराइ कै जाई॥
बिनु सतिगुरु जमकालु न छोडई दूजै भापि खुआई॥
अफरियो जम मारिया न जाई ॥ गुरु के सबदे नेड़े न आई॥
शब्द सुने तो दूरहू भागे, मतु मारे हरि जीओ बे परवाहा हे॥

यह भक्ति तो किसी ने नहीं की। अन्दर शब्द गुरु के प्रगट करने का किसी ने भी यत्न नहीं किया।

यह (यदि) शब्द गुरु को प्रकट कर ले तो वह सच की ताकत है, यह सनातनी

बन जाए। आर्य का मतलब है पाक, वह इसको भी पाक कर दे। वह ऐसी सच्ची ताकत है यदि यह इसको शब्द गुरु को प्रगट कर ले, उसमें ज्योति है, ''पूरन जोत जगै घट मैं तब खालसा तांहि नखालस जानै।'' तो यह खालसा बने। नामधारिया वह है जो भीतर नाम को प्रकट करे। शब्द कह लो चाहे नाम कह लो बात एक ही है। वह एक कुदरती आवाज़ है मालिक की। शब्द कहते हैं आवाज़ को। उसकी जो लहर है उसको कहते हैं नाम। उसी को बाणी कहा है, उसी को धुन कहा है, उसी को अकथ कथा कहा है, उसी को हुक्म कहा है, उसी को भाणा कहा है। भाणा कहते हैं, किसी की मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है, जब वह हुकम करे। हुक्म कब ज़ाहिर होता है, जब वह बोले। बोलने को कहते हैं शब्द। शब्द की लहर को कहते हैं नाम। क्योंकि वह एक बोली है इसलिए उसको बाणी कहा है। यह बाणी इसके अंदर है जो दुख दूर करने वाली है।

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी।

वह सच्ची बाणी इसके अन्दर है।

घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम।
इका बाणी इकु गुरु इको शब्द वीचारि
सचा सऊदा हटु सचु रतनी भरे भण्डार॥

जिसने यह प्रकट कर ली उसने सच्चा सौदा कर लिया नहीं तो नहीं। जिसने यह प्रकट कर ली वह खालसा बन गया। जिसने यह प्रकट कर ली वह सनातनी बन गया नहीं तो डींगें ही हैं। पल्लू में और कुछ नहीं। यही एक रास्ता है युग-युग से जब से दुनिया बनी है सोचो! जब से दुनिया बनी है, जितने व्यक्ति हुए हैं, जितने इन्सान हैं सब के उसी तरह हाथ हैं, उसी तरह पांव हैं, उसी तरह आंखें हैं, उसी तरह जिस्म है। सोच लो! हिन्दुओं को ले लो, मुसलमानों को ले लो, सिक्खों को ले लो। एक ही रास्ता पैदायश का है। एक ही रास्ता मौत का है। फिर मालिक के मिलने का रास्ता क्या अलग-अलग होगा? वह रास्ता भी एक ही है।

जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥
दैत पुत्रु प्रहलादु गायत्री तरपणु किछु न जाणै
सबदे मेलि मिलाइआ ॥

वह मालिक का अपना बनाया हुआ है। किसी फकीर का बनाया हुआ नहीं। किसी संत महात्मा का बनाया नहीं। किसी वली पैगम्बर का बनाया नहीं। वह मालिक का अपना बनाया हुआ है, जब से दुनिया बनी है। सोच लो! युगों-युगों

से यही रास्ता है। यदि विश्नोइयां के गुरु आये तो उन्होंने यही कहा, ''तुम्हारे अन्दर तुम्हारा शब्द गुरु है''। यदि गुरु नानक साहब आए तो उन्होंने भी यही कहा। यदि कबीर साहब आये तो उन्होंने भी यही कहा। गुरु नानक साहब को सिद्ध मिले। उन्होंने पूछा–

कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ॥
काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ॥
कितु बिधि आसा मनसा खाई॥
कितु बिधि जोति निरँतरि पाई॥

कि ऐ महात्मा! तेरा जन्म मरण कैसे खत्म हुआ? तेरी आशा तृष्णा कैसे खत्म हुई? कैसे मन काबू किया? तू कैसे गुरमुख बना? कैसे मालिक के पास पहुँचा? तो उन्होंने फरमाया–

सतिगुरु कै जनमे गवनु मिटाइआ।
अनहति राते इहु मनु लाइआ॥

कि जब कोई कामिल फकीर मिला, उसने मेरे अन्दर नाम का बीज डाला। मुझे सही तरीका बताया तो मेरा सतगुरु के घर जन्म हुआ। जब मेहनत की तो अनहद आ गया। जब अनहद सुना तो उसमें रस है। जिसे हम हरि रस कहते हें। वह रस कैसा है?

हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा ॥

कभी सोचा है भई वह रस है वह मीठा है?

''गुरमति सहजे पीजै''

किसी कामिल फकीर के द्वारा, जिसने अन्दर गुरमत को प्रकट किया है, उसके द्वारा शिक्षा ली जाती है। दुनिया में दो मत हैं। ऐसे तो कितने ही बने फिरते हैं परन्तु असली दो मत हैं–मनमत और गुरमत। सारी दुनिया मनमत में है। हम सब मन के गुलाम हैं। मन के कहे अनुसार चलते हैं। मन के कहने पर खाते पीते हैं। मन के अनुसार कौम, मज़हब, मन के कहे अनुसार भक्ति करते हैं। गुरमत उस फकीर के पास है जिसने गुरु को अपने अन्दर प्रकट कर लिया है। शेष सब मनमत में है। कौन मनमुख हैं?

से मनमुख जो सबदु ना पछाणहि॥

जिसने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट नहीं किया वह सारी दुनिया मनमुख है। सोच लो! क्योंकि वह रस मीठा है, जब उसका स्वाद लिया उसके मुकाबले

में कोई लज़्ज़त नहीं।

फरीदा सकर खँडु निवात गुड़ु माखिउ मांझा दुधु॥
सभे वसतू मिठीयां, रब न पुजनि तुधु॥

जब वह लज़्ज़त ली, वह इतनी मीठी है कि उसके आगे सभी लज़्ज़तें फीकी लगने लगी हैं। दुनिया की आशा तृष्णा ही खत्म हो गई। लड़ाई झगड़े सब खत्म हो गये। जब आशा तृष्णा खत्म हो गई, मन काबू आ गया। मैं गुरमुखि बन गया। मालिक के पास पहुँच गया। और कोई तरीका नहीं। गुरु अर्जुन साहब के पास मुसलमान आ गए। मालिक से मिलने की बात चली तो उन्होंने फरमायाः

अलह अगम खुदाई बन्दे॥ छोडि ख़्याल दुनिया के धन्धे॥

कि अल्लाह अगम, क्या? मन बुद्धि की गमता से परे है। सारी दुनिया मन बुद्धि में फंसी फिरती है। वो दूर से दूर है, परे है? अपार जिसको हम कहते हैं। कहते कब मिलता है? ''छोड़ ख़्याल दुनिया के धन्धे'' सारे ख़्याल निकल जाएं दुनिया के, यह खाली हो जाए तो मिलता है। सोच लो!

लोग कुटुम्ब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥

हम तो फंसते जाते हैं, आगे से आगे। आगे से आगे फंसते जाते हैं। ''छोड़ ख़्याल दुनिया के धन्धे।''

होए पै खाक फकीर मुसाफिर इहु दरवेसु कबूलु दरा।

कहता किसी दरवेस की शरण में जा। वह तुम्हें तरीका बताएगा। वह तुझे बताएगा। वह नमाज़ पढ़ते हैं फिर कहते हैं, ''सचु निवाज यकीन मुसल्ला मनसा मार निवराहु आसा।'' कि सच्चे दिल से नमाज़ पढ़ यकीन के मसले पर बैठ कर। कौन सा मुसल्ला? जैसे मुसल्ले पर बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं मुसलमान। वह मुसल्ला कौन सा? यकीन का। जैसे भाई गुरदास ने कहा है, ''मुरदा होइ मुरीद न गली होवणा।'' पूरा भरोसा रख कर तू उस तरह नमाज़ पढ़ जिस तरह वह बताते हैं, वह सिमरण कर या वह तरीका अख्तयार कर। सचु निवाज़ यकीन मुसल्ला ॥ मनसा मारि निवरिहु आसा ॥" काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार छोड़ो। आशा, तृष्णा छोड़ कर यह तू कर। फिर कहते, 'देह मसीति मनु मउलाणा।'' वह नमाज़ पढ़ते हैं। कहां पढ़ते हैं जाकर? मस्जिद में मुल्ला पढ़ाता है। कहते कौन सी मस्जिद में पढ़? देह मसीत में। यहाँ मन लाकर पढ़। यह नहीं कि मन कहीं फिरता है और तू कहीं फिरता है।

''कलम खुदाई पाकु खरा।'' हम शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, ईसाइयों ने

Word कहा है। मुसलमानों ने कलमा कहा है। कि जब तू यह कहेगा तुझे खुदाई कलमा ऊपर से आ जाएगा। वह कुदरती आवाज़ आ रही है तुम्हारे लिए। जैसे गुरु नानक साहब ने कहा है–

ऊपर खासे महल पर देवे बांग खुदाइ॥
सुते बांग न सुण सकन रिहा खुदाय जगाइ॥

वह इसके घर का रास्ता है।

सबदि मिलहि तां हरि मिलै सेवा पवै सभ थाई॥

यही कबीर साहब कहते हैं–

शब्द माहि सुरत राखीये तब पहुँचे दरबार॥
कहैं कबीर तहां देखीये बैठा पुरुष हमार॥

यही गुरु अमरदास कहते हैं–

नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ दसवैं निज घरि वासा पाए ॥

कि नौ दरवाज़े हैं– दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, छः, एक मुंह का सात, दो टट्टी-पेशाब के, यह नौ दरवाज़े बन्द कर। हम अब बन्द कर के बैठ जाएं, मन फिर भी भागा दौड़ा फिरता है। ''धावतु रहाए'' इसको फिर रोक। इसको जाने न दे ''नऊ दर ठाके धावतु रहाए ॥ दसवै निज घरि वासा पाए ॥" वह दसवां इसके अन्दर है। वह घर इसके अन्दर है। वह रास्ता अन्दर है। ''नउ दरवाज़े नवे दर फीके रसु अंमृतु दसवै चुईजै ॥" यहाँ तो फीकी लज़्ज़तों में फिरते हैं। वह इसके अन्दर है। यहाँ ख़्याल को जोड़।

नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ दसवें निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

कहता वहाँ कुदरती तौर से आवाज़ आ रही है जो सीमाओं से हट कर है। यह तो हम घण्टा दो घण्टा बजाए चल दूर हो गए। वह अपने-आप चलता है। पर वह मिलता कैसे है? किसी गुरमुख के द्वारा। कोई कामिल फकीर मिले। 'गुरुमति सबद सुणावणिआ।'' कोई कामिल फकीर जिसने उसको जोड़ा है, जिसने उसके साथ संबंध डाला है, वह हमें सिखा सकता है। बगैर फकीर के वह नहीं आता। उसका पता नहीं लगता।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ। राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
''अनहद बाणी पूंजी। संतन हथि राखी कूंजी ॥''

यही पलटू साहब कहते हैं :

संत स्नेही नाम है, नाम स्नेही संत ॥
नाम स्नेही संत नाम से वहीं मिलावें ॥
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें ॥
जप तप तीर्थ ब्रत करे बहुतेरा कोई ॥
बिना वसीले संत नाम से भेंट न होई॥

बस एक ही राह है। जितने फकीर गये हैं, इसी राह गये हैं। सब ने इसी का उपदेश दिया है। बाद में जितनी देर कमाई वाला रहा, वह हमें बताता रहा। बाद में इसी तरह शरीयतें बनती गईं। अपने-अपने मज़हब बन गये फिरके बन गये। वह कहता हमारा ठीक है, वह कहता हमारा ठीक है। इसी तरह झगड़-झगड़ कर मर गये, असली चीज़ छोड़ ही दी। सोचो! गुरु नानक साहिब को चक्कियों पर बिठाया। पढ़ते हो न रोज? चक्कियों पर बिठाया, साथ और भी फकीर बैठे थे। उन्होंने अपने-अपने ईष्ट ध्याये, कोई नज़दीक आया? जिसने ईष्ट को खुश किया था उसकी अपने आप चक्कियां चलने लग पड़ीं। इन डींगों से कुछ नहीं बनता। अगर उस वस्तु को प्रकट करोगे तो वह काम देने वाली है, अन्यथा नहीं। चाहे कितना ही ठेका बांध लो कि वो हमारा है, वह हमारा है। कोई कहे मैं गोरख का हूँ, कोई कहे मैं फलाने का हूँ, कोई कहे मैं शिव का हूँ, कोई नज़दीक आया? बोलो! यह नज़दीक आने वाला शब्द गुरु है और कोई नहीं। वह इसके अन्दर है। उसे खुश करोगे, जहां जाओ वह सच्चा साथी है! वह ज़िन्दा ताकत है जो हर समय सत्य है।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबदु भइआ प्रगास।

यही गुरु है और कोई गुरु नहीं। यह मौत से छुड़ाने वाला गुरु है और कोई नहीं। मौत भी अन्दर, मारने वाला भी अन्दर, छुड़ाने वाला गुरु भी अन्दर है। इसी को हम हाज़र-नाज़र ज़िन्दा राम कहते हैं। हाज़र-नाज़र कहते हैं जो हर समय किसी की हजूरी में रहे। ज़िन्दा वह ताकत है, जो जीवन-मौत से परे है और राम, रमी हुई। गुरु नानक साहब कन्धार में गये। वहाँ यार अली फकीर मिला। उसने पूछा, ''पीरे शुमा कदाम अस्त (तुम्हारा गुरु कौन है?) उन्होंने कहा ''पीरे मां ज़िन्दा पीर अस्त'' (हमारा गुरु ज़िन्दा गुरु है) उसने कहा, ''मुझे तो ज़िन्दा पर भरोसा नहीं। कहते क्यों? कि जो पैदा हुआ है उसने मरना ज़रूर है।'' तो गुरु नानक साहब कहने लगे ''यक खुदाये पीर अस्त-कि दाईम ज़िन्दा अस्त-कुल आलम मुरीद अस्त।'' कि एक खुदा ही गुरु है जो ज़िन्दा है। सारा आलम उसका मुरीद है। ''बजुज़ खुदा पीर दीगर कदाम अस्त।'' खुदा के अलावा और कौन गुरु हो सकता है?

सतिगुरु मेरा सदा-सदा न आवे न जाइ॥
ओहु अविनाशी पुरख है सभ महि रहिया समाइ॥

वह गुरु है। ''सो गुरु करहु जि बहुरि न करना'', न ओहु मरै न होवे सोगु'' यह बाहर वाले तो मर जायेंगे। सोच लो। जो सतगुरु, गुरु नानक साहब के चोले में आया तो चोला तो रह गया लेकिन वह ताकत तो, वह गुरु है। वह हमारे समझाने के लिए आते हैं कि तेरे अन्दर तेरा गुरु है। उसको हमने इस तरह प्रकट किया है, तू इस तरह कर भई। और कोई तरीका नहीं। और देखो सोचो! उधर कहते हैं, गुरु मुक्ति का दाता है, अन्धा कर लो, चाहे काना कर लो पर गुरु कर लो। सोचो? गुरु मुक्ति का दाता है। अन्धा कर लो, काना कर लो। वह तो हमारा मुहताज है। ले आओ-ले आओ लगी पड़ी है। जहां जाओ वहाँ ले आ ले आ लगी पड़ी है। वह हमारे मुहताज हैं। वह देने वाला अन्दर है। जो सतगुरु है वह बे-मुहताज है।

सतिगुरु मेरा बे-मुहताजु॥
सतगुरु मेरे सचा साजु॥
सतगुरु मेरा सबस का दाता॥
सतिगुरु मेरा पुरखु विधाता॥

वह सब को पैदा करने वाला बे-मुहताज है। वह यह गुरु है। (फूल को इशारा करके) सोचो! किसी का मुहताज है? कहां से हरा रंग लाया। यह चादर किसी ने बनाई है। किसी ने रंग किए, किसी ने कपड़ा बनाया, किसी ने सूत काता, किसी ने कुछ किया, किसी ने कुछ किया। इस फूल में रंग भरने वाला किसी का मुहताज है? अन्दर से ही हरा लाया। अन्दर से पीला लाया। यह सतगुरु है। अगर किसी फकीर के चोले में आता है तो भी समझाने के लिए। जैसे गुरु नानक साहब के आया, कबीर साहब के आया, अब परम संत मस्ताना शाह बलोचिस्तानी के आया, सावण शाह के आया। तो वे भी बे-मोहताज हैं। वह जहां भी होते हैं, वे बे-मोहताज हैं। अपना ख़ज़ाना आप देता है। सोच लो! कहां से लाया हरा रंग? बोलो! है किसी के रंग का मुहताज? इसको सब छोड़े बैठे हैं। किसका मुहताज है? बोलो! वहाँ सच्चे सौदे एक पार्टी आ गई। कहने लगे जी हमने फलानी वस्तु बनानी है। उसके लिए चन्दा दो। मस्ताना जी कहने लगे, बैठो आप चाय पानी पीजिए। कहते बताओ भई! जिसका तुमने मकान बनाना है अगर वह अपना-आप नहीं बना सकता तो तुम्हें क्या देगा? बोलो! यह बे-मोहताज है। यह देने वाला है, यह इसके अन्दर है।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबदु भइआ प्रगास।

यह सब रचना करने वाला है। यह छुड़ाने वाला है मौत के वक्त पर और कोई नहीं। हाँ...

काहे रे बन खोजनि जाई॥

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई॥

फिर बोल भई। अब सोच लो! क्या कहते हैं गुरु नानक साहब। वह इसके अन्दर है, सब के साथ है यह। हाँ...। कैसे?

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर मांहि जैसे छाई॥

तैसे ही हरि बसे निरंतरि घटि ही खोजहु भाई।

जैसे इस फूल के बीच है। इसी तरह इसके अन्दर भी काम करता है। जब यह निकल जाये तो बस।

''सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलै रे॥''

(भगत नामदेव जी/988)

इसके अन्दर है। जब मिलना है, अन्दर से मिलना है। उस समय कितने इंजैक्शन करते जाओ, कितनी ही दवाईयां देते जाओ, कितनी ही खुराकें देते जाओ, बस कुछ नहीं बनता है। सब को जिंदगी और ताकत देने वाला यह है। वह जब मिलना है, इसके अन्दर से मिलना है, बाहर से नहीं। जैसे दूध में घी है। मंथ कर निकालने से मिलना है। इसी तरह ही इसके अन्दर से ही मिलना है।

कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै॥

राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै॥

जैसे लकड़ी में आग है, जल कर निकलती है। लकड़ी से लकड़ी घिसा-घिसा कर फिर निकलती है। यदि जलाओ तो निकलती है। यह भी अपनी हस्ती मिटाये फिर मिलता है, वैसे ही नहीं मिलता।

दासनि दासु होवै ता हरि पाये विचहु आपु गवाई॥

अपनी हस्ती मिटाये तो मिलता है, ऐसे ही नहीं मिलता। पहले तो वैसे ही अहंकार से भरा फिरता है कि मैं इतना बड़ा ज्ञानी, मैं इतना गुणवान, मैं इतना आलम-फाज़ल, मैं इतना फलाना, अहंकार से भरा पड़ा है। अहंकार ही दीवार है, जो अंदर इसके और मालिक के बीच में है।

धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमैं भीति करारी॥

हम रोज़ पढ़ते हैं :

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जमिया, हउ विच मुआ ॥
हउ विचि सचिआरू कुड़िआर ॥ हउ विचि पाप पुँन वीचारु ॥
हउ विच नरकि सुरगि अवतार ॥

यह हऊमै ही इसको चौरासी में लिए फिरती है, और क्या? पहले तो अपनी हऊमै छोड़े कि मालिक, मैं कुछ नहीं जानता, तूं मेरा बन्दोबस्त कर।

हरि के भगत सदा सुखवासी, बाल सभाई अतीत उदासी।

क्या? मासूम बच्चों की तरह बन जायें कि मालिक हम तो कुछ नहीं जानते, तूं करे तो करे। यही ईसा ने कहा है :

"Be like children for they shall enter into the Kingdom of Heaven."

कि मासूम बच्चों की तरह बन जाओ तो तुम मालिक की दरगाह में जा सकते हो, नहीं तो नहीं। उसके आगे रोयें, पीटें कि तू बन्दोबस्त करे तो करे, तू फकीर मिलाये तो मिलाये, हमारी कोई ताकत नहीं। कदम-कदम पर उसकी कृपा की ज़रूरत है। उस पर छोड़े तब जा सकता है, नहीं तो नहीं जा सकता। उसके भक्त के क्या लक्षण हैं?

मति होदी होइ इयाणा। ताण होदे होइ निताणा॥
अणहोदे आपु वंडाये। को ऐसा भगतु सदाये॥

बोलो! हमारे में से एक भी लक्षण नहीं। सोच लो! रोज़ पढ़ते हैं कि राम चन्द्र जी सीधे भीलनी के पास चले गये। कर्मियों-धर्मियों को सब को छोड़ गये। वह क्या जानती थी, बोलो! कौन से उसने कर्म-धर्म किये थे? बोलो भई! कौन सी वस्तु ले गई? नम्रता और दीनता। कौन-सी चीज़ ले गई? बोलो! नम्रता, दीनता और प्रेम, बाकी क्या? सोच लो। अभिमानियों को छोड़ गए। फिर कौन से काम आये इसके कर्म-धर्म? एक मुस्लिम फकीर ने लिखा हैः

जुहद गरूर दस्त सलामत ना बुरद।
रिंदा रह न्याज़ बदाह उल सलाभ रफ़त ॥

कि कर्मी-धर्मी अहंकार में रह गए। भक्त जन दीनता के कारण मालिक तक पहुँच गए।

पाठी– जोगी हो के जुगत नहीं जाणी, कन्ना विच मुन्दरां पुआए क्यों लईयां।
मैनेजर साहिब जी– कानों में मुन्दरां क्यों पहने थे कि बाहर की बात ही न सुने कोई। यह मांगने चढ़ गया, मुन्दरा पहन कर बन गया फकीर।

जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिया लेउ॥
दरगह लेखा मंगिऐ किसु किसु उत्तरु देउ॥
बेगाना भोजन खा कर किसी ने भजन नहीं किया।
''घालि खाइ किछु हथहु देइ। नानक राहु पछाणहि सेइ।''
गृही का टुकड़ा बुरा नौं नौं उंगल दांत।
भजन करे तां उभरे नातर काढ़े आंत॥

योगी हो कर काम तो यही करना था कि अंदर मालिक को प्रकट करना था। घर-घर फिरते हैं मांगते। कभी वहाँ से खाया, कभी वहाँ से खाया, बस बेगाना ही खाया। यदि कामी का खाया तो इसके भीतर काम की लहरें आ गईं। यदि क्रोधी का खाया तो गुस्सा।

(एक प्रेमी) ''बहुत कठिन है जी करना।'' कठिन है! हर एक काम कठिन है। कौन सा आसान है? सुखी कौन है? खेती आसान है? दिन रात मरते हो पल्ले भी कुछ नहीं पड़ता। फिर भी लगे रहते हो। हाय, हाय मर गये कबीलदारी नहीं चलती। फिर भी पीटे जाते हो, कर्ज़ लेकर भी करते हो। यह कर, फिर क्यों नहीं करते? यदि वह करना पड़ता है तो यह भी करना पड़ता है। यह भी ऐसे ही नहीं चलता। यह भी इसी तरह ही है। ऐसे थोड़े ही लिखा है कि खण्डे की धार है। सुनो! बात सुनो! जैसे पढ़ता है कोई बच्चा। कई-कई बच्चे पहली से पांच-पांच साल नहीं निकलते। ठीक है न। वह लगे रहते हैं। आखिर कुछ न कुछ प्राप्त कर ही लेते हैं। यह भी लगा रहे तो कुछ न कुछ प्राप्त कर लेता है। अगर छोड़ कर एक तरफ हो जाये तो फिर बस इसकी मर्ज़ी। एक प्रेमी ''इनका हिसाब आगे जाकर होता है जी। किसका? यह नाम लेने का। नहीं, नहीं यह अभी अन्दर बसने लग जाता है।

''जिउ जिउ भगति कबीर की, तिउ जिउ राम निवास॥''
वह सब धोखा है, जो आगे जाकर देता है, वह सब धोखा है।
साधो भाई जीवत ही करो आसा।
जीवत समझे, जीवत बूझे, जीवत मुक्त नवासा॥
मुऐ मुक्त कहें गुरु स्वार्थ झूठा दे विश्वासा।
''मुऐ हुए जउ मुक्ति देहुगे मुक्ति न जानै कोयला।''

वह कौन सी मुक्ति है? हाँ यह ठीक है, इस स्टेज तक पहुँचना कठिन है आखिर तक। लेकिन यह है कि इसको शांति आने लग जाए, मेहनत करे

तो सही। अन्दर शांति आने लग जाए। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार घटने लग जायेंगे। इसके अन्दर मालिक बसने लगेगा। इसको पता लगने लगेगा कि मेरे अन्दर काम कर रहा है। मेरे सारे काम करता है। मेरे घर में भी बरकतें हैं। और-और जगह भी। यह जपे तो सही, इसके घर में कुदरती बरकतें आयेंगी। वह नहीं जानता जिसका काम करता है? एक आदमी किसी का बिगड़ता काम करे तो वह झट कहता है कि मेरा इसने काम किया था, मैं इसका करूं। करते हैं कि नहीं? तो फिर सतगुरु नहीं जानता अन्दर? चाहे टूटा फूटा ही सिमरण करता है परन्तु करता तो मेरे पीछे ही है। हमारे दिल सच्चे नहीं। चाहे कुछ भी हो क्या था, भाई बेले ने क्या किया था? 'वाह भाई बेला, न वक्त देखे ना वेला'। यह कोई भजन है? वह अहंकारी थे (वाह भाई बेला न वक्त पछाणे न वेला, भाई बेले के साथियों की तरफ इशारा)। वह (भाई बेले ने) वचन ही पकड़ लिया। बस खत्म है सौदा। बोल भई। वह प्रेमी था, उस प्रेम ने झट अंदर पर्दा खोला। हाँ जीः

पाठी– 'योगी होकर जुगत नहीं जानी।'

मैनेजर साहिब जी– सोचो-सोचो। अब सर्दी गई है न। पोह, माघ का महीना था ना। पहाड़ों में जाकर सिपाहियों को देखो। तीन-तीन सौ रुपये तनख्वाह होगी। ज़्यादा से ज़्यादा पांच सौ होगी। पहरे पर खड़े थे न बर्फों में। तुम अन्दर नहीं खड़े हो सकते। मालिक के पीछे अन्दर ही खड़े हो के दिखाओ तो पर्दा खुल जाये। बोल भई! वह आसान है? हाँ जीः

दोहा : फफ्फा आखदा फक्कर ने उही लोको,
फक्कर नाम है फिक्र मिटावणे दा।
फक्कर हो के फिक्र मिटाया नहीं,
लख लाहनत है भेस वणावणे दा।

बोलो! सोच लो! सारी दुनिया में जाकर तो देखो हाल यही हुआ पड़ा है फकीरी का। सोचो! सारी दुनिया में यही हालत हुई पड़ी है। सब नाचते फिरते हैं माया के आगे। सब नाचते फिरते हैं, सब नाचते फिरते हैं। वह भूखें मिटाने वाला इसके अंदर है। वह दाता इसके अंदर है। उसको खुश करो। वह दोनों हाथों से लिये खड़ा है।

सतगुर सब को देत है लेता नाहिं कोई ॥
लेता नाहि कोई शीश को धरे उतारी ॥

वही शख्स को मिले मरने की करे तैयारी ॥
वही शख्स को मिले जिन्होंने आशा मारी ॥

यह आशा तृष्णा छोड़े, उसका नाम जपे, वह दोनों हाथों से लिए खड़ा है। सोच लो। यदि यह भजन करे, यह तो यह इसके बाद कुल भी खाये, दुनिया खाये। गुरुद्वारों में, मन्दिरों में, सोचो! कौन भक्ति करता है? कितनी होती है भक्ति? कितनी-कितनी बरकतें हैं। यह सब गुरु नानक साहब की है, और कोई नहीं।

जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े।
जो बिनु सतिगुरु सेवे खांदे पैनदे से मुये मरि जँमें कोहड़े॥

सोच लो! उनकी बरकतों पर आता है और क्या है। उनके पीछे भी खाये, यह भजन करे तो पीछे भी चलता रहे। हाँ...

पाठी– जोगी हो के जुगत नहीं जाणी,
कनां विच मुन्दरां पुवाए क्यों लईयां॥
कर ले रे कर ले सौदा पार लंघन दा,
अगे अग्गे हटड़ी बाजार भी नहीओं।

मैनेजर साहिब जी– जो कहता है, सोच लो! भई काम बहुत कठिन है, भूखा भी फिर वही मरता है। देख लो, भूखा भी वही मरता है घरों में। हम देखते हैं आज जिसके पास बीस-तीस किले ज़मीन है, उसकी बादशाही है। अगर अकेले पास होते हुए भी काम न करे तो भूखे मरते, करज़ाई होते हमने देखे हैं। ठीक है अगर भजन अब नहीं होगा तो आगे चौरासी हमारे लिए तैयार है, बाकी क्या। हाँ...

पाठी– तैनूं घलया सी लाल खरीदने नूं,
ते तूं कोलयां दे ढेर ला बैठों ॥
हुक्म सी सच्ची कस्तूरी खरीदणे दा,
हिंग जमैण दे ढेर तू ला बैठों ॥
उस शाह अग्गे की जवाब करसें,
जिस शाह दी रकम खर्च करवा बैठों॥
वारस शाह मीयां तेरी क्या वे सौदागरी,
ऐवें मुफ्त हटीयां ते चोर बहा बैठों।

यहाँ अगर कोई कह दे भई तुम सत्संग पर चलो। यार क्या करें कोई फुर्सत ही नहीं। सोच लो! फलाणा काम है, धिमकणा काम है, यह है, सर्दी पड़ती है, गर्मी

पड़ती है। सौ बहाने लगाता है मन। जानवरों को संभालना क्या आसान है? गोबर, कूड़ा उठाना कोई आसान पड़ा है? यहाँ से खरीद कर पता नहीं कहीं-कहीं बम्बई ले जाते हैं। बोल भई। उनके पीछे तो जाते हैं इसके पीछे कठिन है। वहाँ क्या जवाब दोगे। जैसे तुम हिसाब मांगते हो कि नहीं। किसी को पैसे देते हो, जाओ बच्चू फलानी चीज़ ले आओ। कहां-कहां खर्च किया, नौकर को भेजते हो, कहां-कहां खर्च किया भई बता? अगर सिनेमा में जाकर आया हो तो उसे क्या सज़ा देते हो? यह मालिक की भक्ति के लिए मिले थे श्वास। क्या कहोगे? गायें बनाईं, भैंसें बनाईं, बच्चे बनाये, ज़मीनें बनाईं, कारखाने बनाये, क्या जवाब है आपके पास? है कोई जवाब? बोलो! कोई जवाब है? बोलो? यहाँ हिसाब मांगते हो, वहाँ भी हिसाब है।

लेखै श्वास गिरास है लेखै खाणा खाओ॥

वहाँ कौर-कौर का हिसाब है, श्वास-श्वास का हिसाब है, ऐसे नहीं वहाँ भी। अब यह कौन हमें लिये फिरते हैं, कौन धोखा देते हैं? यही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। यह ठग्ग हैं। जिस तरह कोई साहूकार होता है, उसने अपने यारों दोस्तों से मिलकर शराब, कवाब में जायदाद ख़राब कर दी। अब उसकी जायदाद खत्म हो गई। अब उसका कोई है? सोच लो! उस समय तो बड़े खुश थे, पार्टी थी। बाद में लात मार कर एक तरफ हो गये। उसका कोई है? बोलो भई। दुनिया में रोज़ देखते हो, यही हाल है न। इसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमारे साथ ठगी करते हैं, जितने काम करते हैं, हमारे दिलासे में वक्त निकाल रहे हैं। काम कहता है, अब जवानी है, मज़े का वक्त है, फिर वक्त बहुत पड़ा है भजन करने को। क्रोध कहता है दुश्मन तो ठीक कर ले! लोभ कहता है पैसे कमा ले फिर भजन करना। मोह कहता है, तू बाल बच्चे पाल ले, वह कमायेंगे तू बैठ कर भजन करना। अहंकार कहता है तू मान वडिआई ले, तू ऐसे कर ले। सोच लो, जब मौका आता है,

धरमराय जब लेखा मांगे बाकी निकसी भारी॥
पंच किसानवा भागि गये लै बाधयो जीव दरबारी।

फाही आत्मा के गले में है। वह तो भाग गये ठग। यह ठगों का टोला इसके पीछे है। इसको कोई पता नहीं। कोई पता नहीं, इसको, हैं! इन ठगों के अड्डे चढ़े हैं हम। महात्मा चरनदास कहते हैं :

बहु वैरी घट में वसें तूं नहीं जीतस कोये॥
निस दिन घेरे ही रहे छुटकारा नहीं होये।

अनेकों दुश्मन इसके अंदर हैं, इसको कोई पता नहीं। वह लूट रहे हैं। सारा

खेत वह खा गये। सारी जायदाद वह खत्म कर गये। कुछ काम खा गया, कुछ क्रोध, कुछ लोभ, कुछ मोह, कुछ अहंकार खा गया। आत्मा का क्या बना, बोलो! सोचो! यह तो कहता है मैं अपना काम करता हूँ, बाल बच्चों का! कौन सा किया इसने अपना? या काम का, औरतें इसके काम की, बाल-बच्चे मोह के, ज़मीनें ज़ायदादें लोभ की, दुश्मन इसके क्रोध के, मान इज़्ज़त अहंकार की। इसका आत्मा का कौन सा काम, बोलो! ज़ुबान के स्वाद के पीछे जाता है। आज फलानी चीज़ बनाओ, आज फलानी चीज़ बनाओ, यह सौदे खरीदता फिरता है। सोच लो! जिस्म के आडम्बर के लिए आज फलाना कपड़ा, आज फलाना कपड़ा, और-और। आत्मा की जो खुराक थी असली, उसका भी बन्दोबस्त किया है? हर एक चीज़ में रस है बाहर! नीम में अपना है, केले में अपना है, लड्डू में अपना है, जलेबी में अपना है। यह तो रस लिए पर वह रस जो मालिक ने इसके अंदर रखा है,

''हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै।'' (मः 4/1323)

यह कब लोगे? बोलो! उसके मुकाबले में कोई रस ही नहीं। किसी से सुन लेता है। जिस तरह कोई कहता है कि मैं दिल्ली गया, मैंने वहाँ फलां चीज़ देखी। देखा चाहे कुछ न हो। हम एक बार दिल्ली गये। वहाँ कहते परांठे वाले के परांठे बड़े स्वादिष्ट हैं। हमने कहा ज़रा भी नहीं। बोल, वहाँ तो गए। सुना भई क्यों भई, वहाँ तो गए, ''हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा।'' वह सौदा कब करोगे? वह तो किया ही नहीं किसी ने, बोल! इनके पीछे तो जाता है, उसके पीछे नहीं जाता। वह कब करोगे, जो इसके अन्दर है? हाँ...

ऐ सरीरा मेरिया इसु जग महि आइ कै क्या तुधु कर्म कमाया॥
की कर्म कमाया तुधु सरीरा जा तू जग महि आया॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिया सो हरि मनि न बसाया॥
गुर परसादी हरि मनि वसिया पूरबि लिखिया पाया॥
कहै नानकु एहु सरीर प्रवाणु होआ जिनि सतगुरु सिउं चितु लाया ॥

वाह भई वाह! ''सतगुरु सिउं चित लाया।'' वह सतगुरु इसके अन्दर है। साध संगति में आकर किसी कामिल फकीर के द्वारा उसको प्रकट करना सीखा जाता है। जब संगति में आ जाता है इसको पता चलता है कि बाहर मेरी कोई चीज़ नहीं, यह देश नहीं, यह कौमें नहीं।

सति संगति मिलि मति बुद्धि पाई, हउ छूटे ममता जाल॥
हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल॥

यह मेरे यार नहीं, यह मेरे दोस्त नहीं, यह रिशतेदार नहीं। फिर देखता है इस शरीर ने भी मेरे साथ नहीं जाना। फिर अब सिवाय सतगुरु के कौन है? फिर कहता भई यह है, तो भजन की ओर भी ख़्याल आता है।

मेरे माधो जी सति संगत मिले सु तरिया॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कास्ट हरिया॥

सूखे कास्ट बाहर ना। जैसे बाहर सूखे वृक्ष होते हैं, पानी न मिलने के कारण सूखे हो जाते हैं। इसी तरह काम क्रोध की आग से नाम रूपी खुराक इसको मिलती नहीं आत्मा को। प्रेम रूपी कहो, नाम रूपी कहो, खुराक इसको मिलती नहीं। यह जल रही है आत्मा, जल रही है सारी दुनिया। जब साधू संगति में आता है, इसको पता चलता है कि मेरा कोई नहीं। जब फिर भक्ति करने लगता है तो इसको पता चलता है कि इसमें से काम कम होने लगता है, मोह कम होने लगता है, अहंकार कम होने लगता है, लोभ कम होने लगता है। उसकी जगह शील, क्षमा, संतोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी आने लगती है। यह उसकी निशानियां हैं। अगर यह भी न हुआ तो कुछ भी नहीं। साधू संगत जाते-जाते, धीरे-धीरे यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कम हो जाएंगे। उसकी बजाए शील, क्षमा, संतोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी आने लग जाएंगे। जैसे आज बीज डाला तुमने, उसको पानी दिया, गुड़ाई की। थोड़ा सा फूटा। फिर बड़ा बन गया। फिर उस पर पत्ते आ गए, फिर डोडियां लग गईं, फिर फूल बन गये। फिर उनमें फल लग गया, ठीक है! इसी तरह सन्तों की संगति में आते-आते, सिमरण करने से, वह तरीके से, मेहनत करने से सन्तों की संगति में आते-आते, करते-करते, उस बूटे की तरह इसके अन्दर भी शील, क्षमा, संतोष, धीरज, विवेक, दीनता, और गरीबी आने लगती है। जब यह आए तो आगे मालिक का बूटा भी खड़ा हो जाता है। यह नहीं भई नहीं। इसका नाम है, ''मेरे माधो जी सतिसंगति मिले सु तरिया।'' यह नहीं भई दो शब्द गाए तो हो गई सन्तों की संगत।

''गुरु प्रसादि परम पदु पाया सूके कास्ट हरिया ॥''

इस आत्मा को खुशी मिलने लग जाती है। अन्दर शांति आने लग जाती है, तसल्ली मिलने लग जाती है। वैसे चाहे आप कुछ भी न करो, पौधे को गोड़ी भी न दो, पानी भी न दो फिर उसने सूखना ही है। हां जी....कहत कबीर सुनो भाई साधो, इस तन का तो एतबार भी नहीं। इस शरीर का तो एतबार भी नहीं।''

(ओह बोल अब मैं कऊनु उपाय करूं) जब मालिक ने खेल डाला, पहले दो शक्तियां पैदा कीं :

''कालु अकालु खसम का कीना इहु परपंचु बधावनु।''

अकाल वह ताकत है जिसको हम सतपुरुष कहते हैं। सतगुरु कहते हैं। वह जन्म-मरन से परे है। सत्ति शक्ति है। काल का दायरा फनाह तक है। काल को सृष्टि रचने का हुक्म हुआ। उसने जीवों को लेकर कैद किया है। पहले तीन शरीर डाले हैं आत्मा पर। पहला कारण शरीर है। उस पर सूक्ष्म शरीर है। उस पर अस्थूल शरीर है। और उसने क्या किया है? मन चौकीदार लगाया है। इसका काम क्या है? जीव को भ्रमाना और भटकाना, सीधे रास्ते पर न चलने देना और इसका कोई काम नहीं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार लगा दिये। इन्द्रियों के भोग लगा दिये। अब इसने इन्द्रियों को भोगों में ऐसा फंसाया है कि फलां इन्द्री का स्वाद देख, फलां का स्वाद देख, मां की लज़्ज़त देख, बच्चे की लज़्ज़त देख, फलाना देख, यह कर ज़ुबान का स्वाद देख, यह कर, वह कर करते-करते ऐसा फंस गया। पहले तो भोगों में फंसा पड़ा है। दूसरा उसने पाप और पुण्य का जाल बिछाया है।

''पाप पुनः बीज की पोट''

यह बीज है जिससे दुनिया चल रही है। यह पाप करता है तो नर्कों में जाता है, बुरी जूनों में चला जाता है। यदि पुण्य करता है, अच्छे कर्म-धर्म करता है तो स्वर्गों में चला जाता है या अच्छी जूनों में चला गया, लेकिन छुटकारा न मिला। है कैदी का कैदी। किसी को फर्स्ट क्लास की जेल मिली, किसी को सैकिंड क्लास की मिली। रहा कैदी का कैदी। अगर स्वर्गों में गया फिर चौरासी तैयार है। इसके लिए नर्कों से निकलते भी चौरासी तैयार है। स्वर्गों से निकल कर भी चौरासी तैयार है।

काइया अँदरि पापु पुन दुई भाई दुहीं मिलि कै सृष्टि उपाई॥
दोवै मारि जाई इकतु घरि आवै गुरमति सहज समावणिआं॥

इन दोनों से पार जाए तो इसका छुटकारा है। अब कर्मों का जाल बड़ा पाया है। जो हम करते हैं उसका परिणाम भोगते हैं। जो पीछे किये हैं वो अब भोगते हैं। जो अब करेंगे वो आगे जाकर भोगेंगे। और उसने क्या किया है? एक रिजर्व फंड रख छोड़ा है। जैसे हम कारखाना चलाते हैं। एक रिजर्व फंड रख लेते हैं ताकि अवसर पर काम आ सके। उसने भी रखा है कर्मों का ताकि

कोई जीव निकल न जाए। जो पिछले अब भोग ले और आगे से कोई ऐसा कर्म न करे जिसमें फंस जाए तो इसका छुटकारा हो गया। अब उसने एक रिजर्व फंड रख छोड़ा है। यही धृतराष्ट्र से पूछा कि तू अन्धा क्यों हुआ है? उसने कहा मुझे सौ जन्मों का पता है कि मेरा कोई कर्म ऐसा नहीं जिससे मैं अन्धा हुआ हूँ। जब कृष्ण भगवान ने तवज्जो दी तो उसे पता चला कि एक सौ छठे जन्म में कोई ऐसा कर्म किया था जिसका नतीजा आज भुगतना पड़ा है। वह एक रिजर्व फण्ड है। इसी तरह सब का रख छोड़ा है। जिसको हम सिंचित कर्म कहते हैं। अब यह इस तरह फंसा है कर्म कर कर के। यदि यह कर्म करता है फिर उसके अनुसार कर्म करता है। यह ऐसा जाल में फंसा है कि ठिकाना ही कोई नहीं। कितने ही बंधनों में फंस गया है। कितने धर्मों के हो गए, कितने देशों के हो गये, हज़ारों बंधनों में यह फंस गया।

कर्म धर्म सभि बँधना पाप पुंन सनबंधु।
ममता मोहु सु बन्धना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेवरी माया का सनबँधु।
नानक सच्चे नाम बिनु वरतणि वरतै अँधु॥
सभि जप सभि तप सभ चतुराई।
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई।
बिनु बूझे को थाइ न पाई।
नाम बिहूणै माथे छाई॥ **(मः 1/412)**

वह सच्चे नाम, सच्चे शब्द गुरु, सच्चे सतगुरु कह लो! उसके बिना छुटकारा नहीं। बाकी सब इसके लिए बन्धन ही बन्धन है। सोच लो सब बन्धन हैं, यही महात्मा चरनदास कहते हैं–

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्रहमण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खंडू खंड॥
बिरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरे भौजाल से बहुते रहे अरूझ॥
जो पऐ काल पर्यन्त नर जीवे कोई।
तो भी होवे नाश ब्रह्मा के संग ही॥

काल पर्यन्त एक मियाद है जो कि तकरीबन एक हज़ार चौकड़ी युग की होती है। उसके बाद फिर यह रिटायर हो जाते हैं, जैसे यहाँ आफीसर होते हैं।

फिर इनके लिए चौरासी तैयार है। यही कृष्ण भगवान ने कहा है, ''हे ऊधो! यह जो कीड़ा जाता है यह कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है। फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा है?

जो पए देवन के मांहि जायके उतरे।
तो भी ना छूटे कर्म मुक्त घर न लहै॥
इन्द्रपुरी महि सरपर मरणा। ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहणा।
शिवपुरी का होइगा काला। त्रै गुण माया-बिनसि बिताला ॥

अब ऐसे फंसा है यह, दादू साहब कहते हैं—

जीव जंजालों पड़ गया उलझा नौ मण सूत।
कोई इक उभरे सावधान गुरु बायक अवधूत॥

जैसे नौ मण सूत उलझा होता है, ऐसे उलझा पड़ा है, कोई ठिकाना नहीं, अब क्या करे? अगर फकीरों की तलाश करे तो फकीर पर फकीर चढ़ा हुआ है। अब इसको क्या पता है, बाहर डिग्री तो कोई है नहीं और फकीर के बिना कोई रास्ता नहीं मिलता? अब करे तो क्या करे। इसका कोई उपाय नहीं। उसके आगे पुकार करे। वह इसके अन्दर है सतगुरु, सच्चा राम कह लो, सतगुरु कह लो। उसके आगे पुकार करे, हे मालिक! तूं मेरे अन्दर बैठा है, मैं युगों-युगों से तुम से बिछड़ा हूँ। मैं क्या उपाय करूं? अब मुझे बता, मैं उलझा हुआ हूँ। तूं ही मेरा इन्तज़ाम कर। सच्चे दिल से पुकार करे कि मैं अपने जीव का, आत्मा का कुछ कल्याण नहीं कर सकता। मैं डरता हूँ। मौत सिर पर आ रही है। जो डरे हैं वही पुकारे हैं, उन्हीं का ही इन्तज़ाम हुआ है। अगर इनका बन्दोबस्त न हुआ तो इन्होंने कहा है—''अब मैं कउनु उपाय करूं।'' मालिक अब मैं क्या करूं? सच्चे दिल से पुकार की है। ऐसे तो हम बड़ी-बड़ी प्रार्थना करते हैं। वह किसी काम नहीं। अगर दिल से निकले, तो किसी काम नहीं। उनके दिल से निकली है।

''सरणि परे गुरदेव तुमारी। तू समरथु दइआलु मुरारी।'' (मः 1/1031)

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''कि हे सतगुरु! मैं तेरी शरण में आया हूँ, तूं हर तरह समर्थ है, दयालु है। मुरारी क्या? राक्षसों को मारने वाला। मैं राक्षसों के हाथ चढ़ा हूँ। तूं मेरा बन्दोबस्त कर।'' यही गुरु अर्जुन साहब कहते हैं :

किरति करम के बीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥ (मः 5/133)

कि मैं कर्मों के जाल में फंसा हूँ। मैंने सारे ही घूम लिया है। चारों दिशाएं

दहदिसां, नरक-स्वर्ग सब देख चुका हूँ। मेरे छूटने का कोई इन्तज़ाम नहीं। आखिर तेरी शरण आया हूँ। तूं इन्तज़ाम करे तो करे। सो जिनको भय पड़ा है, यह उन्होंने पुकार की। उन्हीं की सुनी गई है। अगर सच्चे दिल से पुकार करता है, तो मालिक ज़रूर सुनता है।

पिता क्रिपालि आज्ञा इह दीनी।
बारिकु मुखि मांगै सो देना॥

हम मांगते ही और-और वस्तुएं हैं, मालिक को नहीं मांगते। ऊपर-ऊपर से मालिक को मांगते हैं। अन्दर हमारे और बलाएं हैं। अगर सच्चे दिल से पुकार करे, मालिक ज़रूर सुनता है कि मालिक मैं क्या उपाय करूं? मैं अपने जीव का, आत्मा का कुछ कल्याण नहीं कर सका। अब मैं छुटकारे का इन्तज़ाम क्या करूं? तूं ही करे तो करे। उसकी दया के बिना फकीर नहीं मिलता और फकीर की मेहर के बिना राम नहीं मिलता। पलटू साहब कहते हैं–

राम का मिलना सहज है संत का मिलना दूर।
पलटू संत के मिले बिन, राम से परे न पूर।

यह अपने आप पहचान नहीं सकता। बाहर फकीरों की इतनी-इतनी advertisements हैं जिनका कोई ठिकाना ही नहीं। अगर गुरु नानक साहब आए, तो उनको फकीरों ने ही कहा था पथ भ्रष्ट और किसने कहा, किसने सिखाया था? बोलो। कर्मी-धर्मी शरीयत वालों ने सिखाया, किसने सिखाया? कबीर के बारे में उन्होंने ही सिखाया था कि जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है। गर्म तवियों पर किसने बिठाया? उन्होंने ही। शम्मश तबरेज़ की खाल किसने उतराई? उन्होंने ही। हाँ उनकी मेहर के बिना नहीं मिलता। उसका तो ग्राहक ही कोई-कोई है।

''कहु नानक कोटिन में कोऊ जो भजन राम को पावै।''
''जग में उत्तम काढ़ीए बिरला केई के।''

हां जीः

पाठी– अब मै कउनु उपाउ करउ।
जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ॥
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो, ता ते अधिक डरउ ॥ (मः 9/685)

मैनेजर साहिब जी– कोशिश भी करता जाए, तलाश भी करता जाए, विनती भी करता जाए सच्चे दिल से। यदि फकीर मिल भी जाए तो फिर उसकी मेहर पर है। दादू साहब कहते हैं :

''दुर्लभ दर्शन साधू का, दुर्लभ गुर उपदेश।''

पहले तो साधू का मिलना ही मुश्किल है। फिर अधिकारी बिना नाम मिलना मुश्किल है। स्कूल में बच्चा दाखिल करते हैं कि आगे चल भी पड़ेगा कि नहीं। वह भी देखते हैं कि आगे अधिकारी हो, तो ही चलता है कि ऐसे। यदि रिश्ता करते हैं, कितना देखते हैं। तो यह भी देखभाल के करे, अच्छी तरह सोच के, विचार के, अन्धाधुंध नहीं, लोगों के कहे अनुसार नहीं। अच्छी तरह देखे परखे। जहां उसकी सोहबत में जा के, इसको शांति आने लग जाएगी। यह उसकी निशानियां हैं। तसल्लियां मिलने लग जाएंगी। फिर जपे। फिर अपनी मत छोड़ दे। फिर करे मेहनत, तजुर्बा करे, ऐसे नहीं। अन्धाधुन्ध न काम करे। हाँ...

पाठी– मन बच क्रम हरि गुण नहीं गाए यह जीअ सोच धरउ ॥
अब मैं कउनु उपाउ करउ ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– गुण तो बहुत गाए हमने परन्तु लेखे नहीं लगे। तो कहते थे, अन्दर शांति नहीं आई, तसल्ली नहीं मिली। बिना किए तो कोई कह नहीं सकता। अन्दर तसल्ली नहीं मिली। शांति नहीं मिली, करूं तो क्या करूं मालिक?

मालिक को मिलने का एक ही रास्ता है, जो कि पहले अर्ज़ किया है, अन्दर नाम, शब्द गुरु को प्रकट करना। यही गुरु अमरदास ने बारह वर्ष पानी ढोया। पहला कर्म, धर्म, जप, तप, सब कुछ किया। किल्ली से केश बांध कर रात को भजन करना। फिर वह लिखते हैं :

हरि की पूजा दुलँभ है संतहु कहणा कछू न जाई।
संतहु गुरमुखि पूरा पाई॥ नामो पूज कराई। **(मः 3/910)**

वैसे तो सारी दुनिया पूजा करती है परन्तु जो असली है वह मुश्किल से मिलती है; दुर्लभ है। वह क्या है? अगर उसको कोई कामिल फकीर मिले, पूरा गुरमुख मिले। वह कहता है तेरे अन्दर सच्चा नाम है, तेरे अन्दर शब्द गुरु है, उसको प्रकट कर। वह असली पूजा है।

''जीआ रे ओल्हा नाम का।
अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का।''
''विणु नावैं दरि ढोई नाहीं तां जमु करे खुआरी।''

एक ही रास्ता है। एक ही पूजा है। अन्दर नाम को प्रकट करना, यही सच्ची पूजा है।

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी।
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी॥

यही महात्मा चरण दास कहते हैं :

चार वेद कीए वेद व्यास ने अर्थ विचार विचार,
ता में निकसी भगती ही राम नाम ततसार।

यह नाम कहो, शब्द कहो, वह रेडियो वेवज़ की तरह सारे ही हैं। वह कुदरती आवाज़ है, मालिक की। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। यहाँ कलकत्ते की आवाज़ है, बम्बई की है, इंग्लैंड की है, अमेरिका की है, अफ्रीका की है। मगर हम सुन नहीं सकते। जब हम रेडियो लगाते हैं, स्विच लगाते हैं तो सुन लेते हैं। इसी तरह वह मालिक की कुदरती आवाज़ है। यह नकल है काल ने बनाई है। वह असली है। वह सबको जिंदगी और ताकत दे रही है।

चहु दिसि हुक्मु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पातालँ।
सब महि सबदु बरतै प्रभ साचा करमि मिलें बेआलं॥
''रोमि रोमि रविआ हरि नामु॥''
''गुरबाणीं चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा।''

वह रेडियो तरंगों की तरह सारे ही है। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। वह सुनना किसी कामिल फकीर के ज़रिये सीखा जाता है। वह इसके घर का रास्ता है। दुनिया कसर नहीं गुज़ारती। बड़े-बड़े जप करती है। बड़े-बड़े तप करती है। हमारे पास एक नामधारी आया। वह कहने लगा कि मैं सत्संग भी करता हूँ। नाम भी देता हूँ। लोग सोलह पहरों में अखंड पाठ करते हैं, मैं सात पहरों में करता हूँ। परन्तु अन्दर शांति नहीं। शांति तब आए जब नाम को अन्दर प्रकट करे।

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ। बिन नामै ध्रिगु जीवासु।''

तब शांति आवे। वह शांति वाला इसके अन्दर है। उसमें अमृत है कुदरती, उसमें रस है, वह इसके अन्दर है।

''काया नगरी महि मंगणि चढ़हि जोगी ता नाम पलै पाई।''

वह इसके अन्दर से मिलना है। वह जब भी मिलना है इसके अन्दर से मिलना है।

नउ निधि अंमृतु प्रभ का नामु॥ देही महि इसका बिसरामु॥
रोमि रोमि रविया हरि नामु॥

वह रोम-रोम में है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। वह असली भक्ति है! कसर कोई नहीं छोड़ता। अगर सही रास्ता न हो। जाना हमने डबवाली को हो। यहाँ से सात आठ मील है। अगर हम चौटाले को चल पड़े, चाहे कितने ही दौड़े जाएं तो भी नहीं पहुँच सकते। इधर को

अगर हम कदम-कदम भी जाएं तो भी पहुँच जाएंगे। अगर सही रास्ता हो तो थोड़ा किया भी इसको मालूम हो जाता है। तसल्लियां मिलने लग जाती हैं। सही रास्ता है जो, इसको रास्ता आगे मिल जाता है। तसल्लियां मिलती हैं। अगर गलत रास्ता है चाहे कितने भी दौड़े जाओ, कुछ नहीं बनता। सो यह मालिक की मेहर से है। उसकी मेहर से फकीर मिलता है। उसकी मेहर से ही आगे रास्ता मिलता है।

धुरि कर्म पाया, तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे।
कहै नानकु तह सुखु होया तितु धरि अनहद वाजे।

यह धुर दरगाह से ही जिसका लिखा होता है, उसको मिलता है। सन्तों की संगति में आते-आते कोई कर्म बन जाता है या कोई पिछला हो या अब बन जाता है। लेकिन असल चीज़ जब मिलती है, जिसको धुर दरगाह से लिखा है। जो तलाश करता है, उसका कर्म धीरे-धीरे बनता जाता है। ज़रूर बनता जाता है। एक दिन उसकी सुनी जाती है जरूर। आपने कहा था मुश्किल है। आपने कहा था ना, कौन सा था? सुनो! यह मुश्किल मार्ग ज़रूर है। अब गुरु नानक साहब से बड़ी गुरमत किसके पास थी, जहां आप खुद अकाल पुरख आया। यहाँ तो सोहबत ही नहीं मिलती। महीने बाद भी कोई नहीं जाता। भाई मरदाना साथ रहा सारी उम्र। हाय मुझे भूखा मार दिया। हाय मुझे यह कर दिया। वह तो कुछ देना चाहते थे, पर इस मार्ग पर चलना मुश्किल है। वाक्या ही मुश्किल है ज़रूर। चलना, वाक्या ही मुश्किल है। सोच लो! साथ रहता था सारा दिन। हाय मुझे भूखा मार दिया, रिकार्ड छपे हुए हैं। कहता गुरमत भी मिली पर फिर भी खाने-पीने में मन रखता है करूं क्या? सोच लो! कदम-कदम पर उसकी मेहर की ज़रूरत है। रोज़ मेहर मांगे उसकी कि मालिक तूं ही बन्दोबस्त कर। तू ही फकीर मिला, तूं ही नाम जपा। बैठे, तो भी सतगुरु तेरी मेहर से बैठ सकता हूँ। कदम-कदम पर कृपा मांगें, नहीं तो वैसे ही अहंकार ही खा जाता है।

तीर्थ बरत अरु दान करि मन मै धरे गुमानु।
नानक निहफल जात है तिहि जिउ कुंचर इश्नानु।
''कीया कराइया सब गया जब आया अहंकार।''

हां जी:''

पाठी– गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ
पसु जिउ उदरु भरउ॥
अब मैं कउनु उपउ करउ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– एक दिन न बैठे, मन और का और हो जाता है। फिर बैठने ही नहीं देता। वाक्य ही ठीक है। अगर किसी मांस, शराब वाले के पास बैठ जायें तो भजन बनना ही हट जाता है। ख़्याल ही बदल जाता है। मुश्किल तो मार्ग ज़रूर है। लेकिन इसके बिना छुटकारा भी नहीं। करना भी पड़ता है। नहीं तो फिर चौरासी तैयार है। दुनिया के काम मुश्किल हैं, अभी यह मुश्किल नहीं। उधर तो मेहनत ज़्यादा करते हो, क्योंकि उधर मन मदद देता है। इधर मन मदद नहीं देता। बस यह दुश्मन है :

मनु मैगलु साकतु देवाना। बन खंडि माया मोहि हैराना।
इत उत जाहि काल के चापे। गुरमुखि खोजि लहै घरु आपै।

मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह माया और विषय-विकारों के जंगलों में भटकता रहता है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार। कभी कौमों-मज़हबों के झंझट। कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है। यह काल का एजेंट है।

''इत उत जाहि काल के चापे।''

इसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना। बस। कोई बिरला गुरमुखि ही इसके दायरे से निकला है तो उन्होंने कहा है :

''मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।''

यही दुश्मन है हमारा। बाकी और कोई दुश्मन नहीं। जिसने यह जीत लिया बस सब कुछ कर लिया।

''मनि जीतै जगु जीतु।''

इसके साथ मुकाबला रखना पड़ता है, ऐसे थोड़ा ही है! मुकाबला रखा उन्होंने। सारी-सारी रात कीलों से केश बांधे!

पाठी– कहु नानक प्रभु बिरदु पछानउ।
तब हउ पतित तरउ॥
अब मै कउनु उपाउ करउ॥"
अब मै... **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– ऐसे ही शोर डालते थे। देख लो। प्रेम के साथ सब ने सुना है। पर चाहवान तो हैं कोई न कोई।

''धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग

'अब मै कउनु उपाय करउ'

सत्संग के वचन

पाठी– अब मै कउनु उपाय करउ॥
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ॥
अब मै कउनु उपाय करउ॥ (मः 9/685)

मैनेजर साहिब जी– युगों के युग बीत गए हम मालिक से बिछड़े हैं और हमारा यहाँ कोई मतलब नहीं। न कोई यहाँ कौम बनाने का है, न ही मज़हब बनाने का है, न कोई गिराने का है। जितने रुहानी फकीर आए मालिक की दरगाह में से; आते हर जमाने में हैं, हर अवसर पर आए हैं।

जुगि जुगि सँत भले प्रभ तेरे॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे॥
उसतति करिह परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे।

युगों-युगों से मालिक के भेजे हुए सन्त महात्मा आते हैं। बगैर उनके हमें सही रास्ता नहीं मिल सकता। हर काम के लिए हमें किसी न किसी उस्ताद की ज़रूरत होती है। पहले जब हम बच्चे ही थे छोटे-छोटे, हमें तो शौच करना भी नहीं आता था। यह भी किसी से सीखा है। फिर बाबा-चाचा-मामा भी छोटे-छोटे बहन भाईयों ने सिखाया है। और-और जो बातें सीखीं, कोई किसी से सीखीं, कोई किसी से सीखी। पंजाबी का उस्ताद और हिन्दी का उस्ताद और, हिसाब का और। कितने ही उस्ताद हमारे बने। इसी तरह रूहानी इल्म भी बगैर उस्ताद के नहीं मिलता। अपने आप कोई मालिक तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि कोई कामिल फकीर न मिले।

आपण लीआ जे मिलै बिछड़ि किउ रोवंनि
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि।
अनिक जनम बिछुड़े दुखु पाया मनमुखि करम करै अहंकारी॥
साधू परसत ही प्रभु पाया गोबिंद सरणि तुमारी॥

यही कबीर साहब कहते हैं :

वस्तु कहीं, ढूंढे कहीं, किह बिधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाइए, जब भेदी लीजे साथ॥
भेदी लिया साथ कर, दीनी वस्तु लखाए।
कोट जन्म का पंथ था, पल में पहुँचा जाए॥

सो बगैर किसी कामिल फकीर के ठीक रास्ता नहीं मिलता, ठीक रास्ते का पता नहीं चलता।

जुगि जुगि सँत भले प्रभ तेरे॥
हरि गुणि गावहि रसन रसेरे॥

वह मालिक के मीठे और प्यारे वचन बोलते हैं जो हमें भजन सिमरण की ओर अग्रसर करते हैं। मालिक का सन्देश देते हैं, मालिक का प्यार बढ़ा देते हैं

उसतति करहि परहरि दुख दालदु
जिन नाहीं चिंत पराई है॥

वह सन्त महात्मा परोपकारी होते हैं। उनको हमसे कोई गर्ज़ नहीं होती। वह देखते हैं कि हम चौरासी लाख जूनों में धक्के खाते फिर रहे हैं। कभी गधे बनते हैं, कभी घोड़े बनते हैं, कभी ऊंट बनते हैं, कभी बैल बनते हैं, कभी बन्दर बनते हैं, कभी कीड़े और कभी पतंगे बनते हैं। यही गुरु अर्जुन साहब कहते हैं :

कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इह देह संजरिया॥ (मः 5/176)

कि कई जन्म हमने कीड़े पतंगों के पाए, कई जन्म हाथी घोड़ों के पाए, कई जन्म सर्पों के पाए। कभी नर्कों में गए, कभी स्वर्गों में गए। कभी अच्छी जूनों में और कभी गन्दी जूनों में। इसी तरह चौरासी में धक्के खाते फिर रहे हैं। यह वक्त है चौरासी से निकलने का। अगर किसी से संभाला जाता है तो संभाल लो, मालिक को मिल लो। यही वक्त है और कोई वक्त नहीं, सोच लो। और किसी जूनि में मालिक को नहीं मिल सकता। अगर मिल सकता है तो आदमी की जून में ही मिल सकता है।

इसु देही कउ लोचें देव ॥ इस देही कउ सिमरहिं देव ॥

देवी-देवते भी इस जूनी के लिए तरस रहे हैं जिसे हम विषय विकारों और धन्धों में नष्ट कर रहे हैं। अगर कोई सनातनी है तो उसका मतलब यह है

कि वह सत ताकत को देखे और मालिक को अन्दर प्रकट करे। और कोई मतलब नहीं। यह व्यर्थ ही धर्मों के ठेके लिए बैठा है। आर्य का मतलब है कि मालिक को देखे। अगर कोई खालसा है तो यही मतलब है कि मालिक को देखे। और कोई मतलब नहीं। अगर नामधारी है तो नाम को अन्दर प्रकट करे। मालिक को देखे और कोई मतलब नहीं। मतलब सारा इतना ही है। वह देखते हैं कि हम चौरासी के चक्र में धक्के खाते फिर रहे हैं, उनको हमारे साथ और कोई गर्ज़ नहीं होती। उनको दुःख आता है। जब वे जीवों की हालत को देखते हैं कि किस तरह नरकों में धक्के खा रहे हैं। कैसे काल इनको दुःखी करता है, सोच लो। मरते हुओं को देखो, किसी मरते को देखो किस तरह बिलखता है। कहता है मेरे अन्दर पता नहीं क्या फेर दिया है, रक्त पानी एक कर दिया है। कोई कहता है मुझे काट रहे हैं। कोई कहता है मेरे नीचे आग जला दी है। अब उस वक्त का बचाव सोचो क्या है? सोच लो। हमें यह देखना है कि भई उस वक्त का हमारा क्या बचाव है। कौन बचाए उस वक्त? उनको यह दुःख आता है। वह देखते हैं हमारी हालत को भई आगे जाकर नर्कों में पता नहीं इनका क्या बुरा हाल होना है। यह तो यहाँ ही देख लिया हमने। यह जो ऊंट, बैल आदि घूमते हैं जिन पर हम इतने-इतने वजन लादते हैं वह हमारे ही बहन भाई हैं, और कौन हैं बोलो? हमारे जैसी ही आत्माएं हैं और कौन हैं, बोलो। वह हम जैसी ही आत्माएं हैं। जब हमारी यह हालत देखते हैं दुखी होते हैं। वे अपना हक हलाल का कमा के फिर हमारा उपकार करते हैं। वह चन्दे, फंड नहीं लेने आते, न वह मांगते हैं, न ही कोई गर्ज़ रखते हैं। जो गर्ज़ रखता है वो साधू नहीं।

दादू साध परीखीए, अन्तरि आत्म देख।
मन माहि माया रहे, या आपे आप अलेख॥

कि उनके अन्दर मालिक ही मालिक है या कुछ और भी है। वह हमारी चिन्ता लेकर आते हैं। कौन सी? हमारे दुःख दूर करने आते हैं। कौन सा? क्या भूखों को रोटी देते हैं? क्या नंगों को कपड़ा देते हैं? क्या बीमारों का इलाज करते हैं? नहीं, यह तो बड़े-बड़े साहूकार भी कर सकते हैं। अस्पताल खोल सकते हैं, रोटियां भी दे सकते हैं, कपड़े भी दे सकते हैं। वह सन्त कौन-सा उपकार करते हैं? कि जन्म मरण के बन्धनों से छूट कर अपने घर पहुँच जाए जहां से आया है। देख लो युगों के युग बीत गए हम इसी तरह धक्के खाते फिर

रहे हैं। ख़बर नहीं कितने युग बीत गए। अगर हम मालिक के पास पहुँच गए होते तो अब यहाँ न बैठे होते। फंसाया भी उसी ने है, निकालता भी वही है। यह ठीक है कि जब मालिक ने खेल डाला तो उसने पहले दो शक्तियां पैदा की हैं। यह समझने वाली बात है।

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपंचु बधावनु ॥

अकाल वह ताकत है जो सत्त ताकत है। जन्म मरण से परे है, जिसे हम सतपुरुष कहते हैं, सतगुरु कहते हैं। बाहर कोई सतगुरु नहीं। वह सतगुरु इसके अन्दर है। सतगुरु ने सारी दुनिया बनाई है, उस सतपुरख ने सारी दुनिया बनाई है। वह इसके अन्दर है। है सारे ही। इसके अन्दर भी है। उसका रूप क्या है? शब्द।

सबदे धरती सबदे अकास॥ सबदे सबदु भइया प्रगास॥
सगली सृष्टि सबदि के पाछै॥ नानक सबद घटे घट आछे॥

वह घट-घट में है। उसने सारी दुनिया बनाई हैं। वह सत्त ताकत है। काल फनाह के दायरे में है। उसके हुक्म से चलता है। काल को सृष्टि रचने का हुक्म हुआ। उसने जीवों को लेकर कैद किया हुआ है। यह समझने वाली बात है, याद रखो! उसने कैद किया हुआ है। वह न तो आत्माएं बना सकता है, न नष्ट कर सकता है। सिर्फ कैद किया हुआ है। उसने कैसे किया? पहले उसने तीन शरीर आत्मा पर डाले हुए हैं। पहला कारण शरीर है, उस पर सूक्ष्म शरीर है और उस पर स्थूल शरीर है और उसने क्या किया है? पाप और पुन का जाल डाला है।

''पापु पुनु बीज की पोट ॥ (बाणी में आता है) यह बीज है जिससे दुनिया चल रही है।

काइआ अँदरि पापु पुनु दोई भाई॥ दुही मिली कै सृष्टि उपाई॥
दोवें मारि जाई इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ॥

इनसे पार जाए तो छुटकारा है। अगर अच्छे कर्म करता है तो अच्छी जूनों में चला जाता है, स्वर्गों में चला जाता है। यदि बुरे कर्म करता है तो बुरी जूनों में चला जाता है, नर्कों में चला जाता है। छुटकारा न हुआ। न नरकों वालों का, न बुरे कर्म करने वालों का, न अच्छे कर्म करने वालों का छुटकारा हुआ। यही कृष्ण भगवान ने कहा है, ''हे ऊधो! यह जो कीड़ा जाता है यह कई दफा स्वर्ग का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा

है।'' फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा। हम रोज़ पढ़ते हैं–

इन्द्र पुरी महि सरपर मरणा॥ ब्रह्म पुरी निहचलु नहीं रहणा॥
शिव पुरी का होइगा काला॥ त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला॥

यह सब ही फनाह के दायरे में हैं। त्रिलोकी के दायरे तक कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं।

पपीहा जाये पुकारियो, पंछीअन आगे रोये।
तीन लोक फिर आयो हूं, बिन दुःख लखयो न कोये॥

कि त्रिलोकी तक मैं देख आया हूँ कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं, कोई सुखी नहीं। संतों को दुःख आता है कि इसकी मिट्टी पलीत है, कभी स्वर्गों में जाता है, कभी नर्कों में जाता है। वह आप जन्म-मरण से रहित होते हैं और हमें निकालने के लिए आते हैं।

जनम मरण दुहहू महि नाहि जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥

उनका यही काम है और कोई गर्ज़ नहीं रखते हमारे साथ। न पैसे की, न धेले की, न किसी और चीज़ की। वह केवल यह कहते हैं कि अपनी आत्मा का छुटकारा कर लो, इसका छुटकारा कर लो, बस। अगर कबीर साहब आए तो उन्होंने यही संदेश दिया। गुरु नानक साहब आए तो उन्होंने यही ऐलान किया। क्या किसी से कुछ मांगा? क्या किसी से चन्दे या फण्ड मांगे? यह तो पीछे से चलते हैं सारे रिवाज। उनका एक ही उपकार है। वह जहां जहां बैठे बाद में वही जगह तीर्थ बन गई और लोग पूजने लग गये। जो फकीरों की बाहर असली चीज़ थी वह भूल गये। वही बाद में एक फिरका बन गया। उन्होंने नहीं बनाये। सारे महात्माओं का अर्थ एक ही है कि अपनी आत्मा का कल्याण कर लो और अपने घर पहुँच जाओ। और कोई काम नहीं उनका, यही काम होता है। अब यह जो बाहर वाले साधू हैं एक तो इन्होंने पाप, पुण्य बनाया है और कर्म-धर्म बना दिए। यह सारे ही इसके लिए बन्धन हैं, हथकड़ियां हैं।

कर्म धर्म सभि बँधना पाप पुन सनबंधु॥
ममता मोहु सु बँधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेबरी माया का सनबंधु॥
नानक सच्चे नाम बिनु बरतणि बरतै अंधु॥

वह शब्द गुरु इसके अन्दर है, वह सच्चा नाम इसके अन्दर है, वह सच्ची

बाणी इसके अन्दर है, वह छुटकारे वाली है। वह सच्चा सतगुरु इसके अन्दर है, वह छुटकारे वाला है। यह हज़ारों पाठ पूजा कर ले, हज़ारों तीर्थों पर स्नान कर ले, हज़ारों ज्ञान छांट ले, हज़ारों पुण्य-दान कर ले, हज़ारों योग अभ्यास कर ले, हज़ारों प्राणायाम कर ले जब तक अन्दर वाले सतगुरु को खुश नहीं करता तब तक कुछ नहीं बनता। इसे मौत से छुड़ाने वाला वही है। सोच लो! जिस वक्त मौत आई, मौत अन्दर, मारने वाला अन्दर। उस वक्त मंदिर बाहर, गुरुद्वारे बाहर, ग्रन्थ शास्त्र बाहर, तीर्थ बाहर, सब कुछ बाहर। उस वक्त अन्दर वाले सतगुरु ने छुड़ाना है, देख लो! और कौन छुड़ाएगा? बोलो। अन्दर वाला नाम कहो चाहे सतगुरु कहो एक ही बात है। गुरु का शब्द ग्री धातु से निकला है जिसका अर्थ ही शब्द है। जितने भी रूहानी फकीर हुए हैं उन्होंने भक्ति करने वाला एक ही गुरु माना है। अगर गुरु नानक साहब से पूछा :

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला ॥

तो उन्होंने कहा–

''सबदु गुरु सुरति धनि चेला ॥''

(काका चुप रहो। यह कीमती बात है। रोज़-रोज़ तो वक्त मिलता नहीं। यदि कोई बोले उसको हाथ बांध दो पास बैठे को बस। कहने की आवश्यकता नहीं)

यदि तुलसी साहब को पूछा तो उन्होंने फरमाया–

सुरति शिश शब्दा गुरु मिल मार्ग जाना हो।
अलख आकाश उंधा कूआं ता में सूरत समाना हो ॥

यही कबीर साहब कहते हैं–

शबद गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में, ठौर ठौर बट मार ॥

वह एक ज़िन्दा ताकत है जो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। उसी को शब्द गुरु कहते हैं, उसी को ज़िन्दा ताकत कहते हैं, उसी को ज़िन्दा राम कहते हैं हम। 'हाज़र नाज़र' का मतलब है जो हर पल किसी की हजूरी में रहे, जो हर पल साथ रहे। 'राम' वह ताकत है 'रमेता सो रामा' जो चीज़ रमी हुई है। 'ज़िन्दा' वह ताकत है जो मरन-जन्म से परे है, हर वक्त सब के साथ है, ज़िन्दा है, सब की हजूरी में है। गुरु नानक साहब कंधार में गए। वहाँ एक यार अली फकीर मिला। उसने पूछा–

''पीरे शुमा कदाम अस्त'' (आपका गुरु कौन है)

तो उन्होंने कहा : **''पीरे मा ज़िन्दा पीर अस्त।''** (मेरा गुरु ज़िन्दा गुरु है)। कि ज़िन्दा गुरु है? कहते हाँ। कहता मुझे तो ज़िन्दा गुरु पर ऐतबार नहीं क्योंकि जो पैदा हुआ है उसने ज़रूर मरना है। तो गुरु नानक साहब ने फरमाया–

''यक खुदाइ पीर अस्त–किंदायम ज़िन्दा अस्त
कुल आलम मुरीद अस्त''

(एक खुदा ही गुरु है जो हमेशा ज़िन्दा है; सारा आलम उसका मुरीद है) **''बजुज़ खुदा पीर दीगर कदाम अस्त''** (उसके अलावा और कौन गुरु हो सकता है।) एक ही गुरु है।

सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ॥
ओहु अबिनासी पुरखु है सभि महि रहिआ समाइ॥

उसको तो हम भूले बैठे हैं जो पास बैठा है। वह बेमुहताज ताकत है। बाहरी गुरुओं को तो लाओ लाओ लगी पड़ी है पर वह दाता है।

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु॥ सतिगुरु मेरा सचा साजु॥
सतिगुरु मेरा सभस का दाता। सतिगुरु मेरा पुरखु विधाता॥

सो यह है जैसे यह फूल है, सोच लो! यह बेमुहताज कैसे है? फूल के अन्दर बैठा अपने आप ही रंग भरता है। कहां से हरा रंग लाया? कहां से लाल रंग लाया? कहां से पीला रंग लाया? अन्दर बैठा काम किये जाता है ना। काम करता है मगर दिखाई नहीं देता।

तू वरना चिहना बाहरा॥ हरि दिसहि हाजरु जाहरा॥

यह ताकत है जो मौत से छुड़ाने वाली है। इसके अन्दर भी काम कर रही है। इसको सब भूले बैठे हैं। मौत के समय अगर साथ देना है तो इसी ने ही साथ देना है। इसको तो किसी ने खुश न किया। गुरुद्वारों में गए, भाइयों को खुश किया, मन्दिरों में गए पुजारियों को खुश किया, तीर्थों पर गये पंडितों को खुश किया। मां-बाप, बहन भाई, रिश्तेदारों सभी को खुश किया पर इसको तो किसी ने न खुश किया। मौत के वक्त कौन काम देगा? बोलो! बाणी कहती है, ''जप मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईया सद राम रामु रामु रवि रहिया सरबगे ॥'' जो ज़र्रे-ज़र्रे में है इसको तो सभी ने छोड़ दिया। हम यह नहीं कहते कि किसी को न मानो परन्तु उस अवसर पर काम देने वाला अन्दर वाला राम है। इसके बिना कोई मौत से छुड़ाने वाला नहीं।

जीआ रे ओल्हा नाम का ॥

उसको चाहे बाणी कहो, चाहे शब्द कहो, भाषा कहो, हुक्म कहो, एक ही बात है। भाणा कहते हैं किसी की मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है जब वह हुक्म करे। हुक्म कहते हैं भाणे को। भाणे से सब कुछ बना।

''हुकमी होवनि आकार हुक्मु न कहिआ जाई॥'' (मः 1/1)

हुक्म ने सब कुछ किया। हुक्म जब बोले शब्द ''शब्दे धरती सबदे आकास।'' एक ही चीज़ के नाम हैं। शब्द की जो लहर है उसको कहते हैं नाम।

''नाम के धारे सगले जंत॥ नाम के धारे खंड ब्रह्मांड॥''

यह ताकत है। इसके बिना छुटकारा नहीं। जब तक यह खुश नहीं होती कुछ नहीं बनता। इसकी तो किसी ने भक्ति नहीं की। बाहर सबकी भक्ति की, पाठ भी किये, ज्ञान भी छांटे, तीर्थों पर भी गए पर इसको तो न खुश किया। इसकी भक्ति तो किसी ने नहीं की। इसको तो प्रकट न किया।

जीआ रे ओल्हा नाम का॥

अवरु जि करन कराबनो तिन महि भउ हे जाम का॥

और हज़ारों कर्म कर लो यमदूतों का भय नहीं छूटता।

''पुँन दानु जो बीजदे सब धर्मराय कै जाई॥

बिनु सतिगुरु जमकालु न छोडई दूजै भापि खुआई ॥''

सोच लो! इसके बिना मौत के वक्त कौन काम देगा? अगर काम देने वाला है तो यह है। यह बाडी वाला राम है जो अन्दर काम कर रहा है। इसको सब छोड़े बैठे हैं। क्या? यमदूत अन्दर, किसी को दिखाई देते हैं? बोलो? आत्मा अन्दर, आत्मा किसी को दिखाई देती है? इसी तरह सतगुरु भी इसके अन्दर है, वह भी दिखाई नहीं देता। वह नाम इसके अन्दर है, सच्चा नाम। उसके बिना छुटकारा नहीं। उसको अन्दर प्रकट करना ही सच्ची भक्ति है। बाकी कोई भक्ति नहीं। यह नहीं कि इसका फल नहीं, फल है। अच्छे कर्मों का फल अच्छी जूनों में चला जाएगा, स्वर्गों में चला जायेगा पर जन्म-मरण के बंधन नहीं छूटते। जन्म मरण के बंधन खत्म करने वाला अन्दर वाला सतगुरु है। वह ज़िन्दा राम है। वह सच्चा नाम है। और कोई नहीं। वह इसके अन्दर है। सच्ची बाणी कह लो, सच्चा गुरु कह लो, इसके अन्दर प्रकट करना ही सच्चा सौदा है, और कोई सच्चा सौदा नहीं।

सच्चा सउदा हरिनामु है सचा बापारा राम॥
गुरमति हरिनामु बणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥

यह सतत् ताकत है।

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु बीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

अगर आप यह सच्चा सौदा प्रकट कर लो, आत्मा और राम का मेल कर लो, अन्दर नाम को प्रकट कर लो, सतगुरु को प्रकट कर लो तो आप खालसे हो, नहीं तो कोई नहीं।

पूरन जोत जगै घट में तब खालसा ताहि न खालस जानै॥

तभी आप सनातनी हो अगर सतत् ताकत को प्रकट कर लो, नहीं तो कोई नहीं। ऐसे ही दुनिया डीगों में फिरती है। काम तो यह करना था। सोच लो!

सब का मतलब यह था कि अन्दर वाले सतगुरु को खुश कर ले। अन्दर वाले सच्चे नाम को प्रकट कर ले। और कौन सा काम था इसे? यह काम करना था। व्यर्थ कौमों मज़हबों के झगड़ों में फंस गया। कोई कहीं फंस गया, कोई कहीं फंस गया, कोई विषय-विकारों में फंस गया। बस इसी तरह दुनिया अपना समय ख़राब कर के चली गई। इसने हज़ारों पूजा पाठ किये लेकिन आत्मा का कुछ न बना। सारी दुनिया ऐसे ही फंसी पड़ी है। जिसे दर्द हो आत्मा का वही रोता चिल्लाता है। अब गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं। क्या कहते हैं? कि ''अब मैं कउनु, उपाय करउ॥'' मालिक मैं तो कर-कर के थक गया हूँ। ऐसा मन वचन कार्य कोई नहीं किया जिससे मेरी आत्मा का कल्याण हो। ''जनमु पाइ कछु भलो न कीनो'' कौन सा भला? यह नहीं कि किसी को रोटी खिला दी, किसी की सेवा कर दी। यह भला नहीं। आत्मा के कल्याण का कोई भला नहीं, अपना किया। आत्मा का कल्याण नहीं हुआ। मेरे अन्दर शांति नहीं आई, कोई तसल्ली नहीं मिली। मैं करूं तो क्या करूं। कोई बिरला ही होगा जो पुकार करता है। जो मालिक को पुकारे मालिक उसकी सुनता भी है। यदि पुकारने में दर्द ही न हो तो सुने किसकी? बोलो! कोई बिरला ही है। यही गुरु नानक साहब कहते हैं :

सरणि परे गुरदेव तुमारी॥ तू समरथु दइआलु मुरारी॥

कि हे सतगुरु! मैं तेरी शरण में आया हूँ। तू हर तरह समर्थ है, दयालु है। मुरारी, क्या? राक्षसों को मारने वाला। कौन से? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मन और माया आदि। यह राक्षस हैं जो आत्मा की मिट्टी पलीत कर रहे हैं। हमें

कोई पता नहीं। जितना काम हम बाहर करते हैं सब इनका करते हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और मन माया का। औरतें इसकी काम की, बाल बच्चे इसके मोह के, ज़मीन जायदाद लोभ की, मान बड़ाई अहंकार की, दुश्मन इसके क्रोध के; आत्मा का कौन सा काम है? बोलो भई। जैसे सिपाही घूमते हैं। कैदी को हथकड़ियां लगा रखी हैं। कहते चल कोठी साफ कर, चल फलां बग़ीचा साफ कर, फलां यह काम कर। वह बेचारा लाचार करता है। इसी तरह हमारी आत्मा को भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की हथकड़ियां लगी हुई हैं पर हमें दिखाई नहीं देतीं। काम कहता है चल मेरा काम कर। क्रोध कहता है चल दुश्मन को मार डंडा। मोह कहता है चल बाल बच्चों का पालन कर। लोभ कहता है चल पैसे कमा चाहे चोरी कर चाहे ठगी कर। अहंकार कहता है चल मान, बड़ाई ले। उनके पीछे कत्ल खून होते हैं। यह हमसे जबरदस्ती करा रहे हैं। यह सतगुरु छुड़ाए तो छुड़ाए। सोच लो! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अन्दर हैं, करवाते हैं कि नहीं करवाते हम से काम? अब पकड़ो इनको कोई? अन्दर वाला सतगुरु छुड़ाए तो छुड़ाए बाकी कोई छुड़ाने वाला नहीं इनसे। सोच लो! उस अन्दर वाले को सब छोड़े बैठे हैं। अन्दर वाला राम कहो, सतगुरु कहो, वह काम देने वाला है बाकी कोई काम देने वाला नहीं। अगर गुरु नानक साहब आए तो उन्होंने भी यही प्रचार किया कि तेरे अन्दर तेरा सतगुरु है उसको पकड़ भई।

काइया नगरि बसत हरि सुआमी
हरि निरभउ निरंवैरु निरंकारा॥

यदि कृष्ण भगवान आए तो उन्होंने कहा—

''नासिका के अग्र भाव आ।''

यहाँ (दोनों आंखों बीच) आ तो तेरा सतगुरु अन्दर मिलेगा। यदि मुस्लिम फकीर आए तो उन्होंने यही कहा तेरे अन्दर है। सब कुछ मालिक ने अन्दर रखा है। कोई वस्तु बाहर छोड़ी ही नहीं। मालिक ने इसके अन्दर सब कुछ रख छोड़ा है।

पाठी– काइआ अंदरि सभु किछु वसै, खंड मंडल पाताला॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करै प्रतिपाला॥
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा॥
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
इसु काइआ अँदरि नामु नउ निधि, पाईऐ गुरु कै सबदि वीचारा॥

काया अंदरि तोलि तुलावै, आपे तोलणहारा॥
काया अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा॥
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवागउणु पासारा॥

(मः 3/754)

मैनेजर साहिब जी– सारा खेल डाल कर सब कुछ इसके अन्दर रख छोड़ा है। अब इससे फायदा उठाओ। जिस तरह गांव में बदमाश भी होते हें और शरीफ भी होते हैं। सब गांवों में ही होते हैं। इसी तरह यह भी एक गांव है, नगरी है। इसमें शरीफ भी हैं और बदमाश भी। शरीफ कौन है? शील, क्षमा, संतोष, धैर्य, विवेक, दीनता और गरीबी। बदमाश कौन हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। हमारी इनके साथ दोस्ती है। मालिक की दरगाह में हम बदमाश हैं, सोच लो! अगर बदमाश न होते तो यहाँ न बैठे होते। हर जन्म के बाद मौत आती है, यमदूत पकड़ ले जाते हैं। जैसे दस नम्बरी बदमाश को पकड़ कर ले जाते हैं, चल भई तूने फलां फलां काम किया है उसकी सज़ा यह है। इसी तरह धक्के खाता फिरता है। कभी उस जेल में डाल दिया, कभी उस जेल में डाल दिया। डाल देते हैं न बाहर बदमाशों को? इसी तरह यह भी जेल है, यहाँ भी कोठरियां हैं। कोई कुते की?, कोई बिल्ले की, कोई किसी की। इनके बीच ही धक्के खाता फिरता है। कहां सतपुरुष की अंश, इसको पता ही नहीं मैं कौन हूँ? इसका देश सचखंड अनामी, यह सतपुरुष की अंश। यहाँ तो बाहर बना लीं अंशें हमने। कोई कहता है मैं सिक्खों की अंश में से हूँ, कोई कहता है मैं सनातनियों की अंश में से हूँ, कोई कहता किसी की हूँ, कोई कहता किसी की। है कौन यह? ''कहु कबीर इहु राम की अंश।'' यह राम की अंश है, वह तो भूल ही गया। यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है, वह तो भूल ही गया। यह अपने देश को ही भूल गया, अपने खानदान को ही भूल गया। यह काम करना था इसने यहाँ आकर। जब तक अन्दर वाले को खुश नहीं करोगे तब तक कुछ नहीं बनता। कहीं शांति नहीं। ऐसे ही बाहर मिट्टी के देशों के पीछे लड़-लड़ कर मर गया। एक फकीर ने लिखा है। ''तुम जात न जाण गंवारा हो।'' कि ऐ गंवार! तुम्हें तो अपनी जाति का ही पता नहीं ''को तुम आये कहां ते आए झूठा करत पसारा हो।'' बोलो! पता है किसी को किस जून में से आये हैं? कौन सी में जायेंगे? सोच लो! किसी को पता है? किसी को है

ही नहीं ख़्याल! सब दुनिया अपने-अपने ही धन्धों में मस्त पड़ी है। गुरु नानक साहब कहते हैं।

धंधे धावत जगु बाधिया न बूझै वीचारु॥
जमण मरणु विसारिया मनमुख मुगधु गवार॥

कि सारी दुनिया अपने-अपने धन्धों में मस्त पड़ी है। किसी को होश ही नहीं कि मेरा कभी जन्म मरण का हिसाब भी होना है। यहाँ कोई दुश्मन आता है, सोच लो। हम कभी किसी से ज़रा सा बोल पड़ते हैं, उसी वक्त तलवारें खरीदते हैं, बन्दूकें खरीदते हैं। वह काल इसके सिर पर आना है, मौत सिर पर आनी है। उसका क्या बचाव किया है? बोलो! वह काल अन्दर से आएगा, पीड़ेगा, ले जाएगा। जो तकलीफ उस समय होती है वह कहने सुनने से परे है।

जिंदु निमाणी कढ़ीऐ हडा कू कड़काइ॥

यही कृष्ण भगवान ने कहा है कि उस वक्त इतनी तकलीफ होती है जितना सौ हज़ार बिच्छु इकट्ठा डंक मारे। यही तुलसी साहब ने लिखा है :

तुलसी मृतक के समय, पीड़ा होत अपार।
बिच्छु एक हज़ार ज्यों, डंक लगे एक बार॥

इतनी तकलीफ होती है। उसका क्या बचाव किया है? कभी सोचा ही नहीं, ख़्याल ही नहीं किसी को। सारी दुनिया मनमुख है, मुग्ध है, गंवार है, और हमारे लिए क्या शब्द कहे। इससे बुरे और क्या कहें, बोलो।

जमण मरणु बिसारिया मनमुख मुगधु गवारु।

कि यह मनमुख है, मुग्ध है, गंवार है, और क्या कहें, बोलो। यहाँ ही फंसा पड़ा है। दादू साहब कहते हैं :

काल न सूझे कंध पर मन चितबे वो आस।
दादू जीव जाणे नहीं, कठिन काल के फास ॥

उसके फंदे तगड़े हैं। उसका बचाव सोच लो, सोच लो। कबीर साहब आए तो उन्होंने भी यही कहा।

इक दिन घोघड़ आसी रे।
तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज ॥

त्रिलोकी तक इसका राज है।

कबीर सोया क्या करे, सोए होए अकाज।
ब्रह्मा का आसण डिगा, सुणी काल की गाज।

कहते हैं जब काल आया, वह धड़ाम कर के गिरा। कहता यह क्या हो गया। कहते इतने बड़ों-बड़ों को खा गया। हम कौन से बाग की मूली हैं। उसका बचाव सोचो, उसका बचाव सोचो। उस का बचाव अन्दर वाला सतगुरु है, शब्द गुरु है, वह राम गुरु है, वह सच्चा नाम है। उसके बिना छुटकारा नहीं। वह असल भक्ति है और कोई भक्ति नहीं।

सोधत सोधत ततु बीचारिउ भक्ति सरेसट पूरी॥
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधी ऊरी॥

यही महात्मा चरनदास कहते हैं :

चार वेद कीए वेद व्यास ने, अर्थ विचार विचार॥
ता महि निकसी भगती ही राम नाम ततसार॥

यही गुरु अमरदास जी कहते हैं। सोच लो! हम रोज़ बाणी पढ़ते हैं, कभी विचार नहीं करते। बाणी तो ऊंची है इसे कोई विचारे? गुरु अमरदास 72 वर्ष की उम्र तक तीर्थ, व्रत, जप, तप सब कुछ करते रहे। कहां अमृतसर के नज़दीक गांव था वहाँ से पैदल चलना। हर वर्ष हरिद्वार जाना और पैदल ही आना। कई कई महीने लग जाते। फिर 72 वर्ष की आयु में चोट लगी तो गुरु अंगद साहब की शरण में आए। जब उनकी शरण में गए तो वहाँ 12 वर्ष पानी ढोया। दिन को पानी ढोना और रात को किल्ली के साथ केश बांध कर भजन करना। फिर अन्दर सतगुरु को प्रकट किया। फिर अन्दर चीज़ देखी है, मालिक के पास गये हैं। वहाँ जा कर देख कर लिखते हें।

हरि की पूजा दुलंभ है संतहु, कहणा कछु न जाई॥ **(मः 3/910)**

कि यह जो मालिक की असली पूजा है यह दुर्लभ है, मुश्किल से मिलती है, कहने और कथने से परे है। वह क्या है?

सतंहु गुरमुखि पूरा पाई॥ नामो पूज कराई॥ **(मः 3/910)**

अगर इसको कोई पूरा फकीर मिले, पूरा गुरमुख मिले, पूरा महात्मा मिले, वह कहे तेरे अन्दर तेरा सतगुरु है, तेरे अन्दर सच्चा नाम है, तू उसकी पूजा कर। वह नाम क्या वस्तु है? अब यहाँ प्रश्न पैदा हो गया, नाम है क्या वस्तु? यह नाम लिखने-पढ़ने की चीज़ नहीं। शब्द कहो, नाम कहो, वह लफ्ज़ों में आने वाली चीज़ नहीं। अभी-अभी अर्ज़ की थी कि भाणा, हुक्म, नाम, शब्द एक ही चीज़ के नाम हैं। भाणा कहते हैं किसी की मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है, जब हुकम करे। हुकम शब्द के द्वारा, जब बोले। वह जो शब्द की

लहर है उसे कहते हैं नाम। जो बारीक हो जाती है उसको कहते हैं धुन। चूंकि वह एक बोली है इसीलिए उसे वाणी कहा जाता है।

जो कोई चाहे नाम तो नाम अनाम है।
लिखण पढ़न में नाहीं निहःच्छर काम है ॥

वह लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं।

शब्द शब्द सबको कहे वह तो सबदु विदेह।
जीभा पर आवे नहीं, निरख परख कर लेह॥

यही गुरु नानक साहब कहते हैं :

चिहनु वरनु नहीं छाइआ माइआ नानक शब्दु पछाणै।

वह लिखने-पढ़ने की चीज़ नहीं। सारी दुनिया लिखने पढ़ने और लफ़्ज़ों में फंसी पड़ी है। वह लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं। वह मालिक की अपनी बोली है। वह ना हिन्दी है ना पंजाबी, ना संस्कृत और ना कोई और है। अगर वो लफ्ज़ पंजाबी के हों तो हमारे पंजाबियों के लिए ही रह जाते, बाकी लोग क्या करें। यदि अंग्रेजी के हों तो अंग्रेजों के लिए, बाकी क्या करें। अगर फारसी के हों तो मुसलमानों के लिए, बाकी क्या करें। वह इस संसार की चीज़ ही नहीं; न ही वो लफ्ज़ हैं।

इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥

वह कुदरती बोली है। वह रेडियो की वेवज (Waves) की तरह सब जगह है। गुरु नानक साहब मिट्ठणकोट गये। वहाँ मियां मिट्ठा फकीर मिला। वह कर्मी-धर्मी था। कर्मों-धर्मों, पूजा-पाठ और जपों-तपों से हृदय साफ हो जाता है। परन्तु वह चीज़ मिलनी मुश्किल है। अगर बर्तन साफ हो और उसमें कोई चीज़ न डाली जाये तो क्या फायदा। कर्मों-धर्मों से हृदय साफ हो जाता है पर नाम कोई और चीज़ है। परन्तु आती हृदय साफ में ही है।

फकीर भी पहले हृदय साफ करवाते हैं, फिर उसमें डालते हैं, ऐसे नहीं। जिस समय उसको पूछा, भक्ति पर कोई बात चली तो गुरु नानक साहब ने कहा, ''मियां मिठ्ठा सच्चे नाम के बिना जीव का कल्याण नहीं।'' वह कहने लगा सच्चा नाम क्या चीज़ है? गुरु नानक साहब कहने लगे कि सच्चा नाम कहने सुनने से परे है। वह कहने सुनने की चीज़ नहीं। कहता फिर कुछ तो बताओ। एक तरफ ले गए। कहते सुन तुझे कुछ सुनवाई देता है? कहता नहीं! क्योंकि कर्म धर्म किए हुए थे, हृदय साफ था, कोई मेहर हो गई, कोई संस्कार

ऐसे थे। गुरु नानक साहब ने तव्ज्जो दी और पूछा कि मियां मिठ्ठा सुन कुछ सुनाई देता है? कहता जी हाँ, मुझे ऐसे महसूस हो रहा है जैसे मेरे रोम-रोम में नाम की लहरें दौड़ रही हैं।

रोमि रोमि रविआ हरिनामु ॥

हम रोज बाणी में पढ़ते हैं–

रोमि रोमि रविआ हरिनामु ॥

कभी सोचा है कि वह क्या चीज़ है?

हरि हरि नामु अंमृतु रसु मीठा ॥

उसमें मिठास है। उसमें मिठास है कभी सोचा है? नाम के शब्द लेते लेते थक गए पर मिठास नहीं आयी।

हरि-हरि नामु अंमृतु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै।

वह किसी कामिल फकीर के द्वारा पिया जाता है, सीखा जाता है, उसको प्रकट किया जाता है।

रामु नामु है जोति सबाई।

उसमें जोत है, सोच लो! उसमें जोत है!

नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा॥
नाइ सुणीऐ घटि चानणा आनेरु गवावै॥

अब आंखें बन्द करो अन्दर अन्धेरा है, लेकिन जब अन्दर प्रकट हो जावे तो रोशनी आ जाती है। जन्मों-जन्मों का पता लग जाता है। जब वह चीज़ आ जाये, वो नाम है, उसका नाम 'नाम' है वो मुक्ति का दाता है।

कई बार जो यज्ञ करे, योग करे चित लाये।
चरनदास कहे नाम बिन, सभी अकालहि जाये।

सभी ही फनाह हैं।

करे तपस्या नाम बिन, यग योग अरु दान।
चरनदास यूं कहत है, सब ही थोथे जान॥

सोच लो! वह नाम रेडियो वेवज़ की तरह सभी जगह है। यहाँ रेडियो वेवज़ है न। यहाँ कलकत्ता की आवाज़ है, बम्बई की आवाज है, इंग्लैंड की है, अमरीका की है। रेडियो पर स्विच लगाओ और सुन लो। ठीक है! वैसे तो पता नहीं लगता। इसी तरह नाम मालिक की कुदरती आवाज़ है। सभी जगह है कण-कण में है। सभी को ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। जब वह निकल जाती है तब ये खत्म हो जाता है।

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै॥ राम बिना कौ बोलै रे॥

(भगत नामदेव जी/988)

लेकिन वह दिखाई नहीं देती। जैसे बिजली की रोशनी कहां से आती है, बोलो? अकेले अकेले बल्ब को लगी हुई है। जहां मर्ज़ी स्विच बन्द कर लो जहां मर्ज़ी खोल लो। इसी प्रकार सभी के अन्दर स्विच लगे हुए हैं, जहां मर्जी बन्द कर दो, जहां मर्जी खोल दो। ये आत्मा किसी और के हाथ है! जैसे ये हमारे हाथ है। इसी प्रकार वह भी किसी और के हाथ है। वो सब को ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। उसके सुनने का तरीका इसके अन्दर है। इसको कोई कामिल फकीर मिले, वो तरीका बताये कि इस तरह तू भाई जप, हृदय साफ कर और यहाँ ख़्याल को जोड़। यहाँ कुदरती सुनाई दे रही है। यह इसके घर का रास्ता है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥

यही कबीर साहब कहते हैं–

शबद माहि सुरत राखिये, तब पहुँचे दरबार।
कहैं कबीर तहां देखिये, बैठा पुरष हमार॥
शबद बिना सुरत आंधरी, कहो कहां को जाये।
द्वार न पावे शबद का, फिर-फिर भटका खाये॥
''प्राणी हरि जपि जनमु गइओ।

सारी दुनिया जप-जप के मर गई बाहर।

साच सबद बिनु कबहू न छूटसि बिरथा जनमु भइओ॥''

सोच लो! यह युगों युग से मार्ग है। गुरु नानक साहब सिद्धों को मिले तो उन्होंने पूछा–

कितु बिधि पुरखा जनमु बटाइया॥
काहे कउ तुझु इहु मनु लाइया॥
कितु बिधु आसा मनसा खाई॥
कितु बिधि जोति निरन्तर पाई॥

कि हे महात्मा! तेरा जन्म-मरण कैसे खत्म हुआ? तेरी आशा तृष्णा कैसे खत्म हुई? तेरा मन कैसे काबू आया? तू गुरमुख कैसे बना और मालिक के पास कैसे पहुँचा? तो उन्होंने फरमाया–

सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ॥
अनहति राते इहु मनु लाइआ॥

कि जब कोई कामिल फकीर मिला, उसने मेरे अन्दर नाम का बीज डाला, वह सतगुरु के घर जन्म है। जब मेहनत की, अन्दर अनहद शब्द आ गया। जब वह सुना उसमें आनन्द है, उसमें अमृत है।

अंम्रितु बरखै अनहद बाणी ॥ मन तन अंतरि सांति समाणी॥

बाणी कहो, शब्द कहो, नाम कहो, उसमें अमृत है। जब वह पीया उसके आनन्द के मुकाबले में कोई आनन्द नहीं।

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु॥ (सलोक/1379)

उसके मुकाबले में कोई मीठी चीज़ नहीं। जब वह आनन्द लिया दुनिया के सारे आनन्द फीके लगने लगे। जब फीके लगने लगे तो अपने घर पहुँच गया। जब वह चीज़ आ जाती है इसके अन्दर, जब यह आनन्द ले लेता है तो ईर्ष्या, द्वैत, वैर, विरोध, अहंकार, निन्दा, चुगली सभी निकल जाते हैं। जहां वो है समझो वहाँ ये चीज़ें हैं ही नहीं। उसके अन्दर शांती आ जाती है। सभी अग्नि समाप्त हो जाती है। सारी आशा तृष्णा खत्म हो जाती हैं तब मालिक के घर का रास्ता मिलता है, ऐसे नहीं। वह रास्ता है, वह सीधी सड़क है, जैसे हम कहते हैं जरनैली सड़क जाती है, वह जरनैली सड़क है जो सचखंड अनामी को जाती है।

गुरमुखां नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ॥
हरिनामु सलाहिन नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ॥

ये रास्ता है मालिक को मिलने का, और कोई रास्ता नहीं। रास्ता इसके अन्दर है, बाहर नहीं। जिसको मिला है अन्दर से मिला है, शब्द के द्वारा मिला है और किसी के द्वारा नहीं। सो यही कहते हैं कि ऐ मालिका! मैं क्या करूं, मेरी आत्मा के कल्याण का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ, मैं कर-कर के हार गया हूँ। ऐसा कोई कर्म-धर्म नहीं जिसके साथ मेरा कल्याण हुआ हो। मैं करूं तो क्या करूं। उसकी मेहर के बिना ऐसा फकीर नहीं मिलता। फकीरों से तो दुनिया भरी पड़ी है। बावन लाख फकीर घूम रहा है मगर कामिल फकीर उसकी दया मेहर के बिना नहीं मिलता। दादू साहब कहते हैं :

दुर्लभ दर्शन साध का, दुर्लभ गुर उपदेश।
दुर्लभ करवा कठिन है दुर्लभ परस अलेख॥

पहले तो फकीर का मिलना ही मुश्किल है, मालिक की मेहर के बिना नहीं मिलता। फिर अगर मिल जाये तो उसको पहचानना मुश्किल है। एक रामा मण्डी

के स्कूल का हैड मास्टर था। वह हमारे पास आया। उसको घुमा कर डेरा सच्चा सौदा दिखाया। कहने लगा फकीर तो और भी बहुतेरे हैं, क्या पता चले कि कौन सा अच्छा है? हमने कहा कि भाई ये तेरे वश की बात नहीं। कहने लगा क्यों? हमने कहा एक बच्चा तेरे पास आता है, अगर वह पहचानने की कोशिश करे कि मास्टर प्राइमरी है कि मिडिल, एम.ए. है या बी.ए. तो पहचान सकता है? कहने लगा नहीं। बस इसी तरह हम भी फकीर को नहीं पहचान सकते। कहने लगा फिर। फिर वो राम तेरे अन्दर है, वह सतगुरु तेरे अन्दर है, उसके आगे सच्चे दिल से विलाप कर, अपनी कोशिश कर, यह उसकी मेहर पर है। फिर तुझे चाहे फकीर के पास ले जाये चाहे फकीर को तेरे पास ले आये! और कोई साधन नहीं। उसकी मेहर के बिना कुछ नहीं। अगर अपनी अकल से पहचाने तो यह नहीं पहचान सकता। जितने फकीर मालिक की दरगाह में गए हैं, दीनता और गरीबी से, रो-रो कर गए हैं। जैसे इन्होंने कहा है–

''अब मै कउनु उपाउ करउ॥'' **(मः 9/685)**

''हरि के भगत सदा सुख वासी॥ बाल सुभाए अतीत उदासी॥''

वह मासूम बच्चों की तरह रहे हैं। अकल छोड़ कर, अपना-पन निकाल कर कि हे मालिक! मैं क्या करूं, मैं तो कुछ भी नहीं जानता, तू ही मार्ग दिखलाये तो दिखलाये। यही ईसा ने कहा है–

''Be like children for they shall enter into the kingdom of Heaven.''

''मासूम बच्चों की तरह बन जाओ तब तुम मालिक की दरगाह में जा सकते हो।'' जो पहले ही अहंकार से भरा पड़ा है कि मैं गुणी हूँ, ज्ञानी हूँ, मैं ये जानता हूँ, मैं वो जानता हूँ, उसने आगे क्या लाभ उठाना है? यह तो दीनता और गरीबी का मार्ग है। अपनी हस्ती को मिटाने का मार्ग है। अति नम्रता का मार्ग है।

'दुर्लभ दरसन साध का, दुर्लभ गुर उपदेश।'

फिर मंत्र कह लो, सिमरण कह लो, वह मिलना मश्किल है। जब तक कोई अधिकारी न होवे उसको नहीं मिलता। बिना अधिकारी के तो स्कूल में भी दाखिल नहीं करते। उसको नाम कैसे मिल सकता है? फिर उसका जपना कठिन है। ''दुर्लभ करवा कठिन है।' फिर उसका जपना कठिन है, मन जपने नहीं देता। मन साथ में बड़ी बला बैठी है। अगर कहता है, मैं जपूंगा तो नहीं जप सकता। अगर कहता है मालिक तू जपावे तो बेशक ही थोड़ा बहुत जपे। फिर अगर कोई ऐसे कर्म आ

जायें तो जल्दी-जल्दी दर्शन नहीं होते। 'दुर्लभ करवा कठिन है दुर्लभ परस अलेख।' हाँ जीः

पाठी– मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ॥
अब मै कउनु उपाय करउ ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– मन्दिरों में जाने का, गुरुद्वारों में जाने का, तीर्थों पर जाने का और पाठ करने का अर्थ तो यही है कि मालिक मिले कि कुछ और भी है? अगर मालिक नहीं मिला तो उसकी कोई निशानी मिले, कोई तसल्ली मिले, कोई काम, क्रोध ही कम हों। अगर यह भी नहीं हुआ तो फिर क्या फायदा? सोच लो, किसी ने कभी सोचा है? जिसने सोचा है वही तड़फा है कि मालिका! क्या करूं मुझे कोई तसल्ली नहीं मिली। उनकी ही सुनी गई है।

पिता कृपालि आगिआ इह कीनी बारिकु मुखि मांगै सो देनी ॥

वह तो हर समय देने के लिए तैयार है। जो चीज़ मांगो देने को तैयार है। हम मांगते ही और-और चीज़ें हैं। ख़्याल ही नहीं पहले तो मांगने का। हाँ जी–

पाठी– गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ
पसु जिउ ऊदरु भरउ॥ अब मैं कउनु उपाय करउ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– दादू साहब ने ठीक लिखा है–

दुर्लभ दरसन साध का, दुर्लभ गुर उपेदश।
दुर्लभ करवा कठिन है दुर्लभ परस अलेख॥

फिर उसका जपना भी मुश्किल है। यहाँ तो सारी रात लगा रहेगा परन्तु उसका जपना मुश्किल है क्योंकि मन दुश्मन इसके साथ बैठा है। वह नहीं जपने देता। क्योंकि उसके दायरे से निकलता है। काल के दायरे से निकलता है, वो जो इसको कैद कर के बैठा है। अब कहता है गुरुमत तो मिली अगर कोई कामिल फकीर मिल भी गया... अब गुरु नानक साहब से बड़ी गुरुमत किस के पास थी। बोलो भाई! वह तो खुद अकाल पुरुष आया। बाला मरदाना साथ रहे। मरदाना सारी उम्र कहता रहा कि हाय मुझे भूखा मार दिया, हाय मुझे प्यासा मार दिया। कहते ''पसु जिउ उदरु भरउ ॥'' फिर यह करना मुश्किल है। तो उन्होंने ठीक ही लिखा है, ''दुर्लभ करवा कठिन है।'' इसको जपना बड़ा मुश्किल है। कोई बिरला ही है। कोई बिरला ही, पहले तो जो पुकार करेगा उसकी सुनी जाती है। फिर उसका जपना कठिन है। फिर भी किसी रास्ते पर तो आया।

उसका रास्ता तो सीधा हुआ। अगर जाना हो डबवाली को, जो है सिर्फ दो मील पर, चल पड़े सिरसे को। चाहे कितना ही दौड़ें, नहीं पहुँच सकते। इधर चाहे कदम-कदम ही चलो एक दिन ज़रूर पहुंच जायेंगे। रास्ता तो सही मिला। पहले तो रास्ता ही नहीं मिलता।

पाठी– गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ॥

पसु जिउ उदर भरउ॥ अब मै कउनु उपाय करउ॥ (मः 9/685)

मैनेजर साहिब जी– अगर देखा जाये तो दुनिया में कितने ही मत हैं, देख लो। एक-एक मत के कई-कई मत बन गए। एक सिक्खों के कई बने पड़े हैं। एक ईसाइयों के बीस बने पड़े हैं। एक मुसलमानों के बहत्तर बने पड़े हैं। किसने बनाये? मन ने। सच्चाई में तो दो मत हैं सारे ही–'मनमत और गुरमत।' सभी दुनिया मनमत में है। मन के कहे खाती है और मन के कहे पीती है, मन के कहे रिश्ते नाते, मन के कहे यह भक्ति करती है। गुरमत उस फकीर के पास है, जिसने अन्दर सतगुरु को प्रकट कर लिया, शब्द गुरु को प्रकट कर लिया। मनमत में है। मनमुख कौन होते हैं?

''से मनमुख जो सबदु न पछाणिह ॥''

जिन्होंने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट नहीं किया वह सारी दुनिया मनमुख है, सोच लो! निर्णय ही हुआ पड़ा है–'से मनमुख जो सबदु न पछाणिह।' गुरमुख कोई विरला फकीर ही मिलेगा, जिसने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट किया है, नहीं तो सब पाखण्ड ही पाखण्ड है, पाखण्ड ही पाखण्ड है! सारी दुनिया मनमत के अन्दर घूम रही है। वह कहता है ऐसे ठीक है, वह कहता ऐसे ठीक है। वाणी तो एक ही है परन्तु इसके छत्तीस अर्थ निकाल रखे हैं। कोई इधर को लिए फिर रहा है, कोई उधर को लिए फिर रहा है। यह मन ही लिये घूम रहा है दूसरा कोई नहीं। यह फिरके मन के बनाये हैं किसी फकीर ने नहीं बनाये। जितने कर्म-धर्म हैं सभी मन ने बनाये हैं। यही हमारा दुश्मन है। गुरु नानक साहब फरमाते हैं–

मनु मैगलु साकतु देवाना॥ बन खंडि माइया मोहि हैराना॥

इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥ (मः 1/415)

कि मन एक मस्त हाथी की तरह है जो मोह माया और विषय विकारों के जंगलों में भटकता फिर रहा है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बाल-बच्चों का प्यार, कभी ज़मीनों जायदादों का लोभ, कभी मान-बढ़ाइयां, कभी कुछ, कभी नाच, कभी

रंग, कभी तमाशों में लिए फिर रहा है। 'इत उत जाहि काल के चापे' यह काल का एजेंट है। इसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना और मालिक से दूर करना। और इसे कोई काम नहीं। और इसका कोई काम नहीं जीव को भरमाना और भटकाना। हमको तो छत्तीस सौ काम हैं, इसको एक ही काम है। यह काल का एजेंट है। ''इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपै ॥''

कोई बिरला गुरुमुख ही है जिसने इसको खोज कर अन्दर इसको काबू किया है। शेष सारी दुनिया इसके काबू में है। और जब तक वह सच्चा नाम इसके अन्दर प्रकट नहीं होता, जब तक वह सच्चा शब्द प्रकट नहीं होता, उसका रस न लेवे, ये काबू में नहीं आता।

''बिनु गुरु सबदै मनु नहीं ठउरा॥''

''मन मूसा पिंगल भिआ पीपारा हरिनामु ॥''

अब गुरु अमरदास पहले मनमत में ही घूमते थे और जप, तप, तीर्थ, व्रत करते थे। जब गुरु अंगद साहब के पास आये तो मालमू पड़ा कि असली भक्ति क्या है। सिर्फ सच्चे नाम को प्रकट करना ही असली भक्ति है, बाकी कोई भक्ति नहीं। फिर गुरमत आयी है। सोच लो! जितने बाहर लिये फिर रहे हैं सब मनमत है, सब मनमत है। जो फकीर अन्दर जाता है वही बतायेगा कि तेरे अन्दर सच्चा नाम है, तेरे अन्दर शब्द गुरु है, तू उसे प्रकट कर। मैंने इस प्रकार किया है तू भी इस तरह कर ले। बस इतनी बात है। मस्ताना जी तो कहा करते थे कि भाई हम तो जोड़े झाड़ने वाले हैं। गुरु नानक साहब ने कब कहा कि मैं गुरु हूँ या गुरु बने। 'कहु नानक हम नीच करमा।' बोलो! सच तो यह है कि जिसके ऊपर अफसर बैठा है वह आप क्लर्क या छोटा अफसर है। वह कभी कह सकता है कि मैं ऐसे कर सकता हूँ? बोलो भई! कह सकता है कभी? जिसके अन्दर शब्द गुरु है वह कहेगा कि वही करने वाला है, मैं नहीं। जिसने कहा मैं करता हूँ बस बेड़ा नष्ट। गुरु गोबिन्द सिंह जी कहते हैं–

जो हमको परमेसर उचरि है॥ ते सब नरक कुण्ड महि परि है॥

मो कौ दास तवन का जानो॥ या मैं भेद न रंच पछानो॥

कहते हैं जो कोई कुछ बना, सीधा नरकों को जाता है। मैं तो उसका दास हूँ। हाँ जीः

पाठी– कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ, तब हउ पतित तरउ ॥
अब मैं कउनु उपाय करउ ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– सोच लो! हमारी भलाई के लिए लिखते हैं 'कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ, तब हउ पतित तरउ ॥' हमको कोई कह जाये तो पतित। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं ''जे भुली जे चुकी सांई भी तुजहीं काढीया ॥'' तू निकाले तो निकाले। गुरु नानक साहब कहते हैं, मैं कुच्चजी, मैं कुच्चजी।' कि मुझे तमीज नहीं। बोलो जिनको तमीज़ है वह कहते हैं कि हमें तमीज़ नहीं।

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ॥
जिनि अैसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

कहते हैं जिन्होंने अपने आपको बुरा समझा वही हमारा मित्र है। यह बुरा कब समझता है? ऐसे नहीं समझता, जब तक इसके आगे बुराइयां न आयें, तब तक नहीं समझता। जब ये किसी कामिल फकीर की शरण में आता है, आते-आते उससे रास्ता लेकर जपता है, इसको अपने आप ही अपनी बुराइयों का पता लगने लग जाता है। इसके अन्दर से फूटकर निकलने लग जाती हैं। फिर रोता है, बिलखता है कि मैं सबसे बुरा हूँ।

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ, मीतु हमारा सोइ॥

कहते हैं वह हमारा मित्र है, वह मालिक की दरगाह में जायेगा।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जब दिल खोजा अपना मुझसे बुरा न कोय॥

फिर मालूम पड़ता है कि मैं सबसे बुरा हूँ। इसका नाम है सत्संग। जैसे कहते हैं कि सत्संग में जाकर पार उतरता है। कहते हैं न? ऐसा सत्संग भागों से मिलता है।

कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ पारब्रह्म तिन लागा रंगु ॥

लाखों, करोड़ों आदमी चाहते हैं कि हमें सच्चा सत्संग मिले, मालिक का प्रेम और प्यार मिले।

जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥ नानक ते जन सदा धनि धनि॥

जिन पर आप मालिक खुश हो जाता है उसको मिलता है, वह मुबारक है। जब उसकी सोहबत में जाता है फिर इसको होश आता है। इसका नाम है सत्संग।

मेरे माधउ जी सतिसंगति मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परम पद पाइया सूके कासट हरिआ।

सूके कासट क्या? यह बाहर की लकड़ियां नहीं। जैसे बाहर पेड़ मुरझा जाते हैं, अगर पानी मिल जाये तो हरे होने लग जाते हैं। इसी प्रकार हमारी आत्मा सूखी पड़ी है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में सड़ रही है। सोच लो! सारी दुनिया की हालत देख लो जल रही है, जल रही है। यह जल रही है। जब सोहबत में जाती है, इस पर मालिक का रंग चढ़ता जाता है। जिस वक्त यह कामिल फकीर के द्वारा बताये तरीके के मुताबिक जपती है तो इसके अन्दर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी आने लग जाती है और काम, क्रोध की अग्नि समाप्त होने लग जाती है, शांती आ जाती है। इसका नाम है 'सूके कासट हरिआ'। अगर यह नहीं हुआ तो कुछ भी नहीं, तो वह सत्संग ही नहीं। साधू वह है जिसकी सोहबत में जाकर हमारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के बन्धन ढीले पड़ जायें, अन्दर शांती आने लग जाये और मालिक का प्यार उठे।

सुभर भरे प्रेम रस रंग ॥ उपजै चाउ साध कै संगि ॥

नहीं तो पार्टियां बनी पड़ी हैं सभी जगह, देख लो! जहां जाओ, वह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं। यही लगी पड़ी है, सोच लो! अगर सिक्खों के जाओ तो सनातनियों की, सनातनियों के जाओ तो आर्यों की, अगर आर्यों के जाओ तो मुसलमानों की। हर किसी को यही लगी पड़ी है। अग्नि खत्म नहीं हुई। जब अग्नि खत्म हो जाती है तो अन्दर शांती आ जाती है। तभी कबीर साहब ने कहा है—

कबीर साकत संगु न कीजीऐ, दूरहि जाइऐ भागि॥
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु॥

कहते हैं जैसे काले बर्तन के साथ लगने से भी कुछ न कुछ काला दाग लग जायेगा, इसी प्रकार साकत के संग में न जाओ जहां दुई है। जो ईर्ष्या, द्वैत सिखाये वहाँ से परे ही हो जाओ, नज़दीक मत खड़े हो। नामदेव जी कहते हैं—

जो न भजते नारायणा॥ तिन का मै न करउ दरसना॥
जिन के भीतरि है अन्तरा॥ जैसे पसु तैसे उई नरा॥
''सत संगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै इको नामु बखाणीये॥''

जहां एक ही नाम की चर्चा हो, एक सतगुरु की ही चर्चा हो, एक ही शब्द प्रकट करने का ख़्याल हो, और दूसरी कोई बात न हो। बाकी सारी दुनिया अग्नि डाल रही है। जहां जाओ अग्नि डाल रही है, जहां जाओ अग्नि डाल रही है। हाँ जीः

पाठी– कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥
अब मै कउन उपाय करउ ॥ **(मः 9/685)**

मैनेजर साहिब जी– अगर और न हो, कोई कामिल फकीर भी न मिले, यह भी खोज कर करना चाहिए। यह धुर धाम का रिश्ता है। यहाँ एक रिश्ता 20-25 साल का होता है, कितना देख भाल कर करते हैं। यह भी देख कर करो। उसके आगे रोवो कुरलावो कि हे मालिक! तेरे से बिछड़े हुये मुझे कितनी देर हो गई! तू मेरे अन्दर बैठा है, मेरा भी कुछ कर। ये रोजाना सुबह उठ कर इतना भी करे तो भी इसको कोई न कोई रास्ता मिल जायेगा। अच्छी तरह सोचे सुबह उठकर। घण्टा, आधा घण्टा सोचे कि मैंने क्या करना था, क्या कर रहा हूँ, किधर जा रहा हूँ? मेरी अब तक अग्नि खत्म नहीं हुई। फिर मालिक के आगे विनती करे तो वह कोई न कोई तसल्ली ज़रूर देगा, कि तू अमुक जगह पर जा या उसे अपने आप ही ले जायेगा! आप भी तलाश करो! यह नहीं कि नहीं, ज़रूर कोई न कोई उपाय करेगा! अगर यह सच्चे दिल से करता है तो इसको घर बैठे को ही तसल्ली देगा। परन्तु दिल में सच्चाई हो तब है। ये सच्चे दिल का मार्ग है।

''हिरदै सचु करनी सार॥ होर सभु पाखंडु पूज खुआर॥''
''साच कहौं सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइउ॥''

यह प्रेम का मार्ग है। एक प्रेमी ने आज बड़े कमाल की बात सुनाई। कहता कि लोग मेरे से पूछते हैं कि तुम्हारे जो फकीर आयेंगे उनके पीली पगड़ी होगी या नीली? कि कैसे कपड़े रंगे हुए हैं, बाल लम्बे हैं? उन बेचारों का क्या दोष है।

सांईं आगे सांच हो, सांईं सांच सहाए।
भावें लंबे केस कर, भावें घोट मुंडाए।

अब सोचो! जंगलों में कर्मी-धर्मी भी थे। भीलनी क्या जानती थी? बेर भी चख कर (ओंठ कर) मीठे-मीठे छांटकर रखती गई क्योंकि वह प्रेम में मस्त थी। प्रेम में आकर तुरन्त राम चन्द्र जी उसके पास चले गये। किसी कर्मी-धर्मी को नहीं पूछा। बोलो, सोच लो! इसी प्रकार अन्दर वाला सतगुरु भी प्रेम का भूखा है। बाकी किसी चीज़ का नहीं। जो सच्चे दिल से पुकार करता है वह उसकी सुनता है। यह दिल की सच्चाई पर है बाकी किसी पर नहीं। जिसके अन्दर सच्चाई है वह रोता भी है, कुरलाता भी है, सब कुछ करता है। (एक प्रेमी–''यह घर ही भागों वाला है। ऐसी सत्संग कभी नहीं हुई, सतगुरु आप ही करते हो।'') बेईमान फिर वही बात! सतगुरु कभी बाहर हुआ है? सतगुरु

अन्दर है। बाहर है ही नहीं! सोचो! यह मस्ताना जी के वचन हैं पढ़ भई।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

''जब बिलोचिस्तान से आया तो नौं गुरु किये। किसी ने अन्दर वाला गुरु जो मौत से छुड़ाने वाला है न बताया...।'' तुम बाहर गुरु मान भी लो, चलो अब कहां है गुरु बोलो? उनके तो गुरु अन्दर प्रकट था। उन्होंने कहा हमने ऐसे निकाला है तुम ऐसे निकाल लो। हर एक को अपने-अपने गुरु ने काम देना है। हर एक को अपनी-अपनी विद्या ने काम देना है। अगर मान लें तो बाहर हमारे ऐसे तो छत्तीस सौ गुरु हैं। पंजाबी का और, हिन्दी का और, बोलो? उसका रूप शब्द है वह हर एक के अन्दर बैठा है। वह फकीरों के चोले में आकर...। गुरु नानक साहब का चोला पाया। एक ही शब्द गुरु है, फिर गुरु अंगद साहब का पाया। फिर गुरु अमरदास का पाया।

नानक आदि अंगद अमर सतिगुरु सबदि समाइअउ॥
धंनु धंनु गुरु रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइउ ॥

गुरु नानक साहब के चोले में आकर हमको समझाया। फिर चोला पुराना हुआ तो दूर फेंक दिया। फिर गुरु अंगद साहब के अन्दर बैठ गये। वह पुराना हुआ फिर गुरु अमरदास के अन्दर बैठ गये। फिर गुरु रामदास के अन्दर बैठ गये। फिर गुरु अर्जुन साहब के अन्दर बैठ गये।

''आदि अंत एको अवतारा ॥ सोई समझीए गुरु हमारा॥''

वह शब्द गुरु है। अगर वह न आवे तो कोई गुरु नहीं। देह चीज़ नहीं; देह तो हमारे समझाने के लिए एक यंत्र है।

''ब्रह्म बोले काया के ओल्हे ॥ काया बिन ब्रह्म किआ बोले॥''

इसके बिना हमको समझा नहीं सकता। हमारे जैसा बनकर समझाता है लेकिन वह है एक ही। वह शब्द गुरु है। अन्दर वाला तो छुड़ा ही दिया। दादू साहब कहते हैं :

दादू मैं सभ गुरु कीया, पशु पक्षी बनराय॥
सूक्ष्म स्थूल खाली नाहीं, सभ ही माहि खुदाय॥

उनका भाव क्या था कि वहाँ से गुण उठाये। जैसे दत्तात्रेय को कहते हैं कि उसने चौबीस गुरु किये, जब तक अन्दर वाला न मिला, तसल्ली न होई। मौत के समय अन्दर वाले ने साथ देना है, दूसरे किसी ने नहीं। बाहर हज़ारों गुरु कर लो जब तक अन्दर वाले को प्रसन्न नहीं करोगे तब तक कुछ नहीं बन सकता। अगर बाहर किसी चोले में आता है तो कहता है तेरे अन्दर है

उसको पकड़ो। अपने अन्दर वाले को निकाल!

''सिमरि सिमरि सिमरि गुर अपुना सोइआ मनु जागाई ॥''

हां जी। ''जब बलोचिस्तान से आया तो नौं गुरु किये। किसी ने अन्दर वाला गुरु जो मौत से छुड़ाने वाला है, न बताया। फिर सावन शाह परम सन्त या कामिल फकीर के पास बाईस या तेईस साल की उम्र थी, पहुँचे और अर्ज़ की कि हमने अपना मौत से छुड़ाने वाला गुरु लेना है। महाराज जी ने फरमाया कि वो तेरा गुरु तेरे अन्दर है। जो कोई अपने अन्दर वाले राम गुरु को खुश करे वही इस दुनिया में आनन्द लूटे। इस जहान में तो अंधेर हो रहा है कि बाहर वाले गुरुओं ने अन्दर वाले गुरु को बिलकुल छुड़ा दिया है।'' बोलो किसी ने कहा है? सभी कहते हैं, यहाँ माथा टेको, यहाँ माथा टेको, हम तुम्हारे गुरु हैं। तुलसी साहब के पास एक कबीर पंथी आया। अब बाद में उपदेश भूल जाते हैं। उसने गुरु और चेले का सम्बन्ध में पूछा तब उन्होंने कहा–

रेवती दास सुनो तुम भाई॥ याकी बिधी कहौ समझाई॥
नहि कोई गुरु नहीं कोई चेला॥ बोले सब में ऐक अकेला॥
जो कोई गुरु चेला कर जाना॥ सोई सोई परे नरक की खाना॥
एक बोल सभ मांहि विराजा॥ गुरु चेला द्वैत बिधी साजा॥
चेला होय नीकि बिधि भाई॥ गुरु होय चौरासी जाई॥

जहां एक गुरु बन जाये दूसरा चेला, दो बन गये वहाँ तो सौदा खत्म। गुरु गोबिन्द सिंह कहते हैं 'आपे गुरु आपे चेला' बोलो; सोच लो!

आपे करता पुरखु बिधाता॥ जिनि आपे आपि उपाइ पछाता॥
आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे स्रिसटि उपाई हे॥

(मः 1/1025)

वह आप ही सब कुछ है। बोलो, जो डाक्टरी कर लेवे वो डाक्टर कहा लेवे। गुण सभी के अन्दर है। वह सतगुरू सभी के अन्दर है, लाभ उठा लो। जो अपने गुरु को खुश कर ले, अन्दर प्रकट कर ले, वह लाभ उठा ले।

''सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥''

अपना इसके अन्दर है बाहर कोई गुरु नहीं। बाहर न हुआ है न होगा। आज गुरु मर गया तो कल को दूसरा कर लो।

सो गुरु करहु जि बहुरि न करना॥
न उह मरै न होवै सोगु॥

मस्ताना जी कहा करते थे, ''तूने मरा हुआ गुरु क्यों किया भाई?'' हम उधर बागड़ में गये। गंधेली की एक ठाकराणी आ गयी। अब प्रेमियों को ख़्याल आया कि वह बड़ी है। ठाकुर राजाओं की तरह होते हैं; अगर यह भी नाम ले जाये तो अच्छा है। मस्ताना जी कहते कि इसके नसीबों में नहीं है। हमने बड़े आदमियों से क्या लेना है? उन्होंने मजबूर किया तो कहते अच्छा ले आओ। उसको लाये तो वह बोली कि मैंने पहले एक गुरु कर रखा है। कहती मैंने गुरु किया हुआ है। तो मस्ताना जी कहते कि हम तो तेरे गुरु नहीं बनते भई। कहती जी नही मैंने पहले गुरु किया हुआ है। पूछते हैं कौन सा? कहती जी घोघड़नाथ। कहते कहां है? वह बोली जी आज हरिद्वार हैं। कहते अब तेरे पर मुश्किल आ जाये तो कौन बचाये? तुझे तो हम अन्दर वाला गुरु पकड़वाते हैं, हम तो पलो पली करवाते हैं। वह बलोचिस्तान की बोली थी कि हम बिचोले हैं।

घोलि घुमाइ तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥

यह गुरबाणी में आता है वो एक तरह के सम्बन्ध जोड़ने वाले होते हैं। वह हमको समझाने के लिए आते हैं। हमारा जैसे रिश्ता पति के साथ जोड़ते हैं इस प्रकार वह सन्त आत्मा का रिश्ता परमात्मा के साथ जोड़ने आते हैं। उनको और कोई काम नहीं है। वह स्वयं गुरु नहीं बनते। शरीर तो कोई चीज़ ही नहीं है। शरीर तो मिट्टी है कबीर साहब कहते हैं :

गुरु किया है देह को, सतिगुरु चीन्हा नाहिं॥
भौ सागर की धार में, फिर फिर गोता खाहिं॥

अगर उनका कोई बाहर गुरु है तो क्या है?

सतिगुरु बचन बचन है सतिगुरु पाधरु मुकति जनावैगो॥

उनका वचन गुरु है। वे लेकर जाने वाला है। यहाँ पर ही लोग धोखा खाते हैं। कोई देहधारी को गुरु मानते हैं। देहधारी आगे से आगे चले आ रहे हैं। गद्दियों पर गद्दियां चली आ रही हैं। वह कहता है मेरा गुरु अमुक है, दूसरा कहता है मेरा गुरु अमुक है। चाहे आगे गुरुआई आये या न आये।

वह भी ठीक कहते हैं। काया के बिना वह काम नहीं कर सकता और काया गुरु नहीं है। गुरु 'शब्द' है। दोनों ही धोखे में हैं। जब तक फकीर का चोला न पावे तब तक समझा नहीं सकता। लेकिन चोला गुरु नहीं। चीज़ 'शब्द' है और कुछ भी नहीं है।

''इस संसार में तो अंधेर हो रहा है कि बाहर वाले गुरुओं ने अन्दर वाले

गुरु को बिलकुल छुड़ा दिया है। उसके साथ लगने ही नहीं देते।'' बस, खोल ही देते हैं, कोई दुःख न माने। यह पढ़ो भई, सुनो भई सुनो; यह याद रखो कीमती बात है।

पाठी– तुलसी कहैं एह सत बखाना॥ अस अस बेद पुराण न जाना॥
एह तुम भाखा सत प्रभावा॥ बेद पुरान एही बिधी गावा॥
पुनि संतन कछु और बखाना॥ सतगुरु मता भिन करि जाना॥
जगत गुरु कंठी गहि बांधा॥ ताको गुरु कहौ पुनि साधा॥

मैनेजर साहिब जी– उन्होंने कहा कि गुरु के बगैर मुक्ति नहीं। अब वह बताते हैं कि गुरु वह नही कि कंठी बांधी और गुरु बन गया। हाँ...

पाठी– यह व्योहार गुरु जग सोई॥ मुक्ती गुरु कोई औरे होई॥
यह तो गुरु जगत व्योहारी॥ इनसे मुकती न होये बिचारी॥

मैनेजर साहिब जी– अब जिसको पूछो, गुरु किया हुआ है, गुरु किया हुआ है। हाँ...

पाठी– करम जाति देही गुरु करई॥ करम भोग इनसे नहीं टरई॥
गुरु है आप करम के माहिं॥ चेला को कैसे मुकताई॥
गुरु की करनी गुरु सोई पावै॥ चेला आप करम भुगतावै॥
जगत गुरु जिव पार न पावै॥ वोह गुरु संत और गोहरावै॥
कन फूंका गुरु नहीं कहाई॥ गुरु दयाल की औरे राही॥
वे दयाल गुरु समरथ दाता॥ जग भौ जाल पार के करता॥

मैनेजर साहिब जी– सुनो भई! यह वचन गुरु अर्जुन साहब का है–

''गुरु की सेव न जानै कोई ॥ गुरु पारब्रह्म अगोचर सोई ॥''

बोल, जो सतगुरु है वह पारब्रह्म देश से पार है, त्रिलोकी से पार है। अगोचर, मन इन्द्रियों का विषय नहीं। इन आंखों से देखा नहीं जा सकता, इन कानों से वह आवाज़ सुनी नहीं जा सकती। हाँ...

पाठी– गुरु की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रह्मु अगोचर सोई॥
जिसनो लाइ लए सो सेवकु जिस बड़भाग मथाइणा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जिस पर वह कृपा करे, किसी के अपने वश में कुछ नहीं।

पाठी– गुरु की महिमा वेद न जाणहि॥ तुछ मात सुणि सुणि बखाणहि॥
पारब्रह्म अपरंपर सतिगुरु जिसु सिमरतु मनु सीतलाइणा॥

बोल, इस प्रकार वह कहते हैं कि वह गुरु और है, मुक्ति वाला और है! बस भई इना ही काफी है और क्या?

पाठी– गुरु है सबद सुरत है चेला॥ चीन्हि गुरु चेला सोई मेला॥

मैनेजर साहिब जी– हम खुद देहधारी हैं और देह को पकड़ते हैं। यह भी देह नहीं, यह भी सुरत इसके अन्दर है। इसको कुछ मालूम नहीं। इसका रूप कोई और है। यह अपने रूप को ही भूला फिर रहा है। यह कोई देह नहीं है।

पाठी– वे गुरु स्वामी अगम अपारा॥ पिंड ब्रह्मांड दोऊ से निआरा॥

मैनेजर साहिब जी– बस! 'पिंड ब्रह्मंड दोऊ से निआरा'। उससे भी पार है। इनको तो मान लिए, बाहर कर लिए, परन्तु उसको कब पकड़ोगे? मुक्ति का दाता तो वह है। अगर वह किसी देह में भी आये तो वह कहता है तेरे अन्दर है, उसको पकड़। अगर मास्टर के पास जाये उसका कहना न माने, पढ़े नहीं तो कैसे पास होंगे भई? केसे एम.ए., बी.ए. बनोंगे? अगर आप बाहर गुरु समझ भी लो और उसका कहना न माना और अन्दर न गये, अन्दर वाले को न पकड़ा तो क्या लाभ हुआ? बोलो।

पाठी– ताके रूप रेख नहीं काया॥ वे गुरु मिलै तो मुक्ति लखाया॥
यह तो गुरु करम की लारी॥ आप न तरे और कहा तारी॥
यह जानो व्योहारी नाता॥ लेन देने पैसे के साथा॥
खान-पान चेला से मांगै॥ गरभ बास पर देने लागै॥
चेला जान जाहि सो लेई॥ पुनि पुनि ताहिं भोग कर देई॥

मैनेजर साहिब जी– पहले लेता है और अपना आनन्द करता है। फिर देना पड़ता है।

गदराने एक प्रेमी के घर हम पहले गये थे। वहाँ बाद में डेरा बना है। उनके एक भैंस थी। यह कीमती बात है। अब उस भैंस के सिर में कीड़े पड़ गये! कीड़े पड़ गये तो बड़ा इलाज करवाया तो भी ठीक न हुई। आखिर डाक्टरों ने सलाह दी कि इसको गोली मारकर मार दो!

अब उसका भाई गोली वाले को भी ले आया। जब मारने का ख़्याल हुआ तो उन्होंने कहा 'अपने मस्ताना जी के आगे विनती करते हैं, पूछ तो लें। मस्ताना जी उन दिनों में वहीं डेरा में ही थे। मस्ताना जी बोले तुम मार तो दोगे लेकिन उसका कर्म कौन उठायेगा बोलो? कहते जी फिर क्या करें? कहते ठहरो फिर तुमको बतायेंगे। दो चार दिन निकल गये। हम बाहर गये! मस्ताना जी कहने लगे चलो मैनेजर उधर चलें देख आयें। हम एक प्रेमी के साथ उनके घर चले

गये। जब भैंस के पास गये मस्ताना जी कहते क्यों? इतने ही शब्द कहे भैंस ने सिर ऊपर उठाया तो हमने पूछा जी यह क्या? कहते पिछले जन्म में यह साधनी थी, गुरु बनी पड़ी थी। उनका ले लेकर तल-तल कर माल खाती थी। हमने इसको कहा तुझे देना पड़ेगा, तू इस तरह मत कर! यह नहीं मानी। तो अब यह कीड़े बनकर खाते हैं! अच्छा है उनका भी चुका दिया। कहते फिर ऊंट बनके, बैल बनके देना पड़ेगा। गुरु नानक साहब जा रहे थे एक ऊंट इसी प्रकार पड़ा था उसको भी कीड़े खा रहे थे। पूछा यह क्या है? कहने लगे यह गुरु है और यह चेले हैं। कल यह लूट-लूट कर खाता था आज ये तोड़-तोड़कर खाते हैं। हराम का माल तो नहीं–

गिरही का टुकड़ा बुरा नौ नौ ऊंगल दांत।
भजन करे तो ऊभरे नातर काढे आंत ॥
''घालि खाई किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥''

पहले तो फकीरों की शिक्षा यही है कि अपने हक हलाल की कमाई करके खाओ। बिना हक हलाल की कमाई के भक्ति नहीं कर सकता, अन्दर जा ही नहीं सकता। जिसका खायेगा उसको तीन घंटा भजन देना पड़ेगा। जो असली भजन है वो तो दो मिनट नहीं होता। अगर किसी वक्त लाचारी उनको खाना भी पड़ गया (बाहर जाते हैं कोई बेबसी भी हो जाती है) तो उन्होंने रूखा-सूखा खाया है! क्या गुरु नानक साहब को मलक भागो के पकवान बुरे लगते थे बोलो भई! कोदरे की रोटी हक हलाल की खाई! उन्होंने वहाँ लिखा तो इसलिए था कि जो जंगलों में जाते हैं वहाँ फूल-फल पत्ते आदि उठाकर खा ले। बात यह थी लेकिन सभी पाखण्ड बन गये! हाँ...

पाठी– पुत्र, बैल, घोड़ा होई ऊंटा। सो बिन दीए कोऊ नहीं छुटा॥
यह गुर लेन देन व्योहारा। गुरु चेला भौ करम पसारा॥
कंठी बांध गुरु सोई भईया। जग व्योहार नात इह कहीआ॥
जग में कनिया कुंवारी बियाही। करे बियाह तेहि कहै जमाई॥
बियाह किये का नाता लागा। एही बिधि गुरु चेला मत जागा॥

मैनेजर साहिब जी– लड़की बियाही तो कहते हैं दामाद बन गया। इसी प्रकार कंठी बांधी और गुरु बन गया। यह जगत के गुरु हैं। ये तारने वाले नहीं हैं। तारने वाला अन्दर वाला है। हाँ...

पाठी– सतगुरु मत पद अगम अपारा। ताका चीन जीव होई पारा॥
वो गुरु पंथ संत ही जानै। जग गुरुवा नाहीं पहचानै॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं उस गुरु का सन्तों को ही मालूम है जिन्होंने अपने अन्दर प्रकट किया है। बाहर वालों को क्या मालूम। हाँ...

पाठी– चेला बने जोव नहि हाना। गुरु सोई बनै करम की खाना॥
ता से संतन भक्ति दृड़ाई। बिना भक्ति उभरै नहि भाई ॥''

मैनेजर साहिब जी– जब ये सन्तों से रास्ता लेकर अन्दर जपता है तो उस गुरु का पता लगता है। अब सुनो दूसरा महात्मा मलूकदास क्या कहता है। हाँ...

पाठी– हमरा सतिगुरु बिरला जानै ॥
सुई के नाकै सुमेर चलावै सो यह रूप बखानै ॥

मैनेजर साहिब जी– सूई के नाके क्या? यहाँ (नाक और माथे के मध्य इशारा) आवे इस सुमेर को यहाँ लाये, ख़्याल को इकट्ठा करे तो उस गुरु का पता लगता है कि कौन सा गुरु है? वह आगे दोनों हाथों से लिए खड़ा है–

सतिगुरु सभ को देत है लेता नाहि कोय॥
लेता नाहि कोय सीस को धरे उतारी॥
वही शख्श को मिले मरने की करे तैयारी॥

यह जीता मरे। यहाँ ख़्याल को जोड़े तब वह गुरु आता है। वह मुक्ति का दाता है। उसके बिना छुटकारा नहीं। हाँ जीः

पाठी– की तो जानै दास कबीरा की हरनाकस पूता॥
की तो नामदेव ओ नानक की गोरख अवधूता॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं उन्होंने देखा है और किसी को पता नहीं, सोच लो। आगे फरमाते हैं, ''न गुरु खावै न पीवै, न गुरु मरै न जीवै।'' वह गुरु है। उसको सारी दुनिया छोड़े बैठी है। उसके बिना छुटकारा नहीं। इसी को गुरु गोबिन्द सिंह ने कहा है–

जागत जोत जपै निस बासुर, एक बिना मन नैक न आनै॥
(सवैये–पा. 10/33)

वह जो जागती जोत इसके अन्दर काम कर रही है उसके बिना किसी को न माने। वह गुरु है।

एक ही की सेब सभ ही को गुरदेव एक॥
एक ही सरूप सबै एक जोत जानबो॥

वह सभी के अन्दर है! वह गुरु है मुक्ति का दाता और कोई नहीं। यह जो मुक्ति का दाता है इसको सभी छोड़े बैठे हैं। वह देता ही देता है, लेता नहीं। वह बेमोहताज है, वह दाता है, मंगता नहीं।

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ सतिगुरु मेरा सचा साजु॥
सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता॥

वह गुरु है। बस भई। अब कौन सा बोलेगा। समझ में नहीं आता। चलो वह बोल ''हरि को नामु सदा सुखदाई ॥''

पाठी– हरि को नामु सदा सुखदाई॥

जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनका हू गति पाई॥ (मः 9/1008)

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया सुखों की तलाश में फिर रही है। बोलो भई, माया कमाते हो और सारे जितने काम करते हो सुख के लिए करते हो या किसके लिए करते हो? सोच लो? नाम भी जपते हो, जप जप के थक गये, सुख न मिला, बोलो! वह सुख देने वाला नाम इसके अन्दर है।

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै धिृग जीवासु॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतास॥

वह नाम इसके अन्दर है सुखों का दाता। वह नाम इसके अन्दर है। हमारे पास एक नामधारी आया। कहने लगा कि मैं सत्संग भी करता हूँ, नाम भी देता हूँ! लोग सोलह पहरों में अखंड पाठ करते हैं मैं सात पहरों में कर देता हूँ पर अन्दर शांति नहीं। अब शांति कहां से आवे? दौड़े-दौड़े गये पाठ किया, पता ही नहीं बाणी क्या कहती है? नाम को अन्दर प्रकट करो तो सुख आवे, नहीं तो कहां से आवे, बोलो।

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिन नामै धिृग जीवासु ॥

वह नाम का ख़ज़ाना इसके अन्दर है। किसी सन्त के द्वारा जाना जा सकता है–

''जिसु बखरु को लैणि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ॥''

यही पलटू साहब फरमाते हैं–

सन्त सनेही नाम है नाम सनेही सन्त॥
नाम सनेही सन्त नाम से वही मिलावें॥
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें॥
जप तप तीरथ वरत करे बहुतेरा कोई॥
बिना वसीले सन्त नाम से भेंट न होई॥

वह नाम रेडियो वेवज़ की तरह सभी जगह पर है। वह शब्द सभी जगह है। वह सतगुरु शब्द रूप में सभी जगह रमा हुआ है।

''तिसु रूप न रेख अनाहदु बाजै सबदु निरंजनि कीआ॥''
चहु दिसि हुकमु बरतै प्रभु तेरा चहु दिसि नामु पातालं॥
सभि महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं॥

किसी फकीर से पूछ कर यहाँ ख़्याल को जोड़े तब वह सुनाई देता है। वह सुखों का दाता है। वह सुखों का दाता है। हम रोज़ पढ़ते हैं–

''सुख किते न मिलदा जी सुख सतगुरु दी चरनी।''

बाहर हज़ारों गुरु कर लो। चाहे किसी बाडी में सतगुरु आया भी है तो उसके पास बैठो तो दो मिनट शांति आयेगी। बाद में कहां गई शांती, बोलो? जब अन्दर प्रकट करोगे तब शांती है। नहीं तो कहीं शांती नहीं, कहीं शांती नहीं। बोलो, सोच लो। 'सुख सतगुरु के चरनो'। वह चरन इसके अन्दर हैं!

'गुरु के चरण ऊपरि मेरै माथै ॥''

वह नाम इसके अन्दर है। वह सुख देने वाला इसके अन्दर है। वह सतगुरु इसके अन्दर है। हाँ, इतना ज़रूर है अगर कोई इस को कामिल फकीर मिल जाये, वह नाम का रास्ता बताये, वह सिमरण बताये, उस सिमरण में भी कुछ न कुछ शांती है लेकिन पूरी शांती तब है जब ये जपे, नाम को अन्दर प्रकट करे। वह सिमरण भी किसी कामिल फकीर के द्वारा मिलता है।

''प्रभु का सिमरणु साध कै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि॥''
राम नामु गुरु बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु॥
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मंझारा है॥

यह लफ्ज़ों पर नहीं है। हम कहते हैं हमारा अमुक लफ्ज़ ही बड़ा है। अगर 'ओम्' का चला तो 'ओम्' नाम सबसे बड़ा उन्होंने गाया। उस फकीर ने जिन्होंने बताया उस समय ठीक था। उसके हिसाब से ओम् की हद तक पहुँच जाते थे; अन्दर प्रकट कर लेते थे। किसी ने कहा सोहंग बड़ा है। गुरु नानक साहब आये तो उन्होंने कहा–

''वाहिगुरु नाम जहाज़ है चढ़े सो उतरे पार॥''

वह नाम जप कर अन्दर जावे। उस समय वह बड़ा था। अगर राधा-स्वामियों के आया तो उन्होंने कहा 'राधा-स्वामी गावे सो तरे'। उन्होंने वह कह लिया। यह समय-समय पर निर्भर है। कोई जरूरी नहीं। कभी कोई कभी कोई। अगर एक लफ्ज़ पर ही होता तो 'ओम्' चल पड़ा था, सारे ओम् से ही तर जाते, बोलो। अगर 'वाहिगुरु' चला था तो सभी वाहिगुरु से तर जाते। अगर सोहंग चला था तो उसी से तर जाते। दूसरों की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। यह तरीका मौके-मौके

पर है। वह लफ्ज़ मौके-मौके पर बदलते रहे हैं। व्यास और थे, सच्चे सौदे और थे। पहले और थे फिर मस्ताना जी ने और कर दिये। यह जरूरी नहीं। यह लफ्ज़ों पर नहीं। लफ्ज़ों में कोई ताकत नहीं। लफ्ज़ों में कोई ताकत नहीं, ताकत है तो फकीर में है। अगर फकीर मालिक के पास पहुँचा है, तो वह तरीका बतायेगा तो उसका सिमरण काम करेगा, बाकी कोई काम नहीं करता। लफ्ज़ कोई काम नहीं करते। थानेदार सिपाही को कहता है कि फलाने आदमी के गोली मार, वह फौरन मार देता है। अगर हम सिपाही को कहें कि गोली मार तो वह हमारे कहने से नहीं मारेगा। उसके अन्दर सरकार का हुकम होता है, वह गोली मरवाता है। इसी प्रकार जिस फकीर को हुकम होता है उसका बताया हुआ लफ्ज़ (सिमरण) काम करता है। चाहे वह राम कह देवे चाहे उल्टा मरा कह देवे, चाहे कुछ कह देवे। वह चीज़ काम करने वाली है बाकी कोई नहीं। अगर उसका बताया सिमरण करे तो सिमरण में भी शांति आयेगी। क्योकि जैसे-जैसे सिमरण करेगा ये नाम के रास्ते पर चल पड़ेगा। जैसे हम कदम-कदम चलते हैं मंजिल नज़दीक आती जाती है। इसी प्रकार यह भी अन्दर चलता है। जैसे हम पहाड़ की तरफ जायेंगे, जैसे-जैसे आगे बढ़ते जायेंगे तो ठण्ड आती जायेगी, शांती आती जायेगी। जब हम पहाड़ पर पहुँच गये तो पूरी सर्दी आ जायेगी। इसी प्रकार जैसे यह सिमरण करेगा रुह अन्दर चढ़नी शुरु हो जायेगी। जैसे-जैसे अन्दर जायेगा उसके अन्दर शांती आ जायेगी। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार आदि की अग्नि समाप्त हो जायेगी। जब यहाँ आया (दोनों आंखों के मध्य इशारा) यहाँ नाम है, यहाँ सतगुरु है। यहाँ आकर इसके अन्दर पूर्ण शांती आ जायेगी। वह सतगुरु इसके अन्दर है। ''गुर के चरण ऊपरि मेरै माथै ॥'' बोलो! चलो तुम बाहर के चरणों में तो गये, यह कब लोगे, सोच लो। यह सुखों का दाता है। यहाँ नाम आये, यह नाम सुखों का दाता है। यह सतगुरु सुखों का दाता है। यह वाणी सुखों की दाता है।

''घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम॥''

इसके अन्दर वह वाणी है—

''गुरबाणी चहुं कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा॥''

वह बाणी चारों दिशाओं में बज रही है। युगों-युगों से वह बाणी आ रही है। नाम कह लो, बाणी कह लो, शब्द कह लो युगों युग से आ रही है।

''बाणी वजी चहु जुगी साचो साच सुणाए॥''

''पूरे गुरु की साची बाणी ॥ सुखमन अंतरि सहजि समाणी ।''

यहाँ ख़्याल को जोड़े, यहाँ सुखमना नाड़ी है। नाड़ियों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं! यहाँ ख़्याल को जोड़े तो सुनाई देती है। यहाँ ही सच्चा तीर्थ है, नाम का तीर्थ है। वह सब मैल और पाप उतारने वाला है। आत्मा युगों-युगों से मैली है। हम रोज पढ़ते हैं–

भरीऐ हथु पैरु तनु देह॥ पाणी धोतै उतरसु खेह॥
मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दे साबूणु लईऐ उहु धोइ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि॥ उहु धौपै नावै कै रंगि॥

अगर हाथ पांव ख़राब हो जायें तो पानी से साफ कर लें। अगर ज़्यादा ख़राब हो जायें तो साबुन से साफ कर लें। परन्तु पापों की मैल उतारने वाला तीर्थ इसके अन्दर है। वह नाम का तीर्थ है। उस नाम के पानी से साफ किये जाते हैं।

''अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥''

वह अमृतसर इसके अन्दर है।

''काइआ अंदरि अमृतसर साचा मनु पीवै भाइ सभाई हे॥''

वह प्रयाग इसके अन्दर है, वहाँ उस नाम का तीर्थ है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बेणी संगमु तह प्रयागु मनु मजनु करे तिथाई॥

हम बाहर के तीर्थों पर नहाये, वह अन्दर वाले तीर्थ पर कब नहाओगे? आत्मा के पापों की मैल उतारने वाला तीर्थ इसके अन्दर है, बाहर नहीं। वहाँ आत्मा साफ होकर खुशियों में चली जाती है। यह वहाँ पर नंगी हो जाती है। इसकी अपनी (रूह की) रोशनी बारह सूरज की है।

''बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिस बाजे अनहद तूर॥''

इसके अन्दर कुदरती तौर पर बाजे बज रहे हैं। कुदरती कीर्तन हो रहे हैं। हम रोज़ पढ़ते हैं–

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे बावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे॥

हां जी शब्द :

पाठी– पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई॥
ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई॥
हरि को नामु सदा सुखदाई... **(मः 9/1008)**

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल, सुनो भई...

बुझहु हरिजन सतिगुरु बाणी ॥ इहु जोबनु सासु है देह पुराणी॥
आजु कालि मर जाईए प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे॥

कि हे हरिजनो! हे मालिक को ढूंढ़ने वालो! नाम कहो, बाणी कहो, शब्द कहो एक ही बात है कि उस सच्ची बाणी की तलाश करो! वह इसके अन्दर है।

''घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम॥''
''नउ निधि अमृतु प्रभ का नामु ॥ देहि महि इसका बिश्राम॥''
''काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई॥''

उस नाम की, उस बाणी की तलाश करो–

पाठी– ''बुझहु हरिजन सतिगुर बाणी ॥ इह जोबनु सासु है देह पुराणी ॥''

मैनेजर साहिब जी– समय हाथों से निकल रहा है। आज गया, कल गया! इसी तरह रात आयी दिन आया। दिन आया रात आयी! कहते हैं बस इसी तरह वक्त गुज़र रहा है।

पाठी– ''आजु कालि मरि जाईए प्राणी॥''

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया काल का खाजा है।

''जगत चबैना काल का कुछ में मुख कुछ गोद॥''

जैसे हम दाने भुनाकर चबाते हैं। कुछ तो जेब में होते हैं, कुछ हाथ में होते हैं, कुछ मुंह में और कुछ अन्दर चले गए। कच्चे पक्के सभी खा जाते हैं। इसी प्रकार वह सारी दुनिया को खा रहा है। किसी कामिल फकीर से पूछ कर जल्दी करो, जपो, जप-जप के अन्दर प्रकट करो। जब जपोगे, आगे उसके जपने के लिए क्या चाहिए; सुनो!

पाठी– छोड़हु प्राणी कूड़ु कबाड़ा॥ कूड़ु मारे मालु उछाहड़ा॥
साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे॥

मैनेजर साहिब जी– बाहर जो कुछ भी है सारा झूठ है, सोचो। जिसके पीछे हम लड़ते हैं–

पाठी– कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥
कूड़ु सोइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैनणहारु॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रुपु अपारु॥
कूड़ु मीआं कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥
कूड़ि कुड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु॥

कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु॥

मैनेजर साहिब जी– सोच लो! बाहर जितना भी है झूठ है :

''जो दीसै सो सगल बिनासै॥

किसी ने विषय विकारों में बर्बाद किया। किसी ने जमीनों जायदादों में बर्बाद किया। किसी ने गाय भैसों मे बर्बाद किया। किसी ने देशों के पीछे, किसी ने कौमों के पीछे बर्बाद किया। सब झूठ के पीछे बर्बाद करके चले गये। उस नाम, उस शब्द, उस सतिगुरु के बिना सब झूठ ही झूठ है। कहते हैं इस झूठ का, कूड़ का सारा ख़्याल छोड़ दे। सारी दुनिया इस कूड़ में फंसी पड़ी है। मेरा घर, मेरी ज़मीन, मेरी जायदाद, मेरी कौम, मेरा मज़हब इन सबके ख़्याल छोड़े।

छोड़हु प्राणी कूड़ कबाड़ा॥ कूड़ु मारे कालु उछाहड़ा॥
साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे॥

सारी दुनिया उल्टे रास्ते फिर रही है। बाहर जितना है सब कूड़ है।

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझे को थाए न पाई॥ नाम बिहूणै माथे छाई॥ (मः 9/685)

जितने जप हैं, जितने तप हैं, सब झूठ ही झूठ हैं, सोच लो। सभी उल्टे रास्ते हैं। सोचो जो हम जपते हैं, जिस समय मौत आयी, सुनो; जिस समय मौत आयी, उस समय इसकी चेतन शक्ति निकलती है। हाथ पांव ठण्डे होते जाते हैं, ठीक है! जब यहाँ आया ज़ुबान खत्म, इन लफ्ज़ों का बोलना खत्म हो गया। कानों में आयी इसका सुनना खत्म हो गया! आंखों से निकली तो इनका देखना खत्म हो गया। आगे मन, चित, बुद्धि, अहंकार का स्टेशन है। आगे इनका चितवना खत्म हो गया। आगे क्या गया, बोलो।

बावन अछर लोक त्रै सभु कुछ इन ही माहिं॥
ऐ अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहिं॥

यह तो त्रिलोकी तक ज़्यादा से ज़्यादा काम करते हैं, आगे क्या गया? यह बोली तो यहाँ पर ही काम नहीं देती, बोलो! इंग्लैंड जाओ वहाँ हमारी पंजाबी बोली काम नहीं देती; वहाँ की सीखनी पड़ेगी तब वहाँ काम देगी। अगली बोली और है। वह सच्चा नाम इसके अन्दर है, उसको प्रकट करना सीखो। बोलो! साथ क्या गया? कौन सी चीज़ गई साथ?

छोड़िहु निंदा ताति पराई ॥ पढ़ि पढ़ि दझहि सांति न आई

कहते हैं पराई निन्दा छोड़ दो। ऐसे ही फलाने ऐसे हैं, फलाने ऐसे हैं।

फलाना कौन इस प्रकार है। फलाना धर्म इस प्रकार है। फलाना साधू इस प्रकार है। ऐसे ही सारी दुनिया निन्दा में फंसी पड़ी है।

निंदा भली किसै की नाहिं मनमुख मुगध करनि॥
मुंह काले तिन निंदका नरके घोरि पंवनि॥

तुम किसी की निन्दा करते हो तुम्हारे अन्दर तो वही चीज़ आयी, सतगुरु तो निकल गया। बोलो कहां रहा सतगुरु? तुम्हारे अन्दर तो वही बला बैठी है। कहां रहा सतगुरु? बोलो! कहां रहा मालिक? कहते हैं यह भी छोड़ दें फिर क्या करे? कीमती बात है यह।

पाठी– छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ पढ़ि पढ़ि दझहि सांति न आई॥
मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे॥

मैनेजर साहिब जी– सति संगत कौन सी है? सत्त का संग। सति संगत का अर्थ है सत्त का संग। यहाँ पर तो जहां बाजा ढोलक बजती है वही सत्संग है। जहां कथा कहानी है, वही सत्संग है। सत्त का संग, वह सत इसके अन्दर है या बाहर वह है जो फकीर सत्त के साथ मिलकर आता है। वह हमें कहानी सुनाता है, वह हमें जोड़ना सिखाता है। नाम कौन सा? 'आतम रामु सखाई हे'। जो आत्मा के अन्दर रमा है, इसका सखा है, साथी है, हर समय साथ है। उस नाम को प्रकट करो। क्या मतलब? तुम उन साधुओं की सोहबत में जाओ जो रात दिन जागते हैं या नाम को प्रकट करते हैं। जब तुम उनकी सोहबत में जाओगे तुम भी प्रकट करना सीख जाओगे। जैसे-जैसे तुम जपोगे तुम्हारे अन्दर जैसे विद्या प्रवेश करने लग जाती है, उसी तरह राम भी प्रवेश करने लग जायेगा। वह नाम भी प्रकट होने लग जायेगा। इसके अन्दर शांती आने लग जायेगी।

''जिऊ जिऊ भगति कबीर की तिऊ तिऊ राम निवास॥''

इसके अन्दर जैसे विद्या निवास करने लग जाती है वह भी निवास करने लग जाता है। जैसे-जैसे निवास करने लग जाता है। जब इसको पता लग जाता है कि मैं चार-पांच कलास पढ़ गया हूँ तो वैसा ही सीखने लग गया, वैसे ही काम भी करने लग गया। आठवीं कलास पढ़ा तो और भी काम करने लग गया। दसवीं पढ़ा तो और भी काम लेने लग गया। इसी प्रकार जैसे-जैसे राम निवास करता जायेगा ये काम लेता जायेगा। द्रौपदी ने जब राजसभा में उसको याद किया तो तुरन्त उसका काम किया कि न किया? चीर बढ़ाया, बोलो भई। राजसभा में जब द्रौपदी को नंगा करने की कोशिश की गई तो उस समय उसने, उसको पुकारा तो उसने आकर उसकी लाज रखी। वह अन्दर वाला राम है, अन्दर वाला नाम

है जो लाज रखने वाला है, बाकी कोई लाज रखने वाला नहीं। वह सच्चा साथी है। प्रह्लाद के लिए नरसिंह रूप धार कर थम्ब से निकल कर आया। इसी प्रकार जंगल जाओ, बियाबान जाओ, तुम्हारा साथी है। उस साथी को सभी छोड़ बैठे हैं। ऐसे ही तो नहीं लिखा उन्होंने :

''जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ॥''

उसके अलावा किसी को न माने। वह सच्चा साथी है। उस सच्चे साथी को सारे ही छोड़े बैठे हैं। हाँ जी :

पाठी– पंचाली कउ राज सभा मै, राम नाम सुध आई॥
ताको दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई॥
हरि को नामु सदा सुखदायी...
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ, गनिका हू गति पाई॥
हरि को नामु सदा सुखदायी... **(मः 9/1008)**

मैनेजर साहिब जी– जिसके अन्दर नाम का बीज पड़ जाये सतगुरु के हुकम का :

जो कोई संत सरण के दागी ॥ तिन ते काल दूर होय भागी॥
जम की जाल निकट नहीं आवे ॥ मारग छोड़ अलग हो जावे॥

यह जपे तो काल नज़दीक ही न आवे।

जिना सतिगुरु सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि॥
तिन जम की तलब न होवई न उह दुख सहाहि॥

यह अन्दर वाला नाम, अन्दर वाला सतगुरु ऐसा है कि इसके कोई नज़दीक नहीं आता।

जेजीआ डंनु को लए न जुगाति॥
सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप॥

वह फकीरों के अन्दर बैठ कर इसके अन्दर नाम का बीज डालता है। जो इसको जपता है, यमदूत पास नहीं आते। जिनको कोई कामिल फकीर मिला है उनकी मौत का हाल देखो और दूसरों की मौत का हाल देखो क्या है। वह तो रोते जायेंगे लेकिन इनके पास काल नहीं आता। यह खुशी-खुशी अपने घर को जायेंगे। अगर कोई कहीं गिरता भी है तो उसकी आकर संभाल करता है। कहां भाई जोगा सिंह लावां छोड़ कर गया, बोलो; आगे जाकर अहंकार हो गया। वेश्या के दर पर गया। वह ताकत अन्दर बैठी थी। उसने देखा कि यह तो गया, वहाँ उसकी पहरेदार बन कर खड़ी हो गई। यह है अन्दर वाला राम, यह है अन्दर वाला सतगुरु, यह है अन्दर वाला नाम। यह सच्चा साथी है। जंगल जावो, बीयाबान

जावो, जहां जावो यह सच्चा साथी है! देख लो। नामदेव की मां ने कहा छप्पर भी नहीं है, कहां जाएँ, कोई मकान नहीं है, तुम कुछ तो करो! वह जाकर अपना छुपकर बैठ गया। अपने आप बना दिया। बोलो भई। यह जपे तभी है। अन्दर वाले को सारी दुनिया छोड़े बैठी है। हाँ जी :

पाठी– जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ, ता कउ भइओ सहाई॥
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई॥
हरि को नामु सदा सुखदायी... **(मः 9/1008)**

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं मैंने सुना है, मालिक के आगे विनती करते हैं कि मैंने सुना है भई तुमने गनका का काम किया है, अजामल का काम किया है, द्रौपदी का तुमने काम किया है। उन्होंने विश्वास किया तो उन्होंने जपा है। हमको विश्वास नहीं, उनको विश्वास था। इसको विश्वास आवे तब यह किसी कामिल फकीर से पूछकर जपे तो इसके भी ऐसे ही काम करे। अन्दर वाले पर तो किसी को भरोसा ही नहीं। काम देने वाला अन्दर वाला है। जब भी काम देना है अन्दर वाले ने देना है। जब भी काम देना है अन्दर वाले ने देना है।

मस्ताना जी कहा करते थे जैसे पेट का पुत्र ही काम देता है इसी तरह अन्दर वाला राम ही काम देता है, बाकी कोई नहीं। मौत के समय तो काम देना ही इसी ने है। मौत भी अन्दर, मारने वाला भी अन्दर, बाहर का कौन छुड़ाये? बाहर का गुरु कोई पास आयेगा? बोलो। उस समय अन्दर वाले ने आना है। उन्होंने ऐसे ही तो नहीं लिखा।

जपि मन सिरी रामु॥ राम रमत रामु॥ सति सति रामु॥
बोलहु भईआ सद रामु रामु रामु रवि रहिआ सरबगे॥

उन्होंने ऐसे तो नहीं लिखा है। पढ़ी जाते हैं, इसको जपो भी, इसको अन्दर प्रकट भी करो। हाँ जीः।

पाठी– जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई॥
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई॥
हरि को नामु सदा सुखदायी...। **(मः 9/1008)**

मैनेजर साहिब जी– सुनो, अगर मनुष्य उस जिन्दाराम को पूर्ण विश्वास के साथ अपने अन्दर हाज़र नाज़र समझ कर उसकी आराधना करे तो कोई कारण नहीं कि वह ज़िन्दा ताकत इसकी सम्भाल न करे।

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।''

सत्संग

'इसु गुफा महि अखुट भंडारा'

सत्संग के वचन

पाठी– इसु गुफा महि अखुट भंडारा॥
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– यह आत्मा जो है यह मालिक की अंश है–''कहु कबीर इहु राम की अंसु॥'' गुरु अमर दास जी फरमाते हैं कि यह जो शरीर है यह आत्मा की गुफा है, आत्मा के रहने का घर है। इसमें मालिक ने आत्मा के लिए सब चीज़ें रखी हैं। कोई ऐसी चीज़ नहीं जो इसमें न हो। जो कुछ खण्डों ब्रह्माण्डों में है सब कुछ इसके अन्दर है। ''जो ब्रह्ममंडे सोई पिण्डे जो खोजै सो पावै ॥'' यही मुसलमान फकीर कहते हैं कि आलमे सगीर, आलमे कबीर की नकल है। यह जिस्म जो है यह छोटा आलम है, छोटी दुनिया है। यह सारे आलम की, सब दुनिया की, सब खण्डों, ब्रह्माण्डों की नकल है। सब कुछ इसके अन्दर है। यही यहूदी कहते हैं, ''Man, He made in His own image.'' कि इन्सान को मालिक ने अपने नमूने पर बनाया है। जो गुण, जो सिफतें मालिक में हैं, उसके सब भण्डार, उसके सब ख़ज़ाने इसके अन्दर रखे हैं। वह आत्मा में शामिल हैं, जैसे वृक्ष में बीज है बीज में वृक्ष है। अगर बीज की परवरिश की जाये तो पौधा, फल, फूल सब कुछ निकल आता है। इसी तरह सब कुछ इसके अन्दर है आत्मा के। यही कबीर साहब कहते हैं–

अवधु अन्धा धुन्ध अंधियारा, कोई जानेगा जाननहारा।
या घट भीतर वन और बस्ती, या ही में झाड़ पहारा।
या घट भीतर बाग़ बग़ीचा, या ही में सींचनहारा।
या घट भीतर सोना चांदी, या ही में लगी बज़ारा।
या घट भीतर हीरा मोती, या ही में परखनहारा।
या घट भीतर सात समुद्र, याही में नदिया नारा।
या घट भीतर सूरज चन्दा, या ही में नौ लख तारा।
या घट भीतर काशी मथुरा, या ही में गढ़ गिरनारा।''

वो तीर्थ जो आत्मा की सफाई करता है वो भी इसके अन्दर है काशी मथुरा। सब महात्माओं की एक ही पढ़ाई है। महात्मा चरन दास भी यही कहते हैं–

अठसठ तीर्थ तो बिखे, बाहर क्यों भटकाये।
चरन दास यूँ कहत है उलटा होये घट आये॥

उसी को बैणी साहब ने प्रयाग कहा है,

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बेणी सँगमु तह प्रयागु मनु मजनु करे तिथाई॥

फकीरों ने अन्दर नमूने देखे यह बाहर हमें मिसाल दी है कि जैसे यह बाहर तीन नदियां मिलती हैं वहाँ प्रयाग कहते हैं न हम, असली इसके अन्दर है। इन तीनों नाड़ियों के संग में जो जगह है उसका नाम प्रयाग है। वहाँ जाकर आत्मा साफ होती है।

या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकर द्वारा।

कृष्ण भगवान ने विराट सरूप दिखाया। देवी देवते अन्दर दिखाये। वो सब इसके अन्दर हैं।

या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के, भरे अखुट भण्डारा।
या घट भीतर ब्रह्मा विसनु महेसा, शिव सनकादि अपारा।
या घट भीतर आये लेत हैं, राम कृष्ण अवतारा।
या घट भीतर तीन लोक हैं, याही में सिरजनहारा।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा।

वो अलख, वो अपार, वो सतगुरु जो मुक्ति का दाता है वो भी इसके अन्दर है। सब कुछ इसके अन्दर रखा है मालिक ने। हाँ जीः

पाठी– इस गुफा महि अखुट भंडारा॥
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा॥
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं वो मालिक सबके अन्दर ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। सब के अन्दर है परन्तु गुप्त तौर पर है। काम करता दिखाई देता है, उसके काम दिखाई देते हैं लेकिन खुद दिखाई नहीं देता। जैसे बिजली का बल्ब है, यह जलता दिखाई दे रहा है, टयूब जलती दिखाई दे रही है, पंखा चलता दिखाई दे रहा है परन्तु करंट (Current) दिखाई नहीं दे रही। इसी तरह वो एक करन्ट है।

उसका रूप क्या है 'शब्द'। वो एक आवाज़ है।

तिसु रुपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ॥

वो एक आवाज़ है जिसको ईसा ने 'Word' कहा है, मुसलमानों ने कलमा कहा है, कलामें इलाही कहा है, बांगे आसमानी कहा है। हम शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं। वो कुदरती मालिक की आवाज़ है। सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। ज़र्रे-ज़र्रे में है। जैसे रेडियो वेवज़ यहाँ सब जगह हैं इसी तरह वो आवाज़ सब जगह है। सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। शब्द के ज़रिये ही जीव आया है। शब्द के ज़रिये ही जाना है। कोई काम बिना उस्ताद के नहीं आ सकता। हर एक काम को सीखने के लिए उस्ताद की ज़रूरत है। हमने सैकड़ों उस्ताद किये हैं। हिन्दी के उस्ताद और थे, पंजाबी के और, अंग्रेजी के और, गणित के और। हर काम किसी न किसी से सीखा है। इसी तरह रूहानी इल्म भी बिना उस्ताद के नहीं आता। हम देखते हैं, स्कूलों कालेजों में जाते हैं, जैसे डाक्टरी करता है कोई। पांच छः साल तो डाक्टरी में लगाता है फिर प्रैक्टीकल कोर्स करता है। यह किताबों के पढ़ने से नहीं आता। यह ग्रन्थ शास्त्र क्या हैं? जो कुछ महात्माओं ने अन्दर देखा वो हमारी हिदायत के लिए ग्रन्थों शास्त्रों में लिख दिया। जो कुछ गुरु साहिबान ने देखा वो गुरु ग्रन्थ साहब में लिख दिया। जो कुछ मोहम्मद साहब ने देखा वो कुरान में लिख दिया। जो कुछ ईसा ने देखा वो अंजील में लिख दिया। जो कुछ ऋषि-मुनियों ने देखा वो वेदो शास्त्रों में लिख दिया। लिख भी पूरा नहीं सकते। हम कोई चीज़ देखते हैं, कोई चीज़ खाते हैं, मीठी है। हम बता नहीं सकते कैसी मीठी है। कहेंगे मीठी है, उसमें थोड़ी सी खटास थी, कुछ नमकीन था परन्तु दूसरे को तो पता नहीं लग सकता। जो बता सकते हैं वो लिख नहीं सकते। महात्माओं ने पूरी कोशिश की है समझाने की, परन्तु वो लिखित में आने वाली चीज़ नहीं, वो लिखने पढ़ने से परे है। इन्सान के अन्दर खुद एक बड़ा ग्रन्थ है। यह कहां से निकले? इन्सान के अन्दर से। एक मुसलमान फकीर लिखता हैः—

तू बमानी जान जुमला आलमे,
हर दो आलम खुद तू ई ब निगरद में।

कि ऐ इन्सान तू सारे आलम की जान है। दोनों आलम तू आप है।

दर हकीकत खुद तू ई उमउल किताब,
खुद जे खुद आयाते हक रा बाज़याब।

तू सब किताबों की मां है। तेरे अन्दर मालिक की आयात, बाणी कह लो, शब्द कह लो, खुद-ब-खुद आ रही है। जिसको गुरु नानक साहब ने कहा है, ''जैसी मै आवे खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।'' इसके अन्दर कुदरती तौर पर आयात आ रही है, बाणी आ रही है। सोच लो! डाक्टरी इसके अन्दर से निकली, इन्जिनियरिंग इसके अन्दर से निकली। जिसने अन्दर से निकाली पहले उसके दिगाम में आई फिर ग्रन्थों में आई है। इसी तरह यह है। इसके अन्दर खुद बड़ा ग्रन्थ है। इन ग्रन्थों की समझ भी तब पड़ती है जब कोई वाकिफकार फकीर मिले। हम कितने भी पढ़े लिखे हों; डाक्टरी की किताबें पढ़ी हैं, हम समझ नहीं सकते। कोई डाक्टर ही समझा सकता है। इसी तरह रूहानी इल्म जो है उनकी समझ भी कामिल फकीरों के ज़रिये ही पड़ती है, ऐसे नहीं। ''ग्रन्थन माहीं अर्थ है, अर्थन माहीं है भूल।'' इसीलिए दुनिया में मज़हबों के झगड़े पड़ रहे हैं। एक-एक मज़हब के कितने-कितने फिरके बन गये। हाफ़िज़ साहब लिखते हैं :–

जंग हमतादो दो मिल्लत हमा रा उज़्र बनेह।
चूँ नदीदँद हकीक़त रहे अफसाना ज़दँद।

कि मुसलमानों के 72 फिरके हैं और आपस में लड़ते हैं। क्यों? कि वो बेचारे माजूर हैं, असलियत से बेखबर हैं, तब लड़ रहे हैं। वो कहता है यह ठीक है, वो कहता है यह ठीक है, तब डन्डे खड़क रहे हैं।

जह जह देखउ तह तह साचा॥
बिनु बूझे झगरत जगु काचा॥

ग्रन्थों का असली मतलब कोई कामिल फकीर ही निकाल सकता है। वो मुसलमानों की किताबों को, हिन्दुओं की किताबों को, सिक्खों की और ईसाइयों की किताबों को सब को एक कर देगा। भाई गुरदास ने तो इसका फैसला ही कर दिया है, वो लिखते हैं;

बेद ग्रन्थ गुर हट है जित लग भवजल पार उतारा॥
सतिगुरु बाझ न बूझीऐ जिचर धरे न गुर अवतारा॥

कि यह जो ग्रन्थ शास्त्र हैं वह मालिक की दुकानें हैं परन्तु इनकी समझ तब पड़ती है जब वह सतगुरु आप ही किसी चोले में आए। वह सतगुरु एक ही है। गुरु का शब्द ग्री धातु से निकला है जिसका मतलब है शब्द। सतगुरु का मतलब है सत शब्द जो मालिक का रूप है; सब जगह काम कर रहा है।

एक ही गुरु है। बाहर गुरु कैसे बने? जैसे किसी ने डाक्टरी की; है तो वह हमारे जैसा ही, उस इल्म का नाम डाक्टर है। किसी ने इंजीनियरिंग की, उसको हम इंजीनियर कहते हैं। उस इल्म का नाम इंजीनियर है, देह का नहीं। इसी तरह जिसके अन्दर वह गुरु प्रकट हो आता था, शब्द गुरु, उसको गुरु कहते थे। बाद में नकलें चल पड़ीं। इतने गुरु हो गये कि चेले नहीं रहे। इसके लिए मालिक को खुद आना पड़ता है, कोई न कोई रूप धारना पड़ता है। ''साध रूप अपना तनु धारिआ॥''

हमरो भरता बड़ो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥

यही मुसलमान फकीर लिखते हैं :

आं पातशाहे आज़म दर बसता बूद मोहकम।
पोशीदा दिलके आदम यानी कि बरदर आमद।

कि वह पातशाहों का पातशाह गुप्त बैठा है। खुद ही दरवाज़े बन्द किये हैं। खुद ही खोलने के लिए आता है। इसी तरह ईसा ने लिखा हैः–

''The word was made flesh and dwelt amongest us.''

''कि वह शब्द देह धार कर हमारे बीच आकर रहा।'' अगर वह न आए तो हमें रास्ते का ही नहीं पता; ग्रन्थों शास्त्रों की समझ नहीं पड़ सकती। हाँ जीः

पाठी– आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु बंञावणिआ॥

हउ वारी जीओ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– इन्सान के अन्दर कुदरती तौर पर शांती का ख़ज़ाना है। इसके अन्दर शांती देने वाला नाम है। चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिख है, चाहे ईसाई है, चाहे किसी और मज़हब का है, चाहे किसी भी मुल्क का है, सब के अन्दर है। कोई घट ऐसा नहीं जो उससे खाली हो। इस देश में आकर हम मादे से मिल कर मादे का रूप बन चुके हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के संग में आकर हमें मोह माया की बीमारी लग चुकी है। आत्मा इतनी कमज़ोर हो चुकी है कि इसमें उठने की ताकत नहीं। यह खुद नहीं उठ सकती। जैसे कोई जबरदस्त बीमार है तो डाक्टर क्या करते हैं कि पहले उसको टीका (इंजेक्शन) करके ताकत देते हैं, फिर उसका इलाज करते हैं। इसी तरह इसके अन्दर जब तक शब्द का इंजेक्शन न हो, यह उठ नहीं सकती। वह इंजेक्शन कोई विरला फकीर ही कर सकता है; मालिक की दया से जो आता है इस दुनिया में। मालिक की मेहर से जो आते हैं वह कर सकते हैं।

गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होये॥

यही ईसा ने कहा है :–

''That which is the born of the flesh is flesh, that which is the born of the spirit is spirit.''

''कि जैसे मांस से मांस पैदा होता है, आदमी से बच्चा पैदा होता है इसी तरह जागी हुई रूह से रूह जागती है।'' कोई बिरला फकीर ही ऐसा है। अब गुरु अमरदास जी कहते हैं कि मैं उस महात्मा पर कुर्बान हूँ, बार-बार कुर्बान हूँ, क्या? कि गुरु अंगद साहब पर कुर्बान हूँ जिन्होंने मेरे अन्दर नाम का इंजेक्शन किया, अन्दर नाम प्रगट कर दिया। मेरे अन्दर शांती दे दी। वह कैसा नाम है, हाँ जीः **पाठी– अंम्रितु नामु महा रसु मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ ॥ (मः 3/124)**

मैनेजर साहिब जी– कि वह अमृत मीठे से मीठा है। प्यारा से प्यारा है। उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। फरीद साहब कहते हैं–

फरीदा सकर खण्ड निवात गुडु माखिउ मांझा दुधु॥
सभे वसतू मिठीआँ रब न पुजनि तुधु॥

कि खांड मीठी है, शक्कर मीठी है, मुड़ मीठा है, माझा दूध क्या भैंस का दूध मीठा है, शहद मीठा है परन्तु उसके मुकाबले में कोई चीज़ मीठी नहीं। अब हम सुनते तो सब हैं, पढ़ते भी हैं, ''हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा ॥'' कि उस नाम में मिठास है। कभी यह ख़्याल ही नहीं किया कि हमारे अन्दर मिठास आई नहीं; स्वाद आया नहीं। पढ़-पढ़ कर थक गये। कर्म-धर्म भी किये परन्तु वह मिठास नहीं आई। वह रस नहीं लिया। अगर कोई यह रस ले लेवे तो दुनिया की सारी लज़्ज़तें फीकी लगने लग जाती हैं। उसमें ऐसी लज़्ज़त है उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। यह दुनिया अच्छी नहीं लगती। गुरु रामदास जी कहते हैं–

बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै॥
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै॥

कि जिन्होंने वह लज़्ज़त ली है अगर उनके सामने इस दुनिया के सात समुद्र यानी सात वलैतों की दौलत रख दी जाये तो उनसे पूछा जाये कि यह दौलत लेनी है या वह रस लेना है तो वह इस दौलत की ओर मुंह भी नहीं करता; वह कहता है मेरे को वही रस चाहिए। अब रस सब के अन्दर है परन्तु मिलता कैसे है? किसी गुरमुख से। ऐसे दुनिया में कितने ही मत हैं, परन्तु असल में दो मत हैं। (1) मनमत (2) गुरमत। सारी दुनिया मनमत में है।

मन अंतरि बोलै सभु कोई॥ मन मारे बिनु भगति न होई॥

मन एक ऐसी ताकत है जो इसकी दुश्मन है, जो इसको भरमाती है, भटकाती है। उसका काम क्या है कि यह जीव अन्दर न जाये और वह रस न ले। और कोई काम नहीं उसका। ऊपर-ऊपर से दिखाता है कि मैं मालिक का आशिक हूँ, मालिक को चाहता हूँ। ऊपर से बैराग दिखाता है। ''मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥'' ''मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥'' वह अपने दायरे से किसी को बाहर नहीं निकलने देता। सारी दुनिया मनमुख है। गुरमुख वह है जिसने अन्दर शब्द गुरु को प्रगट किया है, जिसने वह रस लिया है। उसके ज़रिये हम सीख सकते हैं। वहाँ भी यह मनमत नहीं छोड़ता। अगर फकीरों के पास जाता है, फिर भी यह मनमत नहीं छोड़ता।

मन की मति तिआगहु हरिजन एहा बात कठैनी ॥

बस मन की मत्त छोड़नी ही मुश्किल है। बाकी सब कुछ आसान है। बादशाह इब्राहीम को मालिक से मिलने का शौक था। बड़ी तलाश की फकीरों की। बड़े फकीर बुलाये। पण्डित, मौलवी सबको इकट्ठा किया। आखिर ढूँढ़ कर कबीर साहब के पास आया। कहने लगा जी मैं आपकी सेवा में रहूँगा। तो कबीर साहब फरमाने लगे तू बादशाह, हम गरीब जुलाहे; हमारा तुम्हारा मेल कैसे? कहने लगा जी मैं बादशाह बन कर नहीं आया, भिखारी बन कर आया हूँ। वहाँ वह सेवा करने लगा। उनकी टट्टी तक भी उठाये। जब छः साल हो गये तो माई लोई कहने लगी कि कबीर देखो कैसे नम्रता से सेवा करता है। दिन और रात लगा रहता है। हम भूखे सो जाते हैं तो यह भी भूखा ही सो जाता है। हम कुछ खा लेते हैं तो यह भी खा लेता है। इसको कुछ बख्शो। वह कहने लगे यह अभी लायक नहीं हुआ। अभी इसके अन्दर बलख बुखारे की बादशाही पड़ी है, वह अहंकार पड़ा है। कहने लगी जी कैसे पता चले। कहने लगे तू ऐसे कर, कूड़ा करकट उठा कर ऊपर छत पर चली जा। मैं इसको बाहर भेजता हूँ; तू इस पर कूड़ा-करकट डाल देना और छुप जाना। फिर सुनो यह क्या कहता है? उसने ऐसे ही किया। वह कूड़ा लेकर छत पर चली गई। कबीर साहब कहने लगे बेटा यह काम तो कर आ। जब वह बाहर निकला तो उसने कूड़ा डाल दिया और छुप गई। कहने लगा होता न बलख बुखारा, मैं देखता मुझ पर कौन कूड़ा डालता है? कबीर साहब ने लोई से पूछा कि क्या कहा है? कहने लगी जी ऐसे कहा है। कहने लगे मैंने तो पहले ही कहा था कि इसके अन्दर अभी बादशाही पड़ी है। जब बारह साल गुजर गये तो कबीर साहब जो अन्तरयामी थे एक दिन माई लोई को कहने लगे कि अब यह तैयार है। अब यह नाम के लायक है। जो अन्दर रस

वाला नाम है उसके लायक अब हुआ है। तो लोई कहने लगी कि मैं तो वैसा ही देख रही हूँ। कहने लगे पहले तो तूने कूड़ा डाला था अब गन्दगी मिला कर डाल दे। तो उसने ऐसे ही किया। तो कहने लगा ऐ मेरे सिर पर गन्दगी डालने वाले तेरा भला हो, मैं तो इससे भी बुरा हूँ। तब वह चीज़ आती है ऐसे नहीं। फिर एक दिन वह दरिया दजला के किनारे बैठा अपनी गोदड़ी सी रहा था। इतने में उसका वज़ीर आ निकला। वज़ीर ने पहचान लिया कि यह तो इब्राहीम दिखाई दे रहा है। पास आया और कहने लगा आप बादशाह इब्राहिम हैं। कहने लगा हाँ। कहने लगा मैं तेरा अमुक वज़ीर हूँ। तेरी बादशाही चला रहा हूँ। तेरे लड़कों को यह सिखाया, वह सिखाया, यह किया वह किया। क्या ही अच्छा हो कि तुम अब अपनी बादशाही संभाल लो। मैं तो आपका वज़ीर हूँ। तो बादशाह ने सूई दरिया में फेंक दी और कहने लगा मैं आपके साथ चलने के लिए तैयार हूँ परन्तु यह सुई मेरे को निकाल कर दे दो। वज़ीर कहने लगा मेरे को आधे घण्टे की फुर्सत दे दो मैं लाखों सूईयां इकट्ठी कर देता हूँ। कहने लगा वही चाहिए। कहने लगा वह तो मुश्किल है। बादशाह ने मच्छी को ज़रा तबज्जों दी तो मच्छी फौरन सूई लेकर आ गई। वह कहने लगा मैं तुम्हारी बादशाही को क्या करूं? यह बादशाही मेरे पास है जिसके नौकर सब जीव जन्तु हैं। यह बादशाही सबके अन्दर है परन्तु इसका हासिल करना मुश्किल है। यह अहंकार मारना मुश्किल है। यह बड़ी जबरदस्त ताकत है। हाँ जीः

पाठी– अंम्रितु नामु महा रस मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ ॥
हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ॥
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– हमारे और मालिक के बीच अगर कोई बड़े से बड़ा परदा है तो यह हउमै का है, अहंकार का है।

''धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी॥''

यह बड़ी दीवार है 'हउमै'। यही मुसलमान फकीर कहते हैं :–

मयाने आशको माशूक हेच हायल नेस्त।
तू खुद हिज़ाबे खुदी अज़ मियां बरखेज़।

कि तेरे और मालिक के बीच अगर कोई बड़ा परदा है तो खुदी का है। इस पर्दे का हटा दे तो मालिक सामने है। यह अहंकार ही है जो हमें चौरासी में लिए फिर रहा है। हम रोज़ पढ़ते हैं बाणी में,

हउ विचि आया, हउ विचि गया॥

हउ विचि जंमिआ हउ विचि मूआ॥
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ॥
हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु॥
हउ विचि नरकि सुरगि अवतार॥

यह हउमै ही है जो हमें चौरासी में लिए फिर रही है। जितने कर्म करते हैं हउमैं के बस में करते हैं। और सब को हउमै खत्म कर देती है। ''कीआ कराइया सब गिआ जब आया हंकार ॥''

यही बाणी में हम रोज़ पढ़ते हैं :–

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु॥
नानक निहफल जात तिहि जिउ कुँचर इसनानु॥

सारा किया कराया सब खत्म। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने हउमै के वश में होकर बड़ी-बड़ी तपस्याएँ कीं, जंगलों में गये, पवन का आहार किया, हड्डियों के ढेर बन गये परन्तु मन काबू न आया, हउमै न गई। श्रृंगी ऋषि ने 88 हज़ार साल तप किया। विश्वामित्र ने 60 हज़ार साल तप किया। प्रायश्चर जी पूर्ण योगी होकर आये; मन ने मार दिये, मन काबू ना आया। यह हउमै ही सबसे बड़ी रुकावट है। अगर यह हउमै छोड़े। यह दीनता और गरीबी का मार्ग है एक मुसलमान फकीर ने लिखा है :–

ज़ुहद गरूर दाशत सलामत नामुर्द।
रंदा रहे न्याज़ व दरूलसलाम रफत।

कि कर्मी-धर्मी अपने अहंकार में रह गये। भक्त जन दीनता और गरीबी के कारण मालिक तक पहुँच गये। हमारे सामने एक उदाहरण है। कितने कर्मी-धर्मी थे जंगल में। भीलनी क्या जानती थी? उसके पास दीनता, गरीबी और प्रेम था। श्रीराम चन्द्र जी सब कर्मियों-धर्मियों को छोड़ कर सीधे भीलनी के पास चले गये। क्या चीज़ ले गई? दीनता और गरीबी! यह दीनता और गरीबी का मार्ग है। वह अहंकार में थे कि हम इतने कर्मी-धर्मी हैं। इसी तरह मालिक भी दीनता और गरीबी से अन्दर प्रकट होता है।

हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥

वह मासूम बच्चों की तरह रहते हैं कि मालिका हम तो कुछ नहीं जानते।

तेरी मेहर ही है जो छुटकारा करे। यही ईसा ने लिखा है, ''Be like children for they shalll enter into the kingdom of heaven.'' ''कि तुम मासूम बच्चों की तरह बन जाओ तब तुम मालिक की दरगाह में जा सकते हो।'' अगर यह अहंकार छोड़कर कि मैं गुणी हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, मैं आलम हूँ, मैं फाज़ल हूँ, मैं जानता हूँ, मैं इतना कर्मी-धर्मी हूँ, मैं पाठी हूँ। अगर यह अहंकार को छोड़े कि ऐ मालिक, मैं तो कुछ भी नहीं जानता; तेरी मेहर ही है जो इस भवसागर से पार लगाये, तूं ही कुछ मेहर कर, तेरी मेहर के बिना कुछ नहीं बन सकता। फिर कोई मालिक मेहर करे, कोई कामिल फकीर मिले। फिर कामिल फकीर के पास जाकर उसके हुकम के मुताबिक भजन सिमरण करे, अहंकार छोड़े। जब भजन करने के लिए बैठे तो अरदास करे कि हे सतगुरु! तूं कराये तो मैं कर सकता हूँ, मेरी कोई ताकत नहीं। अगर करके उठे तो हे सतगुरु! तेरी मेहर से कुछ बना है, नहीं तो कुछ नहीं। तब यह कदम चल सकता है, नहीं तो नहीं। वरना कदम-कदम पर यह अहंकार रुकावट डालता है। फिर अन्दर सतगुरु प्रकट होता है, फिर अन्दर नाम पकड़ाता है, फिर यह शांती हासिल करता है ऐसे नहीं। हाँ जीः

पाठी– हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ॥
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ॥
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– शब्द और नाम कहने को दो चीज़ें हैं परन्तु अन्दर एक ही चीज़ है। हुकम, शब्द, नाम, बाणी, एक ही चीज़ के नाम हैं। हुकम कब ज़ाहिर होता है? हम कहते हैं मालिक के भाणे में, मालिक की मौज़ में, मालिक के हुकम से सब कुछ हुआ। हुकम कब ज़ाहिर होता है? जब यह बोले शब्द। शब्द की लहर को कहते हैं नाम। जब बारीक से बारीक आवाज़ हो जाती है आगे जाकर उसको कहते हैं धुन। एक ही चीज़ के नाम हैं। उसको ही कीर्तन कहा है, उसी में अमृत है। परन्तु वह शब्द, वह नाम लिखने और पढ़ने की चीज़ नहीं। आवाज़ ज़रूर है, परन्तु बाहर की जबान नहीं। न वह हिन्दी है न संस्कृत, न अरबी है न फारसी, न अंग्रेजी है न पंजाबी। अगर इन भाषाओं में होती; अगर वह हिन्दी या पंजाबी में होती तो हमारे लिए होती तो बाकी कौमें, बाकी मुल्क कहां जायें? अगर अंग्रेजी में हो तो अंग्रेजों के लिए बाकी कौमें कहां जायें? अगर फारसी में हो तो मुसलमानों के लिए बाकी कहां जायें? वह आवाज़ है, परन्तु इन भाषाओं में नहीं। वह

लिखने-पढ़ने से परे है। पलटू साहब कहते हैं :–

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहीं जानता।
निः अच्छर, निः रूप दृष्ट नहीं आवता॥
चिहनु वरनु नहीं छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै॥

यही कबीर साहब कहते हैं :–

शब्द शब्द सब को कहे वह तो शब्द बदेह।
जीभा पर आवे नहीं निरख परख कर लेह॥

वह इस जुबान से जपने की चीज़ नहीं, वह अलग चीज़ है। वह लिखने-पढ़ने से परे है। है आवाज़; वह मालिक की अपनी आवाज़ है। सबके अन्दर है, सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। जैसे रेडियो की लहरें (Waves) यहाँ सब जगह हैं, इसी तरह मालिक की आवाज़ सब जगह है, सबके अन्दर है। परन्तु वह लिखने-पढ़ने से परे है। वह बे बोली की बोली (Un-written Law Un-spoken Language) है। वह लिखने-पढ़ने से परे है। वह फकीरों के ज़रिये अन्दर प्रकट की जाती है। जैसे रेडियो वेवज यहाँ हैं, सोचो! कलकत्ते की आवाज़ यहाँ है, बम्बई की आवाज़ यहाँ है, जालन्धर की है, इंग्लैंड की है, अमरीका की है परन्तु अब हम सुन नहीं सकते। जब रेडियो पर स्विच लगाते हैं तो सुन लेते हैं। इसी तरह मालिक की आवाज़ सब जगह ही है। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। यह किसी कामिल फकीर से पूछ कर, ख़्याल को दोनों आंखों के बीच में इकट्ठा करे तब उसकी अलफ, बे यहाँ से शुरू होती है। तब उस आवाज़ का पता चलता है। वह फकीरों के ज़रिये प्रकट करनी सीखी जाती है।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

यही पलटू साहब कहते हैं :–

संत सनेही नाम है नाम सनेही संत॥
नाम सनेही संत नाम से वही मिलावें।
वह हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें॥
जप तप तीर्थ व्रत करे बहुतेरा कोई।
बिना वसीले संत नाम से भेंट न होई॥
पलटू एह है प्राण पर आदि सेती और अंत।
संत सनेही नाम है नाम सनेही संत॥

बिना संतों के, बिना गुरमुखों के, बिना फकीरों के उसको अन्दर प्रकट

किया नहीं जा सकता, मालिक का कानून ही यही है। वह गुप्त चीज़ है :–

गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ॥

यही कबीर साहब ने कहा है :–

कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होइ।
सतिनाम है सारु जप, बुझे बिरला कोइ॥

वह मुक्ति का दाता है, वह इसके अन्दर है। हाँ जीः

पाठी– बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइया॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥ **(मः 3/124)**

मैनेजर साहिब जी– गुरु ज्ञान अंजन; ज्ञान दो किस्म का है। 1. वाचक, 2. अनुभव। सारी दुनिया वाचक ज्ञान में फंसी पड़ी है। मन बुद्धि के ज्ञान में फंसी पड़ी है, इसलिए लड़-झगड़ रही है। असली ज्ञानी कौन है? जिसने अन्दर नाम को प्रकट किया। शब्द गुरु को प्रकट कर लिया वह असली ज्ञानी है।

वाचक ज्ञानी बहुतक देखे। लक्ष ज्ञानी कोई लेखे लेखे।

वह कब मिलता है?

ज्ञान दिशा आवन कठिन, बिरला जाने कोइ।
ज्ञान दिशा तब जानिये, जब जीवत मृतक होइ॥

यह ज़िन्दा इस देह से निकले, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, जिसको हम कहते हैं जड़ चेतन की गांठ खोले, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। तब उस ज्ञान का पता चलता है। तब शब्द के साथ लिव लगती है।

''सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई॥''
''गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोई ॥''

जो कथने से परे है। जो उस शब्द को, जो उस नाम को प्रकट करता है वह असली ज्ञानी है। वह इन आंखों से देखा नहीं जाता। इन कानों से वह आवाज़ सुनी नहीं जाती। इस जबान से बोली नहीं जाती। उसी को गुरु अंगद साहब ने कहा है,

अखीं बाझहु बेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरां बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवित मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

वह इन आंखों से देखा नहीं जाता, इन कानों से सुना नहीं जाता।

बिन पग चले, सुने बिन काना।

कर बिन करम करे बिधिनाना ॥ (तुलसी साहब)

यही ईसा ने कहा है, ''Have you eyes you see not, have you ears you hear not.'' ''इन आंखों के होते हुए आप उसको देख नहीं सकते, इन कानों के होते हुए आप सुन नहीं सकते।'' उसके देखने वाली आंख और है।

नानक से अखड़िआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥

वह आंख और है जिसको हम शिव नेत्र कहते हैं, तीसरी आंख कहते हैं वह बन्द पड़ी है।

है घट में सूझत नहीं लाहनत ऐसी जिन्द।

तुलसी इस संसार को भया मोतियाबिन्द॥

तुलसी साहब कहते हैं कि है इसके अन्दर परन्तु इसको मोतिया बिन्द हुआ पड़ा है आंखों पर। वह आंख बन्द पड़ी है। इन आंखों में अगर मोतिया बिन्द हो जाये तो डाक्टरों के पास दौड़ा भागता फिरता है, उसका ख़्याल ही नहीं। वह कान बन्द पड़े हैं जो मालिक की कुदरती आवाज़ को सुन सकते हैं, उसका इसको ख़्याल ही नहीं। जब वह आवाज़ यह सुनने लग जाता है, उसको देखने लग जाता है, वह रस लेने लग जाता है, ''अंतरि चानणु अगिआनु अंधेर गवाइआ॥'' इसके अन्दर रोशनी हो जाती है। आदि, मध्य, और अंत सब का पता लग जाता है।

''नाइ सुणीए घटि चानणा अंधेरु गवावै॥''

''नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई॥''

इसके अन्दर शांती आ जाती है। हाँ जीः

पाठी– गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥

अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– जब वह ज्ञान अन्दर आता है, जब उसकी लज़्ज़त लेता है, आंखों के बीच ख़्याल को इकट्ठा करता है; यहाँ कुदरती तौर पर जोत जग रही है जिसकी नकल हम मन्दिरों में देखते हैं। आप मन्दिरों में जाओ; गुरुद्वारों में जाओ, शिवदवालों में जाओ, गिरजों में जाओ, वहाँ आपको दो किस्म की शक्लें दिखाई देंगी। एक गुम्बद जैसी और दूसरी लम्बूतरी (नाक जैसी लम्बी), जैसे

मन्दिरों और शिवद्वालों की होती हैं। सब के अन्दर घन्टे और शंख बज रहे हैं। सबके अन्दर जोतें जग रही हैं। सोच लो! फकीरों ने अन्दर देखा, बाहर उदाहरण दिया है। यह गुम्बद है (सिर को इशारा) यह लम्बूतरी शक्ल है (नाक को इशारा) जिसको कृष्ण भगवान ने कहा है ''नासिका के अग्र भाव आओ ॥'' यहाँ आये, यहाँ कुदरती जोतें जग रही हैं। वह जोतें हर एक घट में जग रही हैं। फकीरों ने उदाहरण दी है कि घंटे शंख बज रहे हैं। मुसलमानों के जाओ, उनके गुम्बद है। वहाँ नगारे बज रहे हैं, चिराग जलाते हैं। हमारे जोतें हैं; बात एक ही है। हर एक के अन्दर वह जोतें जग रही हैं। जब वह प्रकट होती है, वह सत ताकत है, उसमें प्रवेश करके रूह साफ होती है। फिर मालिक के दरबार में जाने के काबिल बनती है। वहाँ जाकर सत्त ताकत से इसका सम्बन्ध पड़ता है। फिर यह सनातनी बनता है। इसी को कबीर साहब ने कहा है :–

''अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥''

उस जोत में प्रवेश करने से रूह की काफी सफाई हो जाती है। फिर यह आर्य बनता है। आर्य का मतलब क्या? श्रेष्ठ, पाक। फिर यह खालसा बनता है। गुरु गोबिन्द सिंह ने कहा है :–

''पूरन जोत जगै घट मै तब खालसा ताहि नखालस जानै ॥''

वह जोत इसके अन्दर प्रकट हो तब यह खालसा बनता है। फिर यह नामधारी बनता है। फिर यह राधा स्वामी बनता है। यही सच्चा सौदा है :–

सचा सउदा हरिनामु है सच वापारा राम॥
गुरमती हरिनामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥

काम तो इसने यह करना था।

जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ॥

वहाँ मन को तसल्ली हो जाती है कि वाकई अन्दर चीज़ है, जोत है, मालिक है। अब तो तसल्ली पूरी नहीं। कभी कह दिया है कभी कह दिया नहीं। फिर तसल्ली हो जाती है। यह देखने लग जाता है। अन्दर शांती आ जाती है। फिर यह मालिक के दरबार में जाने के काबिल बनता है। हाँ जीः

पाठी– जोति जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ॥
सरीरहु भालणि को बाहरि जाए॥
नामु न लहै बहुतु बेगारि दुखु पाए॥ **(मः 3/124)**

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं वह नाम जो मुक्ति का दाता है, यमदूतों से छुड़ाने वाला है।

जीआ रे ओहला नाम का॥

अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का॥

उस नाम के बगैर, उस शब्द गुरु के बगैर यमदूतों के पास ज़रूर जाना पड़ता है। बचाने वाला एक सच्चा नाम है, शब्द गुरु है, बाकी कोई नहीं। इधर हम बागड़ में जाते हैं, वहाँ एक शब्द बोलते हैं ''इक दिन घोगड़ आसी रे॥ तीन लोक और चौदह भवन में उस घोघड़ का राज ॥'' घोघड़ कह लो, काल कह लो, त्रिलोकी तक उसका राज है। किसी जीव को नहीं छोड़ता। ''तीन लोक और चौदह भवन में उस घोघड़ का राज ॥'' चौदह भवन क्या? इन्द्रलोक, ब्रह्मलोक, शिवलोक, सबको खा गया।

कबीर सोया क्या करे सोये हुए अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा सुनी काल की गाज॥

यह कौन है? और त्रिलोकी तक क्या काम है? पाप और पुण्य का जाल चल रहा है।

पाप पुन के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मँड।
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डू खण्ड॥
बिरले जन को होत है पाप पुनः की सूझ।
सोई उतरे भौजाल से बहुते रहे अरूझ॥

सारी दुनिया पाप और पुण्य में उलझी पड़ी है। पाप किये नर्कों में चला गया। अच्छे कर्म किये तो स्वर्गों में चला गया। स्वर्गों में कर्मों का फल भोग कर फिर चौरासी तैयार है। यही कृष्ण भगवान ने कहा है कि हे ऊधो! यह जो कीड़ा जा रहा है यह कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, आज यह कीड़ा है। फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा? तभी उन्होंने लिखा है ''तीन लोक और चौदह भवन में उस घोघड़ का राज ॥'' त्रिलोकी तक पाप और पुण्य का जाल है। यह कर्मों के जाल में है। अच्छे कर्म करके स्वर्गों में चला जायेगा। उसके बाद अच्छे कर्मों का फल भुगत कर फिर चौरासी तैयार है। छुटकारा न हुआ। वह काल किसी से नहीं डरता। अगर डरता है तो शब्द गुरु से। बाकी जितनी भक्तियां हैं, पढ़ना-पढ़ाना, कर्म-धर्म वगैरह यह काल की भक्ति है। काल

के दायरे की है। यमदूतों से छुड़ाने वाली कोई भी नहीं। कबीर साहब लिखते हैं–

नेम धर्म आचार यज्ञ तप यह उरले व्योहारा।
जासे मिले अखण्ड मोक्ष सो मार्ग है न्यारा॥
काल जाल से बांचा चाहो, गहो शब्द तत्तसारा।
कहे कबीर अमर कर राखो ज्यों परखो टकसारा॥

अगर डरता है तो शब्द गुरु से डरता है बाकी किसी से नहीं डरता। कहते हैं वह नाम, वह शब्द जो मुक्ति का दाता है, जो यमदूतों से छुड़ाने वाला है। यह फिरता है बाहर, फिर कैसे मिले।

सरीरहु भालणि को बाहरि जाए॥
नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए॥

वह इसके अन्दर है यह फिरता है बाहर।

काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई॥

वह नाम इसके अन्दर है। यह फिरता है बाहर। फिर कैसे मिले? कैसे छुटकारा हो? बाहर जितना हम काम कर रहे हैं यह नहीं कि उसका फल नहीं। स्वर्गों तक पहुँच जायेगा परन्तु छुटकारा नहीं। वह बेगारियों जैसा काम है। बेगारी सारा दिन काम करता है, शाम को उसको क्या मिलता है? पल्ले क्या है उसके? कुछ भी नहीं। सारा दिन काम किया उसके पल्ले कुछ नहीं। इसी तरह सच्चे नाम की भक्ति के बगैर, शब्द गुरु की भक्ति के बगैर, इसके पल्ले कुछ भी नहीं। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि एक साहूकार था। उसके एक लड़की थी। उसने उसका विवाह कर दिया। कुछ दिन बाद लड़की का पति मर गया। साहूकार ने सोचा इसकी ज़िन्दगी के दिन कैसे गुज़रें? उसने क्या किया कि लड़की के लिए एक बग़ीचा बना दिया, कोठी बना दी, नौकर चाकर दे दिये, गहने कपड़े सब कुछ दे दिया। सारी सहूलियतें हैं लेकिन पति वाला सुख नहीं, सोच लो! सब सहूलियतें हैं लेकिन पति वाला सुख नहीं। इसीलिए जितने कर्म-धर्म हैं यह सारे ही अच्छे हैं परन्तु जब तक अन्दर मालिक का रस नहीं मिलता; कितने ही कर ले, कोई शांती नहीं, सोच लो! उसके बिना किसी काम के नहीं। वह रस नाम के अन्दर है। शब्द गुरु के अन्दर है बाकी कहीं नहीं। उसके बिना सब बेकार है। हाँ जीः

पाठी– सरीरहु भालणि को बाहरि जाए॥
नामु न लहै बहुतु बेगारि दुखु पाए॥ **(मः 3/124)**

मैनेजर साहिब जी– हमने जाना हो कालांवाली को और चल पड़े डबवाली को। कितने ही दौड़ते जायें हम दूर ही दूर होते जायेंगे। अगर कालांवाली को चल पड़े तो अगर कदम-कदम भी चलें तो भी एक दिन पहुँच जायेंगे। चीज़ इसके अन्दर है, यह बाहर ढूंढ़ता है। जितना बाहर ढूंढ़ता है उतना दूर ही दूर जाता है। बाहर जितने कर्म-धर्म वगैरह करते हैं सब इसके लिए हथकड़ियां हैं, बन्धन हैं।

करम धरम सभि बंधना पाप पुँन सनबंधु॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेबरी माइआ का सनबंधु॥
नानक सचै नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु॥

उस सच्चे नाम के बिना कोई छुटकारा नहीं। सब बन्धन हैं इसके लिए। अच्छे कर्म हैं या बुरे, या कर्म-धर्म हैं, सब इसके लिए बन्धन हैं। हाँ जीः

पाठी– मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ॥
(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– कि सारी दुनिया मनमुख है। उल्टे रास्ते जा रही है। अब कोई सवाल पैदा करता है कि इन मनमुखों का भी कभी उद्धार हो सकता है? तो गुरु अमरदास जी कहते कि हो सकता है। कब? जब फिर किसी गुरमुख की शरण में आयेंगे। बिना कामिल सन्तों के सही रास्ता नहीं मिलता।

वसतू कहीं ढूंढे कहीं, कही विधि आवे हाथ।
कहें कबीर तब पाईये जब भेदी लीजे साथ॥
भेदी लिया साथ कर दीनी वस्तु लखाये।
कोट जनम का पंथ था पल में पहुँचा जाये॥

जहां करोड़ों सालों में पहुँचता था वहाँ पलों में जाता है अगर सीधा रास्ता हो। जल्दी मिल जाये दिनों में जाता है। बिना गुरमुखों के सही राह नहीं मिलता। सोचो! कीमती बात है! कुदरती तौर पर जैसे यह करंट आ रही है, वैसे वह करंट आ रही है, दिमाग के ज़रिये। जब आंखों में आई हम देखने लग गये। कानों में आई सुनने लग गये। जबान में आई बोलने लग गये। हाथों पैरों में आई चलने फिरने लग गये। कई दफा आपने तजुर्बा किया होगा, हम किसी ख़्याल में बैठे हैं तो टांग सो जाती है। उस टांग पर अगर खड़े हों तो हम खड़े नहीं हो सकते। अगर हाथ सो जाये तो उससे कोई चीज़ उठायें तो उठा नहीं सकते। थोड़ी देर के बाद जब हम उस पर तवज्जों डालते हैं, कुछ मसलते हैं, कुछ दबाते हैं तो वह काम करने

लग जाती है। ठीक है! वहाँ से वह चेतन शक्ति निकल गई थी। यह जड़ चेतन की गाँठ है। यह तो यहाँ ही बंधी पड़ी है। इसने और बांध लिया, मां से, बाप से, बहनों से, भाईयों से, कौमों से, मज़हबों से, यारों से, दोस्तों से, मुल्कों से। सोच लो! इसने बाहर और बांध लिया। छुड़ाना तो यहाँ से ही था, इसने आके और बांध लिया, सोच लो! सारी दुनिया इन झगड़ों में पड़ी है। फिर उल्टा रास्ता हुआ न? गुरु नानक साहब ने कहा है–

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझे को थाइ न पाई॥ नाम बिहूणै माथे छाई॥

कि जितने जप तप हैं सब उल्टे रास्ते हैं, कोई छुड़ाने वाला नहीं। सब दूर करने वाले हैं। सच्चे नाम के बगैर मुक्ति नहीं। उसके बगैर छुटकारा नहीं। हाँ जीः

पाठी– मनमुख अंधे सूझै नाही फिर घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ॥
गुर परसादी सचा हरि पाए॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए॥

(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं बगैर गुरमुखों के... मालिक की मेहर से कोई गुरमुख मिलता है? उसकी मेहर के बिना नहीं मिलता। सही रास्ता नहीं मिलता। मालिक का मिलना इतना मुश्किल नहीं जितना फकीर का मिलना मुश्किल है। पलटू सादिब लिखते हैं–

राम का मिलना सहज है, संत का मिलना दूर।
पलटू संत के मिले बिन राम से परे न पूर।

यही दादू साहब लिखते हैं। दुर्लभ दर्शन साध का दुर्लभ गुर उपदेश।

दुर्लभ करवा कठिन है दुर्लभ परस अलेख॥

पहले तो साधू मिलना ही मुश्किल है। फिर नाम मिलना मुश्किल है। फिर सही रास्ता मिलना मुश्किल है। अधिकारी के बिना वह भी नहीं मिलता। फिर उसका जपना मुश्किल है। अगर जपे भी तो अगर कोई ऐसा पिछला कर्म आ जाये (हम अनेक जन्मों से कर्मों के जाल में बंधे हुए हैं) फिर जल्दी मालिक की प्राप्ति मुश्किल है। पहले तो फकीर का मिलना ही मुश्किल है। अगर फकीर मिल जाये, सही रास्ता मिल जाये तो समझो इसका काम शुरू हो गया।

''जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥''

अच्छे दिन आने शुरू हो गये। यह सच्चे प्रेमियों की चीज़ है। यह तड़प वालों की चीज़ है; उनको मिलता है। कबीर साहब ने लिखा है–

प्रेमी ढूँढत मैं फिरूँ, प्रेमी मिलिया न कोये।
प्रेमी सूँ प्रेमी मिले, गुर भगति दृढ़ होये।

अगर फकीर मिलता है तो ग्राहक नहीं मिलता, प्रेमी नहीं मिलता। अगर प्रेमी मिलता है तो फकीर नहीं मिलता। दोनों मिले तब बेड़ा पार होवे।

हम जारा घर आपना, ले मशाल निज हाथ।
अब घर जारूँ तासों का, जो चले हमारे साथ।

कि मैंने तो अपना सारा घर बार जला दिया है। अब उसका जलाने को तैयार हूँ जो हमारे साथ चले। कौन सा घर बार? यह घर बार नहीं। इस (शरीर की ओर इशारा) घर बार को जलाना है। क्या जलाना है? इस काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जलाना है, इसको मारना है; इसका मुकाबला करना है।

ऐसा कोई न मिला, घर दे आग लगाए।
पाँचों लड़के पटक कर, रहे राम लिव लाए॥

यह पाँचों लड़के हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। यह त्यागने थे। लोग घर बार छोड़ कर जाते हैं। वह घर बार नहीं छोड़ना। यह (शरीर) घर छोड़ना है।

तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभ तिआगना॥

यह त्यागना था। चीज़ यहाँ पड़ी है, उसका ख़्याल ही न आये। अगर जंगल में चला गया और ख़्याल रहे कि कोई दूध लाये, कोई सन्तरा लाये तो वह तो त्याग न हुआ? दादू साहब कहते हैं—

बैरागी बन में बसे, घर बारी घर माहिं।
राम निराला रह गया, इन दोनों में नाहिं॥
जिन प्राणी कर जानिया, घर वन एक समान।
घर माहीं बन ज्यों रहे, सोई साध सुजान ॥

दुनिया में रहता हुआ त्याग करे। शृंगी ऋषि वगैरह जंगलों में गये। सारी उमर बीबी (औरत) का मुंह न देखा। जब सामने आई तो मारे गये कि न मारे गये? अगर घर में त्याग करते तो क्यों मारे जाते? सोच लो! घर में रहते हुए त्याग करना है। असली त्याग यह है; काम, क्रोध को त्यागना है। यह घर जलाना है और कोई नहीं। यही लड़ाई झगड़े करवाते हैं। यही मोह माया में फंसाते हैं। यह घर जलाना था। यह प्रेमी आत्माओं का मजमून है। जिसने सच्चे दिल से पुकार की, उसका मालिक ने ज़रूर प्रबन्ध किया है। मीराँ ने कहा है—

हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय।

क्या दर्द था उसको? बोलो। मालिक का दर्द था। फिर उसको फकीर मिल

गया। उनको मिलता है, उन पर मालिक मेहर करता है। यही गुरु तेग बहादुर साहब ने लिखा है–

अब मै कउनु उपाय करउ॥
जिह बिधि मन कउ संसा चूकै भउनिधि पारि परउ॥

कि मालिका मैं क्या करूँ? उपाय कर करके थक गया। कर्म-धर्म भी किये। जुगों के जुग बीत चुके हैं हमारा छुटकारा नहीं हुआ। क्या उपाय करूँ? तब उनको भी फकीर मिल गया। छुटकारा हो गया। यह सच्चे प्रेम का नमूना है। हाँ जीः

पाठी– गुर परसादी सचा हरि पाए॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– मालिक की मेहर से फकीर मिलता है। फिर यह प्रेम से जपे। जपने से अन्दर से अहंकार निकलता है। अन्दर शांती आती है। तब यह चढ़ाई कर सकता है, ऐसे नहीं। हाँ जीः

पाठी– वैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ॥

मैनेजर साहिब जी– इन्सान के अन्दर भण्डारों के भण्डार पड़े हैं। शांती और खुशी के भण्डार पड़े हैं परन्तु मिलती कब है? जब किसी कामिल फकीर से पूछ कर ''बैसि सुथानि'' सच्चे स्थान पर बैठ कर, यह है सच्चा स्थान आंखों के पीछे ख़्याल को इकट्ठा करे, यहाँ बैठ कर सिमरण करे, जड़ चेतन की गांठ खोले। यहाँ ख़्याल को इकट्ठा करना ही मुश्किल है, बाकी सब आसान है। यही मुश्किल काम है, बाकी कोई मुश्किल काम नहीं। इसी के लिए बारह-बारह साल पानी ढोया है उन्होंने, सोच लो! इसी के लिए, ख़्याल निकालने के लिए। दुनिया के ख़्याल निकलें तब यहाँ ख़्याल इकट्ठा होता है।

एक निमख जो सिमरण महि जीआ॥
कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ॥

अगर एक निमख मात्र भी ख़्याल यहाँ टिक जाये; आज भी किसी ने शिकायत की कि मन टिकता नहीं। अगर टिक गया तो सारा काम ही बन गया बाकी क्या रह गया, बोलो।

एक चित जिन इक छिणु धिआइउ॥
काल फास के बीच ना आइउ॥

एक चित, एक छिन, बोलो! ज़रा सा ख़्याल टिकने में ही मुद्दतें लगती हैं। यह लगा रहे, बस। अगर यहाँ (दोनों आंखों के बीच) बैठ कर सिमरण करे, ख़्याल टिक जाये, बस फिर इसका सब काम बन गया। इस ख़्याल को टिकाना ही मुश्किल

है। पहले फकीर का मिलना मुश्किल है। फिर ख़्याल का टिकना मुश्किल है। अपने आप भी लोग अभ्यास करके अन्दर गये हैं। सिमरण करके गये हैं। देख लो। मछन्दर गया, सोच लो! इस देह से वह निकल जाता था। निकल के यहाँ ख़्याल इकट्ठा हुआ। यहाँ आकर इसके अन्दर इतनी ताकत आ जाती है कि जहां मर्ज़ी चला जाये। त्रिलोकी को फनाह कर दे परन्तु मन फिर भी नहीं काबू आता। आत्मा के तीन शरीर हैं। तीनों से निकले तब छुटकारा है असली। उसी मछन्दर ने, किसी राजे का देहांत हुआ। उसके शरीर में जाकर रूह को प्रवेश करके विषय विकार भोगे, राज किया। सोच लो! इधर तो सब जानते हैं। छुटकारा न हुआ। मन से तो छुटकारा न हुआ। पहले फकीर ऐसा मिलना मुश्किल है। उसको वहाँ तक का ही फकीर मिला। अगर कामिल फकीर मिल जाये फिर इसको धोखे में नहीं आने देता। वह आगे जाकर संभाल करता है। वह सतगुरु एक ही है जो संभाल करने वाला है। बाकी कोई नहीं। 'शब्द गुरु'—वह हर रूप धारण कर सकता है; बाहर फकीरों का भी। अन्दर भी संभाल करता है। सूक्ष्म मण्डलों में, कारण मण्डलों में फिर अपने देश ले जाता है।

''बिखड़े दाउ लँघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥''

यही कबीर साहब ने लिखा है—

रगड़ा है भारी।

कोई समझे संत सुजान रड़बड़ मच रही है भारी ॥

यह रड़बड़ थी जो मछन्दर को धोखा दे गई। आगे त्रिकुटी का किला है। काल सबको हड़प करने के लिए बैठा है।

''किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलीऐ सुखु होइ॥''

वहाँ से पार करना मुश्किल है। वह शब्द गुरु आप पार करावे तो करावे, बाकी कोई पार कराने वाला है ही नहीं। जो जन्म मरण का सिलसिला है वह मालिक ने काल के हाथ में दिया हुआ है। छुटकारे का उसने अपने हाथ में रखा हुआ है, बस। यह उसके अपने हाथ में है। यह उसके अपने वश में है छुटकारा करना। हाँ जीः।

पाठी– बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिया॥

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि यह मेहर की चीज़ तो ज़रूर है। उसके साथ

और क्या चाहिए? चाल चलन अच्छा चाहिए। इन्सान नौ दरवाज़ों में, नौ दरों में कह लो, भटकता फिर रहा है। आंखों के ज़रिये दूसरों के स्वरूप देख देखकर अन्दर डालता जा रहा है। बीबीओं की तरफ देखा तो काम सताने लगता है। बाल बच्चों की तरफ देखा तो मोह सताने लग जाता है। दुश्मन को देखा तो क्रोध सताता है, सोच लो! यह संस्कार आंखों के ज़रिये अन्दर जाते हैं। यह नौ दर कौन से हैं? दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुंह का, दो टट्टी पेशाब के। सबसे बड़े जो हैं आंख, कान और मुंह के हैं। आंखों के ज़रिये संस्कार लेता है। कानों के ज़रिये बाल बच्चों की बात सुनता है तो दुःख सुख घेरते हैं। दुश्मन की बात सुनता है तो क्रोध आता है। डण्डा उठाने को तैयार होता है। अपनी बड़ाई सुनता है तो अहंकार आता है, सोच लो! ज़ुबान के ज़रिये खट्टे मिट्ठे रस लेता है। वह संस्कार इसके अन्दर आते हैं। निंदा चुगली करता है। पराई बातें कर करके अन्दर से काला हुआ पड़ा है।

तब ही काला होत है हरि बिन चितवन आन।
क्या कहिये समझे नहीं दादू सिखवत ज्ञान॥

इनको बन्द करे। नौ दरवाज़े बन्द करे। कबीर सहिब ने लिखा है—

आंख कान मुख बन्द कराऊं ॥ अनहद झींगा शब्द सुनाऊं ॥

यह दरवाज़े बन्द करो। यही मुसलमान फकीर कहते हैं,

चशम बँदो, गोश बँदो, लब बवँद।
गर न बीनी सरे हक्क बर मन बवँद।

कि आंखें बन्द कर ले, मुंह बंद कर ले, कान बंद कर ले, अगर फिर तेरे ऊपर मालिक का राज न खुले तो बेशक मेरे को आकर पकड़ ले। कि इन दरवाज़ों के ऊपर बंद लगा। बन्द लगा कर बैठ जाओ, ''नउ दर ठाके धावतु रहाये ॥'' फिर भी मन भटकता फिर रहा है, दौड़ता है। इसको रोक, ख़्याल को यहाँ इकट्ठा कर। 'ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥' अगर यहाँ ख़्याल टिक जाये, तो मालिक की आवाज़ सुनने लग जाये। मालिक के घर का रास्ता मिल जाये। वह अति सूक्ष्म से सूक्ष्म आवाज़ है। है ज़रूर पर अति सूक्ष्म है। यह घड़ी है, अब टिक टिक करती है परन्तु सुनाई नहीं देती। जब हम ख़्याल से सुनते हैं तब ज़रा सुनाई देती है। कई दफा आपने देखा होगा हम लेटे होते हैं तो ऐसे सुनाई देती है जैसे घन्टियां बजती हैं। है तो वही घड़ी! इसी तरह ख़्याल को यहाँ टिकाये तो वह आवाज़ सुनने लग जाती है। वह इसके घर का रास्ता है।

'गुरमती सबदु सुणावणिआ'—कोई गुरुमत्त वाला फकीर मिले, वह इसको रास्ता बताये, तरीका बताये, यह ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे तो इसको अपने घर का रास्ता मिल जाये। वह शब्द ही इसके घर का रास्ता है,

'सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥'

यही कबीर साहब कहते हैं—

सुरत शब्द में राखिये तब पहुँचे दरबार।
कहे कबीर तहां देखिये बैठा पुरुष हमार ॥

एक ही रास्ता है जुगों जुग से एक ही है।

जुगि जुगि भगता दी रखदा आइआ॥
दैत पुत्रु प्रहलादु गायत्री तरपणु किछु,
न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ।

गुरु अर्जुन साहब के पास कुछ मुसलमान आये। मालिक के मिलने पर बात चली तो उन्होंने फरमाया—

अलह अगम खुदाई बंदे।
छोड़ि खियाल दुनियां के धँदे।

कि ऐ खुदा के बन्दे! ऐ मालिक के मुतलाशी! ऐ मालिक को ढूँढ़ने वाले! अलह अगम क्या? मन बुद्धि की गमता से परे है। अगर उसको मिलना है 'छोड खिआल दुनिया के धंधे।' दुनिया के सारे ख़्याल अन्दर से निकाल दे। कैसे निकाले!

''होइ पै खाक फकीर मुसाफिरु इहु दरवेसु कबूलु दरा।''

कि किसी ऐसे फकीर की शरण में जा 'पीर मुसाफिर' जो अन्दर सफर करता है। मालिक की दरगाह में जाता है। उसकी शरण में जा। उससे रास्ता ले, उससे तरीका सीख।

''सचु निवाज यकीन मुसल्ला। मनसा मारि निवारहु आसा।''

कि उससे तरीका सीख कर उस मालिक की निमाज पढ़। उसके बचनों पर यकीन रख। मुसल्ले पर बैठ कर निमाज पढ़ते हैं ना! यकीन का मुसल्ला, वचनों पर यकीन रख। उस मुसल्ले पर बैठ कर उसके वचनों पर पूरा भरोसा रख। दुनिया की आशा तृष्णा और ख़्याल छोड़ दे। मुसलमान निमाज कहां पढ़ते हैं? मसीतों में। कौन पढ़ाता है? मौलवी। 'देह मसीति मन मउलाणा' यह मसीत है, यह ही मन्दिर है,

''हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥''

'Body is the temple of God' इसमें बैठ कर निमाज पढ़। मन के साथ पढ़। मन मौलवी के साथ पढ़। यह नहीं कि मन कहीं है और तू कहीं है। गुरु नानक साहब कहीं गये। वहाँ एक नवाब था। उसने कहा कि आप हमारे साथ निमाज पढ़ो। तो गुरु नानक साहब करने लगे कि चलो भई हम आपके साथ निमाज पढ़ते हैं। साथ मौलवी था। एक नवाब हो गया। आप पीछे खड़े हो गये। वह निमाज पढ़ते गये। बाद में उन्होंने पूछा कि आपने हमारे साथ निमाज नहीं पढ़ी। तो गुरु नानक साहब ने कहा कि किसके साथ पढ़ता? नवाब कहने लगा कि हमारे साथ! कि तुम तो काबुल में घोड़े खरीद रहे थे। तो मौलवी कहने लगा कि देखो जी आपके ऊपर इलज़ाम लगाता है। वह कहने लगा मैं वाक्य घोड़े खरीद रहा था। मौलवी कहने लगा कि फिर मेरे साथ पढ़ते। कि तुम तो लड़की की शादी कर रहे थे। उसने कहा वाक्य मैं कर रहा था। सो ऐसे निमाज पढ़ मन के साथ। अगर ऐसे निमाज पढ़े तो 'कलम खुदाई पाकु खरा' वोह पाक कलमा जिसको ईसा ने Word कहा है, हम शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, वह सुनाई देने लग जायेगा। वह तुम्हारे घर का रास्ता है। हाँ जीः–

पाठी– ओथे अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा॥(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी–शब्द के द्वारा ही यह आया है। शब्द ने ही सारी रचना की है।

सबदे धरती सबदे आकास॥ सबदे सबदु भया प्रगास॥

यही ईसा ने कहा है "In the begining was the word, the word was with God. The word was God. All the things were made by him." जो चीज़ है, जो रचना है, सब शब्द ने की है, word ने की है। शब्द ही इसके मिलने का ज़रिया है। मालिक के पास जाने का ज़रिया है। जिस रास्ते आया है उसी रास्ते जाना है। अब आंखें बन्द करो अन्दर अंधेरा है। जब हम अन्धेरे में सफर करते हैं तो अगर रास्ता भूल जायें तो क्या करते हैं कि इधर-उधर देखते हैं कि कहीं से आवाज़ आ रही हो तो वहाँ जाकर रास्ता पूछ लें। कोई रोशनी दिखाई दे। वहाँ जाकर रास्ता पूछ लें! यहाँ ख़्याल को टिकाये, यहाँ रोशनी आती है। पहले अर्ज़ की थी कि इसके अन्दर जोतें जग रही हैं। वहाँ रोशनी भी है, आवाज़ भी है; सब कुछ है। इसी को पलटू साहब ने लिखा है...

उलटा कुआं गगन में तिस में जरे चिराग।
तिस में जरे चिराग बिन रोगन बिन बाती।

छः ऋतु बारह मास जरत रहत दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होये ताही की नज़र में आवे।
बिना सतगुरु को होर नहीं वाको दरसावे॥
निकसे एक आवाज़ चिराग की जोती माहीं।
ज्ञान समाधी सुने और कोई सुनता नाहीं॥

वहाँ रोशनी भी है, आवाज़ भी है, वह इसके घर का रास्ता है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥
सुरत शब्द में राखीये तब पहुँचे दरबार।
कहे कबीर तहां देखिये बैठा पुरुष हमार॥
शब्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाये।
द्वार न पावे शब्द का फिर फिर भटका खाये॥

कि उसके बिना इसके अन्दर ही अन्धेरा है। रास्ता दिखाने वाला वही शब्द है और कोई नहीं। हाँ जीः।

पाठी– बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न बसतु लहै न चूकै फेरा॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– 'न बसत लहै' क्या? वह चीज़ नहीं मिलती, मालिक नहीं मिलता, वह ख़ज़ाना नहीं मिलता। 'न चूकै फेरा' क्या? इस चौरासी का चक्कर खत्म नहीं होता उस शब्द के बिना। हाँ जीः।

पाठी– सतिगुर हथि कुंजी होरतु दर खुलै नाही गुर पूरै भागि मिलावणिआ॥
(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– जब तक इसको कोई शब्द अभ्यासी फकीर, शब्द स्वरूपी फकीर नहीं मिलता, इसको सही रास्ता नहीं मिलता। सत्संग करने वाले मिल जायेंगे। नाम देने वाले मिल जायेंगे। ज्ञानी ध्यानी मिल जायेंगे। सब कुछ हो जायेगा परन्तु आगे संभाल करने वाला गुरमुख मिलना मश्किल है। वह मालिक की मेहर से 'गुरु पूरै भागि मिलावणिआ' मिलता है। पहले तो फकीर का मिलना मुश्किल है। फिर यह मेहनत नहीं करता। फिर अन्दर सतगुरु को प्रकट करना मुश्किल है। फिर इसके अन्दर फकीरों के सरूप में सतगुरु आता है। अभी अर्ज़ की थी कि मछन्दर को धोखा दे गये। धोखा खा गया न वह! परन्तु सतगुरु इसको धोखा नहीं खाने देता। फकीरों के रूप में अन्दर आकर यहाँ मिलता है। यहाँ अनेकों शब्द हैं। वह एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। 'वजदे नाद हज़ार' बुल्लेशाह ने कहा है। कितनी ही आवाज़ें हैं जैसे रेडियो में कलकत्ता की, बम्बई

की, इंग्लैंड की, अमरीका की सभी आवाज़ें हैं। इसी तरह इसके अन्दर भी ब्रह्मलोक, शिवलोक, विष्णुलोक, इन्द्रलोक, सचखंड, अनामी की सब आवाज़ें हैं। वह सतगुरु ही इसको ठीक आवाज़ पकड़ावे तो पकड़ावे। इसकी अपनी ताकत नहीं जो पकड़ सके। वह एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं। आप स्टेशनों पर देखते हैं कि कई लाइनें होती हैं। वहाँ एक कांटे वाला होता है। जिस गाड़ी को ठहराना हो ठहरा लेता है। जिसको पास करना हो उसको पास कर देता है। जिसको मोड़ना हो मोड़ देता है। इसी तरह अन्दर सतगुरु भी कांटे वाले का काम करता है। वह भी इसकी संभाल करता है। जिसको वहाँ रोकना हो उसको रोक देता है। जिसको आगे लेकर जाना हो उसको सीधा ले जाता है। जिसको और कहीं बिठाना हो उसको वहाँ बिठा देता है। वह सारे काम करता है। सब की संभाल करता है। उसके बिना कोई इसको बचाने वाला नहीं। कोई सीधे रास्ते डालने वाला नहीं। अनेकों शब्द हैं अन्दर, परन्तु सही शब्द पकड़ाने वाला कोई नहीं। वह अपना शब्द खुद ही पकड़ावे तो पकड़ावे, बाकी किसी को ताकत नहीं। हाँ जीः–

पाठी– सतिगुर हथि कुंजी होरतु दर खुलै नाही गुर पूरै भागि मिलावणिआ॥
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई॥
(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं वह मालिक सबके अन्दर काम कर रहा है। है सबके अन्दर, 'गुपतु परगटु'। आम तौर पर गुप्त है। किसी विरले के अन्दर प्रकट है। जैसे यह करंट (Current) सब जगह काम कर रही है। इसी तरह वह सबके अन्दर काम कर रहा है। सबके अन्दर वह करंट (Current) जारी है परन्तु किसी विरले के अन्दर प्रकट है। उसके ज़रिये हम सीख सकते हैं, उस नाम को प्रकट कर सकते हैं। उस शब्द गुरु को प्रकट कर सकते हैं और कोई तरीका नहीं। हाँ जीः

पाठी– गुपतु परगटु तू सभनी थाई॥ गुरसादी मिलि सोझी पाई॥
नानक नामु सलाहि सदा तू गुरमुखि मंनि वसावणिआ॥
(मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– अब गुरु रामदास जी फरमाते हैं कि नाम ही असली रास्ता है। तू नाम को अन्दर प्रकट कर, नाम की सलाहना कर, जिसका इशारा गुरमुख देते हैं। वही छुड़ाने वाला है और कोई तरीका नहीं मालिक के घर जाने का।

वह ख़ज़ाना इसके अन्दर है। ऐसे तो सारी दुनिया राम-राम करती है। कबीर साहब ने कहा है–

बिन देखे बिन अरस परस के नाम लिये क्या होये।
धन के कहे धनी जो होये निर्धन रहे न कोये॥

ऐसे तो सारी दुनिया राम-राम करती है। रोटी-रोटी करने से पेट नहीं भरता। जब आटा लिआयेगा, रोटी बनायेगा, खायेगा तब पेट भरेगा। पैसा-पैसा कहने से कभी कोई अमीर बना है? इसी तरह राम-राम कहने से राम नहीं मिलता। वह फकीरों से सीख कर अन्दर प्रकट करना पड़ता है। जैसे दूध में घी है, मेहंदी में रंग है, इसी तरह इसको भी अन्दर से निकालना पड़ता है। जैसे दूध के अन्दर घी है, बिलौने से निकलता है। ऐसे उसको भी बिलोकर निकालना पड़ता है। हाँ जीः।

पाठी– नानक नामु सलाहि सदा तू गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥ (मः 3/124)

मैनेजर साहिब जी– चलो भई बस करो।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा ॥

सत्संग

'उदयपुर राणा भजन से लागे मीरा मीठी'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– वक्त आना है, जो अब संभल गया, संभल गया, कुछ खट गया, नहीं तो सब पर आना है ये वक्त! क्यों? ये वक्त सब पर आना है! जो इस दुनिया में इस जन्म से फायदा उठा गया, अपना राम-नाम हासिल कर गया, अन्दर सतगुरु को प्रकट कर गया, सतगुरु को खुश कर गया, वो फायदा उठा गया, नहीं तो ऐसे जन्म हंसी खेल में बर्बाद करके चले गये। सारी दुनिया का ही हाल है! नोट : (यह ज़िक्र तब आया जब एक बूढ़ा आदमी जो रिटायर्ड तहसीलदार था, जिसकी सारी देही कांप रही थी, जिसको झूलता देख कर सत्संग में बैठे नोजवान बच्चे हंसने लगे तभी मैनेजर साहब जी ने इस बात का ज़िक्र किया कि यह वक्त सब पर आना है) हाँ–मालिक याद ही नहीं। अगर कोई भक्ति करता भी है उसको भी कोई पता नहीं। असल बात तो यह है, उसको कोई पता नहीं। जब-जब फकीर आये उन्होंने हमें सही तालीम दी! बाद में, बाद में वही तालीम उलट हो गई। वही तालीम उलट हो गई।

पाठी– एक मुसलमान सूफी फकीर ख्वाजा हसन बसरी साहब ने एक बार सत्संग में फरमाया कि अफसोस मुसलमान जैरे खाक हैं।

मैनेजर साहिब जी– कि ''अफसोस मुसलमान जैरे-खाक हैं यानी मिट्टी में मिल गये और मुसलमानी सिर्फ किताबों में रह गई'' कि मुसलमानी सिर्फ किताबों में रह गयी! जिसने यह किताब लिखी है, जहां से हमने यह पढ़ा है उसने साथ यह नोट दिया है कि ये सूफी उस जमाने में हुआ है, उस सदी में हुआ है जब हज़रत मुहम्मद साहब हुये थे। सोचो उस समय पहली सदी हिजरी थी, अब चौदहवीं है, पन्द्रहवीं शुरू हो गयी? उस वक्त पहली सदी (हिजरी) थी। उस वक्त की बात है। वो उस वक्त लिखता है कि ''अफसोस मुसलमान जेरे खाक हैं। मुसलमानी सिर्फ किताबों के वर्कों (पन्नों) में रह गयी!'' अब वह उसके साथ नोट देता है कि अब तो चौदहवीं

सदी (हिजरी) है, अब जेरे खाक भी है कि नहीं। सोचो! कहता है पहली सदी में ही उलट गये। वो चीज़ ही खत्म हो गयी। अब वो है कि नहीं। यही सब मज़हबों का हाल है! इसको यह पता नहीं मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? कहां जाऊंगा? एक फकीर ने लिखा है–

तुम जात न जान गंवारा हो ॥

हमें गंवार बताया है कि ऐ गंवार तुम्हें तो अपनी जात का ही पता नहीं–

तुम जात न जान गंवारा हो ॥

को तुम आये, कहां से आये झूठा करता पसारा हो ॥

तुम कहां से आये हो? कहां जाओगे? कैसे फंसे हो? क्या कर रहे हो? क्या करना था? किसी को होश है? सोचो! किसी को होश है कि यह कहां का रहने वाला है? इसको पता ही नहीं मैं कौन हूँ। कबीर साहब कहते हैं–

ऐ जीया तू अमर लोक को, आये परे बस काल हो।

ये काल के बस में पड़ा है। ये अमर लोक का रहने वाला है। सतलोक का रहने वाला है। इसको होश ही नहीं। ये सतपुरुष की अंश है।

कहु कबीर इहु राम की अंशु।

यह, राम की अंश है। इसने बाहर की जातें बना ली। फकीरों ने जातें नहीं बनायीं। यह बाद में बनी हैं। जहां-जहां फकीर आये जो उसके ग्राहक थे, जो रूहानियत के ग्राहक थे, उनके पास गये; चाहे हिन्दू थे या मुसलमान थे; चाहे सिक्ख थे या ईसाई थे, यहाँ कोई सवाल नहीं। जैसे डाक्टरी कोर्स में जो जाये, ग्राहक जायेगा सब तो नहीं। चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो। इंजीनियरिंग कोर्स में भी वही जायेंगे, ग्राहक-ग्राहक। इसी तरह जो रूहानियत के ग्राहक थे, जो चाहते थे मालिक से मिलें, वह वहाँ गये, उनको असली तालीम मिली। किसी मज़हब में ले लो। अगर सिक्खों में है तो गुरुनानक साहब के पास गये। कई हिन्दू भी थे, मुसलमान भी थे, सारे ही थे। कबीर साहब के पास सब थे। पलटू साहब के पास सब थे। जांभा जी महाराज के साथ सब थे। देख लो, सब थे। यह बाद में फिरके बने हैं। उन्होंने तो सही तालीम दी। उन्होंने देखा भई यह तालीम सही है। जो-जो वहाँ लगे, उनकी सोहबत में गये, उन्होंने फायदा उठा लिया। बाद में खानदान इसी तरह लगे रहे। वह एक अलग फिरका बन गया। वह कहता यही ठीक है। फिर दूसरी जगह फकीर आये, मालिक आया किसी रूप

में तो वहाँ एक फिरका बन गया। फिर तीसरी जगह बन गया। फिर चौथी जगह बन गया। असली चीज़ ही खत्म।

सब मज़हबों की एक ही तालीम है कि यह सतपुरुष की अंश है, सतलोक के रहने वाला है, अमरलोक के रहने वाला है। हम कहते हैं अपने घर में सुख है। जब तक वहाँ नहीं पहुँचता तब तक इसको शांति नहीं, सुख नहीं। देख लो! किसी को याद है मेरा देश कौन सा है? पढ़ते-पढ़ते हैं। कभी देखा है कोई बात भी है? दादू साहब कहते हैं–

दादू देखा दीदा, सबको कहत सुनीदा।

कि मैं देखकर तसल्ली करके कहता हूँ। सारी दुनिया सुना-सुनाया या पढ़ा-पढ़ाया बोलती है। उसकी किसी ने नहीं मानी–

दादू कहत पुकारी, कोई माने नाहीं हमारी।
पंडित काज़ी वेद कतेबे, पढ़ पढ़ मुये लवारी।
वह तीर्थ वह हज को जाते, बूढ़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया, पढ़ अंजील विचारी।
हिन्दू तुर्क ईसाई तीनों, करम धर्म पचहारी।
नूर जहूर खुदा हम पाया, उतरे भवजल पारी।

कि मैंने नूर जहूर खुदा पाया है, मैंने देखा है। मैं कहता हूँ तुम भी देखो। कोई हज को जाता है, कोई तीर्थों को जाता है, कोई कहीं जाता है! असली चीज़ ही छोड़ दी। तीर्थ इसके अन्दर है–

अठसठ तीर्थ तो बिखे, बाहर क्यों भटकाए।
चरनदास यू कहत है, उल्टा होय घट आये ॥

सोच लो–वह प्रयाग इसके अन्दर है–

ईड़ा पिंगला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बैणी संगमु तह प्रयागु मनु मजनु करे तिथाई॥

वह आत्मा की मैलें साफ करने वाला तीर्थ, प्रयाग इसके अन्दर है। वह अमृतसर इसके अन्दर है। बिशनोइयों की किताबों में भी यही लिखा है–''अठसठ तीरथ घट ही भीतर''–वह इसके अन्दर है। उसमें कब नहाओगे? बाहर भी नहाये पर उसमें कब नहाओगे? बोलो! सोचो! उसमें कब नहाओगे? आत्मा कब साफ होगी? वह सतगुरु इसके अन्दर है, सोचो! वह सतगुरु भी इसके अंदर है।' इसको पता नहीं। एक ही गुरु है सबका जो मुक्ति का दाता है। वह एक ही है और वह अन्दर जाकर

मिलता है। फकीरों के चोले में आया ठीक, लेकिन वह चोला चीज़ तो नहीं। वह कोई ताकत थी। क्या कहते हैं तुलसी साहब–

सुन हिरदे सतगुरु सहदानी, सतगुरु सतपुरुष को जानी।
चौथे पद में करे निवासा, तीन लोक में काल का वासा ॥

कबीर साहब का शब्द है–''इक दिन घोघड़ आसी रे। तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज। पढ़ते हैं ना, रोज़ गाते हैं।

तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।

सबको खा गया। वह सतगुरु चौथे लोक में है; वह चौथे लोक में है उसको कब देखोगे? दूसरा उसका रूप क्या है? 'शब्द'। उसका रूप क्या है 'शब्द'। अभी प्राइम मिनिस्टर (प्रधानमंत्री) बोले। वहाँ से यहाँ आवाज़ आ जाएगी। शब्द आ जायेगा ना! एक मिनट में अफसर सब काम करने लग जायेंगे। उसका रूप क्या हुआ? 'शब्द'। वह तो वहाँ बैठा है। वह सतगुरु चौथे लोक में, सतपुरुष बैठा है वहाँ, उसकी आवाज़ सब जगह काम कर रही है 'शब्द'।

''सबदे धरती सबदे आकास ॥ सबदे सबदु भइया प्रगास ॥''

गुरु नानक साहब से पूछा गया–

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला।
सबद गुरु सुरति धुनि चेला॥

कबीर साहब कहते हैं–

शब्द गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में ठौर ठौर बटमार॥

यही तुलसी साहब ने लिखा है–

सूरत शिष्य शब्दे गुरु, मिल मारग जाना हो।
अलख आकाश ऊंधा कुआं ता मैं सुरत समाना हो ॥

सोच लो, बिशनोईयों की किताबों में भी यही है–

शब्दु गुरु सुरति धुनि चेला।

उसको कब देखोगे? वह 'शब्द' क्या है? इसको पता नहीं! पढ़ते तो हैं। वह 'शब्द' क्या है? वह 'शब्द' लिखने-पढ़ने से परे है। न हिन्दी का है; न फारसी का है, न अंग्रेजी का है,

सबद सबद सब को कहे वह तो सबद बदेह॥
जीभा पर आवे नहीं निरख परख कर लेह॥

सोच लो–

चिहनु वरनु नहीं छाया माया नानक सबदु पछाणै॥

वह शब्द देह धार कर आता है कभी कोई, कभी कोई, कभी कोई। आकर समझाता है कि तेरे अन्दर तेरा गुरु बैठा है। क्या कहते हैं कबीर साहब–

मोहे न विआपै जग की माया। कहन सुनन की है यह काया।

यह तो समझाने के लिए है...

देह नहीं और दरसे देही। रहूँ सदा जहां पुरुष विदेही॥

अमूमन कबीर साहब को बहुत मानते हैं इधर क्या नाम है मारवाड़ की तरफ। अब कबीर साहब की फोटो रखी है। उसका रूप, वह तो सतपुरुष था। देह तो हमारे समझाने के लिए है। कबीर साहब कहते हैं कि चारों युगों में आया हूँ। जब चारों युगों में आया, सतयुग में सत्यसुकृत नाम था, त्रेता में मनिन्दर था, द्वापर में करुणामय था, कलयुग में कबीर था। जब चार रूप धारे तो चार फोटो हुईं, बोलो! उसने यह तो नहीं कहा कि फोटो को पूजो। वह कहता है कि अन्दर चल, अपने शब्द गुरु को पकड़। उसको तो किसी ने नहीं पकड़ा। वह अन्दर जाकर मिलता है; सोच लो! यह ठीक है इन्सानी चोले में आया। जिस चोले में आया उसी रूप में जब चिताता है और उसी रूप में अन्दर आकर मिलता है। फिर अपना असली 'शब्द' जो अन्दर है, (अन्दर अनेक शब्द हैं। ब्रह्म लोक का, इन्द्र लोक का, शिव लोक का, सत लोक का) वह वहाँ जाकर पकड़ाता है कि यह तेरा शब्द है। नहीं तो धोखे में आ जाता है। जब तक अन्दर न आये इसको मुक्ति की कोई तसल्ली नहीं। सोच लो! जिस वक्त कबीर साहब आये। कबीर साहब ने लिखा है कि काल ने चार कबीर बना दिये अलग-अलग कि इनको धोखे में लगाओ। कबीर-कबीर करो। दुनिया धोखे में तुम्हारे पास आने लगेगी। उसी वक्त जब चोले में थे। अनुराग सागर में लिखा पड़ा है। जब चोले में थे चार कबीर बन गये। जब तुम्हारे पास आये तो ऐसे कहो कि उनके मन को अच्छे लगे–भक्ति न करने दो, उलटा कर परे मार। हाँ जीः

पाठी– उदय पुर राणा भजन से लागे मीरां मीठी॥
मेवाड़ी राणा भजन से लागे मीरां मीठी॥
सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया।
किण विधि फिरूं मैं अपुठी। उदयपुर राणा...

मैनेजर साहिब जी– यह सतगुरु को कब देखोगे सांकड़ी गली में? जब तक यह नहीं

मिलता तब तक शांती नहीं। सोच लो! यह सतगुरु देखना है सांकड़ी गली वाला। सोचो! बाहर तो गुरु कर करके थक गये। महात्मा चरणदास कहते हैंः—

गलियारे गुरु फिरत हैं घर-घर कंठी देत।
और काज उनको नहीं द्रव्य कमावन हेत॥
कन फूंका गुरु जगत का, राम मिलावन और।
सो सतगुरु को जाणिये, मुक्त दिखावन ठौर॥

वह सतगुरु दाता है मंगता नहीं। बाहर वालों की तो लगी पड़ी है, ले आओ, ले आओ, ले आओ, सोचो। वह दाता है। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं—

सतिगुरु मेरा बेमुहताज, सतिगुरु मेरा सचा साजु॥

मेरा सतगुरु बेमोहताजु है। वह सबके बनाने वाला है। कैसे बेमुहताज है? ये कपड़ा बनाया है न किसी ने? सोचो! कीमती बात है समझने की। कैसे बना है यह? किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग बनाया, किसी ने बुनी, कितने हाथों में से निकली है? कितने हाथों में गई? कितने कारीगर लगे? यह बेमुहताज सतगुरु है जो अन्दर बैठा फूलों में रंग भर रहा है। कहीं गया रंग लेने? पीला रंग लेने गया कहीं? हरा रंग लेने गया? सोचो! अन्दर बैठा कटिंग कर रहा है। ये धारियां भी किसी ने बनायी हैं, यह भी किसी ने बनाया है। इसमें भी कितनी तारें हैं देख लो! कितने रंग हैं! ये सतगुरु है मुक्ति का दाता, इसी ने मुक्ति देनी है बाकी किसी ने नहीं। मौत के वक्त यही छुड़ाने वाला है और कोई छुड़ाने वाला नहीं। यह सांकड़ी गली में जाकर मिलता है, ऐसे नहीं। यह सब के अन्दर है। कैसे है? जैसे दूध के अन्दर घी, मेहंदी में रंग, फूल में खुशबू, धरती में पानी। इसी तरह सबके अंदर है—चाहे कोई हिन्दू है, चाहे कोई मुसलमान है, चाहे सिख है, चाहे ईसाई, चाहे कर्मी-धर्मी है, चाहे ब्राह्मण है, चाहे कसाई है। है सबके अन्दर जैसे हर जगह पानी है। पंजाब में जाओ आप, लुधियाने की तरफ पांच-पांच छः छः फुट पर मिल जाता है कहीं कहीं। इधर जाओ चार-चार सौ फुट पर मिलता है। है तो सब जगह। इसी तरह चाहे कोई हिन्दू है, मुसलमान है, सिख है, ईसाई, कर्मी-धर्मी है, चाहे कसाई है, है सबके अन्दर। जो निकाले, सोच लो! डाकुओं ने निकाल लिया, वाल्मीकि डाकू था। जो निकाले सो फायदा उठाये, सोच लो, जो निकाले। उसने कैसे निकाला। कहते हैं...

उलटा नाम जपत जग जाना, बाल्मीक भये ब्रह्म समाना।

उलटा नाम क्या? उन्होंने राम-राम को मरा-मरा बना लिया। यह नहीं,

यहाँ वह धार कुदरती तौर पर सब के अन्दर आ रही है। अब आंखों में आयी देखने लग गया, कानों में आयी सुनने लग गया, ज़ुबान में आई बोलने लग गया, हाथों-पैरों में आयी चलने-फिरने लग गया। कई दफा आपने देखा होगा हम किसी ख़्याल में बैठे हैं। बैठे-बैठे टांग सो जाती है। ठीक है! टांग सो जाती है। उस पर खड़े होएं तो खड़ा नहीं हुआ जाता। फिर उस तरफ ख़्याल करो, उसको दबाओ तो वह काम देने लग जाती है। वहाँ से वह चेतन शक्ति निकल गयी थी। वह शब्द की धार निकल गयी थी। सोचो! फिर वापस आ गई। इसी तरह यह जड़ चेतन की गांठ बंधी हुई है। सोचो! चेतन को अलग करें, अन्दर शब्द की धार से ताल्लुक जोड़ें, तब उस राम का पता लगे। इसका नाम है ''उलटा राम जपत जग जाना'' मरा नहीं। वह धार आ रही है। कबीर साहब कहते हैं...

कबीर धारा अगम की, सतिगुरु देई लखाये।

अगम से आ रही है।

ताही उलटा सिमरण करो, स्वामी संग मिलाये॥

वह कब करोगे? कहते हैं शिव नेत्र है, तीसरी आंख है, उसको कब खोलोगे? वह देखने वाली है मालिक को। सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया। कबीर साहब कहते हैं—

मुक्त द्वारा सांकड़ा, राईओं दसवें भाये।
मन तो मैंगल हो रहा निकसो किस बिधि जाये॥

ये मन हाथी बना पड़ा है। अहंकार में है, मैं फलाना हूँ, मैं फलाना हूँ, मैं फलाना हूँ। दीनता नहीं आयी, नम्रता नहीं आयी। जब तक नम्रता नहीं, दीनता नहीं, हस्ती को नहीं मिटाता, अन्दर जा नहीं सकता। यह अहंकार से भरा पड़ा है, मैं गुनी हूँ, ज्ञानी हूँ, मैं यह जानता हूँ, वो जानता हूँ। अगर हम जानते हों तो मालिक के घर न पहुँच जायें। सोचो! अगर जानते हों मालिक के घर न पहुँच जायें, कोई अन्दर शांती न आ जाये? काम, क्रोध बस में न आ जायें? ज्ञान क्या करेगा अगर यह सब कुछ नहीं हुआ? सोचो! महात्मा शंकराचार्य लिखते हैं—''वेदों का अर्थ करके जो धर्म की पालना नहीं करता, जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ वह पशुओं से बढ़कर पशु है।'' सोचो! शंकराचार्य का वचन पढ़कर देखो। ज्ञान क्या करेंगे? ज्ञान तो यह है सांकड़ी गली में सतगुरु मिलिया। इसका नाम ज्ञान है। बाकी किताबी ज्ञान क्या करेगा? महात्मा दरिया साहब लिखता है—

वक्ता होये तो कथा सुनावै, श्रोता सुन घर आवै॥
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई, कह सुन जन्म गंवावै॥

किसी ने सुन लिया, किसी ने कह लिया; चलो खुश हो गये। यह है सांकड़ी गली में सतगुरु मिलिया; इसका नाम ज्ञान है। इसका नाम है सतगुरु का हासिल करना। सोचो! अहंकार को मारे, कोई ऐसा फकीर ढूंढ़े, अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करे। सब फकीरों ने यही कहा है कि तेरे अन्दर तेरा शब्द गुरु है।

सबद गुरु सुरति धुनि चेला॥

उसको कब देखोगे? गुरुनानक साहब का रूप क्या था 'शब्द'। ईसा का क्या था 'शब्द'। उसने लिखा है–

The word was made flesh and dwelt amongst us. वह शब्द देह धार करके हमारे दरम्यान में आया। क्यों आया? हमें शब्द को पकड़ाने के लिए। इसलिए आया कि भूले हुए हैं। मुसलमान उसको कलमा कहते हैं, कलामें इलाही कहते हैं; बांगे आसमानी कहते हैं। हम शब्द कहते हैं। वह सतपुरुष की एक आवाज़ है। सबके अन्दर आ रही है। सबके अन्दर है। रेडियो वेवज़ की तरह सारे ही है। यहाँ रेडियो वेवज है न, कलकत्ते की आवाज़ यहाँ है। बम्बई की आवाज़ यहाँ है। इंग्लैंड की यहाँ है मगर अपने आप तो सुन नहीं सकते। जब रेडिया को स्विच लगाओ तो सुन लो। इसी तरह मालिक की आवाज़ सब जगह है। उसके सुनने का ज़रिया इसके अन्दर है। जड़-चेतन की गांठ खोले। किसी फकीर से पूछ कर सिमरण करके यहाँ आये तो उससे ताल्लुक पड़ता है–

सुरत शब्द में राखिये, तब पहुँचे दरबार।
कहें कबीर तहां देखिये, बैठा पुरुष हमार॥
शब्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाये।
द्वार न पावे शब्द का, फिर फिर भटका खाये॥

सोचो! मौत के वक्त कौन काम देगा? बोलो! बाहर वाले गुरुओं ने तो नहीं संभालना। सोचो! मौत अन्दर, मारने वाला अन्दर; यमदूत अन्दर, आत्मा अन्दर। यह रोता है, चिल्लाता है, कौन संभाले? बोलो। मरते हुओं को तो देखो। उन्होंने गुरु भी किये, उन्होंने पूजा-पाठ भी किये, कर्म-धर्म भी किये, सोचो! यमदूतों से छुटकारा नहीं हुआ। यह है छुटकारे वाला। सांकड़ी गली में जिसने देख लिया उसका छुटकारा है, बाकी किसी का छुटकारा नहीं। जिसने इसका सिमरण भी किया ठीक, उसकी भी संभाल होती है। गुरु अर्जुन साहब लिखते हैं:–

नानक आदि अंगद अमर सतिगुरु सबदि समाइउ॥
धनु धनु गुरु रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइउ॥

कि गुरुनानक साहब के अन्दर शब्द गुरु आया। देहि पुरानी हुई फेंक दी। फिर गुरु अंगद साहब के अन्दर बैठ गया, फिर गुरु अमरदास के बैठ गया, फिर गुरु रामदास के अन्दर बैठ गया। कहते हैं अब मेरे पर मेहर की है। काम करने वाला वह शब्द गुरु है, देह नहीं। देह तो हमारे समझाने के लिए है। इस लाउड स्पीकर की क्या ज़रूरत है अगर कोई न बोले, सोचो! इसकी ज़रूरत है? वह किसी ज़ुबान के ज़रिये बोलता है...

प्रभु जी बसहि साध की रसना॥

मुसलमान कहते हैं :–

''गुफता ए ओ गुफता अल्ला ओ बवद॥''

उसका कहना अल्लाह का कहना है। जिस घट में प्रकट होता है उस घट में आकर बोलता है। लेकिन वह घट चीज़ तो नहीं। वह चीज़ कोई और है। तभी तो कबीर साहब ने कहा है :–

मोहे न विआपै जग की माया, कहन सुनन की है यह काया।
देह नहीं और दरसै देही, रहूं सदा जहां पुरुष विदेही॥

सोचो उसका रूप तो 'शब्द' है। सब फकीरों का रूप 'शब्द' है। जब तक शब्द को अन्दर नहीं पकड़ते तब तक छुटकारा नहीं। हाँ, लेकिन यह मेहनत की चीज़ है। मेहनत से यह डरता है। कौन मेहनत करे? कौन रात को जागे? सोचो? कौन विषय-विकार छोड़े? कौन लोभ छोड़े? राजा जनक ने जब ज्ञान मांगा तो अष्टावक्र ने कहा कि ज्ञान की दक्षिणा भी हुआ करती है। क्या? कि तन, मन, धन। उसने कहा। मैं देने को तैयार हूँ। कि देख ले मुश्किल है? कोई अधिकारी रूह थी, पुरानी भक्ति थी। कहने लगा मैंने दिये। अच्छा भई दिया? कि हाँ। कि तन मेरा है? कि जी हाँ। कि जा जूतियों में बैठ जा। क्यों बैठाया रैयत (प्रजा) के सामने? राजा का जूतियों में बैठना कोई आसान है! उसका अहंकार निकालने के लिए। उनको क्या गर्ज़ थी? सिर्फ उसका अहंकार निकालना था। अब महलों की तरफ ख़्याल जाये, ख़ज़ानों की तरफ जाये। कहने लगे–ख़ज़ाने मेरे हैं? कि जी हाँ–कि फिर इस तरफ ख़्याल ना ला। उसने कहा वाकई मैं दे चुका हूँ। अब मन संकल्प विकल्प उठाता है। उसने कहा कि मन मेरा है? कि जी हाँ। इससे संकल्प विकल्प न उठा। जब उसने ख़्याल को रोका रूह अन्दर

चली गई, ज्ञान हो गया। कोई कसर? कि नहीं जी। कि संभाल यह अपना तन, मन, धन। फकीरों ने क्या करने हैं ये। उनके पास अपना तन है। दूसरे का संभाल कर क्या करेंगे? उनके पास अपना मन है। बड़ों-बड़ों से काबू नहीं आया यह। रामचन्द्र जी वशिष्ट को कहते हैं कि अगर कोई कहे मैंने हिमालय को उठा लिया है, यह मानने वाली बात तो नहीं परन्तु मैं मान जाऊंगा कि शायद कोई ऐसा बहादुर हो। अगर कोई कहे मैं समुद्र पी गया; यह मानने वाली बात तो नहीं परन्तु फिर भी मान जाऊंगा कि शायद कोई ऐसा बहादुर हो। अगर कोई कहे हवा को मैंने बन्द कर दिया, रोक दिया; यह मानने वाली बात तो नहीं लेकिन फिर भी मान जाऊंगा। अगर कोई कहे मन को काबू कर लिया; यह मैं मानने को तैयार नहीं। मन को काबू करने की एक ही चीज़ है, अन्दर शब्द का रस, नाम का रस। 'शब्द' कहो, नाम कहो। 'शब्द' कहते हैं आवाज़ को। आवाज़ की लहर को कहते हैं नाम। वह लिखने पढ़ने से परे है।

नाम डोरि है गुपत कोऊ नहीं जानता।
नेह अछर नेह रूप, दृष्ट नहीं आवता॥

वह लिखने-पढ़ने से परे है। सोच लो! जो बारीक हो जाती है उसको कहते हैं 'धुन'। इसीलिए पलटू साहब ने लिखा है...

धुन आने जो गगन की सो मेरा गुरदेव

सोचो। धुन आने जो गगन की सो मेरा गुरदेव। वह ऐसा ख़ज़ाना है; उसमें अमृत है, उसमें शांती है। जिसको मीरां ने कहा है–

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो।
जिसको पाये दुःख सुख भूले मन आनन्द रे समायो।
जिसकी चोरी कबहूं न होवै ऐसा धन मैंने पायो।
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन-दिन बढ़त सवायो।

उन्होंने उसके ख़ज़ाने को क्या करना है? उनके पास वह धन है जो कभी खत्म न हो। वो हमारे बंधन छुड़ाने आते हैं। हम बंधनों में फंसे पड़े हैं। पहले तो अपना बंधन है तन का। सोचो! मन का, फिर औरत का साथ हो गया, फिर बच्चों का हो गया, फिर रिश्तेदारों का हो गया। फिर रिश्तेदारों के रिश्तेदारों का हो गया। फिर कौमों, मज़हबों का हो गया। फिर देशों का हो गया, फिर लोक-लाज का हो गया। यह अनेक बंधनों में फंसा पड़ा है। यह बंधन कब छोड़ोगे? ये बंधन तोड़े तब अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करे, नहीं कैसे करे? सोचो!

कबीर साहब कहते हैं :–

आंख कान मुख बन्द कराओ॥ अनहद झींगा सबद सुनाओ॥

यह बाहर के सारे ताल्लुक तोड़े। आंखों से देख-देखकर अन्दर संस्कार लेते हैं। कानों से सुन-सुनकर अन्दर संस्कार लेते हैं। ज़ुबान से बोल-बोल कर संस्कार लेते हैं। इन संस्कारों को बन्द करो। ख़्याल को अन्दर ले जाओ तो तुम्हारे अन्दर अनहद झींगा क्या शब्द आने लगेगा, शब्द की धार आ जायेगी। तेरा ताल्लुक वहाँ से पड़ जायेगा। तेरे अन्दर शांती आ जायेगी। ये सांकड़ी गली वाला सतगुरु है। हाँ जीः

पाठी– सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया, किण विध फिरूं मैं अपूठी।
उदयपुर राणा भजन से लागी मीरां मीठी।

मैनेजर साहिब जी– जिस देह में आये उसका वचन न माना। वचन न पूरा किया। फिर कैसे अन्दर जाये? कैसे रस आये? धर्मदास था न कबीर साहब का शिष्य उसको कबीर साहब ने चेताया। भक्ति पूरी न हुई। फिर चेताया, फिर पकड़ा। अगले जन्म, फिर पकड़ा। इस तरह आठ जन्मों में लेकर गया, बोलो! सोचो! जब सांकड़ी गली में गया तब शांती आयी, नहीं तो जन्म-मरण के बन्धन न छूटे। आठ जन्म में लेकर गया बोलो। हाँ-हां पढ़ कर देख लो उसकी हिस्टरी (History)। हाँ जीः

पाठी– का तो मीरां ऐ थारो राम बता दे,
नहीं तो प्रीति थारी झूठी। उदयपुर राणा...

मैनेजर साहिब जी– किसी ने नहीं पूछना आगे–

जात-पात पूछे न कोये। हरि को भजे सो हरि का होये ॥

गुरु नानक साहब के वक्त बाबर बादशाह ने सब फकीरों को चक्कियों पर बैठाया। जो शिव के पुजारी थे, उन्होंने शिव को ध्याया। जो कृष्ण के थे, कृष्ण को ध्याया–राम के थे, राम को ध्याया। जो गोरख आदि के थे, गोरख को ध्याया। सबने ध्याया, कोई नज़दीक आया? गुरुनानक साहब को जब बैठाया गया, जिसने ईष्ट को खुश किया था, चक्कियां खुद-ब-खुद चलने लग गयीं। सोच लो। जो इसको खुश करेगा, अन्दर प्रकट करेगा, सांकड़ी गली में जायेगा; उसका काम करता है बाकी किसी का नहीं करता। कोई नहीं पूछता कौन है तू वहाँ आगे? एक ही तरीका है युगों युग से मालिक को मिलने का–चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिख है, चाहे ईसाई है। क्या? कि वह शब्द गुरु

इसके अन्दर है, वह शब्द की धार इसके अन्दर आ रही है। यह सांकड़ी गली में जाये, वहाँ आंखों के पीछे आये। सोचो! यहाँ आये, तब उससे ताल्लुक पड़े, तब यह जा सकता है, ऐसे नहीं। अगर गुरुनानक साहब गये इसी रास्ते। कबीर साहब गये इसी रास्ते। मोहम्मद गये इसी रास्ते। मोहम्मद साहब लिखते हैं कि, ''खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरें लगी हुई हैं इसलिए तुम सुन नहीं सकते।'' वह शब्द की धार सबके अन्दर आ रही है। मोहरें कब खोलोगे? यह मोहरें खोले, वह तीसरा शिव नेत्र खोले, तब मालिक को देख सकता है। वह बन्द पड़ी है देखने वाली।

है घट में सूझत नहीं लाहनत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को भया मोतिया बिन्द॥

सोचो! बाहर के मोतियाबिन्द का फिक्र है कि चार दिन की ज़िन्दगी में टट्टी-पेशाब अच्छी तरह कर सकूं। थोड़ा बहुत ही हो जाये। चार दिन ज़िन्दगी के हैं। उसका फिक्र ही नहीं किसी को जो युगों-युग से बन्द पड़ी है। हाँ जीः

पाठी– म्हारो तो राम राणा जी घट-घट में बोलै।
थारी हीये की आंख कैसे फूटी। रे, मेवाड़ी राणा।
भजना से लागे मीरां मीठी...

मैनेजर साहिब जी– राणा ने कहा मीरां दिखा मुझे, राम कौन सा है तुम्हारा? क्या दिखाये उसको, कोई सांकड़ी गली में जाये तो दीखे। कैसे देखे? बोलो। कहती वो तेरे अन्दर है, देख। कोई आदमी आता है, वह कहता है मैं डाक्टर हूँ। हमें क्या तसल्ली है कि वह डॉक्टर है या नहीं है? इल्म तो उसके अन्दर है, दिखा सकता है कोई? सोचो! बाहर निकाल कर तो नहीं दिखा सकता। जब उसके पास जायेंगे, उसका नमूना मिल जायेगा। डाक्टरी नहीं दिखाई देगी, इलाज करता दिखायी देगा कि वाक्य है। अब मीरां ने नमूना भी दिखा दिया फिर भी न माना। मन ऐसी बला है। फिर भी न माना। क्या नमूना दिखाया? सुनो, हाँ जी...

पाठी– ले के खड़ग राणा जी मारन चाल्या।
महलां महलां में मीरां डीठी, रे मेवाड़ी राणा...

मैनेजर साहिब जी– अब खड़ग लेकर चला। जहां देखता है मीरां खड़ी है, जहां देखता है मीरां खड़ी है। किसको मारे बोलो। सांप भेजा पिटारी में बन्द करके तो हार बन गया। ज़हर भेजी तो अमृत बन गया। खड़ग लेकर गया तो मीरां ही मीरां, किसको मारे? बोलो! फिर भी तसल्ली न आयी बोलो! ऐसा मन है

यह। यही हमारा दुश्मन है। यह ही मानने नहीं देता बस! और कोई दुश्मन नहीं हमारा, यही दुश्मन है; मन ही दुश्मन है–

मन ही नालि झगड़ा, मन ही नालि सथ॥

बस इससे लड़ाई करे। यह लड़ाई करनी थी, मन को मारना था। झगड़े पा लिये कौमों, मज़हबों के। मारना इसको था। काम, क्रोध को मारना था। मन को मारना था। अब देख लो शिया और सुन्नी लड़ रहे हैं। मुसलमान, मुसलमान से लड़ रहा है क्योंकि असलियत से बेखबर हैं। पता ही नहीं मुसलमानी क्या है? एक मुसलमान फकीर ने लिखा है कि ''हमारे 72 फिरके आपस में क्यों लड़ रहे हैं? वह माजूर हैं। असलियत से बेखबर हैं इसलिए लड़ रहे हैं।'' सामने आ गयी न बात। यह हाफ़िज़ का लिखा हुआ है। सब मज़हबों का यही हाल है। मुसलमान, मुसलमान से लड़ रहा है। सिख, सिख से लड़ रहा है। हिन्दू, हिन्दू से लड़ रहा है। बोलो! आपस में तो लड़ना ही था कौमों ने। झगड़े का तो सवाल ही नहीं अगर अन्दर शब्द गुरु को प्रकट कर ले। अन्दर शांती आ जाये। असलियत में आ जाये।

हिल मिल खेलूं शब्द में, अन्तर रही न रेख।
समझे का मत एक है, क्या पंडित क्या शेख॥

सब झगड़े मिट जायें। असली तो यह भक्ति करनी थी। बाहर इसको गुरु कर लिया सबने। बाहर-बाहर रह गये सब। असली चीज़ को ही छोड़ दिया मगज़ ही छोड़ दिया। एक मुसलमान फकीर हुआ है मौलमी रूम। उसने लिखा है कि ''कुरान से मगज़ को तो मैंने निकाल लिया है और शरीयत वालों के आगे हड्डियां फेंक दी हैं; लड़ो और मरो।'' मगज़ क्या है? कलमा, कलामे-इलाही, बांगे असमानी, शब्द, नाम, यह मगज़ है।

हम पिछले दिनों में बम्बई गये। वहाँ एक अफसर आ गया मुसलमान। बातें चल पड़ीं। जब उसने सुनी, कहता हमें तो मौलवी बताते ही नहीं किसी को, सब बाहर मुखी फिर रहे हैं। हाँ...

पाठीः– ले के खड़ग राणा जी मारन चाल्या।
महलां महलां में मीरां डीठी रे, मेवाड़ी राणा...

मैनेजर साहिब जी– ये शब्द या नाम ये सत्त ताकत है। जब जड़ चेतन की गांठ खोल कर ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करते हैं, जिसको कृष्ण भगवान ने कहा है, क्या?

नासिका के अग्र भाव आओ।

यहाँ तो कोई भी न आया। तब उससे ताल्लुक पड़ता है। इसको कहते हैं ज़िन्दा मरना।

कबीर साहब लिखते हैं–

अब मनु उलटि सनातन हूआ॥

तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

जब मैं ज़िन्दा मरा उस सत्त ताकत से ताल्लुक पड़ा तो क्या हो गया? मैं सनातनी बन गया। वह नाम का तीर्थ इसके अन्दर है जो सब मैल साफ करता है।

अठसठि तीर्थ हरिनामु है किलविख काटणहारा ॥

जब साफ हो गई तो ये श्रेष्ठ बन गया, पाक बन गया, यह आर्य बन गया। उसमें जोत है। जब जोत प्रकट हो गई...

पूरन जोत जगै घट में, तब खालसा ताहि नखालस जानै॥

ये खालसा बन गया, सोच लो। यह नामधारी बन गया। यही 'सच्चा सौदा' है। और 'सच्चा सौदा' क्या है? बाहर सब फनाह है। आखिर सच्चा सौदा की बुनियाद पूज्य मस्ताना जी ने रखी, बोलो। वह देह चली गयी; बाकी चीज़ जो बनायी है, उसका क्या है? ये तो फनाह है बाकी सब कूड़ है। सोचो! वो तो ताकत थी। उसको अन्दर प्रकट करे। सत्त ताकत से मिले। आत्मा और राम के मेल का नाम 'सच्चा सौदा' है। सुरत और शब्द के मेल का नाम सच्चा सौदा है। बाहर कोई सच्चा सौदा नहीं। इसका नाम 'सच्चा सौदा' है। बाकी कोई 'सच्चा सौदा' नहीं। अगर यह कर लिया तो सच्चा सौदा वाला भी बन गया, नामधारी भी बन गया, सनातनी भी बन गया, आर्य भी बन गया, खालसा भी बन गया। नहीं तो पल्ले डींगें हैं, सोच लो। सब झगड़े खत्म हो गये। यह तो इस लाइन को ही नहीं पकड़ता। इसको पता ही नहीं। अन्दर जाना ही मुश्किल पड़ा है। जड़ चेतन की गांठ खोलनी मुश्किल पड़ी है इसको। यह किसी ने बताया ही न। गांठ खोलनी मुश्किल पड़ी है इसको। बस माथा टेकते जाओ। हाँ जी...

पाठी– दिराणी जिठानी मोरी सास नणदिया।

जल बल होयी रे अंगीठी, मेवाड़ी राणा॥

मैनेजर साहिब जी– अब चारों तरफ मीरां हो गयी, किसको मारे? न तो उसको इतबार आया। दिराणी जिठाणी भी सड़ सड़कर अंगीठी बन गयी। बोलो! सोचो।

इसी तरह जब जब फकीर आये उन्होंने असलियत ज़ाहिर की तो सारे ही जल बल कर अंगीठी बने। पलटू को जिन्दे को जलाया। गुरुनानक को कितनी तकलीफें दीं। कबीर को कितनी दीं। कभी गंगा में फैंका, कभी शराबी मस्त हाथी के आगे फेंका। सोचो। कभी देगों में डाल कर नीचे आग लगायी गयी। किसने लगायी? जल बल के अंगीठी वालों ने। फायदा न उठाया, गुण न उठाया उनसे। अवगुण ही उठाते रहे। सोच लो। सामने आ गयी न बात। सामने मीरां मीरां हो गयी। चारों तरफ मीरां ही मीरां हो गयी, किसको मारे। वह भी न माना, सास-ससुर भी न माने। ननद भी न मानी। कोई भी न माना। यह न सोचा कि वाक्य ही ठीक है यह ऐसे जो मीरां ही मीरां बन गयीं, कोई बात है। ज़हर भेजा, वह अमृत बन गया, कोई बात है। फिर भी न माने—हां जीः

पाठी– मीरां बाई ने सतगुरु मिलिया।

चरणां में प्रीति थारी डिठी। रे, मेवाड़ी राणा...

मैनेजर साहिब जी– अगर कबीर साहब आये; जुलाहा, जुलाहा, जुलाहा, जुलाहा, जुलाहा। वह क्या जाने? अब कबीर कबीर करते हैं। फायदा किसी ने न उठाया। रविदास आया, चमार, चमार, चमार। राजा पीपा गया। चमार की वजह से परे हो गया। उसने अमृत भी बना कर दिया भई इसको कोई दात दूं; वह भी खो बैठा। फिर दुबारा भजन किया। फिर भी उसकी बहादुरी है, मेहनत की। वह भी यही लिखता है :—

जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे जो खोजै सो पावै॥

जो कुछ कुल खण्डों-ब्रह्मण्डों में है वह इसके अन्दर है। जो खोज ले तो फायदा उठा ले। कबीर साहब क्या कहते हैं :—

अबधू अन्धा धुन्ध अंधियारा, कोई जानेगा जानन हारा।
या घट भीतर बन और बस्ती, याही में झाड़ पहारा।
या घट भीतर बाग बग़ीचा, याही में सींचन हारा।
या घट भीतर सोना चांदी, याही में लगी बाजारा।
या घट भीतर हीरा मोती, याही में परखन हारा।
या घट भीतर सात समुन्द्र, याही में नदिया नारा।
या घट भीतर सूरज चन्दा, याही में नौ लख तारा।
या घट भीतर बिजली चमके, याही में होय उजियारा।
या घट भीतर अनहद गरजै, बरसै अंम्रितधारा।

या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुर द्वारा।
या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा।
या घट भीतर ब्रह्मा, विसनु महेसा, शिव सनकादि अपारा।
या घट भीतर आये लेत हैं, राम कृष्ण अवतारा।
या घट भीतर काम धेनु है, कल्प वृक्ष इक न्यारा।
या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के, भरे अखुट भण्डारा।
या घट भीतर तीन लोक हैं, याही में सिरजनहारा।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा।

है मुश्किल बड़ा। मस्ताना जी ने दीवारों पर भी लिखाया। बाहर वाले गुरु देखे, अब अपने अन्दर वाला गुरु भी देख। बाहर वाले मन्दिर देखे, अब अपने अन्दर वाला सच्चा मन्दिर भी देख। बाहर वाले ग्रन्थ पढ़े अब अपने अन्दर वाला शास्त्र भी पढ़। बाहर वाले नाम जपे अब अपने अन्दर वाले नाम शब्द से भी ताल्लुक जोड़। सोचो! बाहर वाले तीर्थों पर नहाये अब अपने अन्दर वाले तीर्थ पर भी नहा। वो कब नहाओगे बोलो? हाँ जीः

पाठी– पीयो राम रस प्यासा कोई जन। पीयो राम रस प्यासा॥
गगन मन्डल में अमृत बरसै, उनमन के घर वासा॥

मैनेजर साहिब जी– बाहर हर किस्म के स्कूल खोल दिये गवर्नमेंट ने। सोचो! कोई खाती का काम सीखे, लोहार का काम सीखे, कोई इंजीनियरिंग का सीखे, कोई डाक्टरी सीखे, कोई कुछ सीखे, ठीक है। कोई जो कोर्स करे अपना कर ले। कोई अफसर बन जाये। सारे कामों के खोल दिये। अन्दर भी इसी तरह ही है। कृष्ण भगवान ने लिखा है जो भूतों की पूजा करता है वो भूतों के पास जाता है। जो पितरों की करता है, पितरों के पास जाता है। जो देवी देवतों की करता है उनके पास जाता है। इसी तरह जो शब्द गुरु की करता है वह मालिक की दरगाह में जाता है। अगर विषय विकार भोगे तो नर्कों में चला जाये। सब दुकानें खुली हैं। कहता अमृत सबके अन्दर बरस रहा है; कोई प्यासा पीयेगा जिसको ज़रूरत है, जिसको तड़प है। मीरां को तड़प थी। क्या लिखती है?

हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोये।

क्या दर्द था उसको? बादशाही उसके पास। अगर हमारे पास आ जाये, हम तो मालिक को ऐसे ही भूल जायें। बोलो! सोचो! ज़रा सा सुख आ जाये।

जेते सुख संसार के सब ही माया जाल।

वह नहीं भूली। क्या दर्द था? बादशाही उसके पास, नौकर-चाकर उसके पास। मालिक के मिलने का, अमृत पीने का। फिर कहती है...

पायो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो।
जिसको पाये दुःख सुख भूले, मन आनन्द रे समायो॥

आनन्द ले लिया न ले लिया।

जिसकी चोरी कबहूँ न होवै, ऐसा धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै, दिन दिन बढ़त सवायो॥

यह वचन महात्मा सुन्दर दास का है कि यह अमृत सब के अन्दर बरस रहा है। जिसको प्यास होगी वही पियेगा, बाकी नहीं। दुनिया बे गरज़ है, बे-गर्ज़ है। सोच लो। कबीर साहब क्या लिखते हैं :–

ऐसी दुनिया भई दिवानी, भक्ति भाव नहीं बुझै जी।
कोई आवे तो बेटा मांगे, यही गोसाईं दीजै जी।
कोई आवे दुःख का मारा, हम पर कृपा कीजै जी।
कोई करावै ब्याह सगाई, भेंट रुपइया लीजै जी।
सांच का कोई गाहक नाहीं, झूठे जगत पतीजै जी।
कहैं कबीर सुनो हो साधो, अन्धों को क्या कीजै जी।

कोई बिरला गाहक है। कहता आओ पीओ, होका मारा है उन्होंने। अखबारों में निकल जाता है न फलानी नौकरी है, जिसने लेनी है आ जाओ, इन्टरव्यू दो। वह भी कहता है आ जाओ जिसने पीना है। होका मार रहा है। सबके अन्दर बरस रहा है।

''शीश उतार धरै गुर चरना।''

शीश उतार क्या? लोक लाज छोड़े, तन का प्यार छोड़े, विषय-विकार छोड़े, लोभ छोड़े, सोचो, तब पा सकता है। ऐसे कैसे पाये? क्या कहते हैं कबीर साहब...

सुखिया सब संसार है, जो खाये और सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जो जागे और रोवे।

क्यों जागता रोता था, यह अमृत पीने के लिए। हाँ जीः–

पाठी– शीश उतार धरै गुर चरना, करे न तन की आसा॥
ऐसा महंगा अमी बिकत है, छः रुत बारह मासा॥

मैनेजर साहिब जी– और तो वह कहते हैं इतनी ज़रूरत है आदमियों की। वह कहता है फलाने मौसम में यह फल मिलता है। यह कहता है छः रुत बारह मास ही तैयार है। कोई आये सही मैदान में। जब हासिल करे। और मेवे हैं मौसम के लिहाज़ से, और नौकरियां हैं मौके के लिहाज़ से। यह छः रुत बारह मास ही तैयार है, कोई पीने वाला हो। हाँ जीः

पाठी– मोल करे सो छके दूर से, तोलत छूटे पासा।
जो पीवै सो युग युग जीवै, कबहुं न होत विनासा।

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं न फलाना महात्मा अमर हो गया। यह अमर होना है। इसका नाम अमर होना है 'जो पीवै सो युग-युग जीवे कबहुं न होत विनासा।' वह चौरासी से निकल गया।

पाठी– गगन मण्डल में अमृत बरसै, उनमन के घर वासा।
पीयो राम रस प्यासा...
इन रस काज धरै निरप जोगी छोडिया भोग विलासा।
छतर सिंहासन बैठा रहता भस्म लगाये उदासा।

मैनेजर साहिब जी– बाहर की भस्म नहीं जो भस्म लगाये फिर रहे हैं। 'भस्म लगाये उदासा।' घर में रहकर उदास रहे कि मेरे नहीं यह। काम भी करना है। ये लेने देने भी खत्म करने हैं, लेकिन समझे भई मेरे नहीं। अन्दर यह हो मेरे नहीं। ये छोड़ने हैं।

''हर वक्त ग्रहिसथ में रहे जो उदास, कहु नानक हम ताके दास।''

गृहस्थ छोड़े से भी कुछ नहीं बनता। छोड़-छोड़ कर गये शृंगी ऋषि वगैरह, कुछ बना? अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किया, पवनाहारी रहे, बोलो! मारे गये। क्या बना? अगर घर में बैठकर त्याग करते तो बीबी पर क्यों मारे जाते? बोलो! घर में रह कर त्याग करे। अगर गिरता है तो घर ही में गिरता है और तो नहीं। यह घर बार छोड़ने पर नहीं।

बैरागी बन में बसै, घरबारी घर माहिं।
राम निराला रह गया, इन दोनों में नाहिं॥
जिस प्रानी कर जानिआ, घर वन एक समान।
घर माहिं बन ज्यों रहे, सोई साध सुजान॥

पराई रोटी खा-खाकर संडे बन जाते हैं। पराई रोटी खाने वाला कोई भजन

नहीं कर सकता।

''घालि खाइ किछु हथहु देइ, नानक राहु पछाणहि सेइ॥''

गृही का टुकड़ा बुरा, नौ-नौ उंगल दांत।

भजन करे तां ऊभरे, नातर काढ़े आंत॥

तीन घंटे भजन करे तब रोटी का हक जाता है। भजन तो दो मिनट नहीं होता असली। हाँ जीः

पाठी– गोरखनाथ भरथरी रविया, सोई कबीर अभ्यासा।

गुरु प्रताप कछु इक दादू, पाये सुन्दर दासा॥

गगन मण्डल में...

हां जीः

कबीर सब जग निरधना, धनबन्ता नहीं कोये।

धनवन्ता सोई जानिए, जाके सत नाम धन होये॥

मैनेजर साहिब जी– सतनाम क्या है? वह सच्चा नाम जो मालिक की दरगाह से आया है। जिसको शब्द गुरु कहते हैं। वह धनवन्त है।

पाठी– सच्चे नाम व्योपारी आये हम, सच्चे नाम व्योपारी हो।

और वणज बहुतेरो कीन्हो, जा में टोटा भारी हो।

मैनेजर साहिब जी– यह धर्मदास का शब्द है। आप कहते हैं हम क्यों आये दुनियां में? क्यों मालिक ने भेजा है हमें? क्यों इन्सानी जामा दिया है? यह गधे, घोड़े, ऊंट, बैल भी हमारे जैसी रूहें हैं। हमें इन्सानी जामा क्यों मिला है? हमें एक चान्स दिया है मालिक ने कि अन्दर शांती हासिल कर ले। जन्म-मरण के बन्धन छुड़ा लें। चौरासी खत्म कर लें। सच्चे नाम का व्यापार कर लें। इसलिए मिला है। यह नहीं खाने पीने के लिए मिला है, बाल-बच्चों के लिए मिला है, जमीनों-जायदादों के लिए मिला है, गाय-भैसें इकट्ठी करने के लिए मिला है, और-और चीज़ों के लिए मिला है, इसलिए नहीं। सच्चे नाम के व्यापार करने के लिए मिला है। बाकी काम तो हमने हर जून में किये। अब तक करते ही आये हैं। सोच लो। हर जून में बाल-बच्चे हुए। हर जून में मां-बाप हुए। पता नहीं कौन-कौन कौम में पैदा हुए हैं। अब तक छुटकारा नहीं हुआ। यह व्यापार करना था आकर। देख लो। किसी ने कौमों के ठेके लिए, किसी ने देशों के ठेके लिए, किसी ने जमीनों के ठेके लिए, किसी ने कोई, किसी ने कोई। जो

काम था वह तो किया ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– कोई कोई बेचे कांसी पीतल, कोई कोई लौंग सपारी हो।
हम को लाधो नाम साहिब को, विषय लाधे संसारी हो।

मैनेजर साहिब जी– खेती बाड़ी, दुकानदारी, नौकरी ये जितने काम हैं ये भी करने हैं। यह भी जरूरी हैं तन को पालने के लिए। लेकिन इसी को पालने में फंसे रह गये। असली चीज़ ही छोड़ दी। सोच लो। यह तो विषय-विकारों के हैं। तन को चलाने के हैं या इससे अपनी मिट्टी पाली, यह तन मिट्टी है। आखिर चला ही जायेगा। बाल-बच्चों की मिट्टी पाली। कौमों मज़हबों की मिट्टी पाली। आत्मा का, किसी का क्या बना, बोलो? आत्मा का क्या बना? सोचो। या विषय भोगे, मन को खुश किया, इन्द्रियों को खुश किया या मिट्टी पाली और क्या किया इसने? या मिट्टी इकट्ठी की। जब आंखें बन्द हुईं, मौत आयी; देश भी रह गये यहीं, जिनके ठेके लिए। कौमें भी यहीं रह गयीं। लोक-लाज भी यहीं रह गयी। बाल-बच्चे भी यहीं रह गये। तन अपना भी यहीं रह गया। बोलो। हाँ जी...

पाठी– पूंजी न खुटे नफा चौगुणा, वणज किया अति भारी हो ॥
हाट जुगाती रोक सके ना, निर्भय राह हमारी हो ॥ सच्चे नाम...

मैनेजर साहिब जी– सोच लो। कीमती बात है सोचने की। पता नहीं कब से यह दुनिया बनी है। हम मालिक से बिछड़े हैं। मालिक के मिलने के लिए बड़ी भक्ति की हमने। जप किये, तप किये, योग किये, यग किये, पुन किये, दान किये। अब तक हमारा छुटकारा नहीं हुआ, सोच लो! अब तक हमारा छुटकारा नहीं हुआ! अट्ठासी हज़ार साल तक तप किया, पूर्ण योगी होकर आये प्रायश्चर जी; मन ने मार दिये। मछन्दर इस देह से निकल जाता था। इस देह से निकल जाता था इतनी ताकत थी उसमें। आत्मा तीन शरीरों में कैद है। पहले कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर यह स्थूल शरीर है। आगे संभालने वाला कोई न मिला। यहाँ तक का गुरु मिला आगे संभालने वाला कोई न मिला। वह संभालने वाला सतपुरुष खुद ही है। वह भक्ति तो न मिली। अब तक घाटे के ही सौदे हुये। सोचो, चौरासी तो खत्म न हुई? घाटे के हुए। लेकिन यह अगर सच्चे नाम का व्यापार कर ले, अन्दर शब्द गुरु का व्यापार कर ले, उससे ताल्लुक जोड़ ले। कहता है...

हाट जुगाती रोक न सके।

हम वहाँ से आये, राजस्थान से निकले। जब हरियाणा में बॉर्डर पर आये। बॉर्डर (Border) है न वहाँ; चैकिंग वाले बैठे हैं। शहर को जाओ चुंगियों वाले बैठे हैं। कहता है इस व्यापार को करे तो कोई रोकने वाला नहीं। यह मालिक से ताल्लुक रखता है, सच्चे मालिक से। इसको रोकने वाला नहीं। सोचो! किसी का प्राइम मिनिस्टर से ताल्लुक पड़ जाये तो सब अफसर डरते हैं उससे। अगर सच्चे नाम का व्यापार करे, इससे भी सारे डरते हैं। शब्द गुरु का व्यापार करे तो सब डरते हैं। काल भी डरता है। महाकाल भी डरता है। यमदूत भी डरते हैं। सब डरते हैं इससे। परन्तु इसका व्यापार करता कोई नहीं। बातें ही करते हैं। हाँ जीः

पाठी– हाल हज़ूर साहिब के आगे, पट्टा चढ़ो दरबारी हो।
जब साहिब ने पंजा रोपा, जम पर अदल हमारी हो।

मैनजर साहिब जी– यह कीमती बात है समझने की। (फिर शब्द बुलाया गया)...

कृष्ण भगवान ने लिखा है कि जो भूतों की पूजा करता है भूतों के पास जाता है। जो पितरों की करता है पितरों के पास जाता है। जो देवी-देवतों की करता है देवी-देवतों के पास जाता है। सबको सबकी पूजा सिखाने वाले बैठे हैं। यहाँ भी महकमे के आते हैं। कोई पटवारी भरती करने वाला है। कोई तहसीलदार भरती करने आता है। कोई क्लर्क भरती करने आता है। अफसर उनको लिस्ट भेज देते हैं दफ्तरों में। इसी तरह मालिक की दरगाह से भी फकीर आते हैं, सच्चे नाम के व्यापार करने वालों के लिए। उनकी भी भरती करते हैं 'जब साहब ने पंजा रोपा' मोहर लगा दी। वह मालिक की दरगाह में लिस्ट गई। अब मालिक जिम्मेदार है उसका। जैसे यह गवर्नमेंट जिम्मेदार वैसे मालिक की गवर्नमेंट भी जिम्मेदार है इसकी। सोच लो। उनके भी भरती करने आते हैं। कोई व्यापार करो। कोई भागों से ऐसा फकीर मिले, सोच लो। उनके भी आते हैं। सारे महकमे अन्दर भी हैं, बाहर भी हैं। सबके भरती करने वाले हैं। जो करे यह व्यापार।

सन्त सनेही नाम है, नाम सनेही सन्त।
नाम सनेही सन्त, नाम से वही मिलावैं ॥
वह है वाकिफकार, मिलन की राह बतावैं।
जप तप तीर्थ व्रत, करे बहुतेरा कोई।
बिना वसीले सन्त, नाम से भेंट न होई ॥

वह अन्दर चीज़ है बाहर तो है नहीं, सोच लो! अन्दर चीज़ है बाहर तो है नहीं। जिनको भरती करते हैं उनकी भी लिस्ट जाती है मालिक की दरगाह में। अब मालिक जिम्मेदार है। उसको फिर छोड़ता नहीं चाहे कुछ भी हो। जितना जल्दी कोर्स कर ले, तो मालिक की दरगाह में पहुँच जायेगा। यहाँ नायब तहसीलदार पहले ही भरती कर लेते हैं। वैसे तो पहले पटवारी है फिर कानूनगो है, फिर तहसीलदार बनता है। डायरेक्ट भरती कर लेते हैं न तहसीलदार को। हमारे साथ एक लड़का पढ़ता था। वह नायब तहसीलदार भरती हो गया। था बेचारा ऐसा ही, कमज़ोर सा। 15 साल उससे कोर्स नहीं हुआ। जब किया तो उसी वक्त नायब तहसीलदार लग गया। ये धर्मदास को चेताया कबीर साहब ने लेकिन कोर्स न कर सका। आठ जन्मों में मुकम्मल हुआ लेकिन लेकर गया छोड़ा नहीं। उसी वक्त ले गया। हाँ जीः

पाठी– हीरा लाल घट ही में निपजै। हर सुकरत कोठारी हो॥
अब तो नाम धनी को लागै। धर्मदास व्यापारी हो। सच्चे नाम...

मैनेजर साहिब जी– जिस व्यापार में इसको पता लग जाये कि इसमें नफा ही नफा है, घाटा है ही नहीं, तो हम जितनी दौलत है सब खर्च कर देते हैं। गहने, कपड़े भी बेच देते हैं। यहाँ तक कि कर्ज़े लेकर भी उसका सौदा खरीद लेते हैं कि घाटा तो है ही नहीं। तो धर्मदास कहता है मैंने यह घट में सौदा किया है। यह हीरा, लाल है, यह कीमती चीज़ है। यह घाटे का सौदा नहीं! मैंने यह ऐसा सौदा किया है। अन्दर सारा कोठा (मकान) इसी नाम से भर लिया है। बाकी सब ख़्याल निकाल दिये। क्यों? इसमें घाटा तो है ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– लाख चौरासी जिया जून से, इनसे राह न्यारी हो।

मैनेजर साहिब जी– चौरासी लाख जिया जून क्या है? तीस लाख किस्म के दरख्त हैं, सत्ताइस लाख किस्म के कीड़े पतंगे हैं, चौदह लाख किस्म के पक्षी हैं, नौ लाख किस्म के पानी के जीव हैं, चार लाख किस्म के भूत, प्रेत, जच्छ, किनर, गन्धर्व, देवी, देवते, इन्सान और हैवान हैं। देवी देवते भी इसी में आ लिये। यह चौरासी का चक्कर है। कभी बैकुण्ठों में, कभी नरकों में, कभी मृत्यु मण्डल में, इसी तरह फिर रहे हैं। कृष्ण भगवान ने कहा है कि हे ऊधो! यह जो कीड़ा जा रहा है, यह कई दफा स्वर्ग का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है। इसी तरह चक्कर में हैं। कहते हैं; जो सच्चे

नाम का व्यापार है, यह चौरीस से अलग है। 'इनसे राह न्यारी हो।' यही गुरुनानक साहब ने कहा है–

जिह पैंडै लूटी पनिहारी। सो मारगु संतन दूरारी ॥

वह रास्ता ही अलग है जिस रास्ते से रूह लूटी जाती है। चौरासी के चक्कर में फिरती है। यह संतों का रास्ता ही अलग है। जो मालिक की दरगाह से आते हैं, पूर्ण ताकत के आते हैं, शब्द गुरु के आते हैं। उनका रास्ता ही अलग है। वह चौरासी में नहीं आते जो यह भक्ति करता है, सच्चे नाम की, शब्द गुरु की। इसमें घाटा नहीं, देख लो! धर्मदास इसी में आया, आठ जन्मों में। फिर भी गया। 'इनसे राह न्यारी हो।' पलटू साहब ने लिखा है–

पलटू बाज़ी लाई हो, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारूं राम की, जो जीतूं तो राम।

अगर ठीक भजन बन गया पूरा, तो राम बन ही गया। अगर हारा तो राम को ही हारा। पांडव और कौरवों ने बाज़ी लगाई। पांडव हार गये। द्रौपदी को ले गये कौरव। सोचो! कहता अगर हारा तो राम को ही हारा। राम ही लेकर जायेगा। हारा तो धर्मदास भी, लेकिन कबीर ने छोड़ा नहीं। उसको हारा, उस ताकत को ही हारा। जिस चोले में आया; फिर ले गया। फिर आया फिर पकड़ा, छोड़ा नहीं। कहते हैं यह रास्ता ही अलग है। हाँ जी–

पाठी– साहिब कबीर सो ऐसा वणज किया।
कबहुं न होये हारी हो॥

मैनेजर साहिब जी– 'कबहुं न होये हारी हो।' इस में हार है ही नहीं। जीत ही जीत है, जीत ही जीत है। वहाँ भी धर्मदास ने तजरबे से लिखा उसने। फकीरों ने जितना लिखा तसल्ली करके। जैसे अभी दादू का सुनाया–

दादू देखा दीदा सबको कहै सुनीदा।

कि सब सुना सुनाया, पढ़ा पढ़ाया कहते हैं। मैं तसल्ली करके कहता हूँ। हमारे परम सन्त मस्ताना जी फरमाया करते थे कि हमने तसल्ली की इस राम से काम लिया है, तब तुम्हें बताया है कि यह काम देने वाला अन्दर है। जिन्होंने तसल्ली की है। सन्तों वाला राम है वह काम देने वाला है बाकी कोई नहीं। उन्होंने तसल्ली की है वाकई ठीक है। बाकी तो हर एक कहता है कि राम राम जपणा क्या है? सोचो जपने से कुछ नहीं बनता–

बिन देखे बिन अरस परस के, नाम लिये क्या होये।
धन के कहे धनी जो होये, निरधन रहे न कोये॥

कबीर साहब कहते हैं जिसको देखा नहीं, छुआ नहीं, सोचो! नाम लेने से क्या बनता है। अगर धन के कहने से, पैसा पैसा करने से कोई साहूकार बन जाये तो सारी दुनिया ही बन जाये। राम-राम करने से, अल्ला-अल्ला करने से, सोचो! वाहिगुरु-वाहिगुरु करने से नहीं बनता; उसको अन्दर प्रकट करना पड़ता है! कोई चीज़ बनानी पड़ती है। रोटी का लफ्ज़ कोई और चीज़ है। रोटी-रोटी करने से भूख नहीं मिटती। सोचो! पहले गन्दम लाये, बाजरी लाये, फिर उसको पीसे, फिर पकाये, फिर खाये, फिर भूख मिटेगी। यह राम अन्दर प्रकट करना पड़ता है, ऐसे नहीं। जैसे दूध में घी है। उसको रिड़क कर निकाले। वह राम इसके अन्दर है। रिड़क कर निकालना पड़ता है। यह बातों की चीज़ नहीं। यह लिखते हैं दादू साहब कि अगर यह जपे, जो सन्तों वाला ठीक नाम है तो उसके आगे कोई चीज़ नहीं आती—न भूत, न प्रेत, न काल, न महाकाल। मास्टर के पास जाता है, यह पढ़ता है। बच्चे को तसल्ली हो जाती है मैं दो जमातें पढ़ गया, तीन पढ़ गया, पांच पढ़ गया, पाठ पढ़ गया। हो जाती है न तसल्ली भई, ज्यों-ज्यों पढ़ता है?

ज्यों ज्यों भक्ति कबीर की त्यों त्यों राम निवास।

अगर ठीक भक्ति हो इसके अन्दर राम भी बसने लग जाता है। इसको खुद तसल्ली होने लग जाती है। अगर ठीक राम हो, इसको तसल्ली होने लग जाती है। इसके अन्दर राम बसने लग जाता है। काम देने लग जाता है जैसे विद्या देने लग जाती है। इसका नाम है राम जपणा। मीरां ने तसल्ली की न; सांकड़ी गली में सतिगुरु देखिया। हाँ जी—

दादू दुनियां बाबरी सब कहे चाम को राम,
पूछ मरोड़े बैल की सब काढै अपना काम।
थोड़ा सिमरण बहुत सुख जो कर जाने कोये,
हल्दी लगे न फटकरी चोखा ही रंग होये।''

पाठी— जिनको राम भरोसा भारी-ताको डर नाहीं लागे रे।
भूत-प्रेत डाकनी और शयारी, देखत दूरों भागे रे।
और विघन की कौन चलायी, जम नेड़े नहीं आवे रे।

हरि भगतां से देखत डरसै, निउ कर पाछा जावै रे।

जिनका राम भरोसा भारी...

मैनेजर साहिब जी– बड़े-बड़े राम के ठेकेदारों को भी देख लो, भूत प्रेत से भी डरते फिर रहे हैं। कभी किसी के पास भागते हैं। कभी किसी के पास भागते हैं। यह है राम का जपणा, भूत प्रेत नज़दीक ही न आये। काल महाकाल नज़दीक ही न आये; इसका नाम जपणा है। जिनको ठीक राम मिला है, जब वह मरेंगे खुशी-खुशी जायेंगे, उनको तकलीफ नहीं होगी। पहले बता जायेंगे हम जा रहे हैं भाई। आम लोगों के जिस्म अकड़ जाते हैं। उनका जिस्म भी जल्दी नहीं अकड़ता। आम लोगों के चेहरे काले पड़ जाते हैं, उनका चेहरा भी काला नहीं पड़ेगा। यह उसकी तसल्लियां हैं। अगर किसी कमरे में बैठा ठीक नाम जपता हो, किसी दूसरे की मौत हो तो भी कमरे में यमदूत नहीं आते। इतनी हस्ती है नाम में; अगर ठीक नाम जपे।

दादू साहब का वचन है हाँ जीः–

प्रथम साख, पंखेरु री कहिये, समरत सांईं उबारिया रे।

काल और महाकाल खाइयो, एक पलक में डारिया रे।

यह काल बड़ों-बड़ों को खा गया।

कबीर सोया क्या करे, सोये हुये अकाज।

ब्रह्मा का आसन डिगा, सुनी काल की गाज॥

कहते नज़दीक ही न आयें यह। एक जज साहब प्रेमी है पर्वतसर में। उनके साथ डाक्टर आ गया। डाक्टर कहने लगा मेरी बुआ विधवा हो गयी। उसने ऐसी भक्ति की है, सारी उमर भक्ति की है, फलानी जगह बैठकर की है। कहता अब मौत से डरती है, बोलो! फिर भक्ति क्या हुई जो मौत से डरे? मूसा भी मौत से भागा। बोलो बड़े-बड़े भागे हैं।

पाठी– जो उपदेश दियो मेरे सतिगुरु, वा की कथा उचारुं रे।

कष्ट पड़े जब और न जाचूं, रसना राम पुकारुं रे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जो सन्तों ने उपदेश दिया है सतगुरु के हुकम से, जब मुसीबत पड़ती है यह उसको याद करता है। वह फौरन आकर खड़ा हो जाता है। यह राम है। हर वक्त संभाल करता है, कदम कदम पर।

पलटू सोवै मगन में साहिब चौकीदार॥

इसका नाम है राम जपणा। साहब चौकीदार बन गया बोलो। हाँ जीः–

पाठी– साहिब चौकीदार मगन होये सोवन लागे।
दोनो पांव पसारि देखि कै दुस्मन भागै॥
जाके सिर पर राम, ताहि को वार न बांकै।
गफलत में मैं रहौं, अपनी आपुइ ताके॥

मैनेजर साहिब जी– कि मुझको ख़बर ही नहीं मैं तो गफलत में रहता हूँ। वह अपने आप ही काम करता फिरता है। यहाँ किसी आदमी, आपके मित्र का काम है आप देखेंगे कि काम बिगड़ रहा तो आप फौरन संभालते हैं। आपका मित्र है। जो नाम को जपता है वह नहीं संभालेगा? उसको फिक्र नहीं? हाँ जीः–

पाठी– हमको नाहीं सोच, सोच सब उनको भारी।
छिन भरि परै न भोर लेत है ख़बर हमारी॥
लाज तजा जिन राम पर, डारि दिहा सिर भार।
पलटू सोवै मगन में साहिब चौंकीदार॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ जीः–

राम सन्ता बिन और न जाचूं कौन पटन्तर दीजै।
जन दादू समरथ को सरणे निरभय होये के लीजै।
जिनको राम भरोसा भारी....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
हाज़र नाज़र ज़िन्दा राम तेरा ही आसरा

सत्संग

'मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– अच्छा कितनी देर कर सकता है? उसने कहा जितनी देर हुकम होवे। (यह वचन तब कहा जब एक निहंग सत्संग शुरू होते ही स्टेज पर आकर नाचने लगा। वह अपने सभी अस्त्रों-शस्त्रों से सज़ा हुआ था।) सुनो भई बात यह है, सुनो बात यह है। ये तलवार ये खण्डा किस लिए है? दुश्मनों के लिए। कमर क्यों कसी है? भई फौज की तरह तैयार रह। ये भी कमर कसे, मन के साथ लड़ाई करे। काम को मारने के लिए शील, क्रोध को मारने के लिए क्षमा, लोभ को मारने के लिए सन्तोष, मोह को मारने के लिए विवेक, अहंकार को मारने के लिए दीनता अख्तियार करे। यह हथियार ले। ये लड़े ऐसे कमर कस के, आ जा भई, मैदान में तुम्हें विषय नहीं देंगे, आ जा। फकीरों ने पाया है विषय छोड़ कर, मन से लड़ाइयां कर करके। ये तो हमें बाहर का नमूना दिखाया है उन्होंने। बाहर का काम भी लेना है। असली तो यह सिखाया था, मन के साथ लड़ाई करनी थी। कहते हैं ना–

''सूरा सोई, सूरा सोई पहचानिए जो लड़े दीन के हेत।''

दीन क्या? क्या दीन है इसका? इसको पता ही नहीं ''कहु कबीर एहु राम की अंसु''। ये राम की अंश है। ये आत्मा जेल में पड़ी है, चौरासी भुगत रही है। इसका छुटकारा करे, इसको आज़ाद कराये। बाहर की आज़ादी ने क्या किया? झगड़े। झगड़े ही किये और क्या किया? सोच लो! विषय बढ़े, मन चंचल हुआ, सोचो! ये परम सन्तों के वचन हैं उस वक्त। ''ये आज़ादी के लिए कर रहे हैं। इनको पता नहीं, इससे तो गुलामी अच्छी। मुसलमान हिन्दुओं से लड़ेंगे, सिक्ख हिन्दुओं से लड़ेंगे। आपस में लड़ाई होगी। फिरके ही फिरके बन जायेंगे इनको आज़ादी का पता ही नहीं। यह देख लो मन चंचल हो गये, सोच लो! ये काम करना था। ये लड़ाई लड़नी थी। सोच लो! ये लड़ाई लड़नी थी आ

कर के। इस जन्म में यही काम करना था और कोई नहीं। जुगों जुग से हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के गुलाम हैं। इन्द्रियों के गुलाम हैं। जो इन्द्री चाहती है वो खींच कर ले जाती है। आंखों की इन्द्री अच्छे-अच्छे रूप देखकर उधर को देखती है। यह तो कहता है न देखूं परन्तु ज़बरदस्ती करवाती है। ज़बरदस्ती काम खेंचता है कि नहीं? ज़बरदस्ती क्रोध डण्डा मारता है कि नहीं? सोच लो! इनके गुलाम हुए पड़े हैं। इनसे छुटकारा हासिल करना था। इस जन्म में आकर इनके साथ लड़ना था और कोई टाइम नहीं। देवी-देवते भी इसके लिए तरस रहे हैं। सोचो! यह ऊंचे से ऊंचा जन्म है। अगर कोई मालिक की प्राप्ति कर सकता है, अगर आत्मा की आज़ादी ले सकता है तो इसी जन्म में। बाकी किसी जन्म में नहीं। ये काम करना था आकर। ये छुटकारा करना था। सोच लो! देख लो! गुलाम हैं हम। इन्द्रियों के गुलाम हैं। कौन लड़ाता है? ये इन्द्रियां, भोग, विषय। विषयों के लिए माया की ज़रूरत है। माया के लिए चोरियां, ठगियां, सौ सियापे। सोच लो! अगर विषय न हों कोई झगड़ा ही न रहे। ये झगड़े विषयों के हैं और क्या है? कोई झगड़ा नहीं, विषयों के झगड़े हैं, बाकी कुछ नहीं। या मान-बढ़ाई के हैं, अहंकार के, सोच लो! या माया के हैं या विषयों के हैं, बस और कोई झगड़ा नहीं। अगर यह छोड़ दे, झगड़े ही खत्म हो जायें। इसके अन्दर शांती आ जाये। ये काम इसने करना था आकर। ऐसे ही जैसे इन्होंने कमर कसी है न, बस कमर कसके आ जा भई मैदान में रात को। दिन का काम किया रोटी के लिए, पेट के गुजारे के लिए, रात को इस मन के साथ लड़े। ''मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ'' गुरु नानक साहब खुद अकाल पुरख आये। अकाल पुरुख कभी किसी चोले में आया, कभी किसी चोले में। चाहे किसी के अन्दर बैठकर काम किया। पहले गुरु नानक साहब के चोले में आया। फिर गुरु अंगद साहब के चोले में बैठ गये। सोचो! बैठ गया न? फिर गुरु अमर दास के। उन्होंने भी जहां बैठ कर फिर हमें समझाया, क्या? गुरुनानक साहब खुद अकाल पुरुख आए। ग्यारह साल रोड़ियों का बिस्तरा रखा कि ऐसे मालिक की प्राप्ति की जाती है। सोच लो! रात को कीली से केश बांधते थे गुरु अमरदास। उन्होंने ऐसे मुकाबले किये हैं तब जाकर मालिक को पाया है। जिनका आज हम जन्म दिन मना रहे हैं, नौकरी में, यानी घर बार छोड़ने से कुछ नहीं बनता। नौकरी करते हुए एस.डी.ओ. होते हुए 5 मील पर गुफा बनाई थी। सारी रात जागते, सारी रात बैरागन पर खड़े रहते, सोच लो! ऐसे नहीं

किसी ने मालिक को पाया। मन को खाने को न देते। जब तक अन्दर रस न ले इसको खाने को न देते। रोटी नहीं देते थे मन को। रस लेगा तब देंगे नहीं तो नहीं देते। उन्होंने मुकाबले किये हैं, सख़्त मुकाबले। बस इसी तरह से करे जैसे इन्होंने किया है। इस तरह से कमर बांधे। ये हथियार ले। क्या? शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी। कबीर साहब ने कहा है ''कर नैनो दीदार महल में प्यारा है''। वो मालिक तुम्हारे अन्दर है। बाहर से किसी को नहीं मिला। उन्होंने तो इस शब्द में सब राज़ खोल दिये जो अन्दर हैं। जो चीज़ अन्दर है सब खोल दी है जगह-जगह की। जैसे आपने देखा होगा, कोई ट्रैक्टर है, कोई जीप लेते हैं, उनके साथ पम्फलेट (किताब) आते हैं न। ये पुर्जा ऐसे खोला जाता है। ऐसे जोड़ा जाता है। यूं है वो है सारे। इसी तरह अन्दर भी उन्होंने सारे राज़ खोल दिये कि यहाँ सारे देवी देवते, ब्रह्म, पारब्रह्म, सतगुरु सारे ही इसके अन्दर हैं। सब इसके अन्दर हैं। उसके लिए क्या करो?

काम क्रोध मद लोभ विसारो, शील सन्तोष क्षमा सत धारो॥
मद्य मास मिथ्या तज डारो, हो ज्ञान घोड़े असवार भ्रम से न्यारा है।

पहले चाल चलन अच्छा करो। हृदय को निर्मल करो। काम को छोड़ो, क्रोध को छोड़ो, लोभ को छोड़ो, मोह को छोड़ो, अहंकार को छोड़ो, बाहर सारा भ्रम है। मिथ्या है रोज़ पढ़ते हैं,

कूड़ु राजा कूड़ु परजा, कूड़ु सभु संसारु।
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु।

किसके लिए लड़ता है बोलो। कूड़ के लिए, सोचो। कूड़ के लिए,

कूड़ु मिठा, कूड़ु माखिओ कूड़ु डोबे पूरु॥

पूरों के पूर इसी में खत्म हो गये।

नानकु बखाणै बेनती तुधु बाझों कूड़ो कूड़ु॥

(मालिक के सिवाये सब कूड़ ही कूड़ है। सोच लो। ये अन्दर खोज करे तब है। सब कुछ सब ख़ज़ाने इसके अन्दर हैं। देवी-देवते इसके अन्दर हैं। सतगुरु इसके अन्दर है। ब्रह्म पारब्रह्म इसके अन्दर हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो। अमृत इसके अन्दर है। शांती इसके अन्दर है। बाहर किसी को नहीं मिली। न किसी को मिली है न मिलेगी।) यही गुरुनानक साहब ने कहा है—अगर मालिक से मिलना है तो क्या करो?

कामु क्रोधु परहरु पर निंदा लबु लोभु तजि होहु निचिंदा।
भरम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

कि काम छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, लोभ छोड़ दे, पराई निन्दा छोड़ा दे, मोह छोड़ दे। भ्रम का संगल क्या? कि ये सारा भ्रम है। एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः–

आंचे मे दानी हमा नदानी असत
आंचे मे बीनी हमा हैरानी असत

कि जो कुछ तू जानता है यह सारी नादानी है। जो कुछ तू देखता है आज है कल नहीं। यह सारा ही भ्रम है। इस भ्रम से निकलो।

कहु नानक बिनु आपा चीनै मिटे न भरम की काई॥

जब तक अन्दर की खोज नहीं करता इसको कुछ प्राप्त नहीं होता! ख़ज़ाना इसके अन्दर है, चीज़ इसके अन्दर है, भटकता बाहर फिर रहा है! चलो ज्ञानी बोल फिर ये शब्द–

पाठी– मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई॥
बिलप करे चात्रिक की निआई॥
त्रिखा न उतरै सांति न आवै, बिनु दरसन संत पिआरे जीउ॥1॥
मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई... **(मः 5/96)**

मैनेजर साहिब जी– मालिक प्रेम है प्रेम ही मालिक है। ''God is love and love is God'' उसके मिलने का ज़रिया भी प्रेम ही है।

साच कहौ सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिनही प्रभु पाइउ॥

यही तुलसी साहब ने कहा है :–

''प्रेम किया तिनही प्रभु पाइया, बिना प्रेम कछु हाथ न आइया॥

जप तप भी वही है जिसके साथ मालिक का प्रेम जागे। दुईयों में अगर रह गया तो कौन-सा जप तप है?

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाई।
किआ जपु किआ तपु किया ब्रत पूजा॥ जा के रिदै भाउ है दूजा॥

अगर दुई रह गयी, दूजा भाव है तो कौन-सा जप-तप है? प्रेम के बराबर कोई कर्म-धर्म नहीं।

माइ मेरे मन की प्रीति॥
एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति॥

सोचो! बाणी को तो कोई विचारता ही नहीं। ऊंची है बाणी तो बहुत! इसके मुकाबले में कोई जप-तप नहीं।

प्रेम बराबर योग न, प्रेम बराबर ज्ञान।
प्रेम भक्ति बिन साधुआ सबही थोथा ध्यान॥
प्रेम छुड़ावे जगत को, प्रेम मिलावे राम।
प्रेम की गति और ही, ले पहुँचे हरि धाम॥

सोच लो!

जोगी जंगम सेवड़ा, संन्यासी और दरवेश।
बिना प्रेम पहुँचे नहीं, दुर्लभ सतगुरु देश॥

गुरु अर्जन साहब ने साफ लिखा है। कोई विचारता नहीं, बाणी पढ़ते हैं।

पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि॥
नानक हरि बिरसाइ कै पउदे नरकि अंधार॥

कि जो पंथों और भेखों में फंसे हैं ऐसी दुईयों में रह गये वो सीधे नरकों को जाते हैं। यह अलाही फैसला है।

जहां दुई है, ज़रूर नरकों को जायेगा। जिसके अन्दर मालिक का प्रेम आयेगा वह सबके साथ प्यार करेगा। वहाँ कोई सवाल नहीं—न हिन्दू का, न मुसलमान का, न सिक्ख का, न कौम का, न मज़हब का, न लड़के न लड़की का, कोई सवाल नहीं। सोच लो! सबके साथ प्यार करेगा। यह प्रेम कैसे पैदा होता है? कैसे जागता है? यह प्रेम नहीं जो हम कहते हैं। ये प्रेम नहीं ये तो माया के बन्धनों के साथ मिला हुआ है प्रेम। माया की मिलोणी के साथ मिला हुआ है। ये जिस्म के साथ हम क्या करते हैं? क्या किया हमने? प्रेम कहते हैं न करो? साध संगत को खिलाया, क्या किया उसको? खूब प्रेम किया भई, बड़ी अच्छी चीज़ दी, बड़ी अच्छी सेवा की! क्या किया? उसकी तन की सेवा की या मन को खुश किया। यही हमारा दुश्मन है। सोचो, यही हमारा दुश्मन है। तन की अच्छी सेवा करोगे, अच्छा खा-खाके मोटा हो जायेगा। और क्या होगा? विषय विकारों को अच्छी खुराक देगा तो मन खुश होगा, इन्द्रियां खुश होंगी। और क्या होगा? बोलो! सोचो! क्या बना? एक मुसलमान फकीर हुआ है, उसने लिखा है।

'ई' न इश्कत के दर मरदम बवद।
'ई' फसाद उस खुदरने गन्दम बवद।

ये प्रेम नहीं जो लोग कहते हैं। ये प्रेम नहीं जो लोग कहते हैं। ये तो खाने-पीने की चीज़ों से पैदा हुआ है। असली प्रेम का जब पता चलता है।

'मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइ।'

अम्बर क्या? आसमान में! यहाँ आये, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, देह से निकले, फिर पता लगता है ये प्रेम है क्या चीज़? यहाँ नाम है, यहाँ प्रेम है, यहाँ सतगुरु आता है, फिर होश आती है। ये प्रेम कैसे जागता है? सोच लो! कहते हैं न भई दुनिया से प्रेम करो, इसी में मालिक है। इसी में मालिक है। कामी से प्रेम करो, तुम्हारे अन्दर काम पैदा हो जायेगा। लोभी से करो, तुम्हारे अन्दर लोभ पैदा हो जायेगा, क्रोधी से करो क्रोध आयेगा। सोच लो! जहां जिस-जिस के साथ ताल्लुक पड़ेगा वैसी शिक्षा मिलेगी। चोरों के साथ चोरी सीखोगे। कर्मी-धर्मी के साथ कर्म-धर्म सीखोगे। सोच लो! जैसा-जैसा जिसके साथ ताल्लुक पड़ेगा वैसा-वैसा सीखेगा। प्रेम वहाँ से मिलता है जिन्होंने मालिक का प्रेम कमाया है, जिन्होंने मालिक को अन्दर प्रकट किया है। वहाँ पता लगता है प्रेम क्या चीज़ है? गुरुअर्जुन साहब कहते हैं–

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु॥ किउ मिलिऐ प्रभ अबिनासी तोहि॥
करि किरपा मोहि मारगि पावहु॥ साध संगति कै आंचलि लावहु॥

कि ऐ मालिक! जो कुछ इन आंखों से मुझे नज़र आ रहा है उन्हीं चीज़ों के साथ हमारा प्यार है। सोच लो! इन्हीं के साथ प्यार है न? देह देखी किसी की तो उससे प्यार है! चीज़ देखी उससे प्यार है। सोच लो! उन्हीं के साथ प्यार है।

''करि किरपा मोहि मारगि पावहु साध संगति कै आंचलि लावहु॥''

कि ऐसी मेहर करो, कोई ऐसा साधू मिलाओ जिसके ज़रिये तुम्हारा प्रेम जागे। जैसे डाक्टर के साथ प्रेम करने से इसके अन्दर डाक्टरी पैदा हो जाती है। सोचो! डाक्टरी काम करने लग जाती है। इसी तरह फकीरों के संग में जाकर, जिन्होंने मालिक का प्रेम कमाया है, मालिक को अपने अन्दर प्रकट किया है, वो प्रेम रूप हो चुके हैं, उनके संग में जाकर ही मालिक का प्रेम जागता है।

''सुभर भरे प्रेम रस रंगि॥ उपजै चाउ साध कै संगि॥''

अगर उनका मजाजी इश्क भी हो जाये। ये मजाजी इश्क है जो कर रहे हैं गुरुअर्जुन साहब। सोच लो! जो भी गया प्रेम करके गया संतों के साथ। मगर सन्त भी मिलते नहीं। पाखण्ड ज़्यादा है। सन्त उसको कहते हैं... कोई एक दो होंगे दुनिया में। सन्त किसे कहते हैं? सन्त वो हैं जो मालिक की दरगाह

में, सतलोक में जाते हैं, वहाँ से हुक्म लेकर आते हैं। उसका नाम सन्त है। सतगुरु के दरबार में जाते हैं। रंगे कपड़े पहनने का नाम सन्त नहीं। चोले पहनने का नाम सन्त नहीं। जिन्होंने अन्दर मालिक को प्रकट किया है, मालिक के दरबार में जाते हैं, उनका नाम सन्त है। उनके ज़रिये ही मालिक का प्रेम अन्दर जागता है। उनके अन्दर मालिक का प्रेम ही प्रेम है और बात ही कोई नहीं। सोच लो! वहाँ से प्रेम मिलता है और कहीं से नहीं मिलता। कि कोई ऐसा साधू मिलाओ जिनके साथ प्रेम करके, तेरा प्रेम मेरे अन्दर जाग आये। बुल्ले शाह ने लिखा है–

जिचर न इश्क मजाजी लागे, सूई न सीवे बिन धागे।
इश्क मजाजी दाता है, जिस पिछों मस्त हो जाता है।

उनके साथ किया हुआ प्रेम,... सोचो! कामी के साथ प्रेम करते हैं अन्दर काम आ गया क्योंकि उसके अन्दर काम है। जब उन सन्तों से प्रेम करोगे; उनके अन्दर मालिक का प्रेम ही प्रेम है। इसके अन्दर भी मालिक प्रेम आ जायेगा। तभी उन्होंने लिखा है–

संत सजन मन मित्र से लाईनि प्रभ सिउ रंगु जीउ॥
तिन सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंग जीउ॥

उनका प्रेम नहीं जाता, कभी भी। यही ईसा ने लिखा है :–

Love begins with the flesh and ends in the spirit.

प्रेम पहले देह से शुरू होता है! उनकी देह के साथ प्रेम करने से फिर आत्मा में घुल मिल जाता है। फिर असली प्रेम जाग उठता है। ये तरीका है मालिक को प्रकट करने का। जब तक सन्तों से प्रेम नहीं, यह अन्दर जा ही नहीं सकता। हज़ारों यत्न कर ले, हज़ारों भजन सिमरण कर ले, नहीं जा सकता। मोहम्मद साहब ने लिखा है कि तुममें से कोई भी शख्श मोमन नहीं अगर सारी दुनिया से ज़्यादा मेरा प्यार नहीं। यही ईसा ने लिखा है, यही गुरुनानक साहब ने लिखा है। सब फकीरों का एक ही मत है। उनके ज़रिये ही मालिक का प्रेम जागता है। अब यह गुरु अर्जुन साहब का शब्द है। गुरु अर्जुन साहब के पिता गुरु रामदास जी थे। उनके ताये के लड़के सारीमल जी आये कि लड़के की शादी है आपके भतीजे की, आप शादी में चलो। हमारा रिश्ता भी बना रहेगा, हमारी भी इज़्ज़त बनी रहेगी। तो गुरु रामदास ने फरमाया, भाई साहब! आप मेरे से बड़े हैं। मैं आपकी इज़्ज़त करता हूँ पर मेरा जाना मुश्किल है। कहते

जी क्यों? कि देख कितनी संगत बैठी है। अगर मैं जाऊंगा साथ ये जायगी। रास्ते में और चल पड़ेंगे। फिर पहले तो आपको तकलीफ होगी। फिर जिसके जायेंगे उसको तकलीफ होगी। आप सोच लें! उन्होंने कहा बात तो ठीक है! कि अच्छा जी अपने बच्चों को ही भेज दें। कि हाँ ये बात ठीक है। उन्होंने पृथ्वीचन्द को बुलाया, अब फकीरों से भी कोई फायदा उठाता है। कोई माया का पुजारी बन जाता है। कोई इज़्ज़त का पुजारी बन जाता है। कोई कुछ बन जाता है। उसको अपनी गद्दी की लगी पड़ी थी। उसके पास सारा अकाउन्ट (Account) था, पृथ्वीचन्द को बुलाया कि काका! तेरे ताया जी आये हैं, तेरे भाई की शादी है, शादी में जा। शादी के बाद तू फौरन चले आना। उसने सोचा अगर मैं चला गया, ये गुरु अर्जुन साहब से प्यार करते हैं, मुमकिन है अकाउन्ट उनको दे दें फिर मेरे पास न आये। क्या पता वो गद्दी का मालिक बन जाये? कहने लगा जी मैं कैसे जा सकता हूँ, इतना हिसाब लेना, देना, ये, वो, मुझे तो कान खुरकने की फुरसत नहीं। कहने लगे तुम्हें आराम भी मिल जायेगा चार दिन। अकाउन्ट चार दिन कोई और रख लेगा। गुस्से में कहने लगा मैं कैसे जा सकता हूँ? अच्छा भई! उसको छोड़ दिया। फिर दूसरे को बुलाया महादेव को, कि भई तू! तू जा आ, तेरे ताया के लड़के की शादी है। कहता कौन सा ताया? कौन सा भतीजा? कौन सा ये, वो। हम फकीर लोग, हमारा क्या ताल्लुक? अच्छा भई, उसको भी छोड़ दिया। फिर गुरु अर्जुन साहब को बुलाया कि भई तेरे ताया के लड़के की शादी है, आप जा आओ और जब तक हम न बुलायें, नहीं आना। कहने लगे अच्छा जी, माता जी से इजाजत ले आऊं कि ऐसे ही जाऊं। कि ले आ इजाजत। जब माता जी के पास गये तो उन्होंने फरमाया कि काका देखना पृथ्वी चन्द तो माया का यार बना, वो तो लोभी है। महादेव अहंकारी है देखना हुकम न मोड़ना, घर में गद्दी न चली जाये। उनको अपनी गद्दी का था। खैर गुरु अर्जुन साहब दीनता से मत्था टेक कर आ गये। गुरु रामदास को मत्था टेका चले गये। जब शादी हुई, अब गुरु रामदास का वचन था कि जब तक न बुलायें नहीं आना। बाद में धर्मशाला में काम करना, भजन सिमरण करना भी और कराना भी। अब शादी हो गई धर्मशाला में चले गये। संगत आया करे उनको भजन सिमरण करायें खुद भी करें। जिनको प्रेम है, जिनको प्रेम है जो भी गया है सन्तों से प्रेम करके गया है। अब उनको तड़प उठती है। दर्शन नहीं होते। गुरुनानक साहब के साथ एक गुरु अंगद साहब

ने प्रेम किया। जब उन्होंने चोला छोड़ा तो उन्होंने कहा–

जिसु पिआरे सिउ नेहु जिसु आगै मरि चलीऐ॥
धृग जीवणु संसारि ताके पाछै जीवणा॥

अब उनको कोई चीज़ अच्छी ही नहीं लगती थी। जब और चीज़ अच्छी नहीं लगी सारे ख़्याल टूट गये तो रूह अन्दर चली गई। सतगुरु के दर्शन हो गये। ये तो ख़्याल निकालने पर है। एक प्रेम हो जाये बस, तब मालिक आता है ऐसे नहीं। अगर नाम देव से पूछा गया तेरा बेढी कब आता है? तो उन्होंने कहा–

लोग कुटम्ब सभहू ते तोरै तउ आपन बेढी आवे हो।

सारे ताल्लुक तोड़े तब आता है। इस देह से भी निकले, इसका भी प्यार न रहे, ऐसे नहीं आता मालिक। यही एक मुसलमान फकीर अपने मुर्शद की कब्र पर आया। उसने कहा यार के बगैर इस दुनिया में जीना ही हराम है। उसी वक्त खत्म हो गया। इसका नाम है प्रेम। अब उनको तड़फ लगी। गुरु रामदास बुलायें न। उन्होंने कहा पता नहीं क्या गुनाह हो गया? फिर उन्होंने ये चिट्ठी लिखी है। ये पहली चिट्ठी है। हाँ बोल भई... 'मेरा मन लोचै'... जब तक ऐसा प्रेम नहीं ऐसी तड़प नहीं अन्दर जा ही नहीं सकता। नाम क्या करे! नाम हो न हो अगर प्रेम है सन्तों से तो बस। सच्चे पातशाह के पास अराईं आया करते थे वहाँ मुसलमान। ऊपर से तो समझते थे कि कोई बड़ा सरदार है। प्रेम करते थे वैसे। जब उसकी मौत आयी तो उन्होंने कहा अल्ला अल्ला कर! कहता अल्ला अल्ला क्या करूं, महाराज जी आ गये। सोच लो, ये प्रेम के ऊपर है। 'जहां आसा तहां वासा' सोचो, हमारा दुनिया से प्यार है हम दुनिया में वापिस आते हैं। अगर उन सन्तों से प्यार पड़ जाये वो कहां जाते हैं, सतलोक? तो सतलोक जायेगा बाकी क्या। भजन सिमरण ही नहीं हो सकता है अगर अन्दर प्रेम नहीं। अगर प्रेम है सन्तों से तो उनका हुक्म भी मानेगा। हुक्म मानेगा तो भजन भी करेगा। भजन करेगा तो रूह भी अन्दर जायेगी। हाँ जीः

पाठी– मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई॥
बिलप करे चात्रिक की निआई॥ **(मः 5/96-97)**

मैनेजर साहिब जी– 'बिलप करे चात्रिक की निआई' बोलो! किसी तरफ ख़्याल करता है वो। दरिया भरे पड़े हैं, जोहड़ भरे पड़े हैं, कुएं भरे पड़े हैं, वो सवांती बूंद का आशिक है। बाकी किसी चीज़ का नहीं। सोच लो! इसी तरह उनके

दर्शनों के सिवाय कोई चीज़ अच्छी न लगे।

पाठी– त्रिखा न उतरै सांति न आवै॥

बिनु दरसन संत पिआरे जीउ॥ **(मः 5/96)**

मैनेजर साहिब जी– देख लो त्रिखा उतरती है चात्रिक की? पहले तो पानी को ही नहीं देखता। अगर पी भी ले उसकी त्रिखा कभी बुझती नहीं। सोच लो! कहता बगैर दर्शनों के त्रिखा उतरती ही नहीं। इसका नाम है प्रेम। वो मालिक की दरगाह में जाता है ऐसे नहीं। हाँ जी..

पाठी– हउ धोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ (मः 5/96)

मैनेजर साहिब जी– जितने भजन सिमरण हैं ये प्रेम पैदा करने के लिए है। जब भजन नहीं बनता तो इसको तड़प उठती है। भई हाए भजन नहीं बनता। फिर रोता है बिलखता है। यह रोना ही इसको आगे ले जाता है और कोई चीज़ नहीं।

रैन दिवस का रोवना, पलक पहर का नाहिं।
रोवत रोवत मिल गया, दादू साहिब माहिं॥

सोच लो!

सुखिया सब संसार है जो खाये और सोये।
दुखिया दास कबीर है जो जागे और रोये॥

उनको तड़प थी। क्या कहती है मीरां?

हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोये।

वो दर्द पैदा हो तब है। अगर दर्द ही नहीं, इलाज किसका हो? बोलो! फकीर किसके लिए आयें? सतगुरु भी तभी आता है अगर इसको प्रेम है, तड़प है तो सतगुरु भी आ जाता है। कल बीबी ने सुनाया इन्होंने सच्चे पातशाह के पास बड़ी सेवा की है। एक लण्डी खोतल का पठान था। उसकी औरत थी बदमाश। उसकी औरत थी बदमाश वो इधर उधर से माल लाकर उसको खिलाया करे। वो बेचारा भजन बन्दग़ी वाला था। अपनी औरत को समझाया कि मुझे ये माल न खिला, ऐसा काम तू न कर मेरी बन्दग़ी में फर्क पड़ता है। वो न मानी! अब उसने कहा मैं इसे तकलीफ में रखूं फिर भी दुख है। उसने उसका खात्मा ही कर दिया। उसका एक यार था, उसने मुकदमा चला दिया। वो जेल में चला गया, फांसी का हुकम हो गया। अब फांसी का हुकम हो गया। उसने पुकारा कि या अल्ला, अगर तूं है, तेरे लिए तो मैंने, तेरी भजन बन्दग़ी के लिए

ये काम किया अगर तूं है तो मेरी संभाल कर। वरना मैं समझूंगा खुदा है ही नहीं कोई। सोच लो! वरना समझूंगा खुदा है ही नहीं। अब सतगुरु, खुदा कहो, सतगुरु फकीरों के अन्दर काम करता है, दुनिया में और तो कोई निशानी है नहीं। सोच लो! डाक्टरी किसी आदमी के अन्दर काम करती है, इन्जीनियरिंग किसी आदमी के अन्दर काम करती है। सोच लो! कोई भी है। इसी तरह सतगुरु भी आकर किसी आदमी के अन्दर काम करता है, चोले में काम करता है। परम सन्त सावनशाह के अन्दर काम करता था उस वक्त। उसी तरह वो तो हर जगह है। राम जो हुआ, रमी हुई ताकत जो हुई। चोला तो हमारे समझाने के लिए है।

जनम मरण दुहहू महि नाहि जन परउपकारी आये।
जीअ दानु दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाये॥

वो जन्म मरण से परे है कबीर साहब ने कहा है–

मोहि न बिआपै जग की माया। कहन सुनन की है ये काया।
देह नहीं और दरसै देहि। रहूं वहाँ जहा पुरुष बदेही॥

कि मैं तो मालिक की दरगाह में रहता हूँ। ये देह समझाने के लिए है। उसी वक्त वहाँ स्वरूप प्रकट हो गया कि भई खुदा है फिक्र न कर। तेरी संभाल भी करेगा। सारे सोए पड़े हैं दरोगा सिपाही वगैरह, जेल के ताले खुले पड़े हैं, यहाँ से निकल जा, मैं तुम्हें जेहलम में मिलूंगा। अब उसने देखा, उठा, देखा सब सोए पड़े हैं। दरवाज़े खुले हैं। वहाँ से दौड़ा निकल गया, जेहलम पहुँच गया। साल भर वहाँ सब्जी बेचता रहा। साल भर सब्जी इधर से खरीद, उधर बेच दे। अपना रोटी का गुज़ारा करता रहा। जैसी होती बन्दग़ी भी करता रहा। साल के बाद सच्चे पातशाह सत्संग के लिए जेहलम गये! अब कार जाती जब देखी उसने देखा यह तो वही है जो मेरे पास आया था उस रात! जो खुदा का रूप बनकर आया था यह तो वही है। पीछे दौड़ा, पता किया। सत्संग खत्म हो चुका था। नाम देने लगे थे। कहने लगा हज़ूर मेरी बात सुन लो, मेरी बात सुन लो, मेरी बात सुनो। क्या भई तेरी बात। मैं सच सच बताऊंगा। बता तो सही क्या बात है? सच्ची बात कि जी ऐसे-ऐसे मैंने औरत को कत्ल किया। ऐसे मैंने पुकारा। ऐसे आपने मुझे दर्शन दिये और कहा मैं जेहलम मिलूंगा। वहाँ आना मैं तुम्हें कलमा भी दूंगा। अब मुझे कलमा दीजिए। कि भई आपको कैसे पता लगा? कि जी आप कार में आ रहे थे। अच्छा भई तुम्हें नाम ज़रूर

देंगे। उसे नाम दे दिया। उसने पुकारा। ये सच्चे दिल से पुकारे तो मालिक दूर नहीं। वो जहां भी है, अगर सच्चा दिल है इसका, बिलकुल सच्ची तड़प है। जहां भी होगा, जिस चोले में होगा, चाहे हिन्दू में हो, चाहे मुसलमान में हो, सिक्ख में हो, ईसाई में हो, इसको ज़ाहिर कर देगा मैं हूँ। उसको मिलता है बाकी किसी को नहीं मिलता। चाहे कितने जप तप कर ले, कितने पूजा-पाठ कर ले, कुछ कर ले अगर तड़प नहीं कुछ नहीं मिलता। अगर तड़प से पुकार करे तो ज़रूर जैसे गुरु तेग बहादुर ने कहा है–'अब मैं कउनु उपाय करउ' कर करके थक गया सोचो! ऐसी तड़प आये तब है। अगर तड़प हो तो ज़रूर मिलता है। फिर तड़प हो तो अन्दर भी जायेगा। भजन भी करेगा। अगर तड़प नहीं भजन ही नहीं करेगा। जिस दिन कोई मुसीबत पड़ती है तब याद करता है सतगुरु को। उसी दिन वो आ जाता है काम कर जाता है। अगर हमेशा के लिए तड़प आ जाये तो सतगुरु साथ-साथ रहे, बस खत्म। ये मतलब के लिए याद करता है फिर भी। हाँ जीः

पाठी– तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी।
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी। **(मः 5/96)**

मैनेजर साहिब जी– 'तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी।' मालिक कहां से बोलता है? 'प्रभ जी वसहि साध की रसना'। मुसलमान भी कहते हैं–

'गुफता ऐ ओ गुफता ऐ अल्ला बवद।'

कि उसका कहा अल्ला का कहा है। उसके अन्दर अल्ला बोलता है चाहे इन्सानी मुख से है। वो कैसे अन्दर समझा सकता है!

'साध रूप अपुना तन धारिआ।'

उसके ज़रिये बोलता हे। 'सहज धुनि बाणी' सहज अवस्था क्या, चौथे लोक में, चौथे लोक से आ रहा है। जिसको गुरुनानक साहब ने कहा है–

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसडा करी गिआनु वे लालो।

उनके अन्दर बोलता था मालिक! कि वो रूप, वो मुंह, सोचो! जहां से मालिक खुद बोलता है उसके लिए तड़प रहा हूँ। उस बाणी को तड़प रहा हूँ। उन वचनों को तड़प रहा हूँ। जैसे सारिंग को पानी नहीं मिलता वो तड़पता है। ऐसे मैं तड़प रहा हूँ। बहुत मुद्दत हो गई है। ऐ सतगुरु कोई मेहर कर। हाँ जी–

बलिहारे गुरु आपुने, दिउहाड़ी सद बारि।
जिन मानस ते देवते किये करत न लागि बार॥

पाठी– धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ॥2॥

(मः 5/96)

मैनेजर साहिब जी– कहते वो देश भी धन्य है, वो जगह भी धन्य है, वो मिट्टी भी धन्य है जहां तू रहता है। जब सतगुरु किसी चोले में आता है तो कोई न कोई ठिकाना तो बनाना ही है उसने। जैसे गवर्नमेंट कोई काम करती है, दफ्तर भी बनाती है। अगर उसका काम न रहे तो दफ्तर छोड़कर परे हो जाती है, उसी तरह पड़ा रहता है। गवर्नमेंट छावनियां बनाती है लड़ाई के लिए, सोच लो! छावनी छोड़ के गये फिर बस। इसी तरह वो सतगुरु कभी कहीं आया कभी कहीं आया। बस दुनिया इसी में रह गई। कौन सा दरबार है असली–'साधू बिनु नाहीं दरवार ॥' अगर वहाँ मैजिस्ट्रेट नहीं तो कचहरी क्या करेगी? बोलो! सोचो! अगर कोई है ही नहीं, मालिक ही नहीं, क्या करेगी? दफ्तर पड़ा है खाली, बस फिर खाली है। वहाँ भक्ति भाव की लहरें थोड़े दिन रहती हैं। वो थोड़ी शांती देती हैं बाकी खत्म। असली चीज़ गयी। ये आम दुनिया के लिए नहीं। ये खास तड़प वालों के लिए है। वो कभी कहीं, कभी कहीं, कभी कहीं जाता है। एक जगह रहा ही नहीं। कभी हिन्दू होकर आया, कभी मुसलमान होकर आया, कभी सिक्ख होकर आया, कभी ईसाई होकर आया, इसका कोई सवाल नहीं। वो देखता है कहां रूहें ज़्यादा तड़पती हैं। जहां व्यापार होता है वहीं जाकर अड्डा लगाते हैं, सोच लो! वहीं कारखाने खोलते हैं। वो भी ऐसे ही देखता है। जिस-जिस को लाना है वो खुद ही पकड़ लेता है किसी की दलाली की ज़रूरत नहीं उसको। वो खास-खास रूहों के लिए आता है, ऐसे नहीं। तड़पती रूहों के लिए आता है बाकी को नहीं। आम दुनिया के लिए नहीं सिर्फ तड़पती रूहों के लिए जो पुकार करते हैं– चाहे इंग्लैंड में बैठी हों, चाहे अमरीका में बैठी हों, चाहे कहीं बैठी हों, चाहे बम्बई में बैठी हों, चाहे कलकत्ते में बैठी हों, इसका कोई सवाल नहीं। हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो इसका कोई सवाल नहीं। उनका तो काम है रूहों को जो तड़पती हैं मालिक की दरगाह में पहुँचाना। हमारे स्कूल हैं। डाक्टरी का कॉलेज है तो वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, का सवाल है? जो डाक्टरी के ग्राहक हैं वही जायेंगे। इंजीनियरिंग का है तो वही जायेंगे। इसी तरह वहाँ भी वही जाते हैं जिनको तड़प है बाकी नहीं। जिसको थोड़ी भी तड़प है, जिसने कभी भी पुकार की है किसी जन्म में, उसको पकड़ता है। कहता उस मिट्टी को भी नमस्कार है। जिसने पाया दीनता से पाया।

उन्होंने मिट्टी को भी नमस्कार किया है। ये बाहर में मत्थे टेकने रह गये बस, बाकी खत्म! भाई गुरदास ने लिखा है–

'लैला दी दरगाह दा कुत्ता मजनू देख लुभाणा॥'

'मजनू देख लुभाणा',–इतनी दीनता हो–

'जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ॥'

उन्होंने सब साध संगत को; बुरा भी हो भजन सिमरण करने वाला हो, उसको भी नमस्कार किया है कि भई ये मेरे से बड़ा है। इतनी दीनता हो फिर दरगाह में जा सकता है, ऐसे नहीं।

जब इहु मन महि करत गुमाना॥ तब इहु बावरु फिरत बिगाना॥
जब इहु हूआ सगल की रीना॥ ताते रमईआ घटि घटि चीना॥

यह तो हस्ती मिटाने का मार्ग है। सोचो! डाक्टर बनने के लिए डाक्टरी के सारे गुण हों तभी बन सकता है। इंजीनियरिंग के लिए सभी गुण हों तभी बन सकता है। मालिक का रूप बनने के लिए मालिक के सारे गुण अन्दर पैदा करे तभी है। वो सबका मालिक है। सबका मालिक होते हुए उसकी कोई निशानी है इस दुनिया में? सोच लो! कोई निशानी है? कोई गालियां निकाले किसी की रोटी उसने बन्द की! बस इसी तरह अपनी हस्ती को मिटाये तब मालिक का रूप बन सकता है। ऐसे नहीं। कबीर साहब ने नम्रता का बहुत अच्छा नमूना लिखा है–

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु॥
अैसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु॥

कि रास्ते का रोड़ा बन जा, हर एक की ठोकर खा। फिर कहता ये भी नहीं। रोड़े से किसी के पांव में चोट लगेगी, दूसरे को दुःख होगा। तू खेह बन जा। फिर कहता ये भी नहीं। खेह से कपड़े ख़राब होंगे, हाथ पांव ख़राब होंगे। कहता साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहता ये भी नहीं। किसी को ठण्डे पानी की ज़रूरत है गर्म मिल गया यह भी दुःख, गर्म की ज़रूरत है ठण्डा मिल गया यह भी दुःख।

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ।
हरिजनु अैसा चाहीअै जैसा हरि ही होइ॥

जैसे उसने अपनी हस्ती को मिटाया है ऐसे यह भी मिटाये तब मालिक का रूप बन सकता है ऐसे नहीं। शेख सादी साहब ने एक जगह लिखा है कि

मैं कीड़ी की तरह बन गया हूँ। मैं भरिण्ड नहीं जो किसी को डंक मारूं ऐसी कीड़ी बना हूँ कि पैरों के तले सब रौंदते जायें। सबकी चरण धूल बन।

''दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई॥''

अपनी हस्ती को मिटाये, सबका दास बने। तब मालिक की दरगाह में जा सकता है ऐसे नहीं जा सकता। 'गरीबी गदा हमारी' वो बाहर के हथियार हैं, सोचो! ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के हैं। ये बाहर की लड़ाइयों के हैं। अन्दर की लड़ाइयों के शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी हैं। गुरु अर्जन साहब कहते हैं–

'गरीबी गदा हमारी॥ खना सगल रेनु छारी॥'

सब की चरण धूल बनना ये खंडा है।

'इसु आगै को न टिकै बैकारी ॥'

कौन से विकारी? ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।

'गुर पूरे ऐह गल सारी॥'

हमारे सतगुरु ने यह बताया है कि ये हथियार पहनों तब मालिक की दरगाह में जा सकते हैं। इधर बागड़ में एक शब्द बोलते हैं।

साधो भाई बन जाओ वीर लड़ाका।
यम नै मार जीत जाओ युद्ध में फिर खेलो ज्ञान झड़ाका।

'काम को मारो, क्रोध को मारो। इनकी बजाय शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज धारो'। कहते हैं तब जा सकते हैं ऐसे नहीं। ये लड़ाई करनी थी आकर। किसी का दिल दुखाया, किसी का मन्दिर गिराया, किसी को ताना दिया, किसी को बुरा-भला कहा। अगले का दिल दुखा तो भजन सिमरण कहां रहा?

खलक खालक की जानकर, खलक दुखावै नाहिं।
खलक दुखै नंदलाल जी, खालक कौपे ताहिं॥

एक मुसलमान फकीर ने लिखा है–'मय खुर बसोज'–कि हमारे शराब नाजायज़ है वो भी बेशक पी ले 'मसेहत बसोज'–कुरान शरीफ आसमानी किताब है उसको भी बेशक आग लगा दे। 'ब आतिश अन्दर काबा जन'–बेशक काबे को भी साड़ दे 'हर चे खुबाही कुन व'–और भी कोई गुनाह तू करता है तो बेशक कर; उसको तो शायद माफ कर दे अल्ला। 'लेकिन मरदम आजारी मकुन'–किसी का दिल न दुखा। उसको वह मंजूर नहीं करेगा। सोच लो! किधर जा रही है दुनिया। मज़हबी ठेकेदार किधर जा रहे हैं। हाँ जीः

पाठी– हउ घोली हउ घोलि घुमाई, गुर सजण मीत मुरारे जीउ। (मः 5/96)

मैनेजर साहिब जी– 'गुर सजण मीत मुरारे जीउ' मुरारी क्या है? राक्षसों को मारने वाला। मुरारी कहते हैं राक्षसों को मारने वाला। यही राक्षस काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। उनके हुक्म के मुताबिक चलेगा तब मरेंगे ऐसे कैसे मरेंगे? कमान्डर हुक्म देता है तो फौज तरक्की कर लेती है, दुश्मन को फतह कर लेती है। वो सन्त कमान्डर हैं। वो जैसे हुक्म करें वैसे चलें तो ये भी काम, क्रोध, पर फतेह हासिल कर ले। हाँ जीः

जे सौ चन्दा उगवै सूरज चढ़े हज़ार।
ऐते चानन हुंदिआं गुर बिना घोर अंधार॥

पाठी– इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता॥
हुणि कदि मिलिऐ प्रिअ तुधु भगवंता॥
मेरा मनु लौचे... (मः 5/96)

मैनेजर साहिब जी– जिसको सच्ची तड़प है वो एक मिनट भी बर्दाश्त नहीं कर सकता सतगुरु के दर्शनों के बिना; सन्तों के दर्शनों के बिना। सोच लो! कहते हैं एक मिनट नहीं मिलते थे तो मेरे लिए तो कलयुग था। अब मुदतें निकल गयीं, ऐसा क्या कसूर हो गया? जब पहली चिट्ठी लिखी तो उन्होंने सिक्ख के हाथ भेजी। तो पृथ्वी चन्द ने छुपा ली और सिक्ख को कहा कि गुरु साहब ने हुक्म दिया है कि चला जावे; उनको कहे कि थोड़ी देर और ठहरो, अभी नहीं फिर बुलायेंगे। जब दुबारा भेजी वो भी छुपा ली। उनको शक पड़ गया। गुरु अर्जुन साहब ने कहा कि मुझे शक पड़ गया है यह-यह बात है। तो उन्होंने कहा ये चिट्ठी ले जा, देना ही गुरु साहब के हाथ में। जब ये चिट्ठी आयी तो उनकी आंखों में भी आंसू आ गये। प्रेम ऐसी चीज़ है। उसी वक्त बुला लिया। हाँ जीः

पाठी– मोहि रैणि न विहावै नींद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ॥
मेरा मन लोचै गर दरसन ताई ॥ विलप करे चात्रिक की निआई॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ॥
मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई ॥ विलप करे चात्रिक की निआई॥
(मः 5/96)

मैनेजर साहिब जी–बस उसी वक्त बुला लिया। आये, मत्था टेका, बैठ गये पास। उनसे पूछा कि यह चिट्ठी पर तीसरा नम्बर है पहली दो चिट्ठियां कहां हैं कि लिखा एक ही है। क्या बात है? लिखा इस पर तीसरा नम्बर है। कि जी आप अन्तरयामी हैं मैं तो कुछ नहीं बोल सकता पर मैंने पहले दो चिट्ठियां भेजी हैं। कहते वो कहां हैं? वो सिक्ख कहने लगा जी मैं तो पृथ्वी चन्द को देता रहा हूँ। पृथ्वी चन्द को बुलाया। वो कहता जी मुझे तो दी ही नहीं यह ऐसे झूठ बोलता है। नहीं भई यह झूठ नहीं बोलता, तू भूल गया होगा। नहीं जी कोई हुंडी तो नहीं थी। मैंने जो छुपाई है। मैं क्यों भूलता था और चीज़ नहीं भूलता? नहीं भूल गया होगा भई। नहीं जी। उसके दिल में तो ये था कि इसको गद्दी न मिल जाये मैं ही संभालूं। बल्कि उनको बात भी नहीं करने देता था। उसी वक्त टाल देते। सारे उसके बन गये जैसे बुल्ले के बने थे। सारे उसके बन गये भई बस जो है ये है, यही कार मुख्तियार है। तब गुरु रामदास ने कहा कि इसका कोट पड़ा है वहाँ से ले आओ चिट्ठियां। वो ले आया। कि अब इसको पूरा करो, ये तीन तो हो गयीं। कौन करे पूरा? जिसको तड़प होगी वही करेगा, कौन करेगा बोलो। उसका नतीजा क्या निकला? सुनो–यह तड़प है जो अन्दर ले जाती है बाकी कोई नहीं। उसी वक्त पर्दा खुल गया। क्या कहते हैं अब। हाँ जीः

महां पवित्र साध का संगु॥ जिस भेटत लागै प्रभ रंगु॥

पाठी– भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ॥ प्रभु अबिनासी घरि महि पाइआ।

(मः 5/97)

मैनेजर साहिब जी– हाँ! कहता सतगुरु ने मेहर की तो सन्त मिले, सन्तों के रूप में आकर मिला। बस तड़प थी परदा खुल गया 'प्रभु अबिनासी घरि महि पाइआ' अन्दर ही मिल गया। हाँ जीः

पाठी– सेव करी पलु चसा ना विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ॥
मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई॥ विलप करे चात्रिक की निआई॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई, जन नानक दास तुमारे जीउ॥

(मः 5/97)

मैनेजर साहिब जी– वह बोल तो, 'पर प्रीत निम्रता सेवा दे गल गहणे पानै किसे किसे'

पाठी– हर इक नूं ज्ञान बख्शदा एं क्यों कि तूं जग दा दाता एं॥
पर प्रीत निम्रता सेवा दे गल गहणे पानै किसे किसे॥
हर सिक्ख दा हर थाँ हर वेले, बण राखा सिर ते हत्थ रखदा॥
दोहा : गुर समरथ सिर पर खड़े काहे कमी तोहे दास।
रिद्ध सिद्ध सेवा करें मुक्ति न छाड़ें पास।
निरगुण तों सरगुण रूप वटा प्रगट हो दिखानै किसे किसे॥

मैनेजर साहिब जी–ऐसे तो सारे ही गुण काबिले तारीफ हैं लेकिन खास तीन हैं जो मालिक के साथ मिलाने वाले हैं। सबसे प्यार करना, नम्रता धारण करनी और सेवा भाव। जो ये गुण रखता है उन पर मालिक की मेहर है। उन पर खास मेहर है। जो सच्चे दिल से ये गुण ग्रहण करता है, जो सच्चे दिल से सेवा करता है उसकी मालिक हर तरह संभाल करता है। जो कौमों की करता है उनकी भी संभाल करता है, जो देशों की करता है उनकी भी करता है, जो सच्ची दिल से करता है, लेकिन असली सेवा का, असली नम्रता का, असली प्रेम का पता तब चलता है, फकीरों के संग में आकर। वो उस पर और खास मेहर है। 'निरगुण तों सरगुण् रुप वटा प्रगट हो दिखानै किसे किसे'। वो किसी विरले भागों वाले के हिस्से में आती है। जैसे गुरु अमरदास के हिस्से में आयी। इब्राहिम बादशाह के हिस्से में आयी। कबीर साहब के पास सोहबत में रहा। फिर वहाँ जाकर पता चलता है कि असली नम्रता क्या है? ऐसे तो सारे हाथ बांधते हैं। मैं छोटा हूँ कहते हैं, लेकिन दिल से निकले तब है। मिट्टी बन जाये। इसका नाम नम्रता है। मिट्टी बनने का नाम नम्रता है। प्रेम भी वही है। ऐसे तो सारे ही साध संगत की सेवा करते हैं। है तो तन की या विषय विकारों की, फिर भी मालिक उसमें बरकतें देता है। लेकिन जो असली है, वो प्रेम कोई और चीज़ है। असली सेवा कोई और चीज़ है। ये तन की सेवा, तन पाला। आत्मा की सेवा करे, उसकी आज़ादी का, उसके छुटकारे का बन्दोबस्त करे, ये सेवा है। ये किसी विरले के हिस्से में आती है। हाँ जीः

पाठी– सब इक दूजे दे कदमां ते, ढहंदे ने तेरा जादू ए।
तूं लाल बणा के सन्तां दी, धूड़ी च रुलानै किसे किसे।

मैनेजर साहिब जी– बादशाह इब्राहिम कबीर साहब पास आया। कहने लगा जी मैं आपकी सेवा में रहूँगा। तो उन्होंने फरमाया कि भई तू बादशाह, हम गरीब जुलाहे। यहाँ रोटी खाने को नहीं, ठहरने के लिए जगह नहीं, पहनने के लिए

कपड़ा नहीं, हमारा तुम्हारा क्या मेल? कि नहीं जी मैं सेवा करूंगा, मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। वो नम्रता से सेवा करता रहा। मिट्टी उठाता रहा, टट्टी उठता रहा। जब छः साल हो गये तो माई लोई ने कहा, कि कबीर! देख ये बादशाह, हम गरीब जुलाहे। हम भूखे हैं तो ये भी भूखा है। हमारे पास नीचे कपड़ा है तो इसके पास है। इसको कुछ बख्श। कहने लगे अभी लायक नहीं। अभी लायक नहीं हुआ। कि जी और क्या होगा? अच्छा तू यूं कर, कूड़ा करकट लेकर छत पर चढ़ जा। मैं इसको बाहर भेजता हूँ। तू इसके ऊपर कूड़ा डाल देना और छुप जाना। फिर देखना क्या कहता है? उसने ऐसा ही किया! कूड़ा लेकर ऊपर चली गई। उसने कहा पुत्र यह काम तो कर आ। जब वो बाहर निकला वो कूड़ा डालकर छुप गई। कहने लगा होता न बलख बुखारा मैं देखता मेरे ऊपर कौन कूड़ा डालता। सोचो ऐसे तो सारे नम्रता वाले हैं कि जी मैं छोटा हूँ, पीछे भी बैठता है। अन्दर ख्वाहिश होती है कि मुझे कोई आगे बिठाये, इज़्ज़त करे। उसने पूछा क्यों लोई क्या कहा! जी ऐसे कहा। कि अभी उसके अन्दर से बलख बुखारे के राज का अहंकार निकला नहीं। अब बारह साल हो गये कबीर साहब ने कहा अब भांडा तैयार है। अब बर्तन साफ है। उसने कहा जी मैं तो वैसे ही देखती हूँ। अब कबीर की तो आंख खुली थी, उस बेचारी को क्या पता था? कहने लगे पहले तो तूने कूड़ा डाला था। कि जी हाँ! अब टट्टी पेशाब घोलकर डाल दे। जब डाला तो कहने लगे, ओ पाने वाले! तेरा भला हो, मैं तो इससे भी बुरा हूँ। इसका नाम नम्रता है। तब मालिक आता है ऐसे नहीं।

गुरु अमरदास जी बारह साल सेवा करते रहे। बारह साल के बाद वो गागर पानी की लेने गये रात को दो बजे, गुरु अंगद साहब के नहाने के लिए। पानी ला रहे थे तो आंधी चल पड़ी। बारिश होने लगी, थोड़ी-थोड़ी बूंदा बांदी होने लगी। पैर फिसल गया, जुलाहे के खड्डे में गिर गये। सेवा इसका नाम है। जुलाहे के खड्डे में गिर गये। ख़्याल किया कि पानी न गिर जाये चोट बेशक लग जाये। सोचो! चोट बेशक लग जाये पर पानी न गिरे। गागर नहीं गिरने दी। जब खड़का हुआ तो जुलाहा-जुलाही जाग पड़े। जुलाहे ने पूछा यह क्या बात है? क्या खड़का हुआ है? कोई दीवार तो नहीं गिर गयी बारिश में, आंधी में? कहने लगी जी क्या होना है, क्या गिरना है? अमरू नथाना होगा और क्या? कि उसके गिरने से इतना खड़का! कि साथ गागर होगी। रिश्तेदारों के टुकड़ों पर पड़ा है और

क्या है? सुन लिया मगर दिल में ख़्याल ही कोई नहीं। आकर उसी तरह गुरु अंगद साहब को नहलाया धुलाया। सुबह पूछा कि रात अन्धेरी चली थी बारिश आई थी, कोई तकलीफ तो नहीं हुई। चुप! वो जुलाहे पागल हो गये, वो आये तो पूछा गुरु साहब ने, क्यों भई रात क्या बात हुई थी? कि जी ये बात हुई थी। बस उसी वक्त सब कुछ बख़्श दिया। कि यह नथावों का थां है। निओटियों की ओट है, निपत्तियों की पत्त है। इतनी नम्रता आये तब मालिक की रहमत आती है। बख्शने वाला भी वही है, आकर किसी चोले में बख्शता है ऐसे नहीं। सोच लो! किसी के अन्दर बैठकर ही सर्टीफिकेट देता है। बस ये सर्टीफिकेट भी किसी के चोले में बैठकर ही देता है ऐसे नहीं। बताते इसके अन्दर है इसके अन्दर काम करूंगा। वही बलख बुखारे का बादशाह था। बस उसको छुट्टी हो गयी। नाम का रस पीये! एक दफा बैठा था, गोदड़ी सी रहा था। कुदरती उसका वज़ीर आ गया। वज़ीर ने पहचाना क्योंकि काफी मुद्दत हो चुकी थी। पूछा तू इब्राहिम है। कि हाँ! कि मैं तेरा फलाना वज़ीर हूँ। तेरे लड़कों को पढ़ाया, लिखाया, जंग सिखाया, ये किया, वो किया। क्या अच्छा हो अगर तू अपनी बादशाही संभाल ले, मैं तेरा वज़ीर हूँ? इस हालत में पड़ा है। कहने लगा अच्छा! दरिया दजला का किनारा था। गोदड़ी सी रहा था। सूई ली और दरिया में फेंक दी। कहने लगा मेरी सूई निकाल दे, मैं तेरे साथ चला जाऊंगा। ये सूई तो निकलनी मुश्किल है, मैं हज़ारों सूईयां अभी आधे घण्टे में ला देता हूँ। कि नहीं मुझे तो वही चाहिए। कि ये तो मुश्किल है। उसने ज़रा सी तवज्जो दी, मछली सूई लेकर आ गयी। कि मेरे पास ये बादशाही है मैं तेरी बादशाही का क्या करूंगा? तेरी बादशाही को क्या करूंगा ये बादशाही है कि जानवर तक मेरे हुक्म में हैं। ये नम्रता अख्तियार करने पर है। एक फकीर ने लिखा है–

ख़ाक आप को समझना, अकसीर है तो यह है॥
इख़लाक सब से रखना, तसखीर है तो यह है॥

अपने आप को मिट्टी बनाना ये इकसीर है, ये रसायन है असली। सबको काबू में करना ये असली विषय मंत्र है जो काबू करने वाला है। 'नज़दीक आरिफों के तदवीर है तो यह है।

गुरमुखों के साथ रहे, उनकी सोहबत में, सन्तों गुरमुखों के साथ रहे।

सब काम अपना करना, तक़दीर के हवाले।
नज़दीक आरिफों के तदबीर है तो यह है।

सारा कुछ मालिक की मौज़ पर छोड़ दे और गुरमुखों के संग में रहे तब तू मालिक के पास जा सकता है। यही गुरु अमरदास ने लिखा है–

गुरमुखि सिउ करि दोसती सतिगुर सिउ लाइ चितु॥
जनम मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मितु॥

अन्दर सतगुरु से प्रीत कर, गुरमुखों की सोहबत कर, उनसे प्रीत कर, तब जन्म मरण के बन्धन छूटेंगे।

वीरां किया जब आप को, बस्ती नज़र पड़ी।
जब आप नेस्त हम हुए हस्ती नज़र पड़ी॥

कहता जब अपने आपको बर्बाद किया तो एक नई ज़िन्दगी मिल गयी। एक नई हस्ती पैदा हो गयी। सोच लो ये हस्ती मिटाने पर है।

देखा तो खाक सारी ही आली मुकाम है।
ज्यों ज्यों बुलंद हम हुए, पस्ती नज़र पड़ी।

फकीरों की तामील पर तो किसी ने अमल ही नहीं किया। सोहबत भी करते हैं मगर फायदा कोई नहीं उठाता! कोई विरला अमल करता है। उमरें गुजर जाती हैं। उमरें गुजर जाती हैं पूरा फायदा कोई नहीं उठाता, ऐसे हस्ती को मिटाये। हाँ पढ़–खाक आपको समझना। हाँ जीः

पाठी– खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है।

मैनेजर साहिब जी–ये असली रसायन है जो सब बीमारियों को दूर करती है।

इख़लाक सबसे रखना, तसख़ीर है तो यह है॥

ये सबके दिल काबू करने का मंत्र है। दुश्मन से प्रेम करे, उनके साथ भी दीनता से बरते। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है–

अशायशे दो गीतो, ईं दो हरफ असल।
बा दोस्तां मरब्बत, बा दुश्मनां मदारा।

कि अगर तू ज़िन्दगी सुख और चैन से गुज़ारना चाहता है तो दो बातें अख्तियार कर ले, दोस्तों पर अहसान करता जा और दुश्मनों से मोहब्बत से पेश आ, बस। हाँ जीः

पाठी– सब काम अपना करना, तक़दीर के हवाले।
नज़दीक आरिफों के तदबीर है तो यह है।
वीरां किया जब आप को बस्ती नज़र पड़ी।
जब आप नेस्त हम हुए हस्ती नज़र पड़ी।

मैनेजर साहिब जी– जब ये ज़िन्दा मरा, इस देह से निकला, अजीब जिंदगी मिलती है इसको। अजीब बस्ती! इसके अन्दर सब कुछ दिखाई देने लग जाता है। देवी देवते इसके अंदर हैं। ब्रह्म पारब्रह्म इसके अन्दर हैं, चांद सूरज इसके अन्दर हैं। तीर्थ इसके अन्दर हैं; सब कुछ दिखाई देने लग जाता है।

अवधू अन्धा धुन्ध अन्धियारा ॥ कोई जानेगा जाननहारा॥
या घट भीतर बन और बस्ती, याही में झाड़ पहारा।
या घट भीतर बाग बग़ीचा, याही में सींचन हारा।
या घट भीतर सोचा चांदी, याही में लगी बजारा।
या घट भीतर हीरा मोती, याही में परखन हारा।
या घट भीतर सूरज चन्दा, याही में नौ लख तारा।
या घट भीतर सात समुंदर, याही में नदिया नारा।
या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुर द्वारा।
या घट भीतर आये लेत है राम कृष्ण अवतारा।
कहें कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा।

सब कुछ इसके अन्दर है।

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला।
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला।
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बजारा। (मः 3/754)

सब कुछ इसके अन्दर है सोच लो!

काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा।
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा। (मः 3/754)

चक्र भी आप ही डाला है; चक्र में भी आप ही डाला है। सब कुछ इसके अन्दर है, कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो।

या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिढ़नारा।

वो प्रयाग, वो काशी मथुरा, वो अमृतसर इसके अन्दर है।

काइआ अंदरि अमृतसरु साचा मनु पीवै भाई सुभाई हे।

वो तीर्थ जो आत्मा की मैलें साफ करता है, इसके अन्दर है। सब कुछ इसके अन्दर है। सब कुछ दिखाई देने लग जाता है। यह ज़िन्दा मरने का सवाल है। हस्ती मिटावे, तब मिलता है ऐसे नहीं। देख लो–दाना गल सड़ के बन गया, फिर बूटा पैदा हो गया। बस इसको भी नई ज़िन्दगी मिल जाती है। हाँ जीः

पाठी– वीरां किया जब आप को बस्ती नज़र पड़ी।
जब आप नेस्त हम हुए हस्ती नज़र पड़ी ॥
देखा तो खाकसारी ही आली मुक़ाम है।
ज्यों ज्यों बुलंद हम हुए पस्ती नज़र पड़ी ॥

मैनेजर साहिब जी–'ज्यों ज्यों बुलंद हम हुए पस्ती नज़र पड़ी।' जब अहंकार में ज़रा भी हुआ, गिरा, बस खत्म! ज़रा भी अहंकार किया बस। अहंकार को तो जगह ही नहीं।

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु।
नानक निहफल जात तिहि जिउ कूंचर इसनानु।
'कीया कराइया सब गया जब आया अहंकार।'

ये होमै ही है जो चौरासी में लिए फिर रही है।

हउ विचि आइया हउ विचि गइया॥
हउ विचि जंमिया हउ विचि मुआ॥

यह खत्म नहीं होती जब तक अन्दर शब्द गुरु न आये। फिर देखता है सबके अन्दर कर रहा है काम! फिर हउमैं खत्म होती है, नहीं तो नहीं होती। तालीम तो सबकी एक ही है–चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो। ऐसे ही लड़ लड़कर मर गई सारी दुनिया। असली तालीम ही छोड़ बैठे हैं। दादू साहब कहते हैं–

दादू है को भय घना, नाहीं को कुछ नाहीं।
दादू नाहि हो रहो अपने साहिब मांहि॥

असली तालीम सब छोड़े बैठे हैं। अगर अन्दर कोई ख़्याल, सतगुरु का ख़्याल करता भी है वो दुनिया की ख्वाहिशें पड़ी हैं। हाँ जीः

पाठी– तू लाल बनाके सन्ताँ दी धूड़ी च रुलानै किसे किसे।

मैनेजर साहिब जी– कितने आये गुरु नानक साहब के पास बोलो! आये भी तो कितने ठहरे पास। मरदाना रहता हुआ कितनी दफा भागा बोलो। सोचो कितनी दफा भागा! देख लो पहले तो आना ही मुश्किल है! कोई नसीबों वाला आयेगा। फिर नाम नहीं ले सकता। नाम कोई उससे भी नसीबों वाला लेगा। फिर ये पास नहीं ठहर सकता। अगर ठहरेगा भी, फिर ये काम, क्रोध, फिर भी नहीं छोड़ते। खाने-पीने में फिर फंस जाता है इसी तरह। कोई विरला निकलता है। तभी उन्होंने लिखा हैः–

कहु नानक कोटिन मैं कोऊ भजनु राम को पावै ॥

फिर वैसे अहंकार हो जाता है। मैं पास रहता हूँ। हाँ जीः

पहले दाता सिक्ख भया जिन तन मन अरपा सीस ॥

ये देना मुश्किल है, बस। तन का प्यार छोड़ना मुश्किल है। विषय विकार छोड़ने मुश्किल हैं। खाना-पीना छोड़ना मुश्किल है। नींद छोड़नी मुश्किल है। अगर ये छोड़ दे तो सब कुछ तैयार है। हाँ जीः

पहले दाता सिक्ख भया जिन तन मन अरपा सीस॥
पीछे दाता गुर भये, जिन नाम किया बख्शीश ॥
दोहा– मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतवा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है।
पाठी– पंड महजबां, करमां, धरमां दी लाह सबनू हौले कर देनै।
अपने जेहा हौला फुल बना अपने 'च मिलौनै किसे किसे।

मैनेजर साहिब जी– जब फकीरों के संग में आता है तब पता चलता है यह सारा कूड़ है। ये कौमी, मज़हबी, झगड़े सब कूड़ है। ये रास्ता ठीक है। वहाँ फिर फंस जाता है। हमारा रास्ता ठीक है, बस उसी के साथ बंध गया। सब दुनिया के मज़हब इसी तरह बंध गये। बस इसी तरह एक और फिरका बन गया। इसी तरह कितने बन गये। ये बंधे का बंधा ही रहा। सब बंधन हैं बाहर।

बँधन मात पिता संसारि ॥ बँधन सुत कंनिया अरु नारि॥
बँधन करम धरम हउ कीआ ॥ बँधन पुत कलत्र मनि बीआ॥

सब बन्धन ही बंधन हैं। किसी को लोक लाज का, किसी को कोई, किसी को कोई। सब बन्धन में फंसे पड़े हैं। बन्धन ही छूटने मुश्किल हैं। मोटे बन्धन तो ये हैं जो ज़्यादा मजबूत हैं; तन का, मन का, धन का, बस ये। ये छोड़ने मुश्किल हैं। कहते हैं ये तो छोड़े मज़हबी, फिर दूसरा बन गया मज़हब। हम सच्चे सौदे वाले हो गये बस फंस गया। मैंने नाम लिया बस। मस्ताना जी कहते थे, नाम ले लिया तो क्या आसमान तोड़ दिया, कमाई न की! अन्दर चीज़ प्रकट करे फिर है। नाम तो ये है जो मीरां ने कहा है–

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया, किण विधि फिरूं मैं अपूठी ॥

सांकड़ी गली क्या? ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, यहाँ सांकड़ी गली है।

''मुकति दुआरा संकुरा राइ दसवैं भाइ।''

गुरु नानक साहब कहते हैं–

''राह खुदा भीहावला वालों दसवें भाइ॥''

बाल से भी बारीक रास्ता है। इतनी नम्रता अख्तियार करे। बाल से भी बारीक बने तब जा सकता है मालिक की दरगाह में। इसका नाम है भजन करना, इतनी नम्रता अख्तियार करे, अन्दर सतगुरु को प्रकट करे, सांकड़ी गली में जाये। हाँ जीः

पाठी– एह दुर्लभ हीरा दुनिया विच, सस्ते भा लुटाई जाना एं।
पर असल मुल ते गुण सिफतां, हिरदै 'च वसानै किसे किसे।
जितना कोई तैनू समझया ऐ, उतना ही भाणा मनदा ए।

मैनेजर साहिब जी– हम पढ़ते थे। स्कूल जा रहे थे। वहाँ आदमी बातें कर रहे थे, कि एक तीतर बोला। एक आदमी ने कहा भई क्या कहता है? एक पंसारी जा रहा था वो कहता ये कहता है नून, तेल, अदरक। एक पहलवान जा रहा था वो कहता नहीं, ये कहता है, खा घी, कर कसरत। एक कोई और जा रहा था उसने कुछ और बताया। एक भक्त जा रहा था कहने लगा नहीं ये कहता है भगवान तेरी कुदरत। अब जैसे-जैसे ख़्याल थे वैसा मतलब निकाला। इसी तरह फकीरों के संग में भी रह कर एक वचन वो बोलते हैं। कोई विरला उठाता है असली चीज को! वो अपना अपना मतलब जैसे मन है वैसे उठा लेते हैं; उसका वैसा ही मतलब निकाल लेते हैं। एक दफा रखा राम के वहाँ सत्संग हो रहा था। सुनो भई याद है रखा राम के सत्संग हो रहा था। तो मस्ताना जी ने फरमाया, देखो भई ये वचन एक आदमी समझा है इसको बाकी कोई नहीं समझा, इसको बाकी कोई नहीं समझा। साफ कह दिया। कोई विरला समझता है। बस इसी तरह जहां-जहां ख़्याल जाते हैं वैसा मतलब निकाल लेते हैं। इसी तरह बाणी का हाल है। असली वो है जो अन्दर जाते हैं। वो बाणी को समझते हैं बाकी किसी को पता नहीं। भाई गुरदास ने तो इसका फैसला ही कर दिया है।

वेद ग्रन्थ गुरु हट है जित लग भवजल पार उतारा॥
सतिगुरु बाझ न बूझिऐ जिचर धरे न गुर अवतारा॥

जब तक वो आप ही आदमी का चोला पाकर न आये कोई समझाने वाला ही नहीं। ये ऊंची वाणी है तभी तो ज्ञानियों के झगड़े हैं। ये झगड़े ही ज्ञानियों ने डाले हैं। ज्ञान लड़ाई है और क्या है? वो कहता ये ठीक है, वो कहता ये ठीक है। एक ज्ञानी है उसने अर्थ लिखे हैं वो कहता है इसका अर्थ यह भी

हो सकता है, यह भी हो सकता है, ये भी हो सकता है। जब तीन दे दिये तो ठीक न हुआ? खुद ही लिखता है तीन, सही पर ज्ञान तो न आया? ज्ञान तो यह है।

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलया,

बस इसका नाम ज्ञान है।

सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई।

जिसने अन्दर रस ले लिया उसका नाम ज्ञानी है।

होर सब गल्लड़ियां, इक अल्ला अल्ला दी गल्ल।
कुछ रौला पाइआ आलमा, कुछ कागजां दी झल॥

सवाल तो मालिक को अन्दर प्रकट करने का था। ज्ञानों में झगड़-झगड़ कर मर गई सारी दुनिया। हाँ जीः

पाठी– जितना कोई तैनू समझया ए उतना ही भाणा मनदा ए।

दोहा– मंनै पावहि मोखु दुवारू॥ मंनै परवारै साधारू॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख॥ मंनै नानक भवहिन भिख॥

शब्द– सिर ताज टिका के हुकम मनण दी जाच सिखानै किसे किसे।
जिस नाल वी शादी करना एं, रानी ताँ ओह अखवांदी ए।
तूं दरजा दे पटरानी दा, पीहड़े ते बिठानै किसे किसे।

मैनेजर साहिब जी– रानियां तो कितनी ही होती हैं बादशाह के पास। कहता है, पटरानी तो कोई विरली है। इसी तरह नाम तो सब ले लेते हैं लेकिन 'पीहड़े के' मालिक के दरगाह में कौन जाता है कोई विरला जो अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करता है वो जाता है वो पटरानी है, वो रूह है। वो मालिक की दरगाह में जाती है। वो मालिक का काम करती है। हाँ जीः

पाठी– इस दुनिया विच दो दुनिया ने, इक जागदियाँ इक सुतियां दी।
तू जागदियां चों हर बेले, चेतन वणानै किसे किसे।
पर प्रीत नम्रता सेवा दे...

मैनेजर साहिब जी–पहले तो दुनिया सोई पड़ी है कोई होश नहीं मालिक की! अगर है तो विषय विकारों में फंसा पड़ा है। उससे वो जागे जिन्होंने बाल बच्चों की सेवा की। उससे वो जागे जिन्होंने दूसरों की सेवा की। उससे वो जागे जिन्होंने कर्म-धर्म वगैरह किये। उससे वो जागे जो सन्तों के पास गये। उससे वो जागे

जो सन्तों के पास नाम लेकर कुछ जपने लगे। असली वो जागे जिन्होंने सिमरण करके अन्दर शब्द गुरु को प्रकट कर लिया। वो हमेशा के लिए जागते हैं।

इक जागन इक जाग न जानण, इक जागदियाँ ही सुते हू।

हम सोये पड़े हैं मालिक की तरफ से।

इक जागन इक जाग न जानण इक जागदियां ही सुते हू।
क्या हुआ जो घुगु जागे, जो लैंदा साह अपुठे हू।
मैं कुरबान तिन्हाँ तों बाहू जिना खूह प्रेम दे जुते हू।

हर वक्त जो खूह प्रेम के जोते हैं उन पर कुरबान हूँ। कहता है इसका नाम असली जागना है। चाहे सोया पड़ा है अन्दर लिव लगी पड़ी है। इसका नाम जागना है। अगर जागता है तो क्या हुआ? विषय विकारों में फंसा पड़ा है। कभी इधर भागा, कभी इधर भागा! मालिक का ख़्याल ही नहीं आया। हाँ जीः

पाठी– कई मेरे वरगे मूर्ख ही, तक्क जिस्म भुलेखा खाँदे ने।
ला ऐनक प्रीत भरोसे दी, अख्ख ठीक बनाणै किसे किसे।
पर प्रीत नम्रता सेवा दे...

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'रामा रम रामो सुनि मनु भीजै'

सत्संग के वचन

पाठी– रामा रम रामो सुनि मनु भीजै॥
हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– यह गुरु रामदास का शब्द है। फरमाते हैं कि सबसे बड़ी बन्दग़ी, सबसे बड़ी भक्ति क्या है? मन को काबू करना। असली भक्ति है मन को काबू करना। अगर हम सब मज़हबों के ग्रन्थों का निचोड़ निकालें तो उसका नतीजा यह है, क्या? कि हमारे और मालिक के दरम्यान अगर कोई पर्दा है तो मन का है। यह पर्दा उठ जाये मन काबू आ जाये तो मालिक सामने आ जाये। ये हमारा दुश्मन है। ये काल का एजेंट है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

मन मैंगलु साकतु देवाना॥ बनखंडि माया मोहि हैराना॥
इतु उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥

कि मन एक मस्त हाथी की तरह है जो मोह माया और विषय विकारों के जंगलों में भटकता फिर रहा है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी कौमों, मज़हबों के बखेड़े, कभी देशों के बखेड़े, कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में लिए फिर रहा है। वो मालिक इसके अन्दर है। जिसको भी मिला है मन का मुकाबला करके, मन को काबू करके, तब मिला है। सभी ग्रंथों का निचोड़ यही है, **तत्व ज्ञान मनो वासना नाश** क्या? मन को काबू करना, इन्द्रियों को वश में करना। जितने दुनिया के झगड़े हैं सब इसी ने पैदा किये हैं। जितनी बाहर की भक्ति हैं, सब इसी ने पैदा की है :

इहु मनु करमा इहु मनु धरमा॥ इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥

कर्म-धर्म इसी ने बनाये हैं। जितनी बाहरमुखी भक्ति है, सब इसी की पैदा की हुई है। हम इसी में फंसे पड़े हैं। मुसलमानों के बहत्तर फिरके किसने बनाये? इसी ने। सिक्खों के कितने फिरके बन गये! ईसाइयों के कितने बन गये? सोच

लो! सब मज़हबों का यही हाल है। कितने-कितने फिरके बन गए एक एक मज़हब के? किसने बनाये? मन बुद्धि ने। जितनी दुनिया की कार्यवाईयां हैं, मन ही कर रहा है। हम सब मन के कंट्रोल में हैं। जब तक मन वश नहीं, सारी दुनिया इसके मुतहित है।

मन अंतरि बोलै सभु कोइ॥ मन मारे बिनु भगति न होइ॥

जब तक मन काबू नहीं आता कोई भक्ति नहीं। ऐसे कितना ही कहे जाये कि मेरी भक्ति ठीक है। जब तक मन कंट्रोल में नहीं आता, कोई भक्ति नहीं।

मन अंतरि बोलै सभु कोइ॥ मन मारे बिनु भगति न होइ॥

मन का स्वभाव क्या है? **मन का सभाउ सदा बैरागी ॥** ऊपर ऊपर से बैराग दिखाता है ये : **मन का सभाउ मनहि बिआपी ॥** ये अपने दायरे से बाहर किसी को नहीं निकलने देता। रूह मन के वश में आयी हुई है। मन इन्द्रियों के वश में आया हुआ है, इन्द्रियां भोगों के वश में आयी हुई हैं, बस यही झगड़ा चल रहा है। मन को काबू करने के अनेक उपाय किये, सोच लो! अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किये, सोचो! पवनाहारी बने फिर भी काबू न आया। पूर्ण योगी हुये फिर भी काबू न आया। ये बड़ी हस्ती है। ये मन अगर ठीक अपनी स्टेज पर पहुँच जाये तो यही ब्रह्म है, यही दुनिया को चलाने वाला है। सृष्टि की रचना यही करता है। मालिक ने यह ताकत आप ही बनायी है। सारी दुनिया इसके मुतहित है। जिसने इसको काबू में किया वो फायदा उठा गया, वो असली भक्ति है। जितने कर्म-धर्म, जप-तप वगैरह हैं सब इसके बनाये हुए हैं। ये नहीं कि इसकी दवाई नहीं है, दवाई है। क्या? जो जो फकीर अन्दर गये उनकी कामयाबी का एक ही रास्ता है क्या? कि इसके अन्दर कुदरती तौर पर शब्द की धार आ रही है, नाम की धार आ रही है। उसमें अमृत है। हम उसको शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, ईसा ने वर्ड (Word) कहा है। मुसलमान कलमा कहते हैं कलामे इलाही कहते हैं। वेदों में नाद कहा है, गीता में कहा है, आकाशवाणी कहा है। इसमें ऐसा रस है कि उसके मुकाबले में कोई रस नही। और वो कब मिलता है रस? ये मन लज़्ज़त का आशिक है। बाहर कितनी ही लज़्ज़तें दो इसका पेट नहीं भरता। जितनी लज़्ज़तें देंगे उतनी तृष्णा बढ़ती है। बस इसको काबू करने के लिए यही है कि वो नाम का अमृत अन्दर हासिल करे, उसको पीये, ये सबके अन्दर है। वो कब मिलता है? जब ये देह से निकले। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे तब उस नाम से ताल्लुक पड़ता है। उस सत्त शब्द से ताल्लुक पड़ता है। जब उसको पीता है

फिर ये काबू आता है, नहीं तो किसी तरीके से काबू नहीं आता। देख लो! कितने-कितने जप-तप, तीर्थ-व्रत किये, काबू नहीं आया। अट्ठासी हज़ार साल तप किये, पवनाहारी बने, फिर भी काबू न आया। यही कहते हैं वो राम नाम रूप में, धुन रूप में, 'रामा रम' रमी हुई ताकत है। राम कहते हैं रमी हुई ताकत को, रमेता सो रामा। धुन रूप में, शब्द रूप में, नाम रूप में रमी हुई है। जब इसको सुनता है फिर काबू आता है, ऐसे नहीं। दबकर बैठ जायेगा मगर काबू नहीं आता। काबू तब आता है जब उसको सुनता है। इसका मतलब यह है कि राम जपने की चीज़ ही नहीं, कुछ सुनने की भी चीज़ है, सोचो! कुछ सुनने की भी चीज़ है 'सुनि मनु भीजै', वो राम सुनने की भी चीज़ है।

पाठी– हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– कि वो नाम, ये नाम लफ्ज़ नहीं, वो एक शक्ति है, जिसने सारी दुनिया रची है।

नाम के धारे सगले जँत॥ नाम के धारे खँड ब्रह्मण्ड॥
नाम के धारे आगास पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥

जितनी चीज़ है सब सृष्टि उसने रची है।

सबदे धरती सबदे आकास॥

शब्द कहो, नाम कहो, वो लिखने पढ़ने से परे है, लफ्ज़ नहीं।

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहीं जानता॥
निह अच्छर निंह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

वो अन्दर जाकर मिलता है। जब ख़्याल आंखों के पीछे इकट्ठा होता है तब उससे ताल्लुक पड़ता है। हम रोज पढ़ते हैं वाणी में :

सतिगुरु की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥
बँधन तोड़े मुकति होइ सचै रहै समाइ॥

कौन सी सेवा? ये सारे बन्धन तोड़े–तन के, मन के, धन के, लोक लाज के, देशों के, कौमों के सब बन्धन तोड़े, देह से भी निकले, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे फिर उस नाम से ताल्लुक पड़ता है। तब उन्होंने आगे लिखा है :

इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि बसै मनि आइ॥

इस दुनिया में है ही नहीं नाम। वो नाम अन्दर जाकर मिलता है।

काइया नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नाम पलै पाई॥
गुरमति करी खोज खजाई॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई॥

यही कबीर साहब कहते हैं–

घटि ही नाम की आस कर, दूजी आस निरास॥
वसै जो नीर गंभीर में, सो क्यों मरे प्यास॥

वो नाम इसके अन्दर है। वो अनुभव किया जा सकता है। अनुभव की चीज़ है। गुरु नानक साहब मिट्ठन कोट गये। वहाँ मियां मिट्ठा फकीर मिला। वह कर्मी-धर्मी था। जपी-तपी था। गुरु नानक साहब ने फरमाया मियां मिट्ठा, सच्चे नाम के बगैर जीव बन्धनों में रहता है छुटकारा नहीं, मुक्ति नहीं। वो कहने लगे कि सच्चा नाम क्या चीज़ है? तो गुरु नानक साहब ने फरमाया कि सच्चा नाम एक अमोलक वस्तु है जो कहने सुनने से परे है। अनुभव की चीज़ है। फिर भी कुछ तो बताओ, कुछ समझ में तो नहीं आता। गुरु नानक साहब कहने लगे कि सुन तुम्हें कुछ सुनाई देता है? तो कहने लगे कि नहीं। अब कर्मों-धर्मों से हिरदा साफ हो जाता है। अब हिरदा साफ था। गुरु नानक साहब ने ज़रा सी तवज्जो दी तो कहने लगे मुझे ऐसे मालूम होता है कि मेरे रोम-रोम में नाम की लहरें चल रही हैं। ''रोमि रोमि रविआ हरिनामु'' वो रोम-रोम में है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। जैसे करंट आ रही है बिजली की इस तरह वो कुदरती करंट है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। सब को ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। उसमें ऐसा अमृत है, ऐसी लज़्ज़त है।

फरीदा सकर खण्डु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु॥
सभे वस्तु मिठीयां रब न पुजनि तुधु॥

उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। कहते हैं, खांड मिट्ठी है, शक्कर मीठी है, गुड़ मीठा है, शहद मीठा है, भैंस का दूध मीठा है और और चीज़ें मीठी हैं मगर उसके मुकाबले में कोई मीठी चीज़ नहीं। जब वो लज़्ज़त लेता है दुनिया की सारी लज़्ज़तें फीकी लगने लग जाती हैं। जब फीकी लगने लगीं तो इसकी आशा-तृष्णा खत्म हो गई। जब आशा तृष्णा खत्म हुई तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार वश में आ गये, मन काबू आ गया और कोई तरीका नहीं। पीया कैसे जाता है?

पाठी– हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– ऐसे तो अनेक मत हैं, असल दो मत हैं–गुरमत और मनमत। सारी दुनिया मनमत में है। सारी दुनिया मनमुख है, मन के अधीन है। मनमुख कौन है? 'से मनमुख जो सबदि न पछाणै' ॥ जिन्होंने नाम की लज़्ज़त नहीं ली, शब्द की लज़्ज़त नहीं ली, वो अमृत नहीं पीया वो मनमुख हैं। जिसने पीया है वो गुरुमुख है।

गुरमुखि जाता करमि विधाता ॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता॥
गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे॥

जो शब्द में समा गये, शब्द की लज़्ज़त ली, नाम की लज़्ज़त ली, वो गुरुमुख हैं। उनके ज़रिये हम सीख सकते हैं। यही पलटू साहब कहते हैं :

सन्त सनेही नाम हैं नाम सनेही सन्त॥
नाम सनेही सन्त, नाम से वही मिलावें॥
वह हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें॥
जप तप तीरथ ब्रत करे बहुतेरा कोई,
बिना वसीले सन्त नाम से भेंट न होई॥
पलटू एह है प्राण पर आदि सेती और अन्त।
सन्त सनेही नाम है, नाम सनेही सन्त॥

युगों युग से एक ही कानून है कि जब नाम मिलना है सन्तों के ज़रिये।

जिस वखर कउ लैनि तू आइआ। राम नामु सँतन घरि पाइआ।

उनके ज़रिये अन्दर प्रकट किया जाता है। यह प्रेक्टिकल (Practical) कोर्स है जो करे। यह बातों की चीज़ नहीं, अमल की चीज़ है, कुर्बानी की चीज़ है, ज़िन्दा मरने का सवाल है। हाँ जीः

पाठी– रामा रम रामो सुनि मनु भीजै॥
हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– रात भी गुरु अमरदास का ही शब्द था प्रेम का, रात सुनाया था कि गुरु अमरदास के दो लड़के थे, दो दामाद थे। हर एक चाहता था कि गद्दी मुझे मिले। उन्होंने आजमाइश शुरू कर दी, क्या? कि सब आदमी सब संगत अपनी अपनी मिट्टी लाये और अपने-अपने चबूतरे बनाये। चुनांचे चबूतरे बनाये गये। जब बन गये तो कहने लगे कि यह जगह ठीक नहीं। यहाँ से उठाओ वहाँ पर बनाओ। वहाँ पर बनाये। ये भी जगह ठीक नहीं यहाँ से उठाओ। तीसरी जगह तबदील कर दी। कहने लगे यह भी ठीक नहीं। फिर चौथी जगह तबदील कर दी। सारी संगत भाग गई। एक गुरु रामदास रह गये। कहते हैं कि सत्तर बार चबूतरे बनाये। प्रेमियों ने कहा (बाकियों ने जो भागे थे) कि गुरु साहब की अकल कायम नहीं रही। सत्तर साल के बाद आदमी की अकल कायम नहीं रहती। ऐसे ही जान मारते हैं छोड़ दे परे। वो कहने लगे कि अगर सन्तों की अकल कायम नहीं जिनके अन्दर सतगुरु प्रकट है, सतगुरु काम कर रहा है तो दुनिया में किसी की भी कायम नहीं। अगर

मेरे से सारी उम्र चबूतरे बनवाते रहें तो मैं बनाता रहूँगा। इतना मुकाबला किया उन्होंने। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि ऐसे भक्ति करे, ऐसे सेवा में रहे कि जैसे घोड़े पर कोई सवार होता है। घोड़ा कहता है कहां तक ले जायेगा भई। जहां तक धरती है, वहाँ तक ले जायेगा और कहां तक ले जायेगा। बस यही ज़िन्दगी का सवाल है, 'ये जन्म तुम्हारे लेखे'। फिर उसको मिलता है ऐसे नहीं। लगा रहे तब मन काबू आता है, ऐसे नहीं। हम तो समझते हैं हमने मन वश कर लिया। दो दिन रोटी न खाई, अच्छी तरह रोटी न खाई, नींद न की तो समझते हैं कि मन काबू आ गया। ऐसे नहीं काबू आता। फकीरों ने आखरी दम तक इसका विश्वास नहीं किया। मस्ताना जी फरमाया करते थे, ''इस बला ते सतगुरु ढके'' आखरी दम तक, आखरी दम तक।

मैं जानू मन मर गया, मर कर हुआ भूत।
मोये पीछे उठ खड़ा, ऐसा मेरा पूत ॥

ये ऐसी बला है। हाँ जीः

पाठी– कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै॥
राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– पहले जमाने में ये दीया सलाई तो होती नहीं थी। लकड़ी से कैसे आग निकालते थे? एक-दूसरे से घिसाते थे फिर चिंगारियां निकलती थीं, नीचे कुछ घास रख देते थे। इसी तरह वो राम सबके अन्दर है। कहते हैं जैसे लकड़ी में आग है जो घिसने से निकलती है। इसी तरह राम नाम एक जोत है, एक नूर है, एक तसल्ली है, सब के अन्दर है। जैसे वो घिसाने से निकलती है, जैसे ज़मीन में पानी है खोदने से निकलता है ऐसे वो राम नाम एक जोत है यह भी अन्दर खोदने से निकलती है; ऐसे नहीं। 'ततु गुरमति काढ़ि लईजै' वो एक जोत है, गुरमत से निकलती है। कोई गुरमत वाला फकीर मिले जिसने अन्दर जोत को प्रकट किया है, उसके ज़रिये हम सीख सकते हैं और कोई तरीका नहीं। जब तक मन बाहर फिर रहा है हम जोत को देख नहीं सकते, अन्दर नाम से ताल्लुक नहीं पड़ सकता।

जब लग सुरत सिमटै नहीं मन निहचल नहीं होई।
तब लग पीव परसै नहीं बड़ी विपत यह होई॥
'धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ जीवतु मरे हरि नामु बखाणै॥'

बाणी में लिखा है, क्या? कि ये ज़िन्दा मरे, क्या? देह से निकले तब उस

नाम से ताल्लुक पड़ता है। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे तब उस जोत से ताल्लुक पड़ता है। जब वो जोत हासिल की, अन्दर नाम को प्रकट किया तो ये नामधारी बना। उस नाम में जोत है। जब जोत प्रकट हुईः–

पूरन जोत जगै घट मै तब खालसा ताहि नखालस जाणै॥

फिर ये खालसा बनता है। फिर आगे चलने के काबिल बनता है। फिर अपने देश पहुँच सकता है, ऐसे नहीं। फिर खालसा बनता है। फिर नामधारी बनता है। फिर सनातनी बनता है। सोच लो!

अब मनु उलटि सनातनु हुआ ॥ तब जानिया जब जीवत मूआ॥

जब ज़िन्दा मरा, सत्त ताकत से ताल्लुक पड़ा, फिर मैं सनातनी बन गया। कबीर साहब लिखते हैं, आर्य का मतलब क्या है पाक, श्रेष्ठ। वो नाम का तीर्थ है जो सब मैलें साफ करता है। जब नाम से ताल्लुक पड़ा, उस जोत से ताल्लुक पड़ा। जब जोत में रूह प्रवेश करती है तो वहाँ काफी सफाई हो जाती है, फिर ये आर्य बनता है; फिर पाक-श्रेष्ठ बनता है। यही सच्चा सौदा है। उस नाम को प्रकट करना, उस जोत को देखना, इसका नाम सच्चा सौदा है। बाहर तो सब कूड़ है, सोच लो! बाहर तो सब फना है।

सच्चा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम॥
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥
इका बाणी इकु गुरु इको सबदि विचारि॥
सच्चा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

फिर सच्चे सौदे वाला बनता है। ये काम करना था आकर। अगर सनातनी बन गया, आर्य बन गया, खालसा बन गया, नामधारी बन गया फिर आगे चलने के काबिल बनता है। फिर मालिक की दरगाह में जा सकता है। ये तो पहला कदम है। हाँ जीः

पाठी– नउ दरवाज़े नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै॥
क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– ये शरीर जो है ये मालिक का मन्दिर है। ये मालिक का अपना बनाया हुआ है। बाहर के मन्दिर हमने बनाये हैं। ये मन्दिर मालिक का बनाया हुआ है इसमें वो आप रहता है। इसके बाहर नौ दरवाज़े हैं। (''नउ दरवाज़े नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुइजै ॥) ये मन्दिर के बाहर नौ दरवाज़े हैं। दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुंह का, दो टट्टी-पेशाब के। हम इनमें खेल

रहे हैं। इनमें बिचर रहे हैं। इनके काम कर रहे हैं। ये चलता फिरता मन्दिर है। ये आंखें रूह की खिड़कियां हैं, जैसे खिड़की से देखते हैं। ये चलता फिरता मन्दिर है। ईसा ने कहा है : ये आंखें रूह की खिड़कियां है।

Eyes are the windows of soul.

'नऊ दरवाज़े नवे दर फीके' इन सब में गन्द है। इनके ज़रिये और गन्द अन्दर डालते हैं। आंखों में गीड है, नाक में सींड है, कानों में मैल है, मुंह में थूक है। इनके ज़रिये गन्दे संस्कार और लेते हैं, क्या? आंखों के ज़रिये बीबीयों को देखते हैं, काम सताता है वो संस्कार छुपे बैठे हैं। दुश्मन को देखते हैं क्रोध आता है, डंडा उठाने को तैयार होते हैं। बच्चों को देखते हैं मोह सताता है, वो अन्दर संस्कार पड़े हैं। और चीज़ें देखते हैं। वो सारे संस्कार भी इसके अन्दर हैं। इसी तरह कानों के ज़रिये पैसे की बात सुनता है तो कहता है, मैं भी वहाँ जाकर पैसा कमाऊं। सब संस्कार इसके अन्दर आकर जमा हो गये। फिर ज़ुबान के ज़रिये खट्टे-मीठे रस लेकर ये संस्कार लेता है कि फलानी चीज़ खाई थी बड़ी स्वाद थी। अब खानी है, फिर उसके लिए चोरी करे, ठगी करे, कुछ करे, सोचो! नौ दरवाज़ों का ये हाल है। फिर ज़ुबान से बातें करता है। सबसे बुरी ये जीभ है, इसका स्वाद सबसे बुरा है। इसने बड़ों-बड़ों को मार दिया। शृंगी ऋषि ने साठ हज़ार साल तप किया, देख लो! पवनाहारी रहे, एक दफा दरख्त पर जीभ मारता था तो पानी पी लेता था। जहां वो जीभ मारता था बीबी ने जाकर ज़रा सा गुड़ लगा दिया। उस दिन दो जीभें मारीं। उसने कहा अब मैं काबू कर लूंगी। फिर कोई और स्वाद की चीज़ लगा दी। कभी प्रसाद ले गई, कभी कुछ ले गई। जंगल में तीन बच्चे पैदा किये, सोचो! जंगल में तीन बच्चे पैदा किये! ज़ुबान ऐसी बला है। जिसने ज़ुबान को काबू में कर लिया समझो सब कुछ काबू में कर लिया। ये रस सबसे बुरा है :

जीभा के जीते बिना, जनम गये सब हार।
चरन दास यूं कहत है, भये जगत में ख्वार॥

और नहीं तो प्रसाद के बहाने ही खा जायेगा। फकीरों ने तो खोल-खोल कर लिखी हैं बातें।

आहार करे मन भावना, जीभे के रस स्वाद।
नाक तलक पूरन भरे, कोउ कहिये प्रसाद ॥

ये सबसे बुरी है। सबको इसने काबू किया हुआ है। साध संगत में आकर इनके भेद का पता चलता है। वो हमें इन चीज़ों से हटाते हैं कि ये रास्ता छोड़

दे, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा कर, जब यहाँ आयेगा 'रसु अंम्रितु दसवे चुइजै' वो दसवां अन्दर खुलता है वहाँ अमृतसर है। वहाँ से मालिक के घर का रास्ता मिलता है, यहाँ आये तो पीये। बाहर पी-पीकर तो कुछ नहीं बनता। बाहर अमृत पी पी कर थक गये। खा-खाकर थक गये किसी का कुछ बना? मन काबू आया? जब वो रस पीता है फिर काबू आता है ऐसे नहीं। ये मेहनत की चीज़ है, कमाई की चीज़ है। दिन रात मन से लड़े हैं तब हासिल किया है ऐसे नहीं। हम चाहते हैं ऐसे ही मिल जाये। खा भी लें, सो भी लें, ऐसे नहीं मिलता। हाँ जीः

पाठी– नउ दरवाज़े नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै॥

क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– मालिक के आगे विनती करते हैं कि ऐ मालिक! मुझे वो साधन बता जिसके ज़रिये तेरा रस ले सकूं, वो शब्द का रस ले सकूं, वो रस पी सकूं। जब वो मेहर करता है तो कामिल साधू मिलता है। फिर उसके वचनों के मुताबिक ये भजन सिमरण करे। फिर भी ये मनमत जल्दी-जल्दी नहीं छोड़ता, देख लो! मरदाना सारी उम्र साथ रहा, कितनी दफा भागा, मनमत न छोड़ी। ये सबसे मुश्किल है, 'मन की मत तिआगहु हरिजन एहा बात कठैनी ॥' ये सबसे मुश्किल काम है। मस्ताना जी फरमाया करते थे, ''यहाँ समझाने वाले सब आते हैं, समझने वाला आता ही नहीं।'' देख लो! सब हमारे सामने होती रही हैं, क्यों भई? समझाने वाले सब आते हैं, सुनाने वाले सब आते हैं, सुनने वाला कोई नहीं आता। वचनों पर अमल करने वाला कोई भी नहीं। उनके वचन के मुताबिक, उनका वचन जो है उसके मुताबिक भजन सिमरण या सेवा हो तो फिर मन काबू आता है, ऐसे नहीं।

गुरमुखि दीसै सहज सुभाइ ॥ सेवा सुरत इक लिव लाइ॥

गुरमुख वो है जो वचनों पर चलता है। वो गुरमुखता का कोर्स कर सकता है। उनका वचन, चाहे घास खोदने का हुकम दें वो भी परम पद है, वो भी सचखंड है, वो ही मालिक के मिलने की भक्ति है असली। वो जानते हैं हमारी बीमारियों को कि कैसे दूर करनी हैं। जिसने तन से पाप किये हैं उससे तन से सेवा लेते हैं। जिसने मन से किये हैं उनसे वाणी का या कोई और काम लेते हैं। जिसने धन से किये हैं उनसे धन से सेवा लेते हैं। वो हिसाब से सेवा लेते हैं। वो जानते हैं कि किस तरह इसको निकालना है। हाँ जीः

पाठी– काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– ये काइआ देखने को तो 5-6 फुट की है। मालिक ने सब कुछ इसके अन्दर रखा है। सब सौदे इसके अन्दर रखे हैं, सब दुकानें इसके अन्दर हैं। सब दुकानें खोल रखी हैं, कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो। जैसे बाजार में जाओ सब दुकानें हैं, ये भी बड़ा बाजार है।

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला।
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा।
काइआ अंदरि ब्रह्मा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा॥
सचै आपणा खेलु रचाइया आवा गउणु पासारा॥ (मः 3/754)

सब कुछ इसके अन्दर है। यही मुसलमान फकीर कहते हैं।

अँदर आं बहरो बियाबां व जबाल।
सकता में गरदन्द ओहामो ख़्याल।

कि इसके अन्दर बड़े-बड़े बियाबान हैं, समुन्द्र हैं, पहाड़ हैं, जिनकी बाबत हम वहम और ख़्याल भी नहीं कर सकते।

ईं बीयाबां दर बियाबां हाए ऊ।
हम चू अन्दर बहरे पुर यक तारे मू।

इसके अन्दर ऐसा खेल है, इसके अन्दर ऐसा खेल है कि ये जो दुनिया है उस खेल के मुकाबले में एक बाल जितनी भी नहीं। यही कबीर साहब कहते हैं :–

सौदा करै सो जाने साधो काया गढ़ खूब बाजार।
या काया में हाट लगाए बैठे शाहूकार।
या काया में चोर फिरत हैं लुच्चे ढीठ लबार।

सोचो! साहूकार भी इसके अन्दर हैं, चोर भी इसके अन्दर हैं। जैसे एक नगरी में बदमाश भी होते हैं, भले मानुष भी। इसी तरह भले मानुष भी हैं, बदमाश भी। बदमाश कौन से हैं? यही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। भले मानुष कौन से हैं? शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी। देवी-देवते, रिद्धियां-सिद्धियां अनेकों शक्तियां इसके अन्दर हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो। सब दुकानें इसके अन्दर हैं, जो करे। अगर काम, क्रोध करेगा तो बदमाशों के संग में है, बदमाश बनेगा। बदमाशों के लिए जेल है। सोचो! फिर ये कुत्ते की जेल, बिल्ली की जेल, ऊंट की जेल में जायेगा। शील, क्षमा, संतोष, धीरज वगैरह अख्तियार करे तो अन्दर शांती आएगी। देवी-देवताओं की पूजा करेगा तो देवी-देवते बन जायेगा। भूतों की

करेगा तो भूत बनेगा। पितरों की करेगा पितर बनेगा। जो उस राम नाम की करेगा वो छुटकारे का बन्दोबस्त कर लेगा। ये रस लेना था। जिसने ये रस ले लिया राम नाम का; उसका छुटकारा है। बाकी किसी का छुटकारा नहीं। इसने ये सौदा करना था आकर।

पाठी– काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– मस्ताना जी फरमाया करते थे–'देखो भई, तुमने लड्डू का रस लिया, जलेबी का लिया, अंगूरों का लिया, सेबों का लिया और और रस लिए लेकिन जो मालिक ने तुम्हारे अंदर रस रखा है, जो मालिक का बनाया हुआ है। (ये तो सारे काल के बनाये हुए हैं) जो मालिक का बनाया हुआ है वो रस न लिया तो तुम्हारे लिए लाहनत है। इस जन्म में आकर ये काम करना था। सब फकीरों ने जिन्होंने ये रस लिया, होका दिया कि तुम्हारे अन्दर रस है। तुम्हारे अंदर अमृत बरस रहा है, ये सौदा करो। कबीर साहब कहते हैं, क्या?

तेरी काया रहे अलमस्त नाम की पी ले रे बूटी।

यही दादू साहब ने कहा है :

कोई पीयो रे राम रस प्यासा।

गगन मण्डल में अमृत बरसे, उनमन के घर वासा॥

तुम्हारे अन्दर अमृत बरस रहा है वो पीयो। कोई पीने वाला हो। पीने वाला ही नहीं। वो लेते भी कुछ नहीं, वो मांगते भी कुछ नहीं। मुफ्त देते हैं फिर भी कोई पीता नहीं। फिर भी कोई नहीं पीता, मुफ्त देते हैं। लेते भी कुछ नहीं। सोच लो!

नाम रतन धन मुझ में खान खुली घट मांहि।

सीत मीत ही देत हूँ ग्राहक कोई नांहि॥

कबीर साहब कहते हैं, मुफ्त देता हूँ पर कोई पीने वाला नहीं। हाँ...

पाठी– काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु पीजै॥

रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– ये ऊंचे से ऊंचा सौदा है–रतन है, लाल है, अमोलक वस्तु है। क्या कहें कोई तारीफ कर नहीं सकते परन्तु कैसे मिलती है? सतगुरु सेवा क्या? सतगुरु को अन्दर प्रकट करने से मिलती है, नाम को अन्दर प्रकट करने से मिलती है। ऐसे नहीं। हम रोज़ पढ़ते हैं बाणी में।

सतिगुरु की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥

ये सेवा सफल है अन्दर सतगुरु को प्रकट करना। यह दात उसने अपने

हाथ में रखी है। जब ये सिमरण करके यहाँ आता है तो वो गुरमुखों के चोले में आकर मिलता है। फिर इसको असली नाम पकड़ाता है, असली शब्द पकड़ाता है। इसमें असली अमृत है। ऐसे तो अनेक शब्द हैं अन्दर। बुल्ले शाह ने कहा है। 'बजदे नाद हज़ार' अनिक अनाहद आनन्द झुनकार ॥

उन सबमें रस है लेकिन यह आला से आला रस है। सतगुरु सेवा क्या है? कैसी है? आगे बताते हैं :

पाठी– सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु अगम, मन बुद्धि की गमता से परे है। ऊंची से ऊंची चीज़ है। जितना ऊंचा है उतनी भक्ति की ज़रूरत है, 'भरि सागर' समुन्द्र जितनी भक्ति, सोचो!

ऐवडु ऊंचा होइ कोइ॥ तिसु ऊंचे कउ जाणै सोइ॥
गुर की सेव न जाणै कोई। गुरु पारब्रह्म अगोचरु सोई॥

गुरु पारब्रह्म, ब्रह्म से पार, अगोचर, मन इन्द्रियां के विषयों से परे है। इन आंखों से देखा नहीं जाता। इन हाथों से छुआ नहीं जाता। इन कानों से उनकी बात सुनी नहीं जाती। सोचो! इतनी ऊंची हस्ती है। रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त हो जायेंगी। ये सब मन की शक्तियां हैं। हम रोज़ पढ़ते हैं :

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवउ न किछु पीआ न खाउ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥

कि पंखी होकर सब आसमानों की ख़बर ले आये, बगैर खाये-पीये ज़िन्दा रहे, फिर भी न समझो कि उसके पास नाम या सतगुरु आ गया। ये इतनी बड़ी ऊंची चीज़ है। यही कबीर साहब ने कहा है :

पाखंड में कुछ नाहीं रे साधो, पाखंड में कुछ नाहीं रे।
पाखंडिया नर भोगे चौरासी, खोज करो घट माहीं रे।

अगर शेर बनकर आ जावे, देह बदल जाये, कभी कुछ बन जाये, कभी कुछ बन जाये, फिर भी न समझो कि उसके पास मालिक आ गया। चिता जलाकर बैठ जावे जले न, फिर भी न समझो कि उसके पास मालिक आ गया है, सतगुरु आ गया है। वो इतनी ऊंची चीज़ है। यही मुसलमान फकीर ने लिखा है कि अगर कोई बड़ी से बड़ी भक्ति है तो मन को काबू करना है। फिर सतगुरु को प्रकट कर सकता है, ऐसे नहीं।

अगर दर हवा परी मगसे वाशी।

अगर तूने हवा में उड़ना सीख लिया है, वो तो मक्खी भी उड़ रही है।

अगर दर आब रवी खसे वाशी।

अगर पानी पर बैठ कर ऐसे ही तैरता जा रहा है, बिना हाथ पावों को हिलाये, तो यह तो तिनका भी जा रहा है।

दिल बदसता के कसे वाशी।

इस मन को काबू में कर, ये किसी विरले ने किया है। सब फकीरों की एक ही तालीम है। वो सतगुरु कब मिलता है? उस की गमता क्या है? अति दीनता और गरीबी की, हस्ती को मिटाने की, दीनता और गरीबी धारण करने की; हस्ती को मिटाने की। रात भी अर्ज़ की थी कि कबीर साहब ने लिखा है अगर मालिक का रूप बनना है, अन्दर सतगुरु को प्रकट करना है तो इतनी हस्ती को मिटा जितनी मालिक ने मिटाई हुई है। क्या? कि रास्ते का रोड़ा हो जा, हर एक की ठोकर खा। फिर कहते हैं ये भी नहीं, रोड़े से किसी के पाँव को चोट लगेगी। कहते हैं खेह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं, खेह से कपड़े ख़राब होंगे, हाथ-पांव ख़राब होंगे। फिर कहते हैं साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं। किसी को ठण्डे की ज़रूरत है तो गर्म मिल गया। गर्म की ज़रूरत है तो ठण्डा मिल गया, वो भी दुख।

कबीर पानी हुआ तउ किआ भइआ जो सीरा ताता होइ।
हरीजन अैसा चाहीअै जैसा हरि ही होइ॥

वो मालिक सबका मालिक है। कोई निशानी है उसकी बाहर? कोई निशानी है? कोई उसको गालियां निकाले किसी की रोटी बंद की! इतनी हस्ती को मिटाये, तब मालिक तक पहुँच सकता है।

गरीबी गदा हमारी॥ खन्ना सगल रेनु छारी॥
इस आगै को न टिके विकारी॥ गुर पूरे इह गल सारी॥

ये गरीबी धारण करने का मार्ग है। जितनी गरीबी और नम्रता इसके अन्दर आयेगी उतना मालिक के नज़दीक जायेगा। कबीर साहब ने लिखा है कि जैसे पानी नीची जगह की तरफ जाता है, इसी तरह मालिक की दया की धार भी नम्रता वाले हृदयों के पास आती है, दूसरों के पास नहीं। ईसा ने लिखा है, क्या? कि मालिक अहंकारियों को छोड़ देता है और नम्रता धारण करने वालों के पास आता है। तब उन्होनें कहा कि इतनी नम्रता हासिल करो कि अगर

कोई दायीं गाल पर थप्पड़ मारे तो बायीं भी आगे कर दो। इतनी नम्रता हासिल करो।

सुखी बसै मसकीनीआ आपि निवारि तले॥
बड़े बड़े हंकारीआ नानक गर्भ गले॥

सारी दुनिया अहंकार में मर गई। किसी ने कर्मों के ठेके लिए, किसी ने धर्मों के लिए, किसी ने कुछ, किसी ने कुछ। मैं ये जानता हूँ, मैं वो जानता हूँ। किसी ने कौमों के लिए, किसी ने देशों के लिए। अहंकार में रह गये सारे। नम्रता धारण न की तो मालिक कहां मिले! सोचो! ऐसे ही ठेके लिए बैठा है। मालिक कैसे मिले? ये तो हस्ती को मिटाये तब है, अगर ज़रा भी गुमान किया तो बस, गया।

जब इहु मन महि करत गुमाना॥ तब इहु बावरु फिरत बिगाना॥
जब इहु हुआ सगल की रीना॥ ताते रमईआ घटि घटि चीना॥

जब ये सब की चरन धूल बने, सबसे नीचा बने तब कुछ हासिल कर सकता है। ईसा को एक दफा पीटर ने पूछा, मजलिस लगी हुई थी, सत्संग चल रहा था कि ऐ मालिक! मेरा भाई कितनी दफा मुझ पर जबरदस्ती करे, ज़ुल्म करे, मैं उसे छोड़ता जाऊं? कहते सात दफा। फिर कहते, मेरा मतलब एक सात दफा से नहीं बल्कि सत्तर बार सात दफा यानी करता ही जा, माफ करता ही जा। तब हासिल कर सकेगा। क्योंकि अगर इन झगड़ों में पड़ गया तो फिर मालिक की भक्ति कर नहीं सकता। वो छोड़कर किनारे हो गये। जहां झगड़ा देखा फकीर छोड़कर किनारे हो गये। मूसा ने एक दफा पूछा, अर्ज़ की :

'मकबूल तर कौन है बन्दों के सिवा।'

अरशाद हुआ कि : 'बन्दा हमारा वो है जो ले सके और न ले बदी का बदला।' बदी का बदला ले सके मगर लेता नहीं। फिर भी उसके चरण धोता है, फिर भी उसकी कदर करता है। दुश्मनों की भी कदर करते हैं। तब मालिक हासिल होता है, ऐसे नहीं। हाँ जीः

पाठी– सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै॥
क्रिया क्रिपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै॥
(मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं; विनती करते हैं कि हे मालिक! मुझे नाम की एक कणी बख़्श दे, मैं उसका प्यासा हूँ। क्योंकि साथ जाने वाली चीज़ एक यही है और कोई भी नहीं। बाकी सब यहीं रह जायेंगी।

एको निहचल नाम धनु होर धन आवै जाइ॥

अगर इसकी थोड़ी भगती है तब भी यह साथ जाती है, देख लो! यहाँ लड़का दादा आकर बैठा है (धूकियां वाली वाले डाक्टर का लड़का) सोचो! कह भी गया था कि मैं आऊंगा। यहाँ एक छोटा सा तीन साल का लड़का आया। बाप से कहता कि शराब क्यों पीता है, इतनी गन्दी चीज़ है। उसने बाप को हटाया। ये पुरानी भक्ति है जो साथ जाती है। ऐसे समाधी लगाता है, देखो उसको बैठे को कि भगत भी नहीं लगा सकते। छोटा सा है, ये जाती नहीं भक्ति। ये भक्ति साथ जाती है। हाँ जीः

पाठी– लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै॥

राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– कि सतगुरु रंगरेज़ है। रंगरेज़ के पास जैसे मटकी होती है रंगने को, उसके पास भी ऐसा रंग है। अगर एक दफा चढ़ जाये तो फिर उतरता नहीं। लेकिन ये मन देवे तब है। ये मन देता नहीं।

कबीर इह मन मसखरा, कहूं तो माने रोस।
जा मारग साहिब मिले, ताही न चाले कोस॥

उस तरफ एक कदम भी नहीं चलता। बीवी सब कुछ पति को दे देती है लेकिन मन नहीं देती। इसी तरह सारी उम्र सेवा भी करता रहेगा मगर मन नहीं देता। मन देना सबसे मुश्किल है। मनमत छोड़नी सबसे मुश्किल है। अगर ये देवे (मस्ताना जी फरमाया करते थे, टेप में भी वचन है, 'सतगुरु मेरी रंग दे चुनरिया' यहाँ आये, इससे नीचे सतगुरु नहीं आता, आंखों के नीचे सतगुरु नहीं आता। यहाँ तक रोज़ आता है इसको संभालने के लिए। अगर तू आये तो तुझे ऐसा रंग चढ़ा दूं कि कभी उतरे ही न। दुनिया के सब रंग फीके हैं वो ऐसा रंग है कभी न उतरे, ऐसा पक्का रंग है।) रोज़ पहले सुना करते थे बाणी में : 'मेरा रंग दे मजीठी चोला।' ये मजीठी रंग है, पक्का रंग है, कभी नहीं उतरता लेकिन मन देना मुश्किल है। यहाँ तक आने के लिए मन की सफाई की ज़रूरत है। जैसे कपड़ा धोबी से धुला कर रंगरेज़ को देते हैं। इसी तरह ये भी सफाई की ज़रूरत है। मन का काम कुछ न कुछ करते रहना है। अगर अच्छा नहीं करेगा तो बुरा ज़रूर करेगा। इसको काम यही है। ये फकीरों के हवाले करे जिन्होंने मन को काबू में किया है; वो इसको साफ करेंगे। फिर ये यहाँ आये। फिर वो ऐसा रंग चढ़ाते हैं। कि दुबारा नहीं उतरता। इसका देना

ही मुश्किल है, बस।

नानक तिन संतन सरणागति जिन मनु बसि कीना॥
तनु मनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीना॥

उनके हवाले करे। ये मन काल का एजेन्ट है। अभी सुनाया था काल इसको अन्दर जाने ही नहीं देता। यह उसकी दलाली करता है। उसका ऐजन्ट जो है, उसकी दलाली करता है। अन्दर नहीं जाने देता किसी को। एक प्रेमी ने एक शब्द बोला था, हमने पहले सुना था।

पाठी– कोई आ समझावे मन मेरे नूं,
सईयो लख लख मिन्नतां लावे॥
मैं समझावां मन समझे नहीं, हरदम आन सतावे॥
जी जी करदी हार गई पर मन नूं समझ न आवे॥
मैं मोड़ां मन मुड़दा नाहीं उठ उठ जग नूं धावे॥

मैनेजर साहिब जी– ये मन माया से निकला है, 'ये मन पंच तत ते जनमा।' जब आत्मा की किरण सूक्ष्म तत्वों पर पड़ती है, उससे जो शक्ति पैदा होती है उसको कहते हैं 'मन'। ये मादे से निकला है। मादे का ही आशिक है। तभी उन्होंने लिखा है कि :

मनु माइआ महि रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत॥
नानक मूरति चित्र जिउ छांडित नाहिन भीत॥

जैसे दीवार पर तसवीर है उसको कहो कि इधर आ तो क्या वो आ सकती है? इसी तरह मन भी छोड़ता नहीं। जैसे वो तस्वीर दीवार को नहीं छोड़ती, मन भी माया को छोड़ता नहीं। बार-बार माया की तरफ जाता है। पलटू साहब का वचन है :

मन माया न तजे उलट फिर लागता।
ज्यों जहाज़ का काग जहाजे ताकता॥

ये मादे से निकला है, मादे की तरफ ही जायेगा। बार-बार मादे की तरफ ही जाता है।

पाठी– मैं पापी नूं प्यार करां मन बन सिंघ डरावे।

मैनेजर साहिब जी– फिर कहने लगेगा कल काम कैसे होगा? अगर रात को जागेगा तो। यह नहीं पता कि मालिक काम करने वाला है। काम कैसे करेगा? बच्चे कैसे पलेंगे? ये कैसे होगा? सौ बहाने लगाता है।

पाठी– वेद पुरान पढ़ाँ निसि दिन मन फिर भी वही करावे।
भुखी प्यासी सब्र करां, मन फिर भी भीख मंगावे॥

सिधे रस्ते चलदी नू मन पुट्ठे राह चलावे।
मिन्नता कर कर हार गई, मन गुतनी नूं हत्थ पावे॥

मैनेजर साहिब जी– गुतनी (केश) नूं, गुतनी नूं हत्थ पावे। ये ऐसी बला है।

पाठी– सतगुरु मिलन दी मैं प्यासी, मन खोटे पंथ चलावे।
पुत्र पुत्र कर आख रही, मन पुत्रां वांग न आवे॥
शरम दी मैं मारी मरदी, मन खड़ा बाजार नचावे।
मैं डरदी अन्दर वड़दी, मन धौलियां नू दाग लगावे॥

मैनेजर साहिब जी– बड़ों बड़ों को देख लो, धौलियों को दाम लगे हैं। मन ने मार दिया न; अट्ठासी हज़ार साल तप वाले? सोच लो! मच्छन्दर इस देह से निकल जाता था। आंखों तक आ जाता था फिर भी मन ने काबू कर लिया। वो इतनी बड़ी हस्ती है।

पाठी– मैं बांदी हाँ उस दी जिहड़ा मन नु रस्ते लावे।
इस पापी निरजल पशु तों मेरी जिन्द छुड़ावे॥

मैनेजर साहिब जी– तो उन्होंने लिखा है :

नानक तिन संतन सरणागति जिन मनु वसि कीना॥
तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीना॥

इसका कहना न माने। मस्ताना जी कहा करते थे, 'मन का कहा न मानो' बस। जैसे ये कहे वैसे न करो। कबीर साहब कहते हैं :

ज्ञान हीन जाने नाहीं भाई, जीव के संग मन काल रहाई।
जीव के संग काल को वासा, अज्ञानी जन गाये विशवासा।
मन का कहा न कीजै कोई, मन जीव को भरमावै सोई।
कहें कबीर मन रास तुम्हारी, मन का कहा न कीजै नर नारी।

काल भी इसी रूप में बैठा है सबके अन्दर।

वह गुप्त भापुनि संग सब के मन निरंजन जानीये।
मन पुरुष भेद उच्छेद देवे आपो परगट आनीये॥

फकीर का वचन नहीं मानने देगा, इसको काम ही यही है और कोई नहीं। अगर फकीर कहे कि फलाँ वक्त तू दो घन्टे बैठ, वो नहीं मानेगा। खुद चार घन्टे दूसरे वक्त पर बैठ जायेगा। उसका वचन नहीं मानने देता, ये ऐसी बला है।

यहाँ एक प्रेमी था, मस्ताना जी ने देखा कि ये भजन तो कर नहीं सकता। फकीर कोई न कोई साधन बना लेते हैं कि किसी तरह इसको यादगीरी तो रहे। कबीर साहब ने लिखा है :

अन्त समय में राम नाम कैसे गायेगा,
किया नहीं अभ्यास याद कैसे आयेगा॥

कुछ न कुछ अभ्यास हो। उसको कहा कि तुझको सोना तो है रात को डेरे में ही सो जाया कर। डेरा भी पास ही था बिलकुल गांव में। वो भी वचन मानने नहीं दिया। उनका मतलब ये था कि डेरे जायेगा, कोई बात सुनेगा, कभी दो मिनट बैठेगा ही। आहिस्ता-आहिस्ता ख़्याल टिकने लग जायेगा, वो भी वचन मानने न दिया। और ये भी कहा कि नहीं तो दुख उठायेगा, बम्बई तक जाना पड़ेगा। और वाक्य ही उसको बम्बई तक जाना पड़ा। तकलीफ भी उठाई। फिर हमारे पास आया, कहने लगा मस्ताना जी ने कहा था। हमने कहा अब भी मान ले, फिर भी न माना। लड़कों का कहा माना; मस्ताना जी का वचन न माना। इतना ही कहा कि डेरे ही सो जाया कर। वो भी वचन न माना, सोचो! डेरे सो जाया कर, ये भी न माना और डेरा पास। सोना ही भजन कबूल है। मतलब तो ये था कि किसी हिसाब से समझाते हैं। सोचो! जब ये हुक्म के मुताबिक थोड़ा बहुत भजन करता है तो रूह अन्दर जाने लगती है। ज्यों-ज्यों अन्दर जाता है तो अन्दर शांती आती है। जब ख़्याल आंखों के पीछे इकट्ठा हुआ यहाँ अमृत की बूंदे बरस रही हैं। फिर ओ गया दसवें द्वार में, वहाँ अमृत का सरोवर है। वहाँ जितना मर्ज़ी पीये, गट-गट करके पीये। 'रस रसिक गटक नित पीजै'। ये मेहनत पर है। अगर ये हुक्म मानकर करे तो जितना अमृत मर्ज़ी पीये, अन्दर शांती ले ले। जैसे विद्या ज्यों-ज्यों पढ़ते हैं तो वो काम देने लग जाती है। 'ज्यों-ज्यों भगत कबीर की त्यों-त्यों राम निवास।' ज्यों-ज्यों भक्ति करता है इसके अन्दर राम बसने लग जाता है। अन्दर शांती आने लग जाती है, काम, क्रोध की अग्नि बुझने लग जाती है। शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, दीनता और गरीबी आने लगती है। ये निशानियां मिलती हैं।

पाठी– बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै।
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै॥ (मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जिसने मन से मुकाबला किया है, ये रस लिया है अब अगर उनके सामने एक तरफ हरि रस रख दें दूसरी तरफ इस दुनिया के सात समुद्र हैं, सात ही बादशाहियां हैं; सबकी दौलत इकट्ठी करके रख दें। उनसे पूछे क्या चाहिए? तो वो इस दौलत की तरफ देखता भी नहीं। इस दौलत की तरफ देखता भी नहीं। वो कहता है मुझे हरि रस चाहिए। ऐसी मीठी चीज़

है, ऐसी आला चीज़ है, ऐसी अमोलक चीज़ है। बादशाह इब्राहिम कबीर साहब के पास बारह साल रहे। जब चीज़ हासिल की तो आज़ाद कर दिये कि जा भई मौज़ कर। एक दफा दरिया दजला के किनारे बैठकर गोदड़ी सी रहा था तो उसका वज़ीर आ गया। उसने दूर से देखा कि है तो इब्राहिम जैसा ही। पास आया, पूछा कि तू इब्राहिम है? जी हाँ। कि मैं तेरा फलाना वज़ीर हूँ। तेरा ये काम किया, वो काम किया। क्या ही अच्छा हो तू अपनी बादशाही संभाल। इब्राहिम ने सूई ली और दरिया में फेंक दी। कहने लगा मेरी सूई निकाल दे, मैं तेरे साथ चला चलूंगा। वो कहने लगा ये तो मुश्किल है; आप आधे घन्टे की फुरसत दें, मैं लाखों सूईयां इकट्ठी करके ला देता हूँ। कहने लगा मुझे तो वही चाहिए। वज़ीर कहने लगा वो तो मुश्किल है। इब्राहिम ने ज़रा सा इशारा किया मछली सूई लेकर आ गई। कहने लगा मैं तेरी बादशाही को क्या करूं, मेरे पास ये बादशाही है, सोचो! ये बादशाही है इसके अन्दर। सोचो! जब सूई मछली लेकर आ सकती है तो इसके पास क्या नहीं है? सच्चे सौदे जो भी आता था, पूछता था कि पैसे कहां से आते हैं, पैसे कहां से आते हैं? यहाँ भी यही हाल है। पैसे कहां से आते हैं, पैसे कहां से आते हैं? वो देने वाला इसके साथ है। जब मछली सूई ला सकती है तो देने वाला दूर है क्या? सबके पास है। जो निकाले उससे काम ले। घरों में बरकतें पड़ती हैं जो प्रेमी नाम जपते हैं। घरों में बरकतें देता है,

पाठी– साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै॥
धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिथि दीजै॥

(मः 4/1323)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जो साकत है, जो मनमुख हैं, जिन्होंने रस नहीं लिया, उनकी भूख कभी मिटती नहीं। कितनी दौलत मिल जाये उनका पेट नहीं भरता।

कबीर ऊंधी खोपड़ी कबहूं धापै नाहिं॥
तीन लोग की सम्पदा कब आवै घर माहिं॥

त्रिलोकी की दौलत भी आ जाये फिर भी उनका पेट नहीं भरता। जो गुरमुख हैं, जिन्होंने रस लिया है; इस तरफ देखते भी नहीं और जो साकत हैं उनका पेट नहीं भरता चाहे दो हज़ार रुपया देकर किसी का गला कटवा लो उनसे। कहते हैं दोनों का लाखों कोसों का फरक है। हाँ जीः

पाठी– हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किया उपमा तिनही दीजै॥
राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक क्रिपा करीजै॥

(मः 4/1323-24)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि इस दुनिया में दो चीज़ें उत्तम हैं, सतगुरु या अकाल पुरख कह लो। दूसरे उनके भक्त या सन्त। जिन सन्तों ने उनको अन्दर प्रकट कर लिया है, वो रस ले लिया है; उनकी हम क्या महिमा करें? जैसे मालिक की उपमा नहीं कर सकते, उनकी भी नहीं कर सकते। वो मालिक का रूप बन चुके हैं, उनके ज़रिये हम ये रस ले सकते हैं। वो मालिक में मिल चुके हैं बल्कि हमें भी जैसे जल में, 'ज्यों जल तरंग उठे बहु भांति सो सिललै सलहि मिलाये। क्या? जैसे समुद्र की लहर है, पानी की लहर है, पानी का बुलबुला है, जब हवा निकली तो पानी में मिल गया। तो बस वो भी मालिक में मिल गये। उनका रूप बन गये। उनको मालिक ही कह सकते हैं और क्या कह सकते हैं। हाँ जीः

पाठी– जिस दा साहिब डाढा होइ ॥ तिस को मारि न साकै कोइ ॥

मैनेजर साहिब जी– अगर साहब को प्रकट कर लिया जाये तो इस जैसी तो कोई बात ही नहीं। जो उसका नाम भी जपता है, थोड़ा ही जपता है, उसके नज़दीक ही कोई नहीं आता। उसके नज़दीक नहीं जाता। भूत, न प्रेत, न यमदूत, न काल, न महाकाल; कोई दुश्मन नहीं ठहरता। सब चिंता फिक्र मिट जाती है। प्रह्लाद अन्दर वाले को जपता था, थम से निकल कर आ गया। हाँ जी...

पाठी– साहिब को सेवकु रहे सरनाई॥ आपे बखशे दे वडिआई॥
तिस ते ऊपर नाहिं कोइ॥ कउन डरै डरु किसका होइ॥
गुरमती सांति वसै सरीर॥ सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर॥
आवै न जाइ ना दुखु पाए॥ नामे राते सहजि समाए॥
नानक गुरमुखि वेखै हदूरि॥ मेरा प्रभु सद रिहा भरपूरि॥

मैनेजर साहिब जी– जो नाम जपता है उसके साथ-साथ रहता है। लेकिन देखता कौन है? गुरमुख। वो देखता है कि साथ-साथ है; उनकी आंख खुली है। वो देखता है, सबके साथ है लेकिन हमें भरोसा नहीं; है सबके साथ। जहां उसका सिमरण है वहाँ वो आप है, 'हरि सिमरण में आप निरंकारा।' सबके साथ है कोई सिमरण करने वाला हो? यही गुरु नानक साहब ने लिखा है : शाह, बादशाह भी तुम्हारे बस में हो जायेंगे, तू बे फिक्र हो जा, तू नाम जप। वो तुम्हारे सारे काम करता फिरेगा। इसको इतबार नहीं आता।

एक सत्संगी– मैं भरी सभा में हाथ जोड़कर विनती करता हूँ क्योंकि मुझे धक्के से शराब पिला दी गई। मैं काफी दिनों से परेशान हूँ।

मैंनेजर साहिब जी– अन्दर माफी मांग, दो दो, चार-चार घन्टे भजन कर फिर ठीक होगा। कौन सा गांव है?

सत्संगी ने कहा 'नकेरा'।

सुनो भई, जो शराब पीता है, मांस खाता है उन सबको सज़ा मिलती है। मिलती ज़रूर है। जिन्होंने नाम लिया है उनको जल्दी पता लग जाता है सज़ा का। इसी जन्म में सतगुरु कटवा लेता है। चाहता है एक ही जन्म में निकल जाये काम, सज़ा देकर। बाकियों को कई जन्म के बाद। किसी को छः जन्म के बाद, सात जन्म के बाद, जब ताल्लुक पड़े। सज़ा मिलती सबको है लेकिन इनके इसी जन्म में कटवाने की कोशिश करता है सतगुरु। अभी सज़ा देकर इसके कर्म भुगताता है। रुकावटें भी आती हैं, आहिस्ता-आहिस्ता ये कामयाब हो जाता है। ये जल्दी का मार्ग नहीं। रुकावटें बहुत आती है। परसों एक तारीख या दो तारीख का अखबार था। अखबार में था कि 51 साल की उम्र में उसने एम.बी.बी.एस. का कोर्स किया है। सन् 1953 को पटियाला में एम.बी.बी.एस. का कोर्स शुरू हुआ। उसने उसमें दाखिला लिया। 1956 में उसने एक इम्तिहान पास कर लिया। फिर रुकावटें पड़ गईं। उसको कालेज छोड़ना पड़ा। 1979 में फिर दाखिल हुआ वहाँ जाकर। फिर रुकावटें पड़ीं उसका नाम आगे न भेजें। अब फिर 29 जनवरी को उसको सर्टीफिकेट मिला है। पर लगा रहा, छोड़ा नहीं, सोचो! कितनी रुकावटें आयीं छोड़ा नहीं। 51 साल की उम्र है, अखबार में फोटो भी आयी है। बस यह मेहनत करता रहे एक न एक दिन कामयाब हो जाता है, लगा रहे! उसने छोड़ा नहीं, ख़्याल नहीं छोड़ा, कोर्स में पास हो गया। बस ये भी न छोड़े। ये भी कामयाब हो जाता है। रुकावटें तो रास्ते में आती हैं, अनेकों बन्धन हैं, आहिस्ता-आहिस्ता छूटते हैं, देख लो! कितनी रुकावटें आयीं, कितने तूफान आये उसके रास्ते में परन्तु छोड़ा नहीं, लगन लगी रही। बस यह भी लगन का काम है। ये भी एक दिन कामयाब हो जाता है। जब एम.बी. बी.एस. कोर्स में इतनी रुकावटें पड़ीं, सोचो! कहां 1951 कहां 1979 तीस साल में आखिर कामयाब हो गया। सिर्फ 5 साल का कोर्स था। बस इसी तरह से है। कई आदमी हैं। हमारे साथ एक लड़का पढ़ता था। मास्टर जी आया करते हैं कानपुर से। उसने 13 साल की उम्र में मैट्रिक कर लिया था बोलो! दो-दो

जमात कर लेता था। कई-कई एक जमात में चार साल लगा देते हैं। वो दो-दो जमात कर लेता था। ये मेहनत पर है, कुछ मालिक की मेहर पर है।

काल छोड़ता नहीं। मस्ताना जी कई दफा फरमाया करते थे कि कबीर साहब के वक्त में चार कबीर बन कर बैठ गये कि कोई जीव निकल न जाये। जगह-जगह चार कबीर बन कर बैठ गये। कबीर-कबीर हो और कोई बात ही न हो। जब कबीर-कबीर करेंगे तो उनके पास कबीर के चिताये हुए वो आने लगेंगे कि यहाँ तो कबीर-कबीर लगी पड़ी है। जब आयेंगे, तब उनका विश्वास पूरा हो जायेगा कि यहाँ तो कबीर-कबीर के सिवा कोई बात ही नहीं। फिर उनको रास्ते से भटका दो, उस रास्ते पर चलने ही न दो। ये हमेशा होता आया है। ये लगा रहे बस। अपना सिमरण करता रहे। रुकावटें बहुत पड़ती हैं कि हाय भजन नहीं बनता, हाय भजन नहीं बनता। इतना ही लगा रहे तो उतना ही मालिक है।

पाठी– चाल सखी सत्संग करिये, बिरथा क्यों जनम गवावत है
पल पल छिन छिन आयू घटत है॥
गया वक्त नहीं आवत है॥
बालपनो हंस खेल गंवायो, जोबन काम सतावत है ॥
बुढापे में सब रोग सतावे, त्रिष्णा क्रोध बढ़ जावत है ॥

मैनेजर साहिब जी– सत्संग का क्या मतलब है? सत्संग का मतलब है सत्त का संग। सत्त कोई चीज़ है उसका मेल हो। आत्मा और राम का मेल हो उसका नाम सत्संग है। मस्ताना जी फरमाया करते थे ये है सत्त, ये है संग (दो उंगलियों के इशारों से) इनका मेल हो इनका नाम सत्संग है। गाने-बजाने का नाम सत्संग नहीं। कथा कीर्तन का नाम सत्संग नहीं। साधुओं की सोहबत का नाम सत्संग है। ऐसी सोहबत भागों से मिलती है।

कई कोट मागहि सतसंगु॥ पारब्रह्म तिन लागा रंगु॥

जिन पर मालिक मेहर करता है वो धन हैं वो मुबारिक हैं। जिन पर मालिक मेहर करता है उनको साधू का संग देता है। इसका नाम सत्संग है, बाहर नहीं; असली ये है। उसकी निशानी क्या है? उनकी सोहबत में मालिक का प्यार उठता है, मालिक से मिलने का शौक पैदा होता है। ज्यों-ज्यों सिमरण करता है इसके अन्दर से देशों के, कौमों के प्यार निकलते हैं। मां-बाप, बहन, भाई के भी निकल जाते हैं। तन का भी निकल गया कि इसने भी साथ नहीं जाना। फिर कहता है बस एक सतगुरु ही है और कोई चीज़ ही नहीं। फिर कहता है जितना कर

लूं उतना अच्छा है। बचपन जैसे खेल कूद में निकल गया, जवानी विषय विकारों में निकल गई। अब बुढ़ापा आया। जब तृष्णा बढ़ जाती है तो रोटी का फिक्र पड़ जाता है। कोई कहता है रोटी नहीं मिलती, कोई कुछ है, कोई कुछ है। हाल देखो जाकर। अगर अच्छी हालत भी है रोटी मिलती है तो कहता है टांगों में दर्द है, सुनता नहीं, दिखता नहीं। फिर नहीं कर सकोगे। यही वक्त है जो कर ले, लाभ उठा जायेगा। नहीं तो ऐसे कीमती जन्म को बर्बाद करके चला गया। देख लो हाल! बूढ़े आते हैं कि जी क्या करें बैठा नहीं जाता, टांगों में दर्द है, कोई कहता है कमर में दर्द है, कोई कहता मुझको ये तकलीफ है। अगर तकलीफ दूर हो भी जाये फिर काम में लग जाता है। फिर भी नहीं करता। ये फिर नहीं कर सकेगा, यही वक्त है।

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

कि सत्संग में जाकर, मस्ताना जी फरमाया करते थे कि सन्तों का राम, हरया (हरा) राम है, दुनिया का सूखा है। उनकी सोहबत में हरा होता है, कैसे? जैसे बाहर खड़ सुक दरखत हो जायें पानी न मिलने के कारण; अगर पानी मिलने लग जाये तो फूट आते हैं, पत्ते निकल आते हैं, टहनियां निकल आती हैं, फूल लगने लग जाते हैं, फल लगने लग जाते हैं। ये निशानी मिलने लग जाती है, देख लो! इसमें टाइम लगता है। फूल तो निकला, समय लगा, हरा रंग भी आया, टहनियां भी बनीं, फूल बन गया, टाइम लगा। इसी तरह उनकी सोहबत में जाकर ज्यों-ज्यों सिमरण करता है; इसके काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार घटने लग जाते हैं। उसकी जगह शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक दीनता और गरीबी पैदा होने लग जाती है। ये फल और फूल निकलने लग जाते हैं। तब उन्होंने लिखा है :

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ॥

ये जो गाया बजाया, हो गया सत्संग। बहस मुबाहिसा किया, हो गया सत्संग। ऐसे नहीं, हरा भी हो न अन्दर :

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

आत्मा भी हरी हो। अन्दर शांती आये। काम क्रोध घटें। बोलेगा महात्मा, (एक मारवाड़ी महात्मा से जो बागड़ से साथ आया था, जीवन दास।) सच्चा दिल

चाहिए, ये मन्दिर में रहता था। वहाँ पूजा का माल खाता था। दो तीन सत्संग सुने हैं। कहने लगा मैंने नाम लेना है। हमने कहा नाम नहीं मिलता क्योंकि जब तक हक हलाल का नहीं कमायेगा तब तक नाम तुमको नहीं मिलता। ज़मीन भी है, लड़का शराब वगैरह पीता है। कहता उसको भी छोड़ दिया। अपना कमा कर खाता है अब। जटों वाला साध है, कमा कर खाता है। कौन सा जिला है? नागौर है। खड़ा होकर बोल शब्द। अब खुश है। 15-15 मील 20-20 मील हमारे पीछे गया है पैदल।

मारवाड़ी– राम बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोये ॥ आदि...

मैनेजर साहिब जी– सुनो भई सुनो! दिन को सेवा करता है, रात को जागता है। एक दिन स्टूल पर बैठ गया। ये नीचे स्टूल ऊपर (हंस पड़े) कि अब नहीं बैठूंगा। सारी रात जागता है। अब उधर जायेगा तो परेवड़ी वालों को, मोती वगैरह को सबको जगा कर रख।

आपे भजन करे नहीं औरन मना करे,
चरनदास वो दुष्ट घोर नरक पड़े॥
औरन को उपदेश कर भजन करे निष्काम,
चरनदास वो हरिजन पहुँचे हरि के धाम॥

अच्छा ये काम कर, उनको जगा कर रखना, अच्छा! कभी वहाँ चला गया कभी वहाँ, समझ गया न। और नज़दीक गांव है? बोहितपुर तो नहीं? कुचामन सिटी? अच्छा 10 दिन इनके पास, 10 दिन उनके पास, ये काम कर। जगा कर रख उनको भी। सारी रात जागता है दिन को काम करता है। चलो भई बस।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
हाज़िर नाज़िर जिंदा राम तेरा ही आसरा

सत्संग

'आपे दारमदारी मेरा सतगुरु'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– भक्ति का असल मतलब क्या है? यह गौर से समझने की बात है। भक्ति का असल मतलब है कि हम युगों-युग से मालिक से बिछड़े हैं, चौरासी में धक्के खा रहे हैं। कभी कीड़े बनते हें, कभी पतंगे बनते हैं, कभी हाथी बनते हैं, कभी घोड़े बनते हें, कभी स्वर्गों में जाते हैं, कभी नरकों में जाते हैं। यह हमारे जन्म मरण के बन्धन छूट जायें, अन्दर शांती आ जाये, अपने घर पहुँच जायें, असल मतलब यही है। अब इसके लिए हमने बड़े उपाय किये। किसी ने जप किये, किसी ने तप किये, किसी ने योग किये, किसी ने यज्ञ किये, किसी ने पुण्य किये, किसी ने दान किये, छुटकारा न हुआ। सोच लो! छुटकारा किसी का नहीं हुआ। ऐसे ही धक्के खा रहे हैं। अब भी कर रहे हैं, किसी ने ख़्याल किया? कोई अन्दर शांती आयी, कोई तसल्ली हुई? घर तो दूर पड़ा है मन भी काबू नहीं आया। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया। कह लेना आसान है। यहाँ दो साल कोई तपस्या करता है तो कहते हैं बड़ा भक्त है। साठ हज़ार साल तप, मन ने मार दिया। शृंगी ऋषि ने अट्ठासी हज़ार साल तप किया। दरख्त पर एक बार जीभ मारता था पानी पी लेता था। मन ने मार दिया। प्रायश्चर जी पूर्ण योगी होकर आये, रिद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त कीं, मन ने मार दिया। मछोधरी पर मारे गये। मछन्दर इस देह से निकल जाता था (आत्मा तीन शरीरों में कैद है—पहले कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर स्थूल शरीर है) इतनी ताकत थी कि इस देह से निकल जाता था। फिर भी मन ने ख़्याल किया, विषय भोगें, राजपाट करें। किसी राजा का देहान्त हुआ। अपनी रूह को निकालकर उसके जिस्म में प्रवेश करके विषय भोगे, राजपाट किया। मन काबू न आया। फिर कहते हैं इसके लिए गुरु की ज़रूरत है। गुरु भी बड़े किये। आखिर विश्वामित्र ने भी किया, शृंगी ऋषि ने भी किया, प्रायश्चर ने भी किया, मच्छन्दर ने भी किया। यहाँ तक (आंखों तक) तो आया मगर आगे

संभालने वाला कोई न मिला। न तो हमें अपने गुरु का पता है, न हमें अपनी जात का पता है, न हमें अपने देश का पता है। इसको पता नहीं। ऐसे ही धक्के खा रहा है। जैसे अन्धा चलता है सोटी के आसरे, कभी किसी खड्डे में, कभी किसी खड्डे में गिरता है। हमारा यही हाल है। या मन बुद्धि के ज्ञान से चलते हैं, ठोकरें खा रहे हैं। किसी का छुटकारा ना हुआ। सवाल तो छुटकारे का है। इसका देश कौन सा है, किसी को याद है? हम कहते हैं अपने घर में सुख है। जब तक घर नहीं जाते सुख नहीं। इसका घर कहां है? कहां से आया है ये? कबीर साहब फरमाते हैं :

ऐ जीअरा तू अमर लोक को, आये परे बस काल हो॥

कि तू अमर लोक का रहने वाला है। काल के बस में आया हुआ है। धक्के खा रहा है—

मनहि सरूपी निरंजना तुमहे राखी भरमाई हो॥

मन इसका एजेन्ट है इसको भरमा रहा है, इसको पता नहीं। काल एक शक्ति है जो सतगुरु ने, मालिक ने आप पैदा की है। मालिक पहले अपनी मस्ती में आप ही मस्त था। फिर उसका ख़्याल हुआ कि मैं रचना करूं। तो उसने काल शक्ति पैदा की। उसको रचना का हुकम दिया। ये कीमती बात है समझने की, कोई विचारता नहीं। ये वक्त है चौरासी से निकलने का। इसलिए इसको कहते हैं; नर-नारायणी देह। ऐसे ही वक्त ख़राब करके चला गया। ये वक्त है चौरासी से निकलने का, बाकी कोई नहीं। ये सबसे ऊंची योनि है। मुसलमान कहते हैं—अशरफ ऊल मख्लूकात। गुरु अर्जुन साहब ने कहा है कि सब योनियों की सरदार है। ये चौरासी से निकलने का वक्त है, ऐसे ही गफलत में गुज़ारता है। पता ही नहीं। भक्ति भी करते हैं लेकिन जो छुटकारे वाली है वो नहीं मिली। वो असली कोई और चीज़ है, वो किसी भागों वालों को मिलती है। काल को रचना का हुकम हुआ। उसने क्या किया है? कैसे फंसाया है? कीमती बात है समझने की। उसने आत्मा को लेकर तीन शरीरों में कैद किया है। पहले कारण शरीर है, उस शरीर से हम कारण मण्डलों में काम कर सकते हैं। उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है, उससे सूक्ष्म मण्डलों में काम कर सकते हैं। उसके ऊपर स्थूल शरीर है जिससे हम इस दुनिया में काम कर सकते हैं। ये तीन शरीरों में कैद है। और क्या किया है उसने? मन लगा दिया है। उसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना और कोई काम नहीं उसको। इसको एक ही काम है और कोई काम नहीं, जीव को भरमाना और भटकाना। किसी तरह से अपने घर न पहुँच जाये। और क्या किया उसने? इन्द्रियां लगा दीं, भोग लगा दिये, विषय

लगा दिये। नरकों के सामान पैदा कर दिये। और क्या किया है चलाने के लिए? पाप-पुण्य का जाल डाला है; 'पाप पुन बीज की पोट'। ये बीज है जिससे दुनिया चलती है। यही महात्मा चरनदास कहते हैं;

पाप पुन के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्माण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड॥
बिरले जन को होत है पाप पुन की सूझ।
सोई उतरें भवजाल से, बहुते रहे अरुझ॥

सारी दुनिया इसी में फंसी पड़ी है। पाप को तो सबने बुरा कहा है किसी ने पुण्य को भी कहा है सोचो! किसी ने पुण्य को भी कहा है? ये भी हथकड़ी है। कृष्ण भगवान ने कहा है अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ियां हैं। कृष्ण भगवान ने कहा है अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लो एक सोने की समझ लो। सोच लो! पाप किये नर्कों में गया, गन्दी योनियों में गया। पुण्य किये स्वर्गों में गया या अच्छी योनियों में गया। स्वर्गों के सुख भोगे फिर चौरासी तैयार है इसके लिए। छुटकारा तो न हुआ। कृष्ण भगवान ने लिखा है, हे ऊधो! ये जो कीड़ा जा रहा है, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना। कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना। आज ये कीड़ा है, सोच लो! छुटकारा तो न हुआ? त्रिलोकी के दायरे तक यही हाल है। त्रिलोकी के दायरे तक कोई जीव सुखी नहीं।

पपीहा जाये पुकारिउ पँछीअन आगे रोय।
तीन लोक फिर आइउ हूँ बिन दुखु लखिउ न कोय॥

महात्मा जगजीवन साहब कहते हैं कि त्रिलोकी तक देख आया हूँ कोई सुखी नहीं, सारे जीव दुखी हैं। किसी को सुख नहीं। सब जन्म मरण के चक्कर में हैं। किसी का छुटकारा नहीं। कुछ दिन सुख मिलता है फिर इसी तरह चौरासी में धक्के खाता है। और उसने क्या किया है फंसाने के लिए? कबीर साहब लिखते हैं :

जोग जाप नेम ब्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि बिसवासे चारा हो॥

कि जैसे एक शिकारी जाल तान कर नीचे दाने डाल देता है। जानवर आता तो पेट भरने के लिए है उल्टा फंस जाता है। इसी तरह सब फंसाने वाले हैं। ये जो हम कर रहे हैं ये नीचे दर्जे की भक्ति है। ये नहीं कि इसका फल नहीं। फल है, अच्छी जून मिल जायेगी लेकिन जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने वाली भक्ति और है। इधर एक शब्द गाते हैं;

इक दिन घोघड़ आसी रे, इक दिन काल आसी रे।
तीन लोक और चौदह भवन में, इस घोघड़ का राज॥
आये अचानक यूं पकड़ेगा, ज्यों चिड़ियाँ ने बाज॥

सबको खा गया

'कबीर सोया क्या करे, सोये हुये अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा, सुनी काल की गाज॥

वो तो याद ही नहीं। सबके सिर पर खड़ा है। दादू साहब कहते हैं :

काल न सूझे कन्ध पर मन चितबे बहु आस।
दादू जीव जाने नहीं कठिन काल के फास॥

कि काल तो याद नहीं, वो बहुत तकलीफ देता है। ये मस्ती में है। ये कर लूं, वो कर लूं, धन्धों में फंसा पड़ा है। यही गुरु नानक साहब ने कहा हैः—

धन्धै धावत जगु बाधिया ना बूझै बीचारु॥
जमण मरणु बिसारिया मनमुख मुगधु गबारु॥

ये एक चांस (Chance) दिया था मालिक ने छुटकारे के लिए। ये ऐसे ही अपने कामों, धन्धों में मरता रहा। याद ही नहीं, जन्म मरण का फिक्र ही किसी को नहीं। यही वक्त है छुटकारे का। अगर अब निकल गया हाथ से फिर चौरासी तैयार है। चौरासी भुगतने के लिए युगों के युग बीत जाते हैं। अगर एक नरक में चला जाये युगों के युग पड़ा रहता है। स्वर्गों में चला जाये युगों के युग पड़ा रहता है। यहीं देख लो। पहले तो सुनते थे सांपों की उम्र दो-दो सौ तीन-तीन सौ साल की। लखनऊ में एक पड़ा है पांच हज़ार साल का, बोलो। कब चौरासी खत्म हुई? अमेरिका में एक दरख्त खड़ा है चार हज़ार छः सौ साल का। अफ्रीका में खड़ा है दस हज़ार साल का। सोचो। कब आदमी की योनि मिली, देख लो। इसी तरह धक्के खा रहा है। हम तो चलते फिरते हैं, वो कैद हैं। बदबू आ रही है (सांप से) ये गये थे देखने। कहते हैं पाँच हज़ार साल का है, देख लो। कब चौरासी खत्म हुई? ऐसे गफलत में गुजार जाता है। दुनिया को चलाने का काम काल के सुपुर्द है। उसने इसी तरह फंसाया है—या विषय-विकारों में फंसाया है या पुन-दान में फंसे या योग जाप में फंसे। छुटकारा तो क्या होना था, मन भी काबू न आया। ये सब उसके दायरे की भक्ति है। जो असली है वो सच्चे मालिक ने; अकाल पुरख ने, सतगुरु ने, सत पुरुष ने अपने हाथ में रखी है। जितनी भक्ति हम कर रहे हैं सब निचले दर्जे की है। काल के दायरे की है। जो असली है। वो और है वो सतगुरु भी और

है। कौन सी है वो—हाँ जीः

पाठी– आपे दारमदारी मेरा सतगुरु, आपे खेल खिलारी हो।
गगन मण्डल का तम्बू तनाया, धरन गलीचा डारी हो।
चांद सूरज दो मिसाल बना दिया, तारों की फुलवारी हो।
दुनियाँ तेरी है फुलवारी आप बना खुद माली हो।
पेड़ पेड़ में पानी लगावै आप करे रखवाली हो।

मैनेजर साहब जी : ये है मुक्ति का दाता जिसने चाँद-सूरज बनाये, तारे बनाये। 'पेड़-पेड़ में पानी लगावै'। कहाँ रहता है? कौन सा सतगुरु है वो? तुलसी साहब लिखते हैं;

सुन हिरदै सतिगुरु सहदानी, सतिगुरु सतिपुरुष को जानी।

रहता कहां है?

चौथे पद में करे निवासा। तीन लोक में काल का वासा॥

इधर कबीर का शब्द गाते हैं;

तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज।

वो चौथे लोक में रहता है—उसका दूसरा रूप क्या है—शब्द, नाम, वर्ड (Word) कलमा, कलामें-इलाही, नाद। वो मालिक की कुदरती आवाज़ है। कैसे है—कैसे उसका रूप है? अभी प्राइम मिनिस्टर बोले! एक मिनट में आवाज़ सब जगह फैल जायेगी। जिन अफसरों से ताल्लुक है वो काम करने लग जायेंगे। वो तो वहाँ बैठा है, किसने काम करवाया? उसके हुकम ने, शब्द ने, आवाज़ ने। इसी तरह मालिक का हुकम, शब्द, नाम कह लो सब जगह है रेडियो वेवज़ (Radio Waves) की तरह। उसने सारी रचना की है। जैसे उसके हुकम ने काम किया, मालिक का हुकम भी इसी तरह है। उसका रूप ही शब्द है। ईसा ने इसको वर्ड (Word) कहा है। मुसलमानों ने कलमा कहा है, कलामें—इलाही कहा है, बाँगे आसमानी कहा है। हमारे यहाँ शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, बाणी कहते हैं। वो लिखने-पढ़ने से परे है। वो मालिक की कुदरती आवाज़ है, न हिन्दी है, न पंजाबी है, न अंग्रेजी है। है सब जगह जैसे ये आवाज़ें हैं। ये नकल है बाहर। उसकी आवाज़ भी सब जगह है;

सबदे धरती सबदे आकास ॥ सबदे सबदु भइया प्रगास॥

सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। एक रमी हुई ताकत है इसलिए उसको कहते हैं राम। शब्द रूप में रमा हुआ है। है सब जगह लेकिन सुनने का ज़रिया कहां है? वो इसके अन्दर है। जैसे रेडियो की आवाज़ें सुनते हैं स्विच

लगा कर, उसका भी स्विच है। कोई ऐसा फकीर मिले वो सिखाये। वो है गुरु। इसी के लिए गुरु नानक साहब ने कहा है;

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला॥ सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥

कबीर साहब यही कहते हैं;

शब्द गुरु को कीजिये, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में, ठौर ठौर बटमार॥

यही तुलसी साहब ने लिखा है;

सुरति शिष्य सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो।
अलख आकास ऊंधा कुआँ ता में सुरति समाना हो॥

इसी को पलटू साहब ने कहा है;

धुन आने जो गगन की, सोई मेरा गुरदेव।

ये जो हम नारा लगाते हैं धन-धन सतगुरु का, ये किसी बाहर का नहीं, इस गुरु का है। ये धन्य है जिसने चांद सूरज वगैरह बनाये, सब कुछ बनाया। ये धन है और कोई धन नहीं। बाकी दुनिया तो सब फनाह है। सोच लो! इसी को हम कहते हैं हाज़र नाज़र ज़िन्दाराम। हाज़र नाज़र का क्या मतलब है? जो सबकी हजूरी में रहे, सबके साथ रहे। ज़िन्दा वो ताकत जो फनाह के दायरे से परे है। जिसमें कभी कोई तबदीली नहीं आई। राम-रमेता सो रामा। इसी को गुरु नानक साहब ने गुरु माना है। गुरु नानक साहब कन्धार गये। है ये जन्म साखी में लेकिन फारसी के शब्दों में है। वहाँ यार अली फकीर मिला। उसने पूछा—पीरे शमा कदाम अस्त (तुम्हारा गुरु कौन है)? उन्होंने कहा—पीरे मा ज़िन्दा पीर अस्त—कि मेरा गुरु ज़िन्दा गुरु है। कि ज़िन्दा? कि हाँ। मुझे तो ज़िन्दा पर इतकाद नहीं। क्यों? कि जो पैदा हुआ है उसने ज़रूर मरना है। गुरु नानक साहब ने फरमाया;

'यक खुदाये पीर अस्त, कि दाइम ज़िन्दा अस्त। कुल आलम मुरीद अस्त।' कि खुदा ही गुरु है जो हमेशा ज़िन्दा है। सारा आलम उसका मुरीद है। 'बजुज़ खुदा दीगर कदाम अस्त।' खुदा के अलावा और कौन गुरु हो सकता है?

सतिगुरु मेरा सदा सदा न आवै न जाइ॥
उहु अबिनासी पुरखु है, सब महि रहिआ समाइ॥

इसी के मुतल्लक गुरु गोबिन्द सिंह ने कहा है;

मानस की जात सभै एकै पहिचानबो।

सबकी एक ही जात है। ऐसे ही दुनिया झगड़ों में पड़ी है। क्या जात है इसकी? इसको पता ही कोई नहीं। असली जात ही भूल गया। ये बाहर की जातों में फंस गया। है क्या? ''कहु कबीर इहु राम की अंश ॥'' ये राम की अंश है वो भूल ही गया। असली जात को तो भूल ही गया। सबकी एक ही जात है, एक ही गुरु है।

एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक॥
एक ही सरूप सबै एक जोत जानबो॥

जिसकी जोत सबके अन्दर काम कर रही है। दारम दारी कह लो। वह गुरु है। हम कहते हैं गुरु दाता है। लेकिन बाहर वाले तो लगी पड़ी है, लिआओ लिआओ। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं;

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु॥ सतिगुरु मेरा सचा साजु॥

कि मेरा सतगुरु बेमोहताज है सबके बनाने वाला है। कैसे बेमोहताज है? ये कपड़ा बनाया है किसी ने! कैसे बना है? किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग बनाया, किसी ने बुना, देख लो। कितने हाथों से निकला? कितने कारीगर लगे? यह बेमोहताज सतगुरु है जो फूलों में रंग भरता है। अन्दर बैठा काम कर रहा है। पीला रंग अन्दर से लाया। हरा रंग अन्दर से लाया। अन्दर बैठा कटिंग कर रहा है। ये है मुक्ति का दाता। मौत के वक्त इसने काम देना है। बाकी किसी ने नहीं देना। ये काम देने वाला है, बाकी कोई नहीं काम देने वाला। इसको सब छोड़े बैठे हैं। जिस वक्त मौत आयी, मौत अन्दर, आत्मा अन्दर, यमदूत अन्दर। वह रोता है, चिल्लाता है। हम पास बैठे हैं, कोई मदद नहीं कर सकते। उस वक्त धर्म स्थान बाहर, तीर्थ वगैरह बाहर, बाहर वाले गुरु बाहर, कौन छुड़ाये उस वक्त? जमदूत भी अन्दर, आत्मा भी अन्दर! कौन छुड़ाये? अन्दर कोई हो तो छुड़ाये। इसको तो किसी ने खुश न किया। मन्दिरों में गये पुजारियों को खुश किया। गुरुद्वारों में गये भाईयों को खुश किया। मसीतों में गये मौलवियों को खुश किया। तीर्थों पर गये उनको खुश किया। ये काम देने वाला है बाकी कोई काम देने वाला नहीं। सोच लो! इसको किसी ने खुश न किया। न बाहर गुरु हुआ है न होना है। गुरु नानक साहब कहते हैं–

सो गुर करहु जि बहुरि न करना॥ न उहु मरै न होवै सोगु॥

ये तो कल मर जायेगा। सोचो! तुलसी साहब के पास एक प्रेमी आया। उसने गुरु और चेले के मुतल्लक पूछा–उन्होंने कहा;

रेवती दास सुनो तुम भाई। याकी विधि कहूं समझाई॥
नहीं कोई गुरु नहीं कोई चेला। बोले सभ महि एक अकेला॥
जो कोई गुरु चेला करि जाना। सो सो परहि नरक की खाना॥
एक बोल सभि माहिं बिराजा, गुरु चेला द्वैत बिधि साजा।

एक गुरु बन गया एक चेला बन गया दुई तो पहले ही आ गई।

चेला होये नीक विधि भाई। गुरु होये चौरासी जाई॥

चेले का तो फिर भी छुटकारा है नम्रता तो आयी। गुरु तो अहंकार से भर गया कि मैं गुरु हूँ, सोच लो! जहां अहंकार है वहाँ मालिक नहीं। देख लो! अगर ज़रा भी अहंकार है मालिक नहीं। जितने फकीर मालिक की दरगाह में गये हैं उन्होंने कभी नहीं कहा हम गुरु हैं, परमेश्वर हैं। उन्होंने कहा हम दास हैं। गुरु गोबिन्द सिंह क्या लिखते हैं–

जो हम कउ परमेशर उचरि है॥ ते सभ नरक कुण्ड महि परि है॥
मो कौ दास तवन का जानो॥ या मै भेद न रंच पछानो॥

कि जिसने अपने आपको गुरु परमेश्वर कहाया वो सीधा नरकों को गया। मैं तो उनका दास हूँ। हमारे परम सन्त मस्ताना जी फरमाया करते थे ''हम हैं सेवाधारी जोड़े झाड़ने वाले।'' ये नम्रता का मार्ग है, हस्ती को मिटाने का मार्ग है। जब तक हस्ती नहीं मिटती अन्दर जा ही नहीं सकता मालिक के पास। किसी चीज़ का रूप बनने के लिए हमारे अन्दर वो गुण चाहिए जो उसके लिए ज़रूरी है। मालिक का रूप बनने के लिए वो गुण चाहिए जो मालिक के अन्दर है। कबीर साहब कहते हैं कि अगर मालिक की प्राप्ति करनी है तो क्या कर? वो नम्रता का भण्डार हैं कैसे?

कबीर रोड़ा होये रहो बाट का तजि मन का अभिमानु॥
ऐसा कोई दास होये, ताहि मिलै भगवानु॥

कि रास्ते का रोड़ा हो जा, हर एक की ठोकर खा। फिर कहते हैं ये भी नहीं, रोड़े से किसी को ठोकर लगेगी, चोट लगेगी। फिर कहते हैं खेह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं। खेह से कपड़े ख़राब होंगे, हाथ पांव ख़राब होंगे। फिर कहते हैं साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं। ठंडे की ज़रूरत है गर्म मिल गया वो भी दुख, गर्म की ज़रूरत है ठंडा मिल गया वो भी दुख :

कबीर पानी हुआ त किया भइया जो सीरा ताता होइ॥
हरिजनु ऐसा चाहिए, जैसा हरि ही होइ॥

तू अपनी हस्ती को ऐसे मिटा जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। क्या? वो सबका

मालिक है कोई निशानी है उसकी इस दुनिया में? देख लो! कोई गालियां निकाले किसी की रोटी बन्द की? किसी को कुछ कहा? इतनी हस्ती को मिटाये तब मालिक का रूप बन सकता है। ये दारमदारी सतगुरु है। इसको प्रकट करना था। ये जन्म-मरण के बन्धनों से छुड़ाने वाला है। काल से छुड़ाने वाला है। बाकी किसी से नहीं डरता काल। इससे डरता है। इधर एक शब्द गाते हैं–

इस घोघड़ ने सन्तां पकड़ियो करयो भजन से काठो।

वो भजन चाहिए इसको प्रकट करने का। ये काम देने वाला है। इसका नाम भजन है। वो अन्दर है इसके। पाखंडियों ने असली चीज़ ही छुड़ा दी।

पाठी– हमरा सतिगुर विरले जाने।
सूई के नाके सुमेर चलावे तो ये रूप बखाने ॥

मैनेजर साहिब जी– सूई के नाके सुमेर चलावे। सुमेर क्या–मन। इसको काबू करे। ये पहाड़ है। सूई के नाके क्या? ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। कहते हैं दिव्य चक्षु है। कहते हैं तीसरी आंख है। कहते हैं जड़ चेतन की गांठ है। ये खोले, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। फिर उस गुरु का पता चलता है।

पाठी– की तो जाने दास कबीरा, की हरनाक्श पूता।
की तो नामदेव औ नानक, की गोरख अवधूता॥
हमरे गुर की अद्भुत लीला, न कुछ खाये न पीवै।
न वह सोवे न वह जागै, न वह मरै न जीवै॥

मैनेजर साहिब जी– ये गुरु है मुक्ति का दाता। इसको प्रकट करे। ये छुटकारे वाला है। बाकी कोई छुटकारे वाला नहीं। कर करके थक गये, देख लो। सबने गुरु किये किसी का छुटकारा हुआ? ये है छुटकारे वाला। हाँ जीः

पाठी– राम नाम की चौपड़ मण्ड रही दो पासा जग सारी हो।
जिनका जीवड़ा आया जीत घर सो नर सुघड़ खिलाड़ी हो॥

मैनेजर साहिब जी– ये कीमती बात है समझने की–'राम नाम की चौपड़ मण्ड रही दो पासा जग सारी हो।' गा-गा कर चले गये, पता नहीं दो पासा कैसे हैं? ये आपको गवर्नमेंट ने बिजली दे दी। इससे आप बल्ब जला लें सुख ले लें, ट्यूबें जला लें सुख ले लें। हीटर चला लें सुख ले लें। पंखे चला लें सुख ले लें। कारखाने चला लो; ठीक है? अगर हाथ लगावें करंट को तो साड़ेगी भी। दोनों काम इसी ने किये, देख लो! ठीक है? दोनों काम सुख का भी और दुख का भी इसी ने किया। इसी तरह राम नाम की करंट सबके अंदर है। जब स्विच बन्द (Off) कर देते

हैं या चालू (On) कर देते हैं (कई दफा आपने देखा होगा आप किसी ख़्याल में बैठे हैं। टांग सो जाती है। वो काम नहीं करती। जब उस तरफ ख़्याल करो तो काम देने लग जाती है। वहाँ से करंट निकल गई थी। इसी तरह वो करंट सबके अन्दर है। हमने कहां लगाया उसको—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर। इसलिए सड़ रहे हैं। किसी को शांती है? अगर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी पर लगायें तो अन्दर शांती आ जाये। फिर जैसे उन्होंने कारखाने चलाये, किसी ने रूई का, किसी ने कपड़े का, किसी ने प्लास्टिक का, किसी ने जूतियों का, किसी ने कोई, किसी ने कोई। बगैर करंट के तो नहीं चलता, ठीक है? इसी तरह जो (जैसी) भक्ति करो। कृष्ण भगवान ने लिखा है जो भूतों की पूजा करता है वो भूतों के पास जाता है। पित्तरों की करता है पितरों के पास जाता है। देवी-देवताओं की करता है तो उनकी योनियों में जाता है। छुटकारा तो न हुआ? कोई भक्ति कर लो, देख लो! अगर हमें ऐसा मैकेनिक मिल जाये जो इस करंट को पकड़ना सिखाये, हम करंट को पकड़ें और जिस तरफ से आ रही है उस तरफ को चल पड़ें तो कहां जायेंगे? हैड क्वार्टर (Head quarter) पर, भाखड़ा पहुँच जायेंगे। फिर जो मर्ज़ी करो। इसी तरह कोई ऐसा फकीर मिले, वो राम नाम की करंट पकड़ना सिखाये, हम करंट को पकड़ें, वो अभ्यास करें, उस शब्द को पकड़ें, उस नाम की धार को पकड़ें। जैसे ये करंट है इसी तरह वो करंट भी है अन्दर। तो इसको घर का रास्ता मिल जाये। ये मालिक की दरगाह में पहुँच जाये।

सबदि मिलहि तां हरि मिलै सेवा पवै सभि थाइ॥

यही कबीर साहब कहते हैं :

सुरति शब्द में राखिये तब पहुँचे दरबार।
कहें कबीर तहाँ देखिये बैठा पुरष हमार॥
शब्द बिना सुरत आन्धरी कहो कहाँ को जाये।
द्वार न पावे शब्द का फिरि फिरि भटका खाये॥

सारी दुकानें खुली हैं, कोई सौदा ले लो। नर्कों में जाना है तो खूब विषय भोगो। भूत बनना है वो कर लो। पित्तर बनना है वो कर लो। देवी-देवते बनना है तो वो कर लो। अगर ये करना है छुटकारे का तो ये है। ये असली भक्ति है। भागों वालों के नसीबों में आती है, दूसरे के नहीं। गुरु अमरदास बहत्तर (72) साल की उम्र तक जप-तप, तीरथ, व्रत सब कुछ करते रहे। इक्कीस (21) बार गंगा स्नान को गये। पैदल जाना, पैदल आना। अमृतसर के पास गांव था। कहां हरिद्वार,

पैदल जाना पैदल आना—महीने लग जाते थे। फिर गुरु अंगद साहब की शरण में आये। बारह साल कड़ी से कड़ी सेवा की। रात को किल्ली से केश बांधते, दिन को खूब सेवा करनी फिर मालिक की प्राप्ति की। क्या लिखते हैं—''हरि की पूजा दुलंभ है संतहु कहणा कछु न जाई ॥'' कि ऐसे तो सारी दुनिया मालिक की पूजा करती है परन्तु जो असली पूजा है वो दुर्लभ है, मिलनी मुश्किल है। वो है क्या? अगर कोई पूरा फकीर मिले, पूरा गुरमुख मिले वो कहेगा तेरा सतगुरु तेरे अन्दर है। तेरे अन्दर सच्चे नाम की धार आ रही है; उसको पकड़। वो पकड़ाता है—

बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई॥

वो असली पूजा है—यही महात्मा चरणदास कहते हैं;

विद्या माहीं वाद है तप के माहीं रिद्धि।
राम नाम में मुक्ति है योग के माहीं सिद्धि॥
राम नाम में ये सभी, रिद्धि सिद्धि और मोक्ष।
ऐसा इष्ट संवारिये चरनदास कहे सोच॥

सबका नतीजा क्या है? महात्मा चरनदास लिखते हैं :—

चार वेद किये ब्यास ने अर्थ विचार विचार।
ता में निकसी भगति ही राम नाम ततसार॥

रमे हुये नाम की। यही गुरु नानक साहब कहते हैं—

सोधत सोधत ततु बीचारिउ भगति सरेसट पूरी॥
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी॥

बाकी निचले दर्जे की हैं। असली चीज़ ही छुड़ा दी। यही कबीर साहब कहते हैं—

नेम धर्म आचार यज्ञ तप ये उरले व्योहारा।
जा से मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा॥
काल जाल से बाँचा चाहो गहो शब्द तत सारा।
कहें कबीर अमर कर राखहु ज्यूँ परखो टकसारा॥

ये शब्द गुरु की कह लो, नाम की कह लो, सच्चे नाम की कह लो, कलमे की कह लो : ये असली भक्ति है जो जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने वाली है। जिसने ये कर ली चाहे थोड़ी भी है—इस रास्ते को पकड़ा। वो एक दिन मालिक की दरगाह में ज़रूर जायेगा। ये साथ ही आती है। कई दफा आपने देखा होगा कई बच्चे पैदाइश से ही क्रोधी होते हैं। कोई पैदाइशी लोभी होते हैं। कोई पैदाइश

से ही भक्त होते हैं। ये पुराने संस्कार साथ आते हैं। ये भक्ति भी साथ आती है। समय लगता है इसके लिए। डाक्टरी, इंजीनियरिंग के लिए कितना समय लगता है? फिर भी मुकम्मल कोर्स नहीं होता। मालिक का रूप बनना कोई आसान है क्या? कई-कई जन्म लग जाते हैं। पुरानी भक्ति होती है तो आते हैं इस लाइन में! नसीबों वाला ही आता है, दूसरा नहीं। पता भी लग जायेगा, मान भी जायेगा मन, लेकिन नसीबों वाला ही कोई अपनायेगा, जिस पर मेहर है मालिक की, दूसरा नहीं आ सकता।

पाठी– मालिक के हुक्म के बगैर कोई जीव सच्चे सन्तों के पास नहीं जा सकता और सच्ची भक्ति में नहीं लग सकता।

सन्त यहूंना लिखते हैं–कि हज़रत ईसा ने फरमाया कि ''जीव की अपनी कोई शक्ति नहीं जो मेरे पास आये और मेरे से नाता जोड़ कर भक्ति में लग सके, जब तक स्वयं मालिक जीव पर मेहर न करे।'' फिर फरमाया ''कोई जीव मेरे पास नहीं आ सकता जब तक वो पिता जिसने मुझे भेजा है, उसे प्रेरणा न दे।'' सन्त उन्हीं जीवों को चिताते हैं जिनको मालिक उनके हवाले करता है और वो उन्हीं के लिए मालिक से दुआ करते हैं। आम जीवों के लिए नहीं। गुरु नानक साहब फरमाते हैं कि खोटे या खरे सब जीव उस मालिक ने आप ही पैदा किये हैं और आप ही उनकी परख करने वाला है। आप ही खरे खरे चुनकर अपने ख़ज़ाने में वापस दाखिल कर लेता है। बाकी सब जीव भ्रम में पड़ कर रास्ता भूले फिर रहे हैं और चौरासी में धक्के खा रहे हैं।

मैनेजर साहिब जी– किस पर मेहर करता है? जिसको सच्ची तड़प है, सच्ची लगन है, जिसे ख्वाहिश है मैं अपने घर जाऊं। हमें दुनिया की चीज़ों से प्यार है, दुनिया की चीज़ें माँगते हैं–क्या?

ऐसी दुनिया भई दीवानी, भक्ति भाव नहीं बूझै जी।
कोई आवे तो बेटा मांगे यही गोसाईं दीजै जी।
कोई आवे दुख का मारा हम पर कृपा कीजै जी।
कोई करावै ब्याह सगाई भेंट रुपईया लीजै जी।
साँच का कोई ग्राहक नाहीं झूठे जगत पतीजै जी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो अन्धो को क्या कीजै जी।

इसको गर्ज़ ही नहीं, मालिक ही भुला बैठा है। काल ने ऐसी रचना की है याद ही नहीं मालिक। ऐसा इसको फंसाया है। बल्कि फंस-फंस के खुश हो

रहा है ये। इसको पता नहीं, उल्टा बन्धनों में फंस रहा है। जितने कर्म-धर्म वगैरह हम करते हैं सब इसके लिए बन्धन हैं। विषय विकार सब बन्धन हैं। इसको पता नहीं।

करम धरम सभि बंधना पाप पुन सनबंध॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु॥

यही गुरु नानक साहब ने एक जगह और लिखा है;

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझै को थाइ न पाई॥ नाम बिहूणै माथे छाई॥ (मः 1/412)

एक इधर फकीर हुआ है जगजीवन दास। उसने लिखा है कि इस नाम को सब भूले बैठे हैं। बादशाह क्या, राजे क्या, कामी क्या, क्रोधी क्या, जपी क्या, तपी क्या, सब भूलें हैं। ये असली भक्ति है। दादू साहब ने लिखा है–

पाठी– नाउ रे, नाउ रे सकल सिरोमणि नाउ रे।

मैनेजर साहिब जी– सकल सिरोमणि नाउ रे, सबसे ऊंची है। हाँ जी–

पाठी– मैं बलिहारी, मैं बलिहारी, मैं बलिहारी जाँऊ रे।
दूतर तारै पार उतारै, नरक निवारै नांउ रे।
तारन हारा भवजल पारा निर्मल तारा नांउ रे।
नूर दिखावै, तेज दिलावै जोति जगावै नांउ रे।

मैनेजर साहिब जी– 'नूर दिखावै' अन्दर नूर आ जाये। दादू साहब ने यही कहा है। सुनी नहीं फकीरों की किसी ने।

दादू कहत पुकारी कोई माने नाहिं हमारी।
पन्डित काज़ी वेद कतेबे पढ़ पढ़ मुये लबारी।
वह तीरथ वह हज को जाते, बूड़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अँजील बीचारी।
हिन्दू तुरक ईसाई तीनों करम धरम पचहारी।
नूर जहूर खुदा हम पाया उतरै भवजल पारी।

कि मैं कहता हूँ मैंने नूर जहूर खुदा देखा है, तुम भी देखो। कहते हैं कोई कर्मों-धर्मों में फंसा पड़ा है। कोई तीर्थों पर जाता है। कोई हज पर जाता है। कोई पढ़ने-पढ़ाने में लगा है। मेरी सुनता ही कोई नहीं। कहते हैं ये है अन्दर

नाम को प्रकट करना। ये अन्दर नूर को प्रकट कर देता है। अन्दर रोशनी हो जाती है, आदि, अन्त, मध्य सब का पता चल जाता है–

नाइ सुणिऐ घटि चानणा आनेर गवावै॥

नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई॥

बाणी में भी यही है। सब फकीरों की एक ही तालीम है जो मालिक की दरगाह में गये हैं। डाक्टरी का कालेज खुलता है; कोई आये–हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, मास्टर कोई हो। हमें तो गर्ज पढ़ाई तक है। इसी तरह ये है। मालिक की दरगाह में जिसको प्रेम है वो जा सकता है, दूसरा नहीं। हिन्दू हो, सिक्ख हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहाँ सवाल ही नहीं कौम-मज़हब का। ऐसे ही ठेके लेकर बैठा है। बल्कि असली तालीम ही खत्म कर दी। भुला ही दिया सबने। फकीरों के बाद कई-कई गद्दियां बन गईं। फिर जब तक कोई कमाई वाला रहा वो ठीक रास्ता बताता रहा। फिर बाद में भूल ही गये। मन बुद्धि ने सबकी मिट्टी पलीत कर दी। वो कहता ये ठीक है, दूसरा कहता ये ठीक है। और लड़ाई क्या है? मुसलमान, मुसलमान से लड़ रहा है। हिन्दू, हिन्दू से लड़ रहा है। सिख, सिख से लड़ रहा है। वो कहता है मैं ठीक हूँ, वो कहता है मैं ठीक हूँ। देखा किसी ने भी नहीं। हाफ़िज़ फकीर हुआ है, उसने लिखा है–

जंग हफतादो दो मिल्लत हमा रा उज़र बनेह॥

चूं नदीदंद हकीकत रहे अफसाना ज़दंद॥

कि ''हमारे बहत्तर फिरके आपस में क्यों लड़ रहे हैं? बेचारे असलियत से बेखबर हैं। माजूर हैं इसलिए लड़ रहे हैं।'' नहीं तो लड़ाई का क्या सवाल? सोच लो! लड़ाई का सवाल ही क्या? शिया और सुन्नियों के बहत्तर फिरके हैं। सारे ही मुसलमान। कुरान को दोनों ही मानते हैं। मुहम्मद को दोनों मानते हैं, देख लो! फिर झगड़ा किस बात का? मन बुद्धि का। वो कहता है मैं ठीक, वो कहता है मैं ठीक।

जह जह देखउ तह तह साचा॥ बिनु बूझे झगरत जग काचा॥

अगर उस नाम को, कलमें को अन्दर प्रकट कर ले तो अन्दर शांती आ जाये। सब झगड़े खत्म हो जायें। उसने फिर लिखा है–

नगम हा नेक शुनीदम व निदाहाय वाफर।

काबा व बुत्तखाना बनिज़दम हर दो खुद काफर।

''जब मैंने अन्दर के राग रागनियाँ सुनी, उस कलमें को सुना, काबा व

बुतखाना मुझे दोनों ही काफर लगने लग गये।'' यही मौलवी रूम ने लिखा है–

मन्ज़े कुरान मगज़ रा बरदाशतम। उसतखुआँ पेशे संगा अंदाखतम ॥

''कि कुरान के मगज को तो मैंने निकाल लिया है। बाकी जो हड्डियां हैं वो शरीयत वालों आगे फेंक दीं। कुत्तों की तरह लड़ो और मरो।'' असली भक्ति ही छुड़ा दी। गुरु तेग बहादुर क्या लिखते हैं–

माई मैं धन पाइउ हरिनामु॥
मन मेरो धावन ते छुटकिउ कर बैठिउ बिसराम॥
माया ममता तन से भागी उपजिउ निरमल गिआन॥
काम क्रोध परस नहीं सके गही भगति भगवान॥

ये ज्ञान है नाम को प्रकट करना। यही मीराँ ने कहा है–

पायो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो।
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समाइयो।
जिसकी चोरी कबहूं नहीं होवे ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो।

ये धन हासिल कर लिया, ये है छुड़ाने वाला, ये है असली भगति। ये है शांती देने वाली। ये थोड़ी भी हो, कोई करके देखे, अन्दर आने लग जाये, नाम तो दूर पड़ा है इसका सिमरण भी करे कोई। सब अग्नियाँ बुझने लग जायें। कल सुनाया था उधर राजस्थान से बीबी ने लिखा है–'मन तो लगता नहीं मगर कोशिश करती हूँ। अन्दर चमकारे आने लगे हैं। मैंने जोत देखी है।' वो जोत सबके अन्दर है जो हम देखते हैं। हम मिट्टी की बनाते हैं जोतें। वो सबके अन्दर है। इधर एक फकीर हुआ है अचल राम राजस्थान में, उसने लिखा है:

माई मेरे मन्दिर में जोति जगै।
बिन दीपक बिन बाती घृत के झिलमिल जोत जगै।

वो जोत देखनी थी। ये तो आप बनाई आप ही माथा टेक लिया। वो मालिक की बनाई वो कब देखोगे? सबके अन्दर जोतें जल रही हैं। देखनी तो वो थीं। कीमती बात है समझने की–आप मन्दिरों में जाओ, गुरुद्वारों में जाओ, मसीतों में जाओ, गिरजों में जाओ, आपको दो किस्म की शक्लें मिलेंगी। या तो गुम्बद होगी या लम्बूतरी शक्ल होगी। सबके अन्दर घण्टे शंख बज रहे हैं। सबके अन्दर जोतें जल रही हैं। मुसलमानों के मरदंग बजाते हैं, ठीक है, और चिराग जलाते हैं। ये क्या है–लम्बूतरी शक्ल कौन सी है? (नाक की तरफ

इशारा करके) जिसको कृष्ण भगवान ने कहा है 'नासिका के अगर भाव आओ' यहाँ आये। कुदरती जोतें जलती हैं, घंटे शंख बजते हैं। सबके अन्दर है। ये बाहर हमारे समझाने के लिए स्कूल थे। स्कूलों की बिल्डिंगें तो बन गईं मगर पता किसी को नहीं। बस मत्था टेकने पर रह गये। असली चीज़ ही छुड़ा दी। मास्टर ही नहीं रहे। बच्चों को पढ़ाते हैं न! ये क्या है भई? दिखाते हैं न मिट्टी का बना कर! कि ये फूल है। मगर फूल तो नहीं होता! नमूना दिखाते हैं। ये क्या है? ये सन्तरा है। ये क्या है? यह मालटा है। ये क्या है? ये अनार है। चीज़ तो कोई और है। इसी तरह ये दिखाया था फकीरों ने भई ऐसे तुम्हारे अन्दर भी जोतें जग रही हैं, घण्टे शंख बज रहे हैं। बस बाहर ही बाहर रह गई सारी दुनिया। सबके अन्दर जोतें जग रही हैं।

पाठी– सब सुख दाता अमृत राता, दादू माता नाउ रे।

मैनेजर साहिब जी– यह अमृत पीना था, शांती लेनी थी। दुनिया में किस लिए फिर रहे हैं? शांती के लिए। किसी को मिली? माया में किसी को मिली? अमरीका सबसे अमीर मुल्क है। उसमें फोर्ड सबसे अमीर आदमी है। उसने एक बार लिखा कि मुझे कोई शांती दे दे चाहे मेरी सारी माया ले ले। फिर माया में शांती न हुई। देख लो! विषय विकारों में शांती है? जितने विषय भोगता है उतनी ही बीमारियां। अस्पताल पर अस्पताल खुले हैं, देख लो!

धनवन्ते दुखीआ सभी, निरधन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे, पायो भेद अनूप॥
न सुख विद्या के पढ़े, न सुख वाद विवाद।
साध सुखी सहजो कहे, लागी सुन्न समाध॥

जेली को क्या सुख हो सकता है, कैद है। हम सब तीन पिंजरों में कैद हैं।

'तन धर सुखीआ कोई न देखा जो देखा सो दुखीआ रे'॥

जब तक तन में बैठे हैं कोई सुखी नहीं। कबीर साहब ने कहा है : तन मन के बन्धन तोड़े, आज़ाद होवे तब आत्मा मालिक की दरगाह में जा सकती है, ऐसे नहीं। बन्धनों में फंसी पड़ी है। अगर नरकों में है तब भी तन मन का पिंजरा है। यहाँ कीड़ा पतंगा है तब भी तन मन का पिंजरा है। आदमी का है तब भी तन मन का पिंजरा है। दरख्त है तब भी तन मन का पिंजरा है। स्वर्गों में है तब भी तन मन का पिंजरा है, छुटकारा नहीं। इनसे निकले तब आज़ाद हो। ये भक्ति है छुड़ाने वाली।

पाठी– उल्टा कूआँ गगन में तिस में जरे चिराग।

मैनेजर साहिब जी– (सिर की तरफ इशारा करके) ये उल्टा कुआँ है। गगन में कुदरती चिराग जल रहे हैं।

पाठी– तिस महि जरे चिराग बिन रोगन बिन बाती।

मैनेजर साहिब जी– 'बिन रोगन बिन बाती' ये कब देखोगे?

पाठी– छः रुत बारह मास रहत जरत दिन राती ॥

मैनेजर साहिब जी : देख लो! छः रुतु बारह मास! ये तो (बाहर की) कभी बत्ती खत्म हो गई, कभी दीया टूट गया, कभी तेल खत्म हो गया।

पाठी– सतगुरु मिला जो होये ताही की नज़र में आवै।
बिन सतगुरु कोऊ होये नहीं वा को दरसावै ॥
निकसे एक आवाज़ चिराग की ज्योति माहीं।

मैनेजर साहिब जी– 'निकसे एक आवाज़ चिराग की ज्योति माहीं'। देख लो इसमें से निकलती है–'अन्तरि जोति निरन्तरि बाणी' ॥ गुरु नानक साहब ने लिखा है। हाँ जी–

पाठी– ज्ञान समाधि सुने और कोऊ सुनता नाहिं।

मैनेजर साहिब जी– कब देखता है ये जोत? जब ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, जिसको कहते हैं जड़ चेतन की गांठ खोलना; जिसको कहते हैं ज़िन्दा मरना! ज़िन्दा मरना यह नहीं कि कब्रों में चला जाना है बल्कि जब मर्ज़ी देह में आ जाये, जब मर्ज़ी देह से चला जाये। इसका नाम है ज़िन्दा मरना। मौत की घाटी को अबूर करके आ जाये। मौत इसके अपने हाथ में हो जाये। अभी सुनाया था कि टांग सो जाती है फिर ठीक हो जाती है। कोई नुकसान तो नहीं पहुँचता! इसी तरह सारी चेतन सत्या को निकाले, आंखों के पीछे इकट्ठा करे, तब उस जोत को देख सकता है। जब उस जोत को देखता है फिर ये खालसा बनता है।

पूरन जोत जगै घट मैं तब खालसा ताहि नखालस जानै॥

फिर ये सनातनी बनता है–

अब मनु उलटि सनातनु हूआ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

जब ज़िन्दा मरा, सत ताकत से ताल्लुक पड़ा, मैं सनातनी बन गया। यहाँ नाम का तीर्थ है वहाँ काफी सफाई हो जाती है। जब सफाई हुई ये श्रेष्ठ बन गया, पाक बन गया, आर्य बन गया, नामधारी बन गया। इसी का नाम सच्चा सौदा है, बाहर नहीं। बाहर तो बिल्डिंगें हैं। ये तो फनाह है सारी चीज़। बनाने वाले न रहे

वो चले गये इस दुनिया को छोड़ कर। (माथे की ओर इशारा करके) यहाँ आना है, यहाँ से तो शुरू होता है।

सचा सउदा हरिनामु है सचा वापारा राम॥
गुरमति हरिनामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥
इका बाणी इकु गुर इको सबदु बीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भण्डार॥

वो सत ताकत से ताल्लुक जोड़ना इसका नाम सच्चा सौदा है। ये काम करना था नहीं तो कुछ भी नहीं पल्ले। डींगें ही डींगें हैं। बना कुछ भी नहीं। ऐसे ठेके लिए बैठा है। मुसलमान कहते हैं जिसके पास कलमा है उसके लिए चौरासी नहीं, वो मुसलमान है। ये कलमा है, बाहर नहीं। फिर मुसलमान बनता है। फिर तो सब कुछ बन जाये।

पाठी– पलटू जो कोई सुने ताके पूरे भाग।
उल्टा कूआँ गगन में तिस महि जरे चिराग॥

मैनेजर साहिब जी– असली फकीरों का मतलब क्या है? जो मालिक की दरगाह से आये हैं; न कौम बनाने आते हैं, न मज़हब बनाने आते हैं, न कोई तोड़ने आते हैं, न कोई रीति चलाने आते हैं। उनका एक ही मतलब है कि यह दुखों का देश है। निकलो यहाँ से, चलो अपने घर को। उनका असली मतलब यही है, बस। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहब–

पाठी– जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए, सुख सहजि सेती घरि आउ ॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी– गुरु अर्जुन साहब कहते हैं कि जिस मालिक ने तुम्हें भेजा है वो वापस बुला रहा है, सहज अवस्था में, चलो वहाँ सुख का देश है, चलो अपने घर। हम इसको छोड़ना नहीं चाहते; वो कहते हैं चलो वो तुम्हें बुला रहा है।

कहि कबीर हम धुर के भेदी लाये हुकम हजूरी ॥

मालिक का हुकम लेकर आये हैं। यही शम्मस तबरेज़ ने एक जगह लिखा है कि "तू मालिक को अन्दर प्रकट करने का आशिक बन। तू मालिक का बच्चा है। बादशाह के बच्चे को पराये देश में जाकर अमीरियां-वजीरियां हासिल करना वैसे शर्म है। तू कहां बैठा है? चल, अपने देश चल। अपना राज कमा वहाँ जाकर, अपने घर पहुँच।" हाँ जीः

पाठी– अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी– ये बाहर के ख़्याल छोड़, चल अन्दर चल। वहाँ जाकर राज

कर। यह मिट्टी के देशों के लिए लड़-लड़ कर मर गया। न इसके कौम हैं, न इसके मज़हब हैं; न इसके देश हैं। प्रलय हुई, सब फनाह; फिर बन गई दुनिया, सब कौमें भी फनाह, देख लो! कितना बड़ा हिन्दुस्तान था। हमारे देखते-देखते, लंका गई, मलाया गया, तिब्बत गया, बर्मा गया, सोचो! ये तो बदलते रहे हैं, बदलते रहेंगे। सवाल तो है अपने घर पहुँचने का। प्रलय आई सब फनाह। महा-प्रलय आई त्रिलोकी तक फनाह। फिर बन गई। ये तो ऐसे चक्कर चलेगा। ये काम करना था आकर, अपने घर पहुँचना था। मालिक तुम्हें बुला रहा है, चल अपने घर। वो आवाज़ें दे रहा है तुम्हें बैठा। मोहम्मद साहब ने लिखा है :

गुफत पैगम्बर के आवाज़े खुदा। में रस्सद दर गोशे मन हम चूं सदा।

कि ''खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरें लगी हुई हैं इसलिए नहीं सुन सकते।'' वो सबके अन्दर है। वो आंख और है जो उसको देखने वाली है। जिसको शिव नेत्र कहते हैं, दिव्य चक्षु कहते हैं, तीसरी आंख कहते हैं, थर्ड आई (Third Eye) कहते हैं। वो कान और हैं जो उसकी आवाज़ सुनते हैं। वो कब खोलेगे? ये तो किसी ने भी न सिखाया। तुलसी दास जी ने लिखा है–

बिन पग चले सुने बिन काना।
कर बिन करम करे विधि नाना॥

गुरु नानक साहब कहते हैं–

अखी बाझहु वेखना विणु कंना सुनणा॥
पैरां बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

सोच लो! ये आंखें और हैं। यही ईसा ने कहा है–

Have your eyes you see not, Have you ears you hear not.

''इन आंखों के होते हुए आप उस मालिक को देख नहीं सकते। इन कानों के होते हुये आप उसकी आवाज़ सुन नहीं सकते।'' किसी फकीर से पूछ कर अन्दर जाये वो इसके अन्दर आवाज़ें दे रहा है। जिसके मुतल्लक गुरु नानक साहब ने काज़ी रुकनदीन को कहा था–

उपर खासे महल पर देवे बांग खुदाय॥
सुते बाँग न सुण सकण रहिआ खुदा जगाय॥

सुती पई निभाग सभ सुणे न बाँगां कोय॥
जो जागे सोइ सुणे साँई संदी सोय॥

तू यहाँ बांगें दे रहा है वो तेरे अन्दर बांगे दे रहा है कि आ बच्चा तुझे ले चलूं। यही तुलसी साहब ने लिखा है एक जगह–

नकली मन्दिर मस्जिदों में जाये सद्द अफसोस है।
कुदरती मस्जिद का साकिन दुख उठाने के लिए॥

वो दुख उठा रहा है कि मैं इसके अन्दर बैठा हूँ यह बाहर धक्के खा रहा है।

कुदरती काबे के महराब में तू सुन गौर से।
है आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिए॥

वो मालिक की दरगाह से आ रही है, वो कब सुनोगे। इसका बन्दोबस्त सोचता ही नहीं कोई, बस पढ़ा और परे हो गये। इधर मत्था टेका, उधर मत्था टेका। सिखाया ही यही है। असली चीज़ ही छुड़ा दी है। अगर इस रास्ते को अपना ले, इस दुनिया में झगड़ा ही कोई न रहे।

पाठी– अनंद मंगल गुन गाउ सहज धुनि, निहचल राजु कमाउ॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी– ये कितने दिन के राज हैं, सोच लो! दो चार साल के बाद फिर खत्म। ये है निहचल राज हमेशा का, ये हमेशा के सुख का धाम है। जो इस जन्म में आकर इस भक्ति में लग गया वो फायदा उठा गया, बाकी ऐसे बर्बाद करके चले गये, वक्त। ये बाहर के राज जो हैं ये भी करमों के सिलसिले से हैं। देखो त्रिलोकी का मालिक रामचन्द्र, राजपाट का मालिक है, वनों में जाना पड़ा। ये कर्मों के सिलसिले हैं। ये राज है असली अन्दर।

पाठी– तुम घरि आवहु मेरे मीत॥
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी– किस तरह समझाते हैं–आओ मेरे मित्रो, आओ मेरे प्यारिओ, चलो अपने घर को–

कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण का।
आगे आगे हटड़ी बाजार भी नहीं॥

आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता, बोलो! देख लो! मिन्नतें करते रहे हैं फकीर; किसी ने सुनी नहीं। किसी विरले ने सुनी है। क्या ज़रूरत थी उनको आओ मेरे राजा, आओ मेरे दाता कहने की। क्या गरज़ थी कबीर साहब को, सोचो! सिर्फ हमारे फायदे के लिए कि कुछ हासिल कर लें अपने देश पहुँच

जायें। ऐसे चौरासी में धक्के खा रहा है। कभी कीड़ा बनता है, कभी पतंगा बनता है, कभी हाथी बनता है, कभी घोड़ा बनता है। ये हमारे जैसी रूहें हैं। हाल तो देखो बैलों का। कैसे गड्डों में जोतते हैं, कैसे आरें चुभोते हैं। ऊंटों का हाल देखो कैसे लद्दे लादते हैं। बकरों का हाल देख लो! कैसे काटते हैं। गधों का हाल देख लो। और-और चीज़ों का हाल देख लो। ये हमारे जैसी ही रूहें हैं हम भी कभी ऐसे होंगे। मुश्किल से ये आदमी की योनि मिली है–

लख चउरासी जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥
इसु पउड़ी ते जो नर चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा॥

फिर चौरासी तैयार है इसके लिए। यही महात्मा चरनदास कहते हैं–

मनुष्य जनम को रूप दुर्लभ जग माहि है।
देवन हूँ को कठिन प्राप्त नाहिं है॥
सकल देवा यही भाँति मनोरथ नित करें।
मनुष्य जनम को पाइके भवसागर तरें॥

जब कोई जीव सन्तों का चिताआ हुआ मालिक की दरगाह में जाता है वो तरसते हैं कि हम भी वहाँ होते, अपने छुटकारे का बन्दोबस्त करते। वो तरसते हैं हम बर्बाद कर रहे हैं।

पाठी– प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके॥
घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपने खसम निवाजे॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी : फरमाते हैं जिसने ये भक्ति की, अन्दर शांती आ गई। जो मन इधर-उधर भागता दौड़ता था देख लो! एक मिनट चैन है इसको? यहाँ बैठा-बैठा इंग्लैंड, अमरीका, सब जगह एक मिनट में फिर आता है फिर इसको अन्दर शांती आ जाती है, टिक जाता है। अन्दर बाजे सुनता है; कीर्तन हो रहे हैं, बाजे बज रहे हैं। ये तो सुना (बाहर का) बल्ला-बल्ला, बड़ा आनन्द आया भई। फिर आनन्द कहां गया? बाजे भी फनाह, गाने वाले भी फनाह, बोलियां भी फनाह। ये भी बदल जाती हैं, इसकी मस्ती भी फनाह। अगर वो सुन लो, वह मालिक की दरगाह से हर वक्त जारी है, कुदरती है।

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥
बाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वाबणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे॥

कितने गाने वाले हैं अन्दर, कितने बजाने वाले हैं, कितने राग हैं। वो सुन ले इसकी मस्ती उतरे ही न।

नाम खुमारी नानका चड़ी रहै दिन रात ॥

फिर कभी उतरे ही न वो ऐसे राग हैं। जो सुन लेते हैं उनका आने को दिल नहीं करता। हम तो ठेके लिए बैठे हैं। गुरु गोबिन्द सिंह क्या कहते हैं–

द्वै ते एक रूप ह्वै गयो ॥ चित न भयो हमरो आवन को॥
जिउ तिउ प्रभ हम को समझायो ॥ इम कहि कै इह लोक पठायो॥

कि पहले मैं मालिक से अलग था। जब भक्ति करके मालिक की दरगाह में गया। वहाँ की खुशी, शांती और प्रेम को देखा तो मेरा इस दुनिया में आने को दिल नहीं करता था लेकिन मालिक ने जैसे-तैसे समझाकर भेजा है कि तेरा काम तो बन गया जब मर्ज़ी आ, जब मर्ज़ी जा। उनको भी समझा शायद कोई मान जाये। वो आना नहीं चाहते, हम छोड़ना नहीं चाहते। इसके ठेके लिए बैठे हैं–कभी देशों के, कभी कौमों के, कभी कोई। ऐसे फंसा पड़ा है, देख लो! शम्मस तबरेज़ ने भी यही लिखा है। हमारे परम सन्त मस्ताना जी फरमाया करते थे कि गन्दी दुनिया है। यहाँ रहने को दिल नहीं चाहता (कैसे भई मोदी)। गन्दी दुनिया है। किसी को चैन है? ऐसे ठेके लिए बैठा है–हां जीः

पाठी– शम्मस तबरेज़ साहब फरमाते हैं कि ''तुम क्या जानो हम कैसे मुर्ग हैं। अन्दर ही अन्दर हर लम्हा, हर पल हम क्या इच्छा रखते हैं। बाहर से देखने पर चाहे हम इस दुनिया में फकीर मालूम होते हैं। हमारी बड़ाई अन्दर जा कर देखो कि हम कैसे बादशाह हैं। बाहर से चाहे हम कंगाल मालूम होते हैं, तुम हमारे अन्दर झांक कर देखो कि हम कैसे खान हैं। हम खुद खण्डों-ब्रह्माण्डों के बादशाह हैं, हमें क्या गम है। अगर हम आज इस कैदखाने (शरीर) में कैद हैं तो कब तक रहेंगे? हम सब ही इस जगह मेहमान हैं। हमारा इस जगह, इस दुनिया में आना अपने बादशाह के साथ किये इकरार की वजह से है।

मैनेजर साहिब जी– एक इकरार की वजह से है जिससे हम सिर नहीं फेरते वरना रहना नहीं चाहते।

पाठी– जिसे हम निभा रहे हैं। जब तक इस गुदड़ी (शरीर) में हैं, हम किसी को नाराज़ नहीं करते और न ही नाराज़ होते हैं।''

मैनेजर साहिब जी– देख लो! सब फकीरों ने हाथ बांध-बांध के गुज़ारे हैं। तत्ते तवों पर बिठा दिये, देख लो! सब शक्ति रखते थे। वो जानते थे विचारे भूले

हुये हैं, क्या करें। देख लो! हज़रत मोहम्मद के दांत तोड़ दिये, ईसा को सूली पर चढ़ा दिया। ये पलटू ने क्या ज़ुल्म किया था (कि तुम भी अपने छुटकारे का बन्दोबस्त कर लो) ज़िन्दा जलाया शरीयत वालों ने। कबीर को कितने दुख दिये? अब तक रिकार्ड छपे पड़े हैं, पकड़ो-पकड़ो कबीर को। न हिन्दुओं की शरीयत को मानता है, न मुसलमानों की, दे दो फांसी।

पाठी– असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि॥ (मः 5/678)

मैनेजर साहिब जी– पहले तो फकीर नहीं मिलता मालिक की मेहर के बगैर। तुलसी साहब ने लिखा है : बिन हरि कृपा मिले न सन्ता।

उसकी मेहर से किसी भागों वालों को मिलता है। यही गुरु अर्जुन साहब ने लिखा है–

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु॥
जिउ जिउ ओहु वधाइऐ तिउ जिउ हरि सिउ रंगु॥
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरू न दूजा थाउ॥
सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ॥

ऐसा फकीर जिसका ताल्लुक मालिक की दरगाह में भी है, इधर हमारे साथ भी है, भागों से मिलता है; जिस पर मालिक मेहर करे। यही पलटू साहब ने लिखा है :

राम का मिलना सहजि है सन्त का मिलना दूरि।
पलटू सन्त के मिलै बिनु राम से परे न पूरि॥

यही दादू साहब ने लिखा है–दुर्लभ दर्शन साध का दुर्लभ गुरु उपदेश। पहले साधू मिलना मुश्किल है। फिर उपदेश, क्या? नाम मिलना मुश्किल है बगैर भागों के। ''दुर्लभ करवा कठिन है'' फिर इसका जपना मुश्किल है। जपे भी ज़रा अहंकार आ गया या कोई और विघ्न पड़ गया 'दुर्लभ परस आलेख'। फिर दर्शन होने मुश्किल हैं। पहले तो फकीर का मिलना ही मुश्किल है। अगर मिल जाये तो 'असथिर रहो डोलहु मत कबहूँ' उनके वचनों पर पूरा भरोसा रखकर चलो, भजन सिमरण करो। फिर तुम हासिल कर सकते हो। यही भाई गुरदास ने कहा है–

मुरदा होइ मुरीद न गलीं होवणा॥
सबर सिदक सहीद भरम भउ खोवणा॥

ये तो मुरीद बनना पड़ता है, देख लो! मरदाना गुरु नानक साहब के साथ

रहा। कितनी दफा भागा। वो तो फिर पकड़ते थे। वचनों पर रहना मुश्किल है। अगर भजन सिमरण करे तो अन्दर शांती आ जाये। अमर पदवी को प्राप्त कर ले। गुरु अर्जुन साहब के पास मुसलमान आये, उन्होंने कहा–

अलह अगम खुदाई बँदे॥ छोडि खियाल दुनिया के धँधे॥

ऐ खुदा के बन्दे, ऐ खुदा के मुतलाशी, अल्ला अगम क्या? मन बुद्धि की गमता से ऊंचा है, परे से परे है। वहाँ मन बुद्धि नहीं पहुँचती। फिर कैसे जाते हैं? 'छोड़ ख़्याल दुनिया के धन्धे', सारे ख़्याल निकाल दे। अपना काम किया रोटी का, सतिगुरु सतिगुरु कर। ये भी काम करना है, जिस्म को भी चलाना है। बाल-बच्चे भी पालने हैं। लेने-देने भी खत्म करने हैं लेकिन ज़्यादा ख़्याल न फैला इसमें आगे से आगे। जो किस्मत में लिखवाकर लाये हैं वो ज़रूर मिलता है; उस पर सबर कर। थोड़ा दे दिया उसकी मौज़, ज़्यादा दे दिया उसकी मौज़। बच्चा हो गया उसकी मौज़, मर गया उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़। ये है रहने का तरीका। बाकी सारे ख़्याल निकाल दे। इसके लिए क्या कर?

होइ पै खाक फकीर मुसाफिरु इहु दरवेसु कबूलु दरा॥

किसी फकीर की शरण में जा। कौन सा मुसाफिर? कौन सा मुसाफिर? जो रूहानी गण्डलों पर सफर करता है वो तुम्हें रास्ता बतायेगा।

सचु निवाज़ यकीन मुसल्ला ॥ मनसा मार निवारिहु आसा॥

उस पर पूरा भरोसा रख, ये मुसल्ला है। (मुसल्ले पर बैठ कर निमाजें पढ़ते हैं) यकीन के मुसल्ले पर बैठकर सिमरण कर। दुनिया की आशा तृष्णा छोड़ दे।

देह मसीत मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा॥

कहां पढ़ते हैं निमाज मुसलमान? मसीतों में। कौन पढ़ाता है? मौलवी (शरीर की तरफ इशारा) ये मसीत है मालिक की बनाई हुई।

हरि मंदरु इहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥

Body is the temple of God.

इसमें बैठ कर पढ़, मन लगाकर पढ़; ये नहीं कि मन कहीं फिरता है। ये मौलवी है। अगर ऐसे पढ़े 'कलम खुदाई पाक खरा' वो नाम, वो कलमा, वो बांग तुम्हें सुनाई दे। तुम्हें घर का रास्ता मिल जायेगा। जिसने ये किया एक अमर पदवी को प्राप्त हो गया।

पाठी– अब मोहि जीवन पदवी पाई॥ **(मः 5/1000)**

मैनेजर साहिब जी– ये जीवन पदवी हासिल करनी थी। ये गुरु अर्जुन साहब का है 'जीवन पदवी पायी'! यही पलटू साहब कहते हैं :

कोटिन युग परले गई हम ही करनेहार।

मालिक का रूप बन गया। जितने फकीर अन्दर गये हैं सबने तसल्ली करके लिखा है। किसी खास मौके पर ज़ाहिर किया है। आमतौर पर छुपाकर रखते रहे हैं क्योंकि दुनिया ग्राहक नहीं इसकी।

पाठी– अब मोहि जीवन पदवी पाई।

चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– कौन सी जीवन पदवी पायी–मन्दिर मेरे... हाँ जी।

पाठी– मंदर मेरे सभ ते ऊंचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥

मैनेजर साहिब जी– मेरा मकान बहुत ऊंची जगह पर है। धरमराय वगैरह कोई पूछ नहीं सकता। काल नज़दीक नहीं आता जो सबको खा गया। ये जीवन पदवी है।

पाठी– राज हमारा सद ही निहचलु ॥ (बाज हमारी थान थंनतरि ॥)

मैनेजर साहिब जी– वो ख़ज़ाना हासिल कर लिया जिसमें कमी आती ही नहीं। जिसको मीरां ने कहा है–

पायो रे मैंने नाम रतन धन पाइओ॥
जिसको पाये दुख सुख भूले मन अनंद रे समाइओ॥
जिसकी चोरी कबहूं न होवै ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो॥
''साचा नामु मेरा आधारो॥
साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईया॥

वो हासिल कर लिया। हाँ जीः

पाठी– खुलिया करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई॥

स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– अब जिस करम से सन्तों की शरण में जाकर ये हासिल कर ली सब झगड़े मिट गये। जिस शांती की तलाश में फिर रहा था वह शांती आ गई। जितने हम शांती के लिए दौड़ते भागते हैं उतनी अशांती बढ़ती जा रही है, देख लो! ये तो समझता है यह काम कर लूं इसमें शांती आ जायेगी। किसी को मिली? गुरु नानक साहब ने लिखा है एक जगह–

रसु सुइना रसु रूपा कामणि रस परमल की वासु॥

कि धन दौलत इकट्ठी की, खूबसूरत बीवियां रखीं, अच्छे-अच्छे रस लिये। 'रसु घोड़े' क्या? अच्छी-अच्छी सवारियां लीं। उन दिनों में घोड़े थे। आजकल मोटरें, गाड़ियां, हवाई जहाज़ हैं। 'रसु मन्दिर, रसु सेजा', अच्छे-अच्छे मकान बनाये, अच्छी-अच्छी सेजें रखीं। 'रसु मांस' अच्छे-अच्छे मांस पका पकाकर खाये।

एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु॥

नाम कैसे आये? यह उल्टा फंसता ही जा रहा है। यह तो सोचता है शांती आयेगी, उल्टा अशांती बढ़ती जा रही है। जितने सामान हैं; इसके लिए अशांती है। संभालने ही मुश्किल हैं, ऐसे ही उलझ गया ये। ज़रा सा देखा, बल्ला बल्ला। ये इधर टांग (लटका) दे भई, सारा दिन संभालने पर ही रहता है, बेमतलब, देख लो!

पाठी– कामु क्रोधु लोभु मोह निवारे निवरे सगल बौराई ॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– ये काम क्रोध सबकी मिट्टी पलीत कर रहे हैं; ये भी काबू में आ गये। कभी काम ने पकड़ लिया, कभी क्रोध ने पकड़ लिया, कभी मोह ने पकड़ लिया, कभी अहंकार ने पकड़ लिया; इसी में फिर रहा है। इनके काम कर रहा है। औरतें इसकी काम कीं, बाल बच्चे मोह के, जमीनें जायदादें लोभ कीं, मान बड़ाइयां अहंकार की, दुश्मन इसके क्रोध के। आत्मा का कौन सा काम है? सोच लो! बल्कि जबरदस्ती करवा रहे हैं। इसको पता नहीं, हथकड़ियां लगी हुई हैं आत्मा को। दो सिपाहियों ने जेली को पकड़ा हैं। कहते हैं ये कोठी साफ कर, वो करता है। ये काम कर, वो करता है। करना तो नहीं चाहता; सिर पर डण्डा है वो करवाता है। इसी तरह किसी को काम ने पकड़ लिया तो बीवियों के पीछे भागता है। क्रोध ने पकड़ लिया। यह तो चाहता है न मारूं डण्डा, जेलों में जाऊंगा, फाँसियों पर चढ़ूंगा, मरवाता है न मरवाता है क्रोध? करो काबू कौन करता है? यह चाहता है चोरियाँ, ठगियाँ न करूं लोभ करवाता है। मान बड़ाइयों के लिए क्या-क्या नहीं करता। बाल-बच्चों के मोह में फंस कर क्या-क्या नहीं करता। जबरदस्त हुए न हुए, हथकड़ियां हुईं; जबरदस्ती करवा रहे हैं। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं सारे काबू में आ गये; किसी की ताकत नहीं मुझे पकड़ने की। ये जंजीरें सब छूट गईं। ये आज़ादी लेनी थी आकर। इसका नाम आज़ादी है। नहीं तो जो इन्द्री चाहती है इसको खींच कर ले जाती है। देख लो! इन्द्रियों के गुलाम हुए न हुए? काल भी परे, यमदूत भी परे। इसके नज़दीक कोई नहीं आता!

जीआ रे ओला नाम का॥

अवर जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का॥

बस इसके आगे यमदूत नहीं आते। इस सिमरण के आगे भी नहीं आते, नाम तो दूर पड़ा है।

प्रभ कै सिमरनि दूखु जम नसै॥ प्रभ के सिमरनि कालु परहरै॥

ये जो भक्ति है—आम देखो मरतों को, रोते हैं, चिल्लाते हैं, टट्टी-पेशाब निकल जाता है, जिस्म उसी वक्त अकड़ जाता है, तजुर्बा करो। अगर ये भक्ति हो तो पहले बता कर जायेगा। पहले नहीं तो मौके पर बता जायेगा। कई दफा मौके पर भी नहीं बताते। कई रीजन (Reason) हैं इसके। क्यों? घर वाले रोने-पीटने लग जाते हैं कि अभी न जा, अभी न जा तो उसको दुख होता है। फिर उसका टट्टी-पेशाब नहीं निकलेगा। चेहरा पहले से अच्छा होगा। जल्दी जिस्म नहीं अकड़ता ये भक्ति ऐसी है। बल्कि सामने तजुर्बा करे, फिर है। बल्कि जपे तो कुदरती बरकतें पड़ती हैं। असूल ठीक रखे। तसल्लियां मिलने लग जाती हैं जैसे मीरां को मिली, क्या? सांप भेजा हार बन गया, जहर भेजा अमृत बन गया। इसके भी काम करे! हाँ जीः

पाठी– कामु क्रोधु लोभु मोह निवारे निवरे सगल बैराई॥
सद हजूरि हाजरु है नाजरु, कतहि न भइओ दूराई॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– कहता है मालिक साथ-साथ है। दूर है ही नहीं। हर वक्त नाल है, हर वक्त संभालता है।

पाठी– सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए सन्त सहाई॥
पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– संत कहते किसे हैं? पहले तो ये भी पता नहीं। रंगे कपड़े का नाम सन्त नहीं। सन्त वो है जो अभ्यास करके सतलोक में जाये, उसका नाम सन्त है। साधू वो है जो सन्तों का चिताया हुआ हो। ब्रह्म देश के पार, पारब्रह्म में जावे। वहाँ अमृतसर है, प्रयाग है, त्रिवेणी है। वहाँ नहाये, वहाँ सारे बन्धन छूटते हैं; उसका नाम साधू है। ऐसा साधू मिले तब जा सकता है ऐसे नहीं, उनके ज़रिये जा सकता है–

बन्धे को बन्धा मिले छूटै कउन उपाय।
कर सेवा निरबंध की पल में लए छुड़ाये॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु॥

ऐसा साधू मिले, (मिलता मालिक की मेहर से है हम नहीं पहचान सकते।) एक लड़का जाता है स्कूल में, वो अगर ख़्याल करे कि मास्टर को देखूं कि

प्राइमरी है, मिडिल है, मैट्रिक है या एम.ए. है; क्या वह पहचान सकता है? बस इसी तरह ये है। मालिक की मेहर से मिलता है। उसके आगे रोये पीटे। फिर वो मिलाये तो मिलाये किसी के बस नहीं ये। ये उसके अख्तियार है। सब दुनिया तो ठेके लिए बैठी है लेकिन ये दात उसने अपने हाथ में रखी है, किसी के हाथ में नहीं।

पाठी– निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई॥ (मः 5/1000)

मैनेजर साहिब जी– मालिक के चरणों की ओट मिल गई। कोई डर ही नहीं। सब डर ही खत्म हो गये। न काल का, माया का रहा, न यमदूतों का रहा, कोई डर नहीं; न भूत का, न प्रेत का। कोई इसके नज़दीक नहीं आ सकता।

पाठी– नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई॥

मैनेजर साहिब जी– शरीयत ऐसी है इसने किसी को फकीरों के पास आने नहीं दिया। किसी ने कह दिया गुरु नानक साहब को कि कुराइया है तो सब कहने लग गये। किसी ने कबीर को कह दिया जुलाहा है। इसको क्या पता है?

सब से कहूं पुकार पुकारी॥ कोई नहीं माने नर और नारी॥
जगत कहे जुलाहा अज्ञानी॥ हरि हरि का कुछ भेद न जानी॥
नीच जात और भक्त कहाई॥ हरि का दरस कबहूं न पाई॥

सब लग गये बस। इसी तरह कोई नज़दीक न आये। कोई विरला भागों वाला। हमारे सामने की बात है मस्ताना जी को कोई कहे पाकिसतान का जासूस है। काफी साल हो गये थे एक दफा दीवार के साथ बैठे थे। उस वक्त कच्ची सड़क थी। बेगू और नेजिया खेड़ा के कुछ आदमी जा रहे थे। आपस में बातें करते जा रहे थे कि ये पाकिस्तान का जासूस है, ये कभी मरवायेगा, यहाँ पता नहीं पैसा कहां से आता है। मस्ताना जी ने सुन लिया। सुनकर आदमी को भेजा कि उनको बुलाकर लाओ। बेचारे आ तो गये। पूछा कि क्या बात करते थे? कहने लगे जी कुछ नहीं। मस्ताना जी ने फरमाया कि डरो न, बताओ क्या बात करते थे? बोले जी ये बात करते थे। मस्ताना जी ने फरमाया कि तुम कभी सत्संग में आये हो? कि जी नहीं! फिर तुम्हें क्या पता है पाकिस्तान का जासूस है या क्या है? कहने लगे कि जी लोग कहते हैं! मस्ताना जी ने फरमाया हम तो कहते हैं कि तेरा राम तेरे अन्दर है उसको पकड़ ले। वो काम देने वाला है, सुख पायेगा। फिर वो सत्संग पर आकर नाम ले गये। ये हाल है दुनिया का, सुना ही नहीं, देखा ही नहीं, पूछा ही नहीं कि बात क्या है?

पाठी– असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि आधारि॥
जै जै कार सगल भूमंडल मुख उजल दरबार॥

मैनेजर साहिब जी– ये भक्ति करे, जहां से जायें इसकी जय जय कार करें। ब्रह्म लोक से जायें सब इसको नमस्कार करें। इन्द्र लोक से जायें इसको नमस्कार करें। शिव लोक से जायें इसको नमस्कार करें। सतगुरु की भक्ति को सब नमस्कार करते हैं। गुरु नानक साहब ने लिखा है :

पापी करम कमाँवदे करदे हाय हाय॥
नानक जिउ मथनि मधानियां तिउ मथे धम्रराय॥
नाम धिआइनि साजना, नाम पदारथु जीति॥
नानक धरम अैसे चवहि कीतो भवन पुनीत॥

पाठी– जै जै कार सगल भूमंडल मुख ऊजल दरबार॥

मैनेजर साहिब जी– 'मुख ऊजल दरबार' क्या कहते हैं रविदास–

जात भी ओछी, करम भी ओछा ओछा किसब हमारा॥
नीच से प्रभ ऊंच किया कह रविदास चमारा॥

पाठी– जिन कै जिउ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई॥
अचरजु कीआ करनेहारै नानक सचु वडिआई॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं, क्या? कि मैं मालिक का जीव था। चौरासी में धक्के खा रहा था। मालिक ने मेहर की अपने घर ले गया। ये अचरज है ये उसकी मेहर है–हां जीः

पाठी– भजन बिना बावरा तूने हीरा जन्म गंवायो।

मैनेजर साहिब जी– असली भजन यह है जो अन्दर सतगुरु को प्रकट करना है, सच्चे नाम का रस लेना है। जैसे मीरां ने लिया और और फकीरों ने लिया। ये असली भजन है। जो आम तौर पर करते हैं वह असली भजन नहीं। महात्मा जगजीवन साहब कहते हैं–

पाठी– कोऊ बिन भजन तरिहै नांहि॥
करैं जाये अचार केतो, प्रति नित नहाए॥
दान पुण्य करि तपस्या, ब्रत बहुत रहायें॥
त्याग बस्ती बैठि बन मांहि कन्दमूल ही खाये॥
पाठ करि पढ़ि बहुत विद्या रेण छिन ही बकायें॥

मैनेजर साहिब जी– ये नहीं कि इसका फल नहीं, फल है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते।

पाठी– गाये बहुत बजाये बाजा मन ही समझत नाहिं।
करे सवासा बन्द कषिटत भांड की गत आँहिं॥
साध पवन चढ़ाये गगनेहि कमल उलटे नाहिं॥
साध नहीं केहू कीनहि अैसे सीख बहुत कहाहिं॥
प्रीती रसि मन नाहिं उपजत परे ते भव माहिं॥
जैसे संयोग वियोग तैसे, तत अच्छर दुहि आहिं॥
रटत अन्तर भेंट गुरु ते, अन्तर अजप्पा माहिं॥
कहों प्रकट पुकारि जेहिं के, प्रीत अन्तर माहिं॥
जगजीवन दास रीति अैसी, तब चरण महि मिल जाँहि॥

मैनेजर साहिब जी– मालिक का प्रेम तो उठा ही न, तड़प ही न उठी। किया तो सब कुछ, तड़प ही न उठी। ये है भजन (इस नाम को प्रकट करना था) अन्दर शब्द से ताल्लुक जोड़ना, नाम का रस लेना।

पाठी– न कदी आयो सन्त शरण में, न सतगुरु गुण गायो।
पचि पचि मरियो बैल की न्याई जो निरीओ सो खायो॥

मैनेजर साहिब जी– भजन करना तो दूर रहा इसने तो गुण भी न गाये। उसके (सीरी के) गाता है कि उसने बड़ा अच्छा काम किया। देखो उसने क्या किया, खेत बीज दिया, काट दिया, पानी लगा दिया। जिसने दाने बनाये उसके किसी ने गुण नहीं गाये, देख लो। उसके गुण गाये किसी ने? सीरी के गाये उसके (मालिक के) तो न गाये। वो चांद तारों पर चढ़ गया, उसने ऐसा मन्दिर बनाया, उसने ये किया। अगर उसमें से निकल जाये, कैसे बनाये। ये भी गुण न गाये देख लो। कोई चीज़ है, कैसे काम कर रहा है, कैसे अन्दर हरा रंग भरता है, कैसे कटिंग करता है, इसके किसी ने न गाये। उसने फलानी चीज़ बनायी। अगर उसमें से निकल जाये, कैसे बनाये। इसके तो किसी ने गुण न गाये, ये बाहर के भी न गाये।

पाठी– ये संसार हाट बनीये की, सब जग सौदे आयो।
चातर कीना दाम चौगुना, मूर्ख मूल गंवायो॥

मैनेजर साहिब जी– गवर्नमेंट किसी अफसर को पैसे देती है कि ये काम करना है। अगर वो खा पी जाये, बर्बाद कर जाये तो फिर उसका नतीजा क्या है? नौकरी से हटा देते हैं, घर बाहर कुर्क कर लेते हैं, जेलों में डाल देते हैं। फिर जल्दी नौकरी नहीं मिलती। बस इसी तरह मालिक ने स्वांसा रूपी पूंजी दी थी। एक-एक स्वांस की कीमत त्रिलोकी जितनी है, इसकी कदर नहीं। दस रुपये गिर जायें, दस दिन चिन्ता फ़िक्र नहीं जाती, देख लो! एक-एक स्वांस की कीमत त्रिलोकी जितनी है। चौबीस हज़ार स्वांस रोज़ के गुम करते हैं।

कहता हूँ कहि जात हूँ कहाँ बजाउँ ढोल।
स्वांसा खाली जात है तीन लोक का मोल॥
ऐसे महंगे मोल का एक स्वांस जो जाए।
चौदह लोक पटंतर नहीं काहे धूल मिलाए॥

मिट्टी में मिला दिये, सोच लो! चार रुपये का फ़िक्र है, इन स्वांसों का किसी को फ़िक्र नहीं, देख लो! ये हमें दिये हैं छुटकारे के लिए, सौदा करने के लिए, ये जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने के लिए। जिसने ये बन्दोबस्त कर लिए वो तो फायदा उठा गया, बाकी ऐसे बर्बाद करके चले गये।

पाठी– ये संसार फूल सिम्बल का लाली देख लुभायो।
मारी चोंच रूई जब निकसी, सिर धुन धुन पछतायो॥

मैनेजर साहिब जी– महमूद गज़नबी एक मुसलमान बादशाह हुआ है। उसने हिन्दुस्तान पर सत्रह (17) हमले किये। सोमनाथ के मन्दिर में हीरे जवाहरात लगे हुये थे। वो भी लूटकर ले गया। जब मौत आयी कहने लगा, भई जो कुछ मैंने लूटा है वो दिखाओ। कई मील तक बाजार लग गये सामान के। जब पालकी में लिटाकर ले जाने लगे तो दोनों हाथ खाली बाहर निकाल दिये कि इस माल के लिए मैंने हज़ारों औरतों को विधवा किया, हज़ारों बहनों के भाई जुदा किये, हज़ारों मांओं को बच्चों से जुदा किया, आज मेरे साथ नहीं जाता। फिर पछताता है। इसी तरह इसका हाल है, फिर पछताता है; अब तो सब मस्ती में हैं।

पाठी– ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भई अँत समय पछतायो॥

मैनेजर साहिब जी– सुनो मीरां क्या कहती है :

पाठी– मीरां रो मन राम ही राम रटै।
दासी रो मन राम ही राम रटै॥

राम नाम तू जपले प्राणी कोटिक पाप कटै।

मैनेजर साहिब जी– गुरु अर्जुन साहब भी यही कहते हैं–

सिमरत नामु किलविख सभि काटे॥ धरमराइ के कागर फाटे॥

ये खत्म करने वाला हे–

पाठी– जन्म जन्म की खता पुरानी नाम ही लेत फटै।
राम जी रटै कोई भगवान रटै, मीरां रो मन राम ही राम रटै।

"धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा"

सत्संग

'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– किसी ने योग सिखाया, किसी ने पुण्य सिखाया, किसी ने दान सिखाया, किसी ने कर्म-धर्म सिखाया, सोचो! हमारा छुटकारा नहीं हुआ। अब तक इसी तरह फिर रहे हैं चौरासी में। युगों के युग बीत चुके हैं, हमें वो मुक्ति वाला गुरु नहीं मिला। छुड़ाने वाला गुरु नहीं मिला, छुड़ाने वाला गुरु नहीं मिला। जो मुक्ति देने वाला है, छुड़ाने वाला है वो नहीं मिला। आत्मा तीन शरीरों में कैद है। पहले कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर स्थूल शरीर है। मच्छन्दर इस देह से निकल जाता था। यहाँ तक तो आया आगे संभालने वाला नहीं मिला (मन काबू न आया, विषय विकार भोगे)। आगे अनेकों रुकावटें हैं। कबीर साहब ने लिखा है–

''रगड़ा है भारी॥

कोई समझे सन्त सुजान, रड़बड़ मच रही है भारी॥''

अजीब रड़बड़ है। सोचो! वो मुक्ति देने वाला एक ही है। वो कौन सा है? तुलसी साहब कहते हैं–

''सुन हिरदे सतगुरु सहदानी॥ सतिगुरु सत्तपुरुष को जानी॥''

रहता कहां है?

''चौथे पद में करे निवासा॥ तीन लोक में काल का वासा॥''

जो रचना का काम है, सतगुरु ने काल के सुपुर्द किया है–

''खण्ड पाताल दीप सभि लोआ ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीया॥''

ताकत भी वहीं से मिलती है उसको। काल के सुपुर्द स्वर्ग नरक सारे ही हैं लेकिन जो छुड़ाने का काम है, सतगुरु ने (सतपुरुष ने) अपने हाथ में रखा है। सोच लो! तभी तो बाहर नकलें चल पड़ीं। महात्मा चरणदास लिखते हैं–

गलियारे गुरु फिरत हैं घर घर कन्ठी देत।
और काज उनको नहीं द्रव्य कमावन हेत ॥
कन फूंका गुरु जगत का, राम मिलावन और।
सो सतगुरु को जानिये मुक्त दिखावन ठौर॥

वो मुक्ति वाला इसके अन्दर है। वह एक ही है, सतपुरुष है। वह ले जाये तो ले जाये, जब हमें रास्ते का ही नहीं पता, सोचो! कितने काम किए जप वगैरह, तप किये, सब। सोच लो! छुटकारा न हुआ। वह सब के अन्दर है, हो कैसे? कहते हैं वो गुरु दाता है, बाहर वाले तो मंगते हैं। लाओ-लाओ लगी पड़ी है। गुरु रामदास साहब कहते हैं–

''सतिगुरु मेरा बेमुहताजु॥ सतिगुरु मेरा सचा साजु॥''

वो (सतगुरु) बेमुहताज है। हमारा मोहताज नहीं, कैसे बेमोहताज है? यह कपड़ा बनाया है। कैसे बना? किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग बनाया, किसी ने बुनी, कितने हाथों से निकला है ये? सोचो! कितने कारीगर लगे? कितने औजार लगे? यह बेमोहताज सतगुरु है (फूल उठाकर दिखाते हुए) जो फूलों में रंग भर रहा है। अन्दर बैठा काम करता है। यही काल को ताकत दे रहा है। बनाया तो ये काल ने है, लेकिन शक्ति वहाँ से मिली है। वो करंट वहाँ से आ रही है। देख लो! अन्दर बैठा कारीगर है जो काम कर रहा है। ये मौत के वक्त छुड़ाने वाला है। मालिक की दरगाह में ले जाने वाला भी यही है। इसी को कहते हैं हम हाज़र नाज़र ज़िन्दाराम। हाज़र नाज़र का मतलब है, जो हर वक्त किसी की हजूरी में रहे, साथ रहे। ज़िन्दा वो ताकत जो मरने जमने से परे है, जो फनाह के दायरे से परे है, राम–जो रमी हुई है। ''रमेता सो रामा।'' यह सब के अन्दर है। फकीरों ने इसे देखा। बाहर आकर होका दिया। या तो सतपुरुष खुद आया लेने के लिए या फिर किसी बाडी (Body) को तैयार किया, सोचो! ले जाने के लिए। ये खुद ले जाये तो ले जाये वह ताकत वरना कोई नहीं जा सकता। कबीर साहब इसीलिए आये थे ले जाने के लिए, कोई जाने को तैयार नहीं। कृष्ण भगवान को नारद ने कहा, दुनिया दुख उठा रही है, तूं इनको अपने स्वर्गों में क्यों नहीं ले जाता? वह कहने लगा, मैं ले तो जाऊं पर कोई जाने को तैयार ही नहीं। स्वर्गों में भी कोई जाने को तैयार नहीं? कि नहीं, ला अगर कोई है। आगे एक सूअर मिल गया, पूछा भई चलो तुम्हें स्वर्गों में ले जायें। वहाँ क्या

है? बड़े सुख हैं। अच्छा फिर मैं सूरी से सलाह कर लूं। सूरी के पास गये वह कहने लगी कि वहाँ गन्द है, रूढ़ियां हैं? कि नहीं। फिर हम खायेंगे क्या? हम नहीं जाते। हमारा यह हाल है। वे आते ही इसीलिए हैं, घर ले जाने के लिए, ये देश दिखाने के लिए कि वहाँ पहुँचों वो सुख का धाम है। यहाँ दुख उठा रहे हो। त्रिलोकी के दायरे तक कहीं सुख नहीं–

पपीहा जाये पुकारियो पंछीअन आगे रोए।
तीन लोक फिर आयो हूँ बिन दुःख लखियो ना कोए॥

महात्मा जगजीवन साहब ने कहा है। वहाँ तक (त्रिलोकी) कोई सुखी नहीं, सुख का देश चौथा लोक है।

कहि कबीर हमरा गोबिन्द॥ चौथे पद महि जिन की जिंदु॥

वो आनन्द का देश है, खुशी का देश है, जिसको कहा है–

''महरम होय सो जाने साधो, ऐसा देश हमारा॥''

तो इसके लिए कबीर साहब क्या कहते हैं? सारा भेद खोलते हैं कि किस तरह दुनिया फंसी है। कहां-कहां कौन-सी चीज़ है। निकलने का रास्ता क्या है? जैसे, हम कोई मोटर खरीदते हैं, ट्रैक्टर खरीदते हैं तो उनके साथ एक पैम्फलैट (Pamphlet) आता है। उनमें सारा लिखा होता है कि यह पुर्जा ऐसे खोलते हैं, ये यूं करते हैं, वह ऐसे करते हैं आदि। इसी तरह कबीर साहब ने अन्दर का सारा भेद खोल दिया। जितना साफ कबीर साहब ने खोला है, और किसी ने नहीं खोला। क्या? बोल भई, (है तो लम्बा पर यहां पर आपको मुखसर (संक्षिप्त) सा सुनाते हैं) हाँ :

पाठी– कर नैनों दीदार महल में प्यारा है॥

मैनेजर साहिब जी– ये महल है, उसके रहने की जगह (शरीर की तरफ इशारा)। वो आंखें और हैं जो सतगुरु को देखने वाली है :

''नानक से अखड़ीयां बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥''

जिसको शिव नेत्र कहते हैं, तीसरी आंख कहते हैं। वो खोले, तब देख सकता है। तुलसी साहब लिखते हैं–

है घट में सूझत नहीं लाहनत ऐसी जिंद।
तुलसी इस संसार को भया मोतिया बिंद॥

सब की आंखों पर मोतिया बिन्द चढ़ा हुआ है। बाहर के मोतिया बिन्द का फिक्र है, उसका किसी को ख़्याल ही नहीं? वो (सतगुरु) इसके अन्दर है। आंख

खोले तो देखे। उसके लिए क्या करे? है सब के अन्दर। क्या करे फिर उसके लिए? हाँ...

पाठी– काम क्रोध मद लोभ विसारो। सील संतोष क्षमा सत धारो॥
मद्य मांस मिथ्या तजि डारो। हो ज्ञान छोड़े असवार भ्रम से न्यारा है॥

मैनेजर साहिब जी– ये पहला कदम है। क्या? अगर मालिक को देखना है तो क्या कर? काम छोड़ दे, विषय छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे। काम से रूह नीचे गिरती है, क्रोध से रूह फैलती है। जब क्रोध आता है तो बेहोश हो जाता।

क्रोध भूत जब ता पर आवे। तन मन की सुधि बिसरावै॥
वो आत्म घाती जानौ। वो महा मूड़ पहिचानौ॥

महामूढ़ बना देता है। लोभ छोड़ दे, इससे रूह भारी होती है। अहंकार से मन मोटा होता है। मोह से इसके साथ बंधता है। इसकी बजाय शील, क्षमा, संतोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी अख्तियार कर। और मांस, शराब वगैरह छोड़ दे। मांस-शराब खाना तो दरकिनार, मांस-शराब खाने वाले के पास भजन करने वाला बैठ जाये तो भजन बनना हट जाता है। कबीर साहब लिखते हैं–

मांसाहारी मानवा प्रत्यक्ष राक्षस अंग॥
ताकी संगत मत करो पड़त भजन में भंग॥

सोचो! पास बैठने से। दुनिया तो कहती है, खाओ। पास बैठने से भजन बनना हट जाता है। बाहर सारी चीज़ मिथ्या है। ये सारी फनाह है। जब आंखें बन्द हुईं, न कौम रही, न मज़हब रहा, सोचो! न मां, न बाप, न बहन, न भाई ये तन भी गया। इनका प्यार छोड़ दे। ये पहले कदम हैं। इनका प्यार छोड़ता जा। इसका मतलब यह नहीं कि घर-बाहर छोड़ देना है। घर-बार छोड़ने से भी कुछ नहीं बनता। घर-बार छोड़ कर गये, जंगलों में, क्या बना? छोड़ना क्या–

''तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना॥''

ये त्यागना था, काम-क्रोध को त्यागना था। ये त्याग करना है, जिस्म को भी चलाना है। इसके लिए रोटी का भी बन्दोबस्त कर, लेकिन ज़्यादा ख़्याल (तवज्जो) न दे। बाल-बच्चों के लेने-देने भी खत्म कर।

जिनका मन ब्रिकत सदा, रहो जहां चित लाइ।
घर बार दोऊ एक सा, डारी दुविधा खाइ॥
के घर के बाहर से, जो चित आवे नाम।
दोनों होंए बराबरी, के जंगल के ग्राम॥

यहाँ कोई सवाल नहीं। हाँ...

पाठी– धोती नेती वस्ती पाओ। आसन पदम जुगत से लाओ।

मैनेजर साहिब जी– इस जिस्म के चार हिस्से बनाये हैं, उन्होंने। चार हिस्से हैं। एक सचखंड, सतलोक (फनाह के दायरे से परे है। हमेशा कायम है उसमें कोई तबदीली नहीं।) ब्रह्माण्ड, अण्ड और पिण्ड। ये चार हिस्से हैं। आंखों तक पिण्ड है। इसके आगे अण्ड का देश है सहस्र कमल दल तक। उसके आगे ब्रह्माण्ड है। फिर सचखंड (सतलोक) है। हम यहाँ बैठे हैं, (माथे पर आंखों के बीच की तरफ इशारा) जब कोई बात समझ में नहीं आती तो ऐसे बैठ जाते हैं। सोच लो! हम यहाँ बैठे हैं जागृत अवस्था में। जब नींद आती है तो कण्ठ में हो जाते हैं स्वप्न में। जब गहरी नींद आती है तो रूह नाभि में चली जाती है। रूह कह लो, तवज्जो कह लो! हम यहाँ (आंखों के पीछे) बैठे हैं, ऊपर चढ़ना था। जैसे, कोई छत पर बैठा हो उसने चौबारे पर जाना है। क्या वह नीचे आकर ऊपर जाये या छत से ही ऊपर चढ़ जाये? हम बैठे ही यहाँ हैं। यहाँ से सन्तों का मार्ग शुरू होता है। लेकिन योगी जो हैं नीचे-नीचे रह गये। उन्होंने नीचे से शुरू किया है, उन्होंने सारी उम्र वहीं खत्म कर दी यहाँ तक पहुँचे भी नहीं। रिद्धि सिद्धि प्राप्त की और तो कुछ पल्ले न पड़ा। सोच लो। ये कबीर साहब का मार्ग तो नहीं, फिर भी समझाने के लिए बताते हैं कि वे (योगी) ऐसा करते हें ताकि वे ये न कहें कि उसको पता नहीं। नीचे का मार्ग है, उनको बताते हैं, क्या? हाँ सुनो...

पाठी– कुम्भक कर रेचक करवाओ। पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है॥

मैनेजर साहिब जी– अब योगियों का हाल बताते हैं कि वे धोती, नेती, वस्ती कर्म वगैरह करते हैं। धोती क्या? 20-25 गज की कोई मलमल की पट्टी लेकर भिगो कर अन्दर डालते हैं, निकालते हैं। फिर डालते हैं फिर निकालते हैं। जब साफ होकर आ जाये तो समझते हैं, अन्दर सफाई हो गई। इसी तरह नेती करते हैं। इसी तरह बस्ती कर्म करते हैं। ये जिस्म की सफाई के लिए है। वे समझते हैं कि साफ हो गया। फिर क्या करते हैं? आलथी पालथी मार कर (एक टांग इधर रख दी, एक टांग उधर रख दी) बैठ जाते हैं। फिर गुदा चक्र में ध्यान लगाते हैं। मूल नीचे का हिस्सा। यहाँ आते हैं। पहले श्वांस चढ़ाते हैं फिर ठहराते हैं, फिर बाहर निकालते हैं। उनकी अपनी-अपनी प्रैक्टिस (Practice) है। कोई एक घण्टा, कोई आधा घण्टा, कोई पांच मिनट। फिर ये वक्त बढ़ाते जाते हैं। ये उनका मार्ग है लेकिन कबीर साहब का नहीं। हाँ वह (कबीर साहब का) आसान मार्ग है। इसमें तकलीफ भी बड़ी है। हाँ जीः

पाठी– मूल कँवल दल चतुर बखानो। कलिंग जाप लाल रंग मानो॥
देव गणेश तहँ रोपा थानो। रिद्धि सिद्धि चंवर दुलारा है॥

मैनेजर साहिब– यहाँ बैठ कर योगी कलिंग-कलिंग का जाप करते हैं। चार दल का कमल है। यहाँ तवज्जों देकर कलिंग का जाप करते हें। यहाँ का मालिक कौन है? गणेश। कहते हैं न, कोई काम हो गणेश की पूजा पहले। इन्होंने तो नकल बना ली बाहर। असली क्या है? यहाँ उसको प्रकट करे तो रिद्धियां-सिद्धियां आ जाती हैं। किसी काम में कहते हैं न गणेश की पूजा करो पहले, मुख्य पूजा ये है। इसमें भी रिद्धियां-सिद्धियां आ जाती हैं, अगर इसको प्रकट करे। लेकिन हम तो बाहर ही बाहर रह गये। हाँ जीः

पाठी– स्वाद चक्र षटदल विस्तारो। ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो।
उलटि नागिनी का सिर मारो। तहां शब्द ओंकारा है॥

मैनेजर साहिब जी– आगे स्वाद चक्र है। वहाँ ब्रह्मा और सावित्री हैं पैदायश का महकमा है। उनको कर्म दिये जाते हैं, उस हिसाब से जिस्म बनाते हैं। वहाँ वो योगी बैठ कर ओइम्-ओइम् का जाप करते हैं। लेकिन वह ओइम् जो असली है, वह ऊपर है। यह नकल है। ब्रह्माण्ड की नकल अण्ड में है, अण्ड की पिण्ड में है, जैसे सूरज अपनी जगह पर सूरज है। कई दफा आपने देखा होगा तालाब पर बिम्ब पड़ता है, अन्दर सूरज तो दिखाई देता है, पर उसमें वो गर्मी नहीं न उसमें इतनी रोशनी है। इसी तरह आप ने देखा होगा वही रोशनी आगे दीवार पर पड़ जाती है। तो दीवार पर उससे (पानी से) भी मध्यम है। इसी तरह पिण्ड का हाल है। वे (योगी) इस नकल में फंस गये, नीचे की नकल में। हाँ वहाँ एक रग है, जिसको कुण्डलिनी कहते हैं। योगी वहाँ से उसके ज़रिये जोड़ कर तवज्जो मेरु दण्ड से जोड़ते हैं। इससे और रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। हाँ जीः

पाठी– नाभी अष्ट कँवल दल साजा। सेत सिंहासन विसनु बिराजा।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा। लक्ष्मी शिव आधारा है॥

मैनेजर साहिब जी– आगे नाभी चक्र में विष्णु है, लक्ष्मी और विष्णु। वह राशनिंग (Rationing) आफिसर है। कहते हैं न विष्णु पालता है। जो खुराक हम खाते हैं, मेहदे में जाती है। यहाँ से रगें लगी हुई हैं–कोई दिमाग को, कोई हाथ को, कोई पैर को। वह एक शक्ति है जो सबको खुराक पहुँचाती है। वह एक शक्ति है, सबके अन्दर है–चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिख है। वहाँ पर

उसका सफेद रंग है। आठ दल का कमल है। गणेश लाल रंग का है। ब्रह्मा श्याम रंग का है। यहाँ सफेद रंग है। वहाँ से रगें पहुँचाती हैं। ये उसका काम है। ये उसकी Duty है। हाँ, ये सब अपनी-अपनी ड्यूटियां दे रहे हैं। ये शक्तियां हैं। हाँ जीः

पाठी– द्वादस कँमल हृदय के माहीं। जंग गौर शिव ध्यान लगाई।
सोहं शब्द तहां धुन छाई। गण करें जै जै कारा है॥

मैनेजर साहिब जी– आदमी एक उल्टा दरखत है। दरखत की जड़ें नीचे हैं ऊपर को ताकत देती हैं। इसके दिमाग के ज़रिये ताकत आ रही है नीचे को, तब उन्होंने लिखा है ''लक्ष्मी शिव आधारा है'' विष्णु को ताकत वहाँ से मिलती है, तो आगे जाकर बारह दल का कमल है। शिव बैठा है, शिव-पार्वती कह लो। वहाँ का रंग हरा है। वहाँ सोहंग का जाप है। ये सोहंग और हैं, ये नीचे दर्जे का है। वेदान्ती इसको ओइम्-सोहंग कहते हैं। ओइम् और सोहंग का मिलाप। लेकिन जो असली सोहंग है वो बहुत ऊंचा है, वो आगे आयेगा। वो बहुत ऊंचा है, ये नकल में हैं। यह प्राणों के भण्डार का मालिक है। इसका काम प्राणियों को चलाना है। गमी खुशी, रंज, दुख यहाँ से पैदा होते हैं। हाँ...

पाठी– षोड़स कंवल कंठ के माहीं। तेहि मध्य बसे अविधा बाई।

मैनेजर साहिब जी– जिसको देवी कहते हें, शक्ति कहते हैं, वह सोलह दल का कमल है। वहाँ का रंग पीला है। झण्डे इसी तरह चढ़ाते हैं हरा-पीला। बस यही है। हाँ... वहाँ का रंग पीला है। वह सोलह दल का कमल है (वह शक्ति है)। संत उसको अविधा कहते हैं। कुदरत कह लो उसको। ये सब उनको पंखा कर रहे हैं। वहाँ से ये सब ताकतें शक्ति ले रही हैं। ये माया का खेल है जहां वो सबको धोखा देती है इसलिए उसको अविधा कहा है।

पाठी– हरि हर ब्रह्मा चँवर दुराई। जहँ ऋङ्ग नाम उचारा है।

मैनेजर साहिब जी– वहाँ बैठकर जोगी शृंग शृंग का जाप करते हैं वहीं रह गये। कोई विरला आगे गया है। नहीं तो आगे गये ही नहीं, यहीं रह गये।

पाठी– ता पर कंज कँवल है भाई। बग भौरा दुई रूप लखाई।

मैनेजर साहिब जी– यहाँ से सन्तों का मार्ग शुरू होता है। यहाँ मन और आत्मा की बैठक है। दो दल का कमल है। आंखों के पीछे है। तब फकीर यहाँ ध्यान लगाकर आगे ले जाते हैं, नीचे नहीं आने देते। हाँ जीः

पाठी– निज मन करत तहां ठकुराई। सो नैनन पिछवारा है ॥

मैनेजर साहिब जी– सिमरण करके यहाँ आये तो तीसरी आंख खुलती है। ये आंखों के पीछे है। ये पिण्ड की रचना इससे चल रही है, नीचे ये हैडक्वार्टर है पिण्ड की रचना चलाने के लिए। हाँ जीः

पाठी– कँवलन भेद किया निर्वारा। यह सब रचना पिण्ड मँझारा।
सतसंग कर सतगुरु सिर धारा। वह सतनाम उचारा है।

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि यहाँ का भेद सन्तों से पता चलता है, उनका सत्संग करके। वे कहते हैं, अपने सतगुरु के देश पहुँचो। जहां से सतनाम की, सच्चे नाम की धार आ रही है। वो सच्चा नाम मालिक की कुदरती आवाज़ है। सत पुरुष की कुदरती आवाज़ है। यहाँ तक आती है, नीचे नहीं। वो लिखने पढ़ने से परे है। इसके मुत्तल्लक पलटू साहब ने कहा है–

नाम डोरि है गुप्त, कोऊ नहीं जानता॥
निहं अछर निहं रूप दृष्ट नहीं आवता॥

वो लिखने पढ़ने से परे है। शब्द कहो, नाम कहो। शब्द कहते हैं आवाज़ को। शब्द की लहर को कहते हैं–नाम। वो (शब्द की लहर) सब रचना करने वाली है। सब को जिंदगी और ताकत दे रही है। सबके अन्दर है। यहाँ से वो पकड़ी जाती है। जैसे रेडियो (Radio) में आवाज़ है स्विच (Switch) लगाते हैं तो पकड़ी जाती है। वो इसके घर का रास्ता है। तभी कबीर साहब ने लिखा है–

शब्द मांहिं सुरत राखीये, तब पहुँचे दरबार॥
कहैं कबीर तहां देखीये, बैठा पुरुष हमार॥
शब्द बिना सुरत आंधरी, कहो कहां को जाय॥
द्वार न पावे सबद का, फिर फिर भटका खाय॥

मुसलमान इसको बांग कहते हैं; कलमा कहते हैं, कलामे इलाही कहते हैं। ईसा ने इसको Word कहा है। यहाँ से यह असली मार्ग शुरू होता है। वे कहते हैं, अपने देश चलो! हाँ...

पाठी– आंख कान मुख बन्द कराओ। अनहद झींगा शब्द सुनाओ।
दोनों तिल इक तार मिलाओ। तब देखो गुलजारा है॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर अन्दर जाना है तो क्या करो? इस काया के, (इस मन्दिर के, इस महल के) नौ दरवाज़े बाहर हैं–दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के छः, एक मुंह का, दो टट्टी-पेशाब के। ज़्यादा संस्कार, हम आंखों से लेते हैं। कानों से लेते हैं बातें कर कर के, सुन के। ज़ुबान से खट्टे-मीठे रस लेकर, ये

(संस्कार) अन्दर रखते जाते हैं। बाहर मुखी होते जाते हैं। इनको बन्द करो! बाहर से ख़्याल तोड़ो। ''आंख, कान, मुख बन्द कराओ'' अगर यहाँ ख़्याल टिकाये तो ''अनहद झींगा'', बीडें के शक्ल की आवाज़, कई किस्म की आवाज़ें आती है, यहाँ। ''दोनो तिल इक तार मिलाओ'' ये जो आंखों में तिल है, इनको अन्दर से शिवनेत्र से शक्ति मिलती है। अन्दर ले जाओ, इसको समेटो! यहां आओ, फिर देखो, क्या बहार है तुम्हारे अन्दर? यहां से मार्ग शुरू होता है—सन्तमत। यहाँ से अलफ बे शुरू होती है, असल में। है तो आगे, असली। मगर रूहानियत की थोड़ी बहुत यहाँ से है। असली दसवें द्वार से शुरू होती है। यही मुसलमान फकीर कहते हैं—

चशम बन्दो गोश बन्दो लब बवन्द॥
गर न बीनी सरे हक्क बर मन बखन्द।

कि आंखें बन्द करले, कान बन्द कर ले, मुंह बन्द करले, अगर फिर तुम्हारे पर राज़ न खुले मालिक का, तो मुझे आ पकड़। यही गुरु अमरदास कहते हैं—

''नउ दर ठाके धावतु रहाए। दसवें निज धरि वासा पाए॥''

ये नौ दरवाज़े बन्द कर ले। यहाँ टिका मन, भागता दौड़ता है। यहाँ टिका इसको। सिमरण कर के यहाँ रोक। यहाँ कुदरती अनहद बाजे बज रहे हैं, मगर कोई गुरुमत वाला फकीर मिले इसके ज़रिये सीख सकते हैं, ऐसे नहीं। सब सन्तों की एक ही तालीम है। हाँ...

पाठी— चंद सूर एकै धर लाओ। सुषमन सेती ध्यान लगाओ।

मैनेजर साहिब जी— यहाँ तारा है—चांद, सूरज। दरम्यान का रास्ता क्या सुषमन। यहाँ तीन तीन रास्ते हैं। बाईं ओर काल की रचना है, अनेकों धोखे हैं। उसने नकलें बना रखी हैं। दाईं तरफ भी बड़ा धोखा है। लेकिन सुषमन क्या है? दरम्यान के रास्ते चलो। पर अपने आप कोई नहीं जा सकता। जब तक कोई कामिल फकीर न मिले, इसके अन्दर नाम का बीज न डाले। यह सिमरण करके यहाँ न आये, उस रूप को प्रकट न करे। तब तक असली शब्द को नहीं पकड़ सका। सिमरण के ज़रिये पकड़ सकता है। नीचे का जो मार्ग है, उसमें बड़ा धोखा है। कई दफा पागल हो जाते हैं। लेकिन ये आसान से आसान मार्ग है। ये ऐसे है जैसे टांग सो गई, फिर उसमें शक्ति आ जाती है। यह बस ऐसा ही मार्ग है। लेकिन वहाँ धोखे हैं, यहाँ कोई धोखा नहीं। आसान से आसान मार्ग है। यहाँ कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ यही है, जब मर्ज़ी देह को खाली करो जब मर्ज़ी इसमें आ जाओ; बस। यही है तवज्जो निकल गई। ये आसान से आसान है।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुरु दिया बताए॥
स्वाँस स्वाँस सिमरण करो इक दिन गुरु मिल जाए ॥

सिमरण की हर एक आदमी को आदत है। जमींदार अपने काम का सिमरण करता है। दुकानदार अपने काम का सिमरण करता है। नौकरी पेशा अपने काम का सिमरण करता है। जिन चीज़ों का सिमरण करता है, उन चीज़ों का ध्यान आता है। इसी तरह दुनिया का सिमरण कर-कर के हम दुनिया का रूप हुए पड़े हैं। दुनिया का रूप हुए पड़े हैं। सन्त कहते हैं कि तुम्हें सिमरण की आदत तो है, तू दुनिया का रूप हुआ पड़ा है, तू दुनिया का रूप हुआ पड़ा है। अगर मालिक का सिमरण करे तो मालिक का रूप हो जाये। जितना ही मालिक का सिमरण करेगा उतना ही मालिक इसके अन्दर बसता जाता है। उतनी मालिक की नज़दीकी होती है। जब सारे ख़्याल निकल गये, एक सतगुरु-सतगुरु रह गया, सिमरण ही सिमरण रह गया। यहाँ आया तो सतगुरु आ गया। वो इसको असली रास्ता पकड़वाता है कि ये शब्द है तुम्हारे घर का। यहाँ भी अनेकों शब्द हैं। बुल्ले शाह ने कहा है–

''बजदे नाद हज़ार''

कि जैसे Radio में कितनी आवाज़ें हैं–कलकत्ता की, बम्बई की, इंग्लैंड की, अमेरिका की, अफ्रीका की, दिल्ली की, जालन्धर की। इसी तरह यहाँ भी ब्रह्मलोक, शिवलोक, इन्द्रलोक सब की आवाज़ें आ रही हैं। वो सतगुरु अपनी आवाज़ अपना शब्द खुद पकड़वाये तो पकड़वाये। बाकी किसी की ताकत नहीं। उसमें अनेकों नकलें हैं, मिलती-जुलती आवाज़ें हैं। हाँ...

पाठी– त्रिबेनी के सन्ध समाओ। भौर उतर चल पारा है॥
घंटा संख सुनो धुन दोई। सहस कँवल दल जगमग होई।
ता मध्य करता निरखो सोई। बंकनाल धस पारा है॥

मैनेजर साहिब जी– ये सहस्रदल कमल का देश है। पहली स्टेज (Stage) है, असली रूहानियत की। यहाँ हज़ार बत्ती की ज्योति है, जिसकी नकल हम मन्दिरों में देखते हैं। यहाँ घण्टे शंख बज रहे हैं। यहाँ दस किस्म की धुने हैं। लेकिन आहला से आहला घण्टे और शंख की है, इसको पकड़ो! एक मुसलमान फकीर ने लिखा है–

कस नदा निस्त कि मन्ज़िल गहे माशूक कुजा अस्त।
ईं कदर हस्त कि बाँगे जर्से ने आयद।

किसी को पता नहीं खुदा का घर किधर है? उधर से घण्टे की आवाज़ आ रही है सोचो।...जहां से हज़ारों पंखुड़ियां हैं इधर थाल में रखते हैं कितनी! हर एक

जगह त्रिलोकी है—ये त्रिलोकी का हैडक्वार्टर है। ये त्रिलोकी का हैडक्वार्टर है। यहाँ से चलता है त्रिलोकी का काम। यहाँ उसका इन्चार्ज (Incharge) बैठा है। यही एक फकीर और लिखता है। हाँ सुनो, ये तो सन्तों ने राज़ खोले हैं, अन्दर के। ये चीज़ें देखने से ताल्लुक है। हाँ...

पाठी– ''जिस वक्त निगाह तुम्हारी दिमाग के भीतर उलट कर आसमान को देखेगी और रूह तुम्हारी जिस्म को छोड़ कर ऊपर को चढ़ेगी तो तुम को आकाश नज़र पड़ेगा कि जिसमें थाना सहस दल कमल का है। और हज़ारों पंखुड़ियां इसकी जुदा जुदा काम तीनों लोक का दे रही हैं।

मैनेजर साहिब जी– बस! हाँ

पाठी– उनकी सैर को देख कर तुम बहुत खुश होओगे और तीन लोक के मालिक का दर्शन पाओगे। मज़हब के मज़हब इसी मुकाम को पाकर यहीं रह गये।''

मैनेजर साहिब जी– बस, यहीं रह गये। कोई कोई विरला गया है। बकंनाल का टेढ़ा रास्ता है। पहले सीधा गया, फिर नीचे गया, फिर ऊपर गया, फिर आगे गया है। इस रास्ते से जाना पड़ता है, कहते हैं कि बारीक से बारीक रास्ता है ये। हाँ...

पाठी– डाकिनी साकिनी बहु किलकारे। जम किंकर धर्म दूत हकारें।

मैनेजर साहिब जी– यहाँ अनेकों रुकावटें हैं, ऐसे खूबसूरत मर्द हैं, ऐसी खूबसूरत औरतें हैं, वो आगे बढ़ने नहीं देतीं। जिसका यहाँ कैरेक्टर (Character) ठीक नहीं वो आगे निकल ही नहीं सकता। वे (खूबसूरत मर्द) कहते हैं, बेगम बना लेंगे तू यहाँ ठहर, आगे न जा। वो कहती हैं, मैं तुम्हें बादशाह बना दूंगी, आगे न जा। इतनी रुकावटें हैं। अनेकों रुकावटें हैं वहाँ। वहाँ से सतगुरु निकाले तो निकाले बाकी किसी की ताकत नहीं। हाँ, तभी उन्होंने कहा है एक सतगुरु का आसरा रख कर सिमरण करो, उसी को रखो कि तूं आ पहले फिर आगे ले जा। अपने आप कोई नहीं गया। हाँ जीः

पाठी– सतनाम सुन भागें सारे। जब सतगुरु नाम उचारा है॥

मैनेजर साहिब जी– जो सन्तों का बताया हुआ सिमरण है, उसके नज़दीक ये पहले ही नहीं आते। अगर सतगुरु प्रकट हो जाये, वो साथ है। जब वो सच्चे नाम को पकड़वा देता है तो ये सारी शक्तियां बेकार हो जाती हैं। उसके सामने कोई नहीं काम करती। सब बेकार हो जाती हैं। हाँ जीः

पाठी– गगन मंडल विच उर्धमुख कुइआ। गुरुमुख साधू भर भर पीया।

मैनेजर साहिब जी– इसी को पलटू साहब ने कहा है—

उलटा कुआं गगन में तिस में जरे चिराग।
तिस में जरे चिराग बिन रोगन बिन बाती।
छः ऋतु बारह मास रहत जरत दिन राती।

ये उल्टा कुआं है यहाँ अमृत बरस रहा है। जो उस अमृत को पीता है, वो साधू बनता है। उसका नाम साधू है। उसका नाम गुरुमुख है। यहाँ से साधू का कोर्स शुरू होता है। फिर आगे बढ़ता है। हाँ...

पाठी– निगुरे प्यास मरे बिन पीया। जाके हिये अँधियारा है॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जिन्होंने सतगुरु को प्रकट नहीं किया (सिमरण लेकर), वे नहीं पी सकते। वे नहीं पी सकते! जिन्होंने सतगुरु को प्रकट किया है वे पी सकते हैं, दूसरा नहीं! हाँ... मनमुख नहीं पी सकते। हाँ जीः

पाठी– त्रिकुटी महल में विद्या सारा। घनहर गरजें बजे नगारा।

मैनेजर साहिब जी– यह काल का हैडक्वार्टर है। वेद यहाँ से निकले हैं। सारी विद्या यहाँ से चली है। ये तो लफज़ हैं लेकिन वो लफज़ नहीं, धुन है। वहाँ की आवाज़ मृदंग जैसी है, जैसे तबले से मीठी मीठी आवाज़ निकलती है। हाँ जी...

पाठी– लालवर्ण सूरज उजियारा। चतुरकँवल मँझार शब्द ओंकारा है।

मैनेजर साहिब जी– ये ओइम् का देश है। यहाँ ओइम् ओइम् करते हैं वो एक धुन है, लफज़े नहीं। वो धुन है। मुसलमान हु... हु... कहते हैं। हाँ! वो अजीब चीज़ है। ये तो लफज़ है ओइम् वो कोई और चीज़ है। हाँ...

पाठी– साध सोई जिन इह गढ़ लीन्हा। नौ दरवाज़े प्रकट चीन्हा।
दसवां खोल जाय जिन दीन्हा। जहां कुफल रहा मारा है ॥

मैनेजर साहिब जी– ऐसे तो जब आदमी डाक्टरी में दाखिल होता है, उसी दिन से डाक्टर-डाक्टर कहने लग जाते हैं, लेकिन जब कोर्स मुकम्मल (पूरा) हो तब डाक्टर बनता है। इसी तरह कबीर साहब फरमाते हैं कि नौ दरवाज़े बन्द करके जब दसवां खोलता है, ब्रह्म से निकल कर (पहले सहस्रदल कमल है फिर ब्रह्म का देश है) आगे जाता है। वहाँ अमृतसर है, प्रयाग है। उसमें रूह नहाती है फिर ये साधू बनता है। हाँ...वहाँ जाकर गुरुमुख बनता है। गुरुमुख कह लो, साधू कह लो! उसका नाम साधू है। हाँ जीः

पाठी– आगे सेत सुन्न है भाई। मान सरोवर पैठि नहाई।

मैनेजर साहिब जी– कबीर साहब ने मान सरोवर कहा है, बेणी साहब ने प्रयाग कहा है। गुरु नानक साहब ने अमृतसर कहा है। यहाँ नहाकर आत्मा के ऊपर

से सारी परतें उतर जाती हैं (मन, माया, पांच तत्व जितने हैं।) सब झगड़े मिट जाते हैं। आत्मा साफ हो जाती है। वहाँ इस में अपनी रोशनी 12 सूरज की बन जाती है। हाँ...

पाठी– हंसन मिल हंसा होइ जाई। मिलै जो अमी अहारा है ॥

मैनेजर साहिब जी– अब तक तो ये रूह कौवे जैसी थी, गन्दगी में। सूक्ष्म मण्डलों में भी गन्दगी है। लेकिन ये अमृत है, ये पीकर हंस बनती है! वहाँ हंसों की मण्डलियां बैठी हैं। फिर वो आगे जाने की तैयारी करती हैं।

पाठी– किंगरी सारँग बजै सितारा। अक्षर ब्रह्म सुन्न दरबारा।

मैनेजर साहिब जी– ये वहाँ की निशानी है, किगंरी सारंगी आदि। वहाँ बज रहे हैं ये। हम तो बाहर बजाते हैं, वहाँ बज रहे हैं ये। गुरु नानक साहब जा रहे थे तो जोगी किगंरी बजा रहे थे तो उन्होंने कहा...

इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी न सचु पलै पाई।
विणु बजाई किंगुरी बाजै जोगी सा किंगुरी बजाई॥

अपने आप जो बजती हैं उनको पकड़ फिर जोगी बनेगा, ऐसे कैसे बनेगा?

पाठी– द्वादस भानु हंस उजियारा। षट दल कंवल मंझार शब्द रंकारा है।

मैनेजर साहिब जी– द्वादस भानु! बारह सूरज जितनी रोशनी है इसकी, हंस की बन जाती है। यही गुरु नानक साहब कहते हैं...

''बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥''

हां इसकी अपनी रोशनी बारह सूरज की है! वहाँ हाँ...

पाठी– महासुन्न सिन्ध विषमी घाटी। बिन सतगुरु पावे नहीं बाटी।

मैनेजर साहिब जी– इसकी (रूह की) उस समय बारह-सूरज की रोशनी होते हुए आगे इतना अंधेरा है कि ये रोशनी काम नहीं करती। सतगुरु ले जाये तो ले जाये। अपनी रोशनी में ये नहीं जा सकता।

''बिन सतिगुरु पावे नहिं बाटी''

बोलो! इतना अंधेरा है। इसकी अपनी बारह सूरज की रोशनी होते हुए भी नहीं चल सकती इतना अंधेरा है वहाँ, तिमिर खण्ड है। हाँ...

पाठी– ब्याघर सिंह सर्प बहु काटी। तहं सहज अचितं पसारा है ॥

मैनेजर साहिब जी– जैसे नीचे (पृथ्वी पर), यहाँ आज़ादी के लिए उठते थे न जब अंग्रेजों का टाइम था तो वे (अंग्रेज़) समझाते थे क्या? तू पटवारी बन जा। चलो तुम्हें तहसीलदार बना देते हैं, तुम्हें मिनिस्टर बना देते हैं तूं ये काम न कर। सोच

लो। अगर न हटे कि हमें तो आज़ादी लेनी है, फिर सख़्ती करते थे। घर-बार भी तबाह कर देते थे; सोच लो। इसी तरह पहले नीचे शक्तियां हैं; वो इसको प्यार से समझाती हैं, मैं तुम्हें बादशाह बना दूंगी। मैं तुम्हें बेगम बना दूंगा या सख़्ती करता है। फिर रोकता है वो काल महाकाल। यहाँ रोकता है, उसकी कोई मिसाल नहीं। सिंह, सर्प एक मिसाल दी है, बस। सख़्त पहरे लगे हुए हैं। इसको निकलने नहीं देता। सतगुरु निकाले तो निकाले यहाँ से, हाँ, इतना अंधेरा है वहाँ। हाँ जीः

पाठी– अष्ट दल कंवल पार ब्रह्म भाई। दाहिने द्वादस अचिंत रहाई।
बायें दस दल सहज समाई। यू कंवलन निखारा है॥

मैनेजर साहिब जी– यहाँ फिर तीन रास्ते हैं। यहाँ से भी दरम्यान में जाना पड़ता है। पारब्रह्म का आठ दल कमल है। एक दाईं तरफ अचिंत का है। बाईं तरफ सहज का है। हाँ...

पाठी– पांच ब्रह्म पांचों अण्ड बीनो। पांच ब्रह्म निअक्षर चीन्हो।
चार मकाम गुप्त तहं कीन्हो। जा मध्य बंदीवान पुरुष दरवारा है॥

मैनेजर साहिब जी– वहाँ पांच ब्रह्म हैं। वो अलग हैं, इनसे भी ऊपर। वे आगे सृष्टियां चला रहे हैं। एक चार मुकाम ऐसे गुप्त हैं। जो लोग सन्तों से नाम लेते हैं वो फिर निन्दा चुगली करने लग जाते हैं; उनको वहाँ बिठाते हैं, कैद करते हैं (छोड़ते उनको भी नहीं)। वे अपनी अपनी रोशनी में काम करते हैं। उनको कोई तकलीफ नहीं। लेकिन दर्शन नहीं होते, व्याकुल रहते हैं। जब सन्त नीचे आते हैं उनके साथ जो जाते हैं उनसे जो कोई सिफारिश करता है, सन्तों की मौज़ है ले जायें तो ले जायें वरना कैद बैठे हैं वो! जो निन्दा चुगली करने लग जाते हैं, उनके खिलाफ हो जाते हैं, उनको वहाँ कैद रखते हैं नीचे नहीं आ सकते वो, हाँ उनको इतनी रियायत है फिर भी। रास्ता लेकर निंदा चुगली करने लग जाते हैं, मुखालिफ हो जाते हैं, उनको वहाँ कैद रखते हैं। हाँ...

पाठी– दो पर्वत के सन्ध निहारो। भंवर गुफा तहं सन्त पुकारो।

मैनेजर साहिब जी– सहज और अचिंत के दरम्यान के रास्ते चलो, आगे भंवर गुफा का स्टेशन (Station) हैं। हाँ...

पाठी– हंसा करते केल अपारो। तहां गुरन दरवारा है॥

मैनेजर साहिब जी– वहाँ जाकर इसको होश आ जाती है। फिर मालिक से कहता है जैसे कतरा (बूंद) समुद्र को कहता है मैं भी तेरा बच्चा हूँ, तेरा ही साथी हूँ, तेरा ही अंश हूँ। ये कहता है जो तूं है सो मैं हूँ। सोहंग का मतलब है जो तूं है सो मैं हूँ। हाँ...

पाठी– सहस अठासी दीप रचाये। हीरे पन्ने लाल जड़ाये।

मैनेजर साहिब जी– वहाँ सहस अट्ठासी दीप हो रहे हैं। वहाँ की रचना के लिए हैं। वो नीचे नहीं आये कभी। उसकी मिसाल ही कोई नहीं। हीरे-पन्ने क्योंकि कीमती चीज़ है, इसलिए मिसाल देते हैं। हाँ...

पाठी– मुरली बजत अखंड सदाये। तहं सोहं झुनकारा है।

मैनेजर साहिब जी– जैसे मुरली की आवाज़ सुन कर (बीन की आवाज़) काबू आ जाता है न सांप वगैरह। इसी तरह वहाँ काल महाकाल वगैरह सब काबू आ जाते हैं। हाँ...

पाठी– सोहं हद्द तजी जब भाई। सतलोक की हद्द पुनि आई।

मैनेजर साहिब जी– आगे फिर सतलोक है, इस हद से। यहाँ तक भी महाप्रलय तक फनाह हो सकता है। लेकिन वो सतलोक आगे शुरू हो गया, वो फनाह के दायरे से परे है। हाँ...

पाठी– उठत सुगंध महा अधिकाई। जा को वार न पारा है।

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं वहाँ ऐसी सुगन्ध है कि कह नहीं सकते। मिसाल ही नहीं उसकी कोई हाँ...

पाठी– षोड़स भानु हंस को रूपा। बीना सत धुन बजै अनूपा।

मैनेजर साहिब जी– वहाँ बीन की आवाज़ है। आत्मा की अपनी 16 सूरज की रोशनी है, जब तक इतनी न हो वहाँ ठहर नहीं सकती। हाँ वहाँ भी Disconnection (अलग) है, एक दूसरे से। यानी कि बीच में फिर भी नहीं मिले पूरे। वहाँ भी अलाहिदगी है। वहाँ संतों की मण्डलियां बैठी हैं अपनी अपनी रूहें लेकर बैठे हैं। हाँ जीः

पाठी– हंसा करत चंवर सिर भूपा। सतपुरुष दरबारा है॥
कोटिन भानु उदय जो होई। एते ही पुनः चंद्र खलोई।

मैनेजर साहिब जी– अब सतपुरुष का स्वरूप बताते हैं, कैसा है? हाँ कि करोड़ों सूरज हों, करोड़ों चांद हों। उनकी रोशनी उनके (सतपुरुष) के एक बाल के जितनी भी नहीं। बाल के मुकाबले में नहीं। इतनी रोशनी है, इतना नूर है वहाँ। हाँ...

पाठी– पुरुष रोम सम एक न होई। ऐसा पुरष दीदारा है॥

मैनेजर साहिब जी– यहाँ रूह पहुँच जाए, तो नीचे नहीं गिरती। लेकिन इससे आगे देश है क्या, अलख हाँ...

पाठी– आगे अलख लोक है भाई। अलख पुरुष की तहं ठकराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं। ऐसा अलख निहारा है।

मैनेजर साहिब जी– वहाँ करोड़ थे, यहाँ अरबों सूरज हों, अरबों चांद हों, एक रोम के मुकाबले नहीं वहाँ। हाँ...

पाठी– ता पर अगम महल इक साजा। अगम पुरष ताहि को राजा।
खरबन सूर रोम इक लाजा। ऐसा अगम अपारा है।

मैनेजर साहिब जी– बोलो! खरबन सूर! खरबन सूरज हों, एक रोम के मुकाबले में नहीं। हाँ...

पाठी– ता पर अकह लोक है भाई। पुरष अनामी तहां रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही। कहन सुनन से न्यारा है ॥

मैनेजर साहिब जी– आगे अकह लोक है, अनाम! जिसको कुछ कह ही नहीं सकते क्या है? बोलो! वहाँ से कबीर साहब आये थे। आम दुनिया तो कहती है, सतलोक से आये थे। वहाँ से (अकह लोक से) आये थे। हाँ...ये उनका असली देश है। वहाँ पहुँचाने के लिए आये थे। आओ, चलो अपने देश। ये देश है उनका, इतना ऊंचा सतलोक से ऊपर है। हाँ... हाँ जीः

पाठी– काया भेद किया निर्वारा। यह सब रचना पिण्ड मंझारा।

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं ये सारा खोल के बता दिया, सब रचना इसके अन्दर है। सब के अन्दर है, हाँ...

पाठी– माया अवगति जाल पसारा। सो कारीगर भारा है।

मैनेजर साहिब जी– काल और माया ने क्या किया है? वहाँ का अक्स ब्रह्मण्ड को अण्ड में डाल दिया है, अण्ड को पिण्ड में डाल दिया है, नकलों में ही फंसा दिया। असली चीज़ ही छुड़ा दी। ''सो कारीगर भारा है''; ऐसा फंसाया है, नकल नकल में रह गये! हाँ जीः

पाठी– आदि माया कीन्ही चतुराई। झूठी बाज़ी पिण्ड दिखाई।
अवगति रचना रची अण्ड माहीं। ताका प्रतिबिम्ब डारा है ॥

जैसे शीशे पर कोई चीज़ आई देखो! ये बल्ब नीचे आयेगा ना बस, वो कोई और चीज़ है, शीशे में कोई और है, नीचे कोई और है। इसी में फंस गये सारे, इसी रोशनी में हाँ...

पाठी– शब्द विहंगम चाल हमारी। कहैं कबीर सतगुरु दे दई तारी।

मैनेजर साहिब जी– परमार्थ में चार चालें हैं। पहली कीड़ी जैसी है, सिमरण

का मार्ग जो है, वो कीड़ी जैसा है पहले। कीड़ी चढ़ती है, गिरती हैं। चढ़ती है, गिरती है। इसी तरह कभी सिमरण दो दिन बन गया, कभी हट गया। फिर आगे जब अन्दर जाता है, फिर मकड़ी जैसी है। मकड़ी ऊपर से अपनी तार के ज़रिये नीचे आई, झट खुराक खाई और ऊपर चली गई। इसी तरह यहाँ से जब ये ज़िन्दा मरा, यहाँ आया (जिस्म में) काम किया और फिर चला गया। ये मकड़ी जैसी चाल है। फिर मछली upstream, (ऊपर को) फौरन जाती है। ऊपर धार आती है, फौरन चढ़ जाती है। बस इसी तरह रूह आगे जाती है। फिर कहता है–

''शब्द बिहंगम चाल हमारी''

कि हमारी पंछियों जैसी चाल है, क्या? कि इतना आज़ाद कि इस दरखत से उठा वहाँ बैठ गया; वहाँ से उठा वहाँ बैठ गया। जिधर मर्ज़ी जाऊं। हाँ! हाँ जीः

पाठी– खुले कपाट शब्द झुनकारी। पिण्ड अण्ड के पार सो देश हमारा है ॥

कबीर साहब कहते हैं, ये हमारा देश है। वहाँ चलो, आओ! सिमरण करके यहाँ आये, सतगुरु को प्रकट करे, वो ले जाये तो ले जाये। आगे अनेकों रुकावटें हैं, अनेकों धोखे हैं, देख लो! कितने धोखे हैं। सारा हाल खोल दिया। जो करे।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'रामा हम दासन दास करीजै'

सत्संग के वचन

पाठी– रामा हम दासन दास करीजै॥
जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– भक्ति करने का असल मतलब जो है, वह यह है कि हम चौरासी में धक्के खा रहे हैं, हम मालिक से बिछुड़े हुए हैं, हम मालिक के पास पहुँच जाएं, मालिक का रूप बन जाएं, उसमें समा जाएं; असल मतलब यह है। किसी चीज़ का रूप बनने के लिए हमारे अन्दर वे गुण चाहियें जो उसके लिए ज़रूरी हैं। इसी तरह मालिक का रूप बनने के लिए हमारे अन्दर वो गुण चाहियें, वे सिफतें चाहियें जो मालिक में हैं। वह मालिक अति दीनता और गरीबी का भण्डार है। कबीर साहब कहते हैं, अगर तूने मालिक का रूप बनना है तो क्या कर?

कबीर रोड़ा होइ रहु वाट का तज मन का अभिमानु॥
ऐसा कोइ दास होइ ताहि मिलै भगवानु॥

कि रास्ते का रोड़ा (पत्थर) होजा, हरेक (हर एक) की ठोकर खा, फिर तू मालिक के पास पहुँच सकता है। फिर कहते हैं, यह भी नहीं। इससे आगे चल, रोड़े से किसी को ठोकर लगेगी। फिर कहते हैं, खेह (मिट्टी) बन जा। फिर कहते हैं यह भी नहीं, खेह से किसी के कपड़े ख़राब होंगे, हाथ-पांव ख़राब होंगे। कहते हैं, पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं, यह भी नहीं...

कबीर पानी हुआ तो किआ भइआ सीरा ताता होइ॥
हरिजनु अैसा चाहिअै जैसा हरि ही होइ॥

किसी को ठण्डे की ज़रूरत हो गर्म मिल जाये वो भी तकलीफ, गर्म की ज़रूरत हो, ठण्डा मिल जाये वो भी तकलीफ। सोचो! ऐसी दीनता, नम्रता अख्तियार कर जैसे मालिक ने की है। वो सबका मालिक है, कोई निशानी है उसकी दुनिया में? इतनी हस्ती को मिटा। कोई गालियां निकाले, किसी की रोटी बन्द की? इतनी हस्ती

को मिटाये तब मालिक का रूप बन सकता है। इतनी हस्ती मिटाने पर तब मालिक का रूप बनता है, ऐसे नहीं। हम सारे अहंकार में भरे पड़े हैं। इतनी दीनता और नम्रता अख्तियार करे तब मालिक का रूप बनता है। जितने फकीर मालिक की दरगाह में गये हैं, उनकी जिन्दगियां पढ़ के देखो, अति नम्रता में रहे हैं, अति गरीबी में रहे हैं। जिन्हें दुख दिये, सब हस्तियां रखते हुए फिर भी उनको कुछ नहीं कहा। मंसूर को जब सूली पर चढ़ाने लगे तो पहले उसके हाथ काटे गये, उसने कहा यह आशिकों का बजू है। कहने लगा, जिन हाथों को काटा है, ये यहाँ के हाथ हैं। जो हाथ मालिक की दरगाह में जाते हैं उनको कौन काटेगा? फिर पैर काटे, कहने लगा, इन पावों को काटा है, ये तो इस दुनिया के लिए हैं, जो मालिक की दरगाह में जाते हैं, उनको कौन काटेगा? फिर उसकी आंखें निकाली गईं। कहने लगा, जो आंखें मालिक को देखती हैं, उनको कौन बन्द करेगा? जब ज़बान काटने लगे, कहने लगा जल्लादो! थोड़ी देर रुक जाओ। ये है दीनता, ये है नम्रता, ये है हस्ती को मिटाना। क्या कि? मालिक से दुआ की। ऐ मालिक! जिन्होंने मुझे इतना दुःख दिया है, उनको कुछ ना कहना। ये बेचारे जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं? बल्कि इन्होंने तो मेरा फायदा किया है! अभी ये मुझे कत्ल कर देंगे, मैं तेरे पास जल्दी पहुँच जाऊंगा। नहीं तो पता नहीं कब आता? यह है दीनता, यह है नम्रता, यह है हस्ती को मिटाना। ये है फकीरों की नम्रता, गर्म रेतें डाली गईं। उन्होंने कुछ नहीं कहा। सब हस्तियां रखते थे। मस्ताना जी कहा करते थे, मालिक के घर सब कुछ है, दीनता नहीं। वो दीनता का ग्राहक है। यही कबीर साहब ने कहा है :

इक बाणी जो दीनता सन्तन् किया विचार।
यही भेंट गुरुदेव की सब कुछ हरि दरबार॥

बाकी सब कुछ है। दीनता, क्रोध को मारने के लिए, अहंकार को मारने के लिए, सब से आला हथियार है। दीनता से हृदय ठण्डा रहता है। ठण्डा रहने से ही भजन बन सकता है, ऐसे नहीं। जितने सन्त हुए हैं वे हमें दीनता ही सिखाते हैं। साध संगत में रहना सिखाते रहे हैं। साध संगत में रहकर अपने अवगुण निकालना सिखाते रहे हैं, दूसरों से गुण उठाना सिखाते रहे हैं। बल्कि जो साथ रहते हैं, उनको प्रैक्टिकल कोर्स (Practical Course) करवाते हैं। मस्ताना जी क्या करते? हमारे अन्दर किसी की निन्दा डाल देते थे कि फलाना यूं फलाना यूं है, वो है। फिर कहना, क्यों रखी तुमने? प्रैक्टिकली सिखाते थे, क्यों रखी? पराए अवगुण क्यों उठाये? दरअसल, जो अवगुण हमारे में हैं वे दूसरों में देखते हैं, असल में बात यह है, जो

अवगुण हमारे अन्दर हैं वो दूसरों में देखते हैं। कबीर साहब कहते हैं–

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलया कोय॥
जब दिल खोज आपणा मुझ से बुरा न कोय॥
कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोई॥
जिनि अैसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

वो मालिक की दरगाह में जायेगा। जिसने ये देख लिया। कब पता चलता है इन अवगुणों का? कब पता चलता है मैं बुरा हूँ? जब ये भजन करता है। इसके अवगुण सामने आते हैं। फिर ये देखता है कि मेरे में ही अवगुण हैं। इसके सामने आने लग जाते हैं। जहां जाओ गुण उठाओ। हमारे से तो शहद की मक्खी ही अच्छी है, वह जहां जाती है (आक पर भी जाती है, नीम पर भी जाती है, गुलाब पर भी जाती है) गुण, गुण उठा लेती है, मिठास-मिठास। जिसने भजन में तरक्की करनी है उसके लिए यही है। जहां जाओ गुण उठाओ, अवगुण न उठाओ। अवगुणों से इसके अन्दर निन्दा आती है। निन्दा से इसका भजन कभी नहीं बन सकता। देख लो!

निन्दा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥
मुंह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि॥

अवगुण ना उठाओ। यह दीनता का मार्ग है। जिसके अंदर अहंकार है, वह तो पहले ही जानता है, मैं सब कुछ हूँ।

''मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ तत्तु।''

जो दीनता रखता है, जिसका हिरदा नीचा है, नम्रता है जिसके अन्दर, वही गुण उठा सकता है, दूसरा नहीं। यही महात्मा चरण दास ने कहा है–

''दीन लखे मुख सभन का, दीन लखे नहीं कोए।''

दीन ही लख (देख) सकता है। दीन ही फायदा उठा सकता है, दूसरा नहीं। सब फकीरों ने यही हथियार रखा है, दीनता का–

गरीबी गदा हमारी॥ खन्ना सगल रेनु छारी॥
इसु आगै को न टिकै विकारी॥ गुरु पूरे अेह गल सारी॥

गरीबी गदा है। सब की चरण धूल बनना ही ये खन्ना है। इसके आगे कोई विकारी क्या (बाहर के विकारी नहीं) ये काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार नहीं ठहरते। दीनता वाले के पास से ये सब भाग जाते हैं। यही कबीर साहब ने लिखा है–

कवणु सु अखर कवण गुणु कवणु सु मणीआ मंतु॥
कवण सु वेसो हउ करी जितु बसि आवी कंतु॥

कि वह कौन सा इल्म है? कौन सा गुण है? कौन सा शिरोमणि हीरा है? कौन सा भेष है? जिसको पहन कर मैं मालिक के पास जा सकता हूँ। फिर आप ही जवाब देते हैं–

निवणु सु अखर खबणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥
ऐह त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कतुं॥

क्या? वह इल्म दीनता का है। वह गुण नम्रता का है। मिठास भरी जुबान का है, वह शिरोमणि हीरा। इन तीनों की पोशाक पहन ले, फिर मालिक के पास जा सकता है। प्रेमी के लिए, जिसने भजन करना है, उसके लिए यह जरूरी है कि अन्दर दीनता हो, नम्रता हो। दीनता बगैर भजन बन ही नहीं सकता। ये खास गुण है। गुरु नानक साहब के पास जब मुसलमान आये वे नमाजें (पांच नमाजें पढ़ते हैं ना) क्या बताते हैं। हाँ...

अव्वल सिफ़त दूजी सबूरी।

सिफ़त क्या? मालिक के गुण गाने और सिमरण करना है।

दूजी सबूरी।

सबर से बैठे, जल्दी का काम नहीं।

तीजे हलेमी।

दो दिन बैठता है, कुछ नहीं मिला। चलो छोड़ो परे। यह जल्दी का काम नहीं। जल्दी मन वश में नहीं आता, मन नहीं लगता, उठ खड़ा होता है। बैठा रहे, लगा रहे बस सब्र से, हाँ! 'तीसरे हलेमी'। नम्रता-नरमी कुछ कह लो। शेख सादी ने लिखा है कि ''मैं वो कीड़ी हूँ जिसको हरेक आदमी रौंद सकता है, पांव से। मैं भिरन्ड नहीं जो किसी को डंक मारूं।'' हाँ! ये खास गुण है, भजन के लिए। हाँ...

चौथे खैरी।

खैरी क्या? आप भी भजन करें दूसरे से भी करायें, उसको भी उठायें। हूँ... ये है खैरात असली। ये है खैरात–आप भी करें दूसरे से भी करायें।

आपे भजन करे नहीं औरन मना करे॥
चरण दास वो दुष्ट घोर नरक में पड़े॥
औरन को उपदेश कर भजन करे निष्काम॥
चरण दास वो हरिजन पहुँचे हरि के धाम॥

आप भी करे दूसरे को भी कराये। ये बड़ी बीमारी है, पराई चुगली अन्दर आनी। हाँ।

पंजवे पंजे इक्त मुकामै।

हाँ! पांचवां क्या है? जब यह करेगा तब ही अन्दर जा सकता है, फिर शब्द से ताल्लुक पड़ सकता है। आगे तो रास्ता लम्बा है, फिर भी, ये पहले कदम हैं। यह नम्रता का खास गुण है, मुक्ति के लिए। तुलसी साहब ने लिखा है कि जैसे...

चीनी बारू माहिं गिराई। हाथी मोटे हाथ न आई॥
नन्हीं चींटी चुन चुन खाई। नन्हा रहे हाथ कछु आई॥

सोचो! क्या? कि जैसे रेत में चीनी बिखरी हुई है, एक हाथी तो नहीं चुन सकता, नन्हीं चींटी चुन सकती है। इसी तरह नम्रता वाला ही मालिक के गुण उठा सकता है। वही मालिक की दरगाह में जा सकता है, दूसरा नहीं। हाँ यह मालिक जिसे बख्शे। किसी का अख्तियार भी नहीं–

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै॥

अक्सर प्रेमियों की गिरावट का कारण क्या बनता है? ईर्ष्या, द्वैत, वैर, अहंकार, लीडरी, बस यही है। यह सब से छोटा बने तब फायदा उठाता है। गुरु रामदास मालिक के आगे विनती करते हैं कि एक मालिक! मुझे अपने दासों का दास बना ले। दासों का दास। सोच लो! दासों का दास। याद ही नहीं रखता कोई बात। पहले तो सुनता ही नहीं। अगर सुनता है तो याद नहीं रखता। मस्ताना जी एक-एक शब्द को दो-दो, तीन-तीन महीने लगे रहते। एक ही शब्द! सुबह भी बैठे, दोपहर को भी वही, शाम को भी वही, रात को भी वही। कि इसको याद आये। याद ही नहीं रखता। देख लो! इतना पढ़ाते हुए फिर भी नहीं! मन ऐसी बला है। है भी मुश्किल, कोई विरला ही गुण उठाता है। क्या कहते हैं? युधिष्ठिर को जब पढ़ने भेजा तो मास्टर ने शब्द पढ़ाया कि सच बोलो (कीमती बात है, समझने की, याद रखने की) अब उनको कहा, याद करके आ जाओ। बाकी सबने याद कर लिया। युधिष्ठिर से पूछा? कहता है–मुझे तो याद नहीं। दूसरे दिन गये–मुझे तो याद नहीं, तीसरे दिन गये–मुझे तो याद नहीं। छः महीने निकल गये, कहने लगे–आज याद है। क्योंकि पहले मैं झूठ बोल लेता था। ये प्रैक्टिकल कोर्स (Practical course) है। छः महीने में याद आया, फिर याद आया कि झूठ नहीं बोलना, सच ही बोलना है।

ऐसे ही ये है नम्रता। दास बनना सबसे मुश्किल है, भजन भी इससे आसान है। दास बनना सबसे मुश्किल है।

''स्वामी होणा सुहरा दुहरा होणा दास''

ये मुश्किल है। नम्रता अख्तियार करनी, दीनता अख्तियार करनी, हस्ती को मिटाना। वो तो कहते हैं, दासों का दास बन जा। हम सन्तों के दास नहीं बनते। देख लो! वे तो कहते हैं उनके दासों का दास बन जाओ। हम उनके दास नहीं बनते।

संता की होइ दासरी एहु आचारा सिखुरी।
सगल गुणा गुण ऊतमों भरता दूर न पिखुरी॥

फिर मालिक दूर नहीं। दास बनना ही मुश्किल है। मालिक जिसको मिला है, अन्दर से मिला है, बाहर से किसी को नहीं मिला। हम ढूंढ़ते हैं बाहर, मन्दिरों में, मस्जिदों में, ग्रन्थों में, शास्त्रों में। कहीं भी नहीं बाहर। जब भी मिलेगा अन्दर से मिलेगा–

''काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैर निरंकारा।''

कबीर साहब भी यही कहते हैं–

मो को कहा ढूंढे तूं बन्दे, मैं हूँ तेरे पास में।
न तीरथ में न मूरत में, न एकान्त निवास में।
न मन्दिर में न मस्जिद में, न काशी कैलाश में।
खोजी होवे तुरन्त मिल जाऊं, पल भर की तलाश में।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में ॥

हाफ़िज़ साहब ने लिखा है कि ''सब मन्दिरों और मस्जिदों के फाटकों पर लिख दो कि मालिक जो है, हिरदे रूपी मन्दिर में निवास करता है। वह मज़हबों, फिरकों से परे है।'' लेकिन मिलता कैसे है? साधुओं के ज़रिये।

''जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिबीजै''

साधुओं के ज़रिये। साधू कौन है? साधू किसे कहते हैं? सच्चे पातशाह को स्वामी दर्शनान्द मिले। कहने लगे गुरु अंगद साहब ने बहुत बुरा किया है। क्या? उन्होंने लिखा है–

चरन साध के धोइ धोइ पीउ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ॥
साध की धूरि करहु इसनानु॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु॥

फिर क्या बुरा किया है, भई? कि, उन्होंने तो दुनिया लूट के खा ली। तुम

साधू किसको समझते हो? यही जो फिर रहे हैं। सच्चे पातशाह ने फरमाया कि जो तुम्हारे अभ्यास करके आंखों तक आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं? उदासी। जो पार ब्रह्म में जाता है उसको क्या कहते हैं? जोगी। जिसको तुम जोगी कहते हो, उनको साधू कहा है, उन्होंने।

साधु सोई जिन इह गढ़ लीना, नौ दरवाज़े प्रगट चीन्हा।
दसवां खोल जाए जिन दीना, यहाँ कुफल रहा मारा है।

इस मन्दिर के नौ दरवाज़े हैं। दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुंह का, दो टट्टी-पेशाब के। ये बन्द करे, दसवां खोले–

साधु सोइ जिन इह गढ़ लीना, नौ दरवाज़े प्रगट चीन्हा।
दसवां खोल जाए जिन दीना, यहाँ कुफल रहा मारा है॥''

इसको खोले!

''आगे सेत सुन्न है भाई, मान सरोवर पैठ नहाई।''

आगे जाके मान सरोवर है, जिसको अमृतसर कहते हैं, प्रयाग कहते हैं। वह असली तीर्थ है। नाम का तीर्थ है। वहाँ नहाये उसका नाम साधू है।

''पार ब्रह्म साध रिदै वसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥''

उसका नाम साधू है। ऐसा साधू मिले। उनके ज़रिये मिलता है। कैसे मिलता है? वे क्या सिखाते हैं? दीनता और नम्रता, गरीबी धारण करना। जब तक इसके अंदर गरीबी नहीं, अन्दर जा ही नहीं सकता।

''जब लगि सासु होइ मन अँतरि साधू धूरि पिवीजै।''

कौन सी धूल! ये बाहर की नहीं, असली धूल इसके अन्दर है। बाहर धूल क्या है? उनका कहा मानना, उनके हुक्म में रहना। असली धूल इसके अन्दर मिलती है। वह कब मिलती है? जब उनका कहा माने, सिमरण करे, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे; तब वह मिलता है। तुलसी साहब लिखते हैं–

''छिन छिन सुरत संभार लार दृग्ग के रहो ॥''

यहाँ ख़्याल आंखों के पीछे इकट्ठा रख के, यहाँ ख़्याल टिका के सिमरण करे–

छिन छिन सुरत संभार लार दृग्ग के रहो॥
तन मन दर्पण मांझ साज सुरत से गहो॥

तन का प्यार छोड़े, विषय विकारों के ख़्याल निकाले :

''लगन लगे लख पार सार तत्त पाया॥''

जब पूरी लगन से सिमरण किया सार वस्तु आ गई। कौन सी?

''अरे हाँ तुलसी सन्त चरण की धूड़ नूर दरसाया॥''

वहाँ का जो नूर है वो सन्तों के चरण की धूल है। गुरु अर्जुन साहब लिखते हैं–

''नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ॥''

जिन आंखों ने वो अन्दर वाला स्वरूप नहीं देखा, उन आंखों को निकाल देना चाहिए (साधूओं के रूप में मालिक आकर मिलता है)।

''करन न सुनही नादु करन मुंदिछालिया॥''

जिन कानों ने अन्दर शब्द की आवाज़ नहीं सुनी वो कान बन्द कर देने के काबिल हैं।

''रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ॥''

जो ज़ुबान सिमरण नहीं करती, उसको तिल-तिल करके काट देना चाहिए। यह है असली धूल, अन्दर जाकर मिलती है ये। ये मिट्टी क्या करेगी? हम गंगानगर गये। मस्ताना जी के समय की बात है। एक नया ही प्रेमी आया था। वहाँ तकरीबन 2-2, 3-3 बज जाते थे मजलिस में। जब मजलिस खत्म हुई, मस्ताना जी अन्दर जाने लगे तो वह (नया प्रेमी) मिट्टी उठाने लगा। मस्ताना जी देख के कहने लगे–यह क्या कर रहा है? जी, चरण धूल ले रहा हूँ। कहने लगे यह धूल क्या करेगी? तेरे सामने खड़े हैं, तू रास्ता पूछ। कुछ कर। यह क्या करेगी? सारी दुनिया इसी में फंस गई। दुनिया की मिट्टी से तो अच्छी है पर है तो मिट्टी। असली–वो अन्दर है धूल। हाँ... हाँ... जीः

पाठी– सकंरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजें। **(मः 4/1326)**

मैनेजर साहिब जी– इतनी बड़ी हस्तियों को नहीं मिली धूल ये। शंकर को नहीं मिली। शंकर कह लो, शिव कह लो। शंकर नारद को नहीं मिली, शेष नाग को नहीं मिली। वो इतनी ऊंची चीज़ है।

पाठी– भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै॥ **(मः 4/1326)**

मैनेजर साहिब जी– हम बाहर के चरणों को नमस्कार करते हैं, क्यों? जब तक वो सन्तों का चोला ना पहने हमें रास्ता कौन बताये। लेकिन असली ऊपर है, अन्दर जाकर मिलता है।

''गुरु के चरण ऊपर मेरे माथे॥''

बाहर से क्यों नमस्कार करते हैं? उनके अन्दर से भक्तिभाव की लहरें आती हैं, प्रेम की लहरें आती हैं। किसी चीज़ के पास से जाओ आप, रूड़ियों

के पास से जाओ तो बदबू आयेगी, बग़ीचे के पास से जाओ तो खुशबू आयेगी, देख लो। हरेक आदमी के अन्दर से रोएं निकलती हैं। किसी के अन्दर से काम की, किसी के अन्दर से क्रोध की, किसी से लोभ की, किसी से कोई, किसी से कोई। उनके (सन्तों के) अन्दर से प्रेम की निकलती हैं, नाम की निकलती हैं, वहाँ का वायु मण्डल कुछ ऐसा हो जाता है। इसलिए वहाँ तीर्थ बन गये, लेकिन बनाये तो सन्तों ने, उस खुशबू ने। वहाँ के पानी में भी असर है, रोटी में भी असर है। फिर बड़ा कौन हुआ? साधू और सन्त, जिन्होंने ये (तीर्थ) बनाये। इसीलिए कबीर साहब ने कहा है–

तीर्थ नहाते एक फल सन्त मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल कहे कबीर विचार॥

अगर उनका कहा मान के अन्दर जाये, सतगुरु को प्रकट करे, वो असली फल है, वो असली फल है। जहां वे (सन्त) कदम रखते हैं, वो (स्थान) भी पवित्र हो जाते हैं। बाहर तो इसीलिए नमस्कार करते हैं। वह भी कोई बिरला ही जानता है, हरेक नहीं। उस खुशबू को कोई बिरला ही परखता है। सच्चे पातशाह फरमाया करते थे, ''कि हम एक दफा घोड़े पर काम पर जा रहे थे। बड़ी खुशी सी आई। हमने सोचा कि ये खुशी कैसी है? खुशी होती है जब किसी के लड़का हो जाये या नौकरी में तरक्की हो जाये या कोई और काम बन जाये। कोई बात तो है नहीं? फिर हमने सोचा कि बहार का मौसम है, शायद फूलों की खुशी हो। कहने लगे कि 18-20 साल हो गये यहाँ काम करते, वैसी है ही नहीं। आगे क्या देखा (जब आगे गये एक तरफ)? एक मुसलमान फकीर बैठा है। हम उतर गये, नमस्कार किया।'' वह हंस पड़ा कहने लगा, ''खुशबू लेने वाला नाक भी कोई-कोई होता है।'' देख लो! कोई कोई होता है। आम दुनिया को क्या पता? कोई बिरला आता है उनके पास। जो भजन करता है, उसको उस खुशबू का पता चलता है, दूसरे को नहीं। अमीर खुसरो जा रहा था। आगे एक आदमी मिल गया। सामने से उसने देखा मेरे मुर्शद की खुशबू आ रही है। वह रिटायर (Retire) हो गया था। सत्तर ऊंट भरे हुए (सामान के) उसके साथ थे। निजामुद्दीन के पास जा रहा था कि उसके पास वक्त काटूंगा। अब उसकी (निजामुद्दीन की) खुशबू मिली, हैरान हो गया। जब वह आगे गया तो वह खुशबू पीछे से आने लगी। उससे (उस आदमी) से पूछा कि तू कौन है? जी, मैं फलाना हूँ। कहां से आया है? कहने लगा, मैंने लड़की की शादी करनी थी, मेरे पास कोई पैसा नहीं था। मैं निजामुद्दीन के पास गया,

मैंने सोचा कि फकीर है अच्छा, कुछ देगा। उन्होंने कहा कि शाम तक जो आयेगा, तुम्हें दे देंगे। कुछ न आया। अगले दिन फिर बैठ गया, अगले दिन भी कुछ न आया। तीसरे दिन फिर कहने लगे कि मेरे पास और तो कुछ है नहीं, ये टूटी जूती है, तू ले जा; दो चार आने जो मिल जायेंगे बेच के, रोटी खा लेना। फकीरों के पास क्या रखा है? ऐसे दुनिया भागती है। उसको (अमीर खुसरो) को बड़ी चोट लगी। कहने लगे, ''ये बेचनी है?'' हाँ, मैंने क्या करनी है? इसकी कीमत तो मैं नहीं दे सकता, 69 ऊंट ले जा। सामान, बच्चों का एक ऊंट है वो छोड़ जा। हैं! उनको कदर है जो भजन करते हैं, दूसरे को क्या पता क्या है? जो भजन करते हैं उनको उस खुशबू का पता चलता है। उनको फकीर की कद्र पड़ती है। दूसरे किसी को नहीं पड़ती। दो दिन यकीन आ गया, दो दिन न आया। दो दिन आ गया, दो दिन न आया। बस, हाँ! कोई काम बन गया तो फकीर अच्छा है, न बना तो बस। दस काम बन जायें एक न बने, हैं! बस उसके बाद विश्वास गया। हाँ... हाँ जीः

पाठी– तजि लाज अहंकारु सभु तजीए मिलि साधू संगि रहीजै ॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर मालिक की प्राप्ति करनी है, अपने घर पहुँचना है तो क्या कर? लोक लाज वगैरह छोड़ के, साधूओं के पास चला जा, उनकी सोहबत में रह। लोक लाज बड़ी रुकावट है। समझ भी जाता है, दिल भी मानता है लेकिन लोक लाज नहीं छोड़ते। राजा पीपा परमार्थ का शौकीन था। ख़्याल था कि मालिक की प्राप्ति हो। अब उसके लिए फकीर की ज़रूरत है। वज़ीर से पूछा कोई फकीर बता। कहने लगा, फकीर तो है, लेकिन जात का चमार है। कौन? रविदास। अब रविदास के पास कौन जाये? लेकिन शौक था। एक दिन मेला था। दुनिया गई हुई थी। आज जैसे राजे तो नहीं थे। उन दिनों आज़ाद फिरते थे सब। छुप कर वह (पीपा) उस (रविदास) के पास गया। वह कुन्ने में पानी डाल रहा था। उसने देखा राजा आया है, कहने लगा, राजा! ले अमृत (कुन्ने का पानी उठा के)। वह इन्कार तो न कर सका, ले लिया। लेकिन, अब पीये कौन? खुली बाजू का कुर्ता था, उसमें डाल दिया। चुप करके आ गया–आज तो मैंने चमार ही बन जाना था। घर आया, धोबी को बुलाया। कहने लगा बात यह है किसी को पता न चले इस कुर्ते को साफ कर दे। उन दिनों में रंग काट वगैरह तो होते नहीं थे। भाप देकर, फिर मुंह से चूस-चूस कर निकालते थे रंग वगैरह। उसने छोटी लड़की को दे दिया, इसको साफ कर। वह चूसती गई अन्दर करती गई। उसका

पर्दा खुलने लग गया। परमार्थ की बातें करने लग गई। वज़ीर को पता चला। वज़ीर ने कहा, ''राजा। रविदास के पास तो न गया, हमारे धोबी की लड़की है, उसका पर्दा खुला हुआ है, परमार्थ की बातें करती है, उसके पास चल।'' जब वह (राजा) वहाँ गया तो लड़की हाथ बांध (हाथ जोड़) कर खड़ी हो गई। कहने लगा, ''बच्ची! मैं तो तेरे पास भिखारी बन के आया हूँ।'' कहने लगी, ''जो कुछ मिला है तेरे से मिला है।'' मेरे से कहां? तेरे कुर्ते में था। हैं? तेरे कुर्ते में था। फिर वह पछताया। भई, लोकलाज ने मार दिया। सब दुनिया इसी तरह है। मीरां ने परवाह ही न की, राजे को भी कह दिया—तेरी मेरी ना सरी (बनी)? यह मन ऐसा है, लोक लाज ऐसी है। राजे ने मीरां को कहा तू कहती है, राम है। दिखा, कहां है राम? कहां है राम? अब क्या दिखाये वह? सोचो! कोई कहता है, मैं डाक्टर हूँ, क्या पता? जब वह इलाज करेगा तो पता चल जायेगा कि वाक्य डाक्टर है। लेकिन डाक्टरी का तब पता चले जब वह कोर्स करे! अब वह क्या दिखाये? दिखाये क्या? ऐसे कहने लगी, तेरी आंख फूटी हुई हैं, इसीलिए नहीं देख सकता। अब उसने नमूना दिखा दिया (डाक्टरी की तरह)। वह खड़ग (तलवार) ले के मारने चला, क्या? जहां देखे मीरां, जहां देखे मीरां। ज़हर भेजा अमृत बन गया, देख लो! सांप भेजा हार बन गया। फिर भी यकीन न आया, फिर भी मन न माना। लोकलाज ने नहीं छोड़ा, देख लो। ये लोक लाज छोड़े तब जा सकता है, ऐसे नहीं। ये बड़ी रुकावट है। ये खास-खास बातें याद रखने वाली हैं। ये सुनेगा, फिर इधर से निकल गई बस। हाँ जीः

पाठी– धरम राए की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– कि उनके पास जाने का क्या फायदा है? उनकी सोहबत में लोक लाज भी छोड़ी, क्या फायदा मिलता है? कि धर्म राज के पास नहीं जाना पड़ता, काल नज़दीक नहीं आता। अगर हुक्म मान के अन्दर चला जाये, नाम से ताल्लुक पड़ जाये तो इस जैसी तो कोई बात नहीं। अगर थोड़ी भी भक्ति करता है, इसके आगे यमदूत नहीं आते, काल नहीं आता, धर्म राय के नहीं जाना पड़ता। जो असली साधू हैं, उनका महकमा (Department) ही अलग है। आम दुनिया का अलग है—उनका अलग है। यह चौरासी से अलग महकमा है जो कामिल सन्त हैं। उनका महकमा (चौथे लोक का)। उनको धर्म राय के पास नहीं जाना पड़ता, Account तो खत्म करने पड़ते हैं जैसे कोई हरियाणा का मुलाजम सेंटर के महकमे में काम करता हो (चाहे चपरासी भी है) अगर वह गुनाह करे तो हरियाणा वाले

तो कुछ नहीं कर सकते सेंटर से बगैर पूछे। देख लो! हरियाणे वाले तो कुछ नहीं कर सकते। सज़ा तो पाएगा गुनाह की लेकिन सेंटर से पूछ कर, कर सकते हैं। इसी तरह जो कामिल सन्तों के चिताए हुए जीव हैं, (धर्म राय का महकमा अलग है उनका अलग है), गुनाह करेगा सज़ा तो मिलती है लेकिन उनसे (सन्तों) से पूछ कर सकते हैं। इनका अलायदा ताल्लुक है। गुरु नानक साहब का एक जीव खोटे कर्म कर बैठा, सज़ा दिलाई। फिर भी निकाल कर लाये। ये महकमा ही अलग है। उनको धर्म राय के नहीं जाना पड़ता। तभी हम पढ़ते हैं, क्या?

प्रभ कै सिमरनि दुखु जमु नसै॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै॥

उसके नज़दीक नहीं जाते, यह महकमा ही अलग है। धर्म राय के नहीं जाना पड़ता। यही तुलसी साहब लिखते हैं–

जो कोई संत शरण के दागी। तिन ते काल दूर होइ भागी॥
जम की जाल निकट नहीं आवे। मार्ग छोड़ अलग हो जावे॥

यही मुसलमान फकीर लिखते हैं–

तुरा ब रोजे हिसाब ई अमर शवद मालूम॥
की बूद सल्तनते बे हिसाब दरवेशी॥

कि जब तेरा हिसाब का दिन आयेगा, तुम्हें पता चलेगा कि दरवेशों की सल्तनत में, फकीरों की सल्तनत में धर्म राय की कोई ताकत नहीं कि हिसाब भी मांग सके। जिस को कामिल फकीर मिल गया; नाम का बीज डाल गया, वह एक न एक दिन ज़रूर जायेगा। टाइम तो लगता है, ये जल्दी का काम नहीं। उसको (युधिष्ठिर को) छः महीने में तो सच बोलना याद आया। बोलो। देख लो! छः महीने में तो यही याद आया। ये जल्दी का काम नहीं। आपके वो गाते हैं मस्त कलन्दर क्यों गाते थे ऐसे? कि इसके अन्दर खुदा ही खुदा याद रहे, और कोई बात ही न रहे चलते चलते ही...

मेरे माधो जी सतसंगति मिले सो तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

हमारे एक बुजुर्ग था, कुबड़ा था वैसे वह मुसलमान था, रात को उसने बैठ जाना बस सारी रात अल्ला हू, अल्ला हू, अल्ला हू। कोई बात रहे ही ना। इसका नाम है सिमरण, हर वक्त यही रहे, हैं। हाँ... बस, बाद में नकलें चल पड़ती हैं, मौके पर ये है, ये सारा हाँ। ऐसा सिमरण हो। हाँ जीः

पाठी– भरमि सूके बहु उभि सूक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै॥ (मः 4/1326)
मैनेजर साहिब जी– दुनिया के ख़्यालों से, भ्रमों से हमारे हिरदे काले हुए पड़े हैं, सूखे पड़े हैं, इसको पता ही नहीं। लेकिन, साधूओं की सोहबत में जाकर, ये हरे होने लग जाते हैं। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि दुनिया का राम है सूखा, फकीरों का राम है हरेया (हरा), ये हरा कर देता है।

मेरे माधो जी सतसंगति मिले सो तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

जैसे पानी न मिलने के कारण जंगल में दरखत खड़सुख हो जाते हैं। अगर, उनको जैसे पानी मिल जाये, फिर हरे होने लग जाते हैं, फूट आते हैं, पत्ते निकल आते हैं, फूल लग जाते हैं, फल लगने लग जाते हैं। इसी तरह साधुओं की सोहबत में जाकर इसको प्रेम की खुराक मिलती है (ये आत्मा सूखी पड़ी है), इसको भक्ति का शौक पैदा होता है, वे भी हरी होने लग जाती है। काम, क्रोध की अग्नि बुझने लग जाती है। इसकी जगह शील, क्षमा, सन्तोष, विवेक, दीनता और गरीबी के फल और फूल निकलने लगते हैं...

सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल॥
हरिनामु हरि मीठ लगाना गुरि किए सबदि निहाल॥

उनकी सोहबत में जाकर ये पता लगने लगता है कि ये देश मेरे देश नहीं ये कौमें मेरी कौमें नहीं, यार दोस्त मेरे नहीं, मां-बाप, भाई-बहन मेरे नहीं, ये तन भी मेरा नहीं, इसको भी छोड़ जाना है। फिर, भजन का ख़्याल आता है। फिर भजन कर सकता है। हाँ, ये शौक पैदा होता है उनकी सोहबत में। ये मत मिलती है। दुनिया की सोहबत में जाओ तो हिरदे काले होते हैं।

जो न भजते नाराइणा ॥ तिनका मैं न करउ दरसना॥
जिनकै भीतरि है अँतरा। जैसे पसु तैसे ओइ नरा।

जैसे पशु वैसे वो हैं। नामदेव ने कहा है। हाँ...

पाठी– ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाए साधू चरनि लगीजै ॥ (मः 4/1326)
मैनेजर साहिब जी– फिर, अगर मालिक की प्राप्ति करनी है तो फौरन चला जा, साधुओं के संग में रह। बस, जितनी सोहबत हो सके कर। दुनिया के काम भी कर। उनकी सोहबत जितनी हो उतनी अच्छी है। यही मौलवी रूम ने लिखा है–

हर के ख्वाही हम नशींनी बा खुदा॥
गो नशी अन्दर हज़ूरे औलिया॥

अगर, कोई ये चाहता है कि ''मैं खुदा के पास बैठूं, वो सन्तों फकीरों के पास बैठे।''

''हम नशीनी सायते बा औलीया, बेहतर अज़ सदसाला तायते बे रेआ॥''

''उनकी एक घड़ी की सोहबत, बाहर की प्रेम से की हुई 100 साल की बन्दग़ी से अच्छी है।''

चूं शबी दूर अज़ हज़ूरे औलिया॥
दर हकीकत दूर गरताए अज़ खुदा॥

''अगर तू उनकी सोहबत से दूर हो गया, समझो, खुदा से दूर हो गया।'' ये उनकी सोहबत का असर है, जितना उनकी सोहबत में रहेगा।

''किरत संजोगी पाइआ भालि॥ साध संगति महि बसे गोपाल॥''

लेकिन साधू हो पूरा। अगर उनके पास जाना है, कल जाना है तो आज ही जा। आज जाना है तो अभी चल, किसी को साथ भी न ले।

साध मिलन को चालिए साथ न लीजै कोये।
पाछे पांव न दीजीऐ आगे होये सो होये॥

हां, हाँ जीः

पाठी– राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– ये कीर्तन सुना। बल्ले! बल्ले! बड़ा रस आया। फिर रस कहां गया? फिर, रस कहां गया? कुदरती कीर्तन इसके अन्दर है, राम नाम का कीर्तन। अगर, वो (कीर्तन) सुन ले, इसकी मस्ती कभी खत्म ही न हो। हम रोज़ ही पढ़ते हैं :

''सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जित बहि सरब सम्हाले॥
बाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे॥

कितने गाने वाले हैं, कितने बजाने वाले हैं, उसके अन्दर नाम का कीर्तन है। सबके अन्दर हो रहा है। कितने बाजे हैं वहाँ? कितने बजाने वाले हैं? कितने गाने वाले हैं? मौलवी रूम ने लिखा है–औलिया अल्ला के अन्दर कुदरती राग हो रहे हैं। कोई भागों वाला सुनता है वो राग। जिसने वो कीर्तन सुनना है, वह साधूओं के ज़रिये सीख सकता है। साधूओं की सोहबत में जाकर वो कीर्तन सुनता है। वो मस्ती फिर कभी खत्म न हो। हाँ...

''राम नाम कीर्तन रतनु वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥''

उनके ज़रिये सीख सकता है। हाँ...हां जी

पाठी– जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– उनके अन्दर सतगुरु बोलता है।

''प्रभु जी वसहि साध की रसना''

जो उनका हुक्म मान कर, उनके हिसाब से भजन सिमरण करता है, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करता है, वह सुन सकता है। बल्कि जो असली है वह तो बहुत दूर है। यहाँ से आकर तो मार्ग शुरू होता है। जो असली है वह त्रिलोकी से पार जाकर है।

कहे कबीर जन गाइके, सुनो सन्त इह गिआन।
नीचे त्रिलोकी रहे, ऊपर सतिगुरु नाम॥

बाणी कहो, शब्द कहो, कीर्तन कहो, वो दूर है (असली जो है)। जिसके मुतल्लक हम रोज़ कहते हैं। जो आनन्द देने वाली है...

''अनदु सुणहु वडभागी हो सगल मनोरथ पूरे॥''

कब हुए?

''पार ब्रह्म प्रभु पाइआ उतरै सगल विसूरै॥''

ब्रह्म देश के पार जाकर–

''दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी॥''

वहाँ सच्ची वाणी है, वो सब को ठीक रखने वाली है। ये (शारीरिक) दुःख नहीं। ईर्ष्या, द्वैत, वैर, क्रोध, निंदा, चुगली सब बीमारियां निकल जाती हैं, इसके अन्दर से। ये जड़ हैं। वे तो मामूली हैं (तन के तो)। ये सारे दुःख दूर हो जाते हैं इसके। आत्मा साफ हो जाती है। जब तक ये दुख दूर नहीं हुए ये बीमारियां नहीं गईं, समझ लो वाणी से ताल्लुक ही नहीं पड़ा...

''ना शबदु बूझै ना जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि बिहाणी ॥''

वो कब मिलता है? हाँ बोल! सुनो वो बहुत दूर है... असली कीर्तन जो है–रामनाम। ये दात सतगुरु ने अपने हाथ में रखी है। किसी के पास भी नहीं ये राम नाम की दात। बाकी जो हैं, काल के दायरे में हैं। ये जो है, उसने अपने हाथ में रखी है। कब मिलती है वो हाँ...

पाठी– राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि इक लुकानी॥
सतिगुर मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी॥ (मः 4/1178)

मैनेजर साहिब जी– ''रामु नामु रतन कोठड़ी गढ़ मंदरि इक लुकानी''

यह मन्दिर है (शरीर की तरफ इशारा)। इसमें एक खास किला है। उसमें इक खास कोठी है। वहाँ पड़ा है राम नाम। है सब कुछ इसके अन्दर। देवी-देवते भी इसके अन्दर हैं। मन्दिर भी इसके अन्दर है। तीर्थ भी इसके अन्दर है। ये राम नाम का ख़ज़ाना भी इसके अन्दर है। वो सतगुरु ने अपने हाथ में रखा है। जब सिमरण करके यहाँ जाता है, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करता है तो साधू के रूप में आकर सतगुरु मिलता है। फिर आगे ले जाता है। वो बख्शे तो बख्शे, किसी के अख्तियार नहीं ये। कई चीज़ें हैं हम बाहर ही रख देते हैं। कई आंगन में रखते हैं। कई कमरों में रखते हैं। कई सन्दूकों में रखते हैं। कई सेफों में रखते हैं। फिर कई खास चीज़ें हैं वो खास डिबियों में रखते हैं। ये (राम नाम) भी खास जगह में है, किसी विरले के हाथ आया है। जिसको सतगुरु बख्शे। हाँ... हाँ... जी। वो खास जगह पर है। ये जिसको बख्शे वो हासिल कर सकता है। ये भक्ति किसी विरले को मिलती है, जिसको वो मेहर करे।

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाइ॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाइ ॥

वो जा सकता है। बाकी भक्तियां अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। लेकिन ये जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने वाली है। मालिक का रूप बताने वाली है। ये नसीबों से मिलती है।

धुरि करमि पाईआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागै॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद बाजै॥

दादू साहब ने भी यही लिखा है...

''नाऊं रे नाऊं रे नाऊं रे हाँ-हां जी''

पाठी– नाऊं रे नाऊं रे सकल शिरोमिणी नाऊं रे।
मैं बलिहारी, मैं बलिहारी, मैं बलिहारी जाऊं रे।
दूतर तारे पार उतारे नरक निवारे नाऊं रे।
तारण हारा भवजल पारा निरमल धारा नाऊं रे।
नाऊं रे नाऊं रे सकल शिरोमिणी नाऊं रे।''

मैनेजर साहिब जी– ये तुम्हारे जो गाते थे, सारा दिन मस्त कलन्दर, अल्ला हू, अल्ला हू, सिमरण जो है ये ख़्यालात निकालने के लिए है। जब ख़्याल निकले हिरदा साफ हो; फिर नाम आता है; ऐसे नहीं। फिर वो कलमा आता है, वो असली चीज़ है, वो असली भक्ति है। कहते हैं न, मुसलमान के लिए चौरासी

नहीं। मुसलमान वह है जिसके पास कलमा है। जो नाम प्रकट कर ले उसके पास चौरासी नहीं। नाम कह लो; कुछ कह लो!

''जीआ रे ओला नाम का॥

अवर जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का॥''

बाकी सब को यमदूत के साथ जाना पड़ेगा। धर्मराय के साथ जाना पड़ेगा। अगर यह भक्ति है, उसको नहीं जाना पड़ता चाहे थोड़ी भी है, ये यमदूतों के हाथ नहीं जायेगा, धर्मराय के नहीं जायेगा। मरते वक्त पता चलता है। संभाल ज़रूर होगी, क्या? आम दुनिया को मरते देखो, रोते हैं, चिल्लाते हैं, टट्टी-पेशाब निकल जाता है, चेहरा काला पड़ जाता है, जिस्म अकड़ जाता है। लेकिन जो ये भक्ति करता है चाहे थोड़ी भी है, इसके नज़दीक यमदूत नहीं आते। इसका टट्टी-पेशाब नहीं निकलेगा, चेहरा पहले से अच्छा होगा। यह निशानी है, संभाल की। मालिक का रूप तो तब बनेगा जब भक्ति पूरी होगी। कई-कई जन्म लग जाते हैं लेकिन ये निशानी ज़रूर मिलेगी, संभाल ज़रूर होगी, चाहे थोड़ी भी है इस नाम वाले की। टट्टी पेशाब नहीं निकलता, चेहरा पहले से अच्छा होगा। ये निशानी है और कोई भक्ति की निशानी नहीं। ये है, हाँ इस भक्ति को सब भूले हुए हैं। एक महात्मा ने लिखा है, क्या? जपी, तपी राजा महाराजा, सब भूले हुए हैं! पण्डित भूले हुए हैं। षट दर्शन वाले भूले हुए हैं। सब भूले हुए हैं। जोगी जपी, सब भूले हुए हैं। हाँ, हाँ जी।

पाठी– नूर दिखावे तेज मिलावै ज्योति जगावै नाऊं रे।

सब सुख दाता अंम्रितु राता दादू माता नाऊं रे।

मैनेजर साहिब जी– हाँ–बोल राम नाम कीर्तन...

पाठी– राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै॥

जो बचन गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– जैसे मास्टर पढ़ाये जितना सबक याद रखे। जितना अमल करे उतना जल्दी तरक्की करता है। कम करेगा तो कभी फेल होगा। फिर उठेगा। बस इसी तरह यह है। जितना वचनों पर चलेगा उतनी जल्दी मालिक की दरगाह में जायेगा। उतनी जल्दी पास होगा। जितनी देर करेगा कम भजन करेगा, निंदा, चुगली, ईर्ष्या, वगैरह में रहेगा उतनी देर से पहुँचेगा। छोड़ता तो फिर भी नहीं। हाँ, हाँ जीः

पाठी– सतंहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै॥
जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुरु सरनि पवीजै॥
(मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु इसके अन्दर है। उसके सामने रोये, पीटे, विनती करे। फिर कोई साधू मिलता है पूरा। उसके हुक्म के मुताबिक चले तब हासिल कर सकता है। शरण लेनी मुश्किल है, भजन करना आसान है। लेकिन, शरण लेना बहुत मुश्किल है। शरण ली गुरु अंगद साहब ने, शरण ली भाई मँझ ने; शरण ली इब्राहिम ने, देख लो! वचन पर चलता ही नहीं, मनमत छोड़ता ही नहीं। मरदाना सारी उम्र साथ रहा; बोलो! साथ। फिर भी भागता रहा। साथ रहते हुए भागता रहा। बेचारे गृहस्थियों का तो क्या है? साथ रहते हुए भागता रहा कि वहाँ रहूँगा जहां टके सेर खाजा टके सेर भाजी'। ये ऐसी बला है मन। साथ रह कर यकीन नहीं दिलाता। एक दफा मरदाना कहने लगा ''जी भूख लगी है''। अच्छा भई चल आगे कुछ देंगे। आगे गये कुछ ना मिला। आगे चल। आगे गये। जी मैं तो मरता हूँ। कहने लगे। ये आक की कुकड़ियां खा ले। जी, कड़वी हैं। कहने लगे, नहीं कड़वी नहीं, मीठी हैं। जितनी ज़रूरत हो उतनी खाना, रखना न। खाई तो मीठी, फिर छिपा कर रख ली। अगले दिन खाने लगा तो कड़वी। मन यकीन नहीं देता कि जिसने आज दिया है कल भी देगा। देख लो! इतनी तसल्ली लेकर भी मन नहीं मानता। ऐसी बला है। इस की मति छोड़नी बहुत मुश्किल है।

''मन की मति तिआगहु हरिजन एहा बात कठैनी।''

बस ये बात मुश्किल है। हाँ... हाँ जीः

पाठी– जे वड़ भागु होएं अति नीका तां गुरमति नाम द्रिड़ीजै।
सभु माइआ मोहु बिखमु जग तरीये सहजे हरि रसु पीजै॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– भागों से फकीर मिलता है, इस भक्ति में लगता है, सारी दुनिया मोह माया के चक्करों में फंसी हुई है। भयानक समुद्र में डूब रही है। जो सतगुरु के आगे विनती करता है कि मैं इससे निकलना चाहता हूँ। मालिक! बख़्श ले। उसके लिए बन्दोबस्त करता है, बाकियों के लिए नहीं। ये सच्ची तड़प का मज़मून है। प्रेम का मज़मून है। प्रेम की चीज़ है, रीतों की नहीं। ये तो प्रेम का सौदा है। हाँ-हां जीः

पाठी– माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीज़ै॥ (मः 4/1326)

मैनेजर साहिब जी– हाय हाय, हाँ! सारी दुनिया मोह माया के भयानक समुद्र में डूब रही है। माया खाने आये थे, माया ने इनको खा लिया। देख लो! दुनिया खाने आये थे, दुनिया ने इनको खा लिया; ''पचे पचीज़े'' पच गये माया में। कहते हैं न, फलाना आदमी जो चीज़ खाता है (उसको पचती नहीं) उसी तरह निकल जाती है। फिर कहते हैं उसने दवाई खाई, पच गई। उसका एक रूप बन गई अन्दर, चीज़। बस ये भी दुनिया में पच गया, दुनिया का रूप बना पड़ा है। पचा पड़ा है। जब से हम पैदा हुए पहले मां देखी, फिर बाप, बहन, भाई, यार, दोस्त देखे। मास्टरों के पास गये। किसी से कुछ सीखा, किसी से कुछ सीखा। देख लो! दुनिया में पच गये, बस दुनिया का रूप बन गये। हाँ-हां जी।
पाठी– अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै। (मः 4/1326)
मैनेजर साहिब जी– बस ये मेरा घर है, मेरी ज़मीन है, मेरी जायदाद है, मेरी कौम है, मेरे मज़हब हैं, मेरे देश हैं। बस, यही सीखा! और तो कुछ ना सीखा! बस, फिर चौरासी तैयार है इसके लिए। अहंकार ही लिए फिर रहा है। मेरा मेरा कहता है। ये चौरासी और क्या है। पहले तो मेरा तन है, इसका प्यार नहीं छोड़ता।

देह प्यारी जीव को निस दिन सेवा नाहिं।
दादू जीवन मरण लो कबहुं छाडे नाहिं॥

सारी उम्र इसी की सेवा की, इसको छोड़ना नहीं चाहता। चूंकि तन का प्यार है, बच्चों का तन समझो, सब का तन का ही ख़्याल है। ये तन चाहता है। बूढ़ा हो गया खुरड़-खुरड़ करता है। कोई अच्छी तरह रोटी नहीं देता, कोई सेवा नहीं करता, फिर भी कहता है तन न छोड़ूं। देख लो! बूढ़ों का हाल! क्योंकि यह तन चाहता है, मालिक इसको तन दे देता है। फिर हमारे ख़्यालों के मुताबिक, जिसका माया की तरफ ज़्यादा ख़्याल है, ज़्यादा माया में पचा हुआ है तो उसको सांप की योनि देता है। तन भी मिल गया। क्योंकि माया का ख़्याल है, वहाँ बिठा देता है।

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥

ले पेट भर ले, भई। अगर बच्चों का ख़्याल रह गया...

अंति कालि जो लड़िके सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरे॥

पीछे-पीछे बच्चे फिर रहे हैं। अगर मकानों में ख़्याल रह गया...

अंति कालि जो मँदिर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥

प्रेत योनि वलि वलि अउतरै॥

घर घर में मढ़ियां हैं, बाबे की पूजा हो रही है। वहीं बैठा है, वहाँ ख़्याल है मकानों में। इसी तरह चौरासी में फिर रहा है, और क्या? अगर सतगुरु की तरफ ध्यान है तो सतगुरु के पास जायेगा। बस बात तो ये है। ये तन का प्यार ही नहीं छोड़ता। सारी उम्र इसी की सेवा की–

देह प्यारी जीव को, जीव प्यारा देह।

दादू हरि रस पाइए, जे ऐसा हो स्नेह॥

जिस तरह इसका (तन का) प्यार है। उसी तरह आत्मा के कल्याण का प्यार हो, फिर हासिल कर सकता है, रस। इसका प्यार छोड़े तब है। हाँ-हां जी।

पाठी– नानक राम रमु रमु रम रम रामै ते गति कीजै॥

सतिगुरु मिलै ता नामु द्रिड़ाए राम नामै रलै मिलीजै॥ **(मः 4/1326)**

मैनेजर साहिब जी– राम इसके अन्दर है। उसमें रमु, रमु, रम, रम जा। सारे ख़्याल निकाल दे। अगर सिमरण कर कर के सारे ख़्याल निकाले फिर सतगुरु आता है साधुओं के रूप में। फिर असली नाम को पकड़वाता है। फिर मालिक की दरगाह में पहुँच जाता है।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'दुनिया न सालाहि जो मरि वंञसि'

सत्संग के वचन

पाठी– दुनिया न सालाहि जो मरि वंञसी॥
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥1॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– यह गुरु अमरदास का शब्द है। आपकी भक्ति, आपकी सेवा काबिले तारीफ है। ऐसी हर शख्स नहीं कर सकता। बचपन से ही भक्ति भाव वाले थे। बचपन से ही भक्ति शुरू की; जप-तप, तीर्थ-व्रत सब कुछ किया। इक्कीस (21) बार गंगा स्नान को गये फिर गुरु अंगद साहब की शरण में आये। 72 साल की उम्र में। बहत्तर साल की उम्र में गुरू अंगद साहब की शरण में आये। कड़ी से कड़ी सेवा की। बारिश है, झखड़ है, अन्धेरी है, सर्दी है, गर्मी है, रात है, दिन है; लगे रहे। दिन और रात सेवा या सिमरण। कभी किल्ली से केश बांध लेने; सिमरण करना। जो असली सेवा है वो है सिमरण करके अन्दर सतगुरु को प्रकट करना। सिमरण कर करके देह को खाली करना, ज़िन्दा मरना, देह से निकलना, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करना। लेकिन यह किनके लिए है? जिनका मन भजन में लगता हो, एकान्त कर सकता हो। अगर एकान्त में बैठे मन और-और तरफ दौड़ता है, दुनिया के ख़्याल, विषय विकारों के ख़्याल; उसके लिए पहले बाहर की सेवा जरूरी है। बाहर की सेवा से हाथ-पांव शुद्ध होते हैं। आंखों के साथ उनके दर्शन करने से आंखें पवित्र होती हैं। ज़ुबान से सतगुरु का जस (यश) करने से ख़्यालात ठीक रहते हैं, ज़ुबान शुद्ध होती है लेकिन मस्ताना जी ने जब चोला छोड़ा तब फरमाया जब ड्यूटियां लगायीं कि जिन्होंने 10-10, 12-12 साल सेवा की है उनका मन 5 मिनट लगे तो लगे बाकी दुनिया का तो लेखा ही लेखा है, बस खत्म। बैठना ज़रूर चाहिए चाहे मन लगे चाहे न लगे, मजूरी ज़रूर देता है। अब गृहस्थी क्या करें? उनके लिए तो यही है या साध संगत पर आने का ख़्याल, जाने का ख़्याल जो भी कुछ दलील है, कोई ख़्याल है, ये सारे ही सिमरण में हैं। जैसे हम खेती करते हैं, जो सारे

ख़्याल हैं वो खेती में हैं। वो ही खेती पैदा करते हैं; ये लाना है, ये देना हे, पानी लगाना है, फलाने को काटना है, फलाने को बीजना है; ये सारे ही खेती में हैं। इसी तरह ये भी खेती में हैं, सिमरण की खेती में हैं, मालिक की। क्या कहते हैं आप? कि दुनिया की सलाहना न कर, दुनिया से प्यार न कर, ये कई दफा बनी कई दफा खत्म हुई। लोगों से भी प्यार न कर, उनका भी सिमरण न कर; ये कई दफा पैदा हुये, कई दफा मरे। ईसा ने लिखा है ये जिस्म मिट्टी से बना है, मिट्टी में मिल जायेगा। फिर किस से प्यार करें? किसकी सिफत करें? किसकी सलाहना करें? किसका सिमरण करें? आगे कहते हैं, हाँ जीः

पाठी– वाहु मेरे साहिबा वाहु॥
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥1॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– वो सच्चा मालिक, सच्चा सतगुरु, सच्चा खुदा, वो हाज़र नाज़र जिन्दाराम, कुछ भी कहो वो तुम्हारे अन्दर है–

साधो इहु तनु मिथिया जानो॥
या भीतरि जो रामु वसतु है साचो ताहि पछानो॥

वो रमी हुई ताकत है, वो सत् ताकत है। अगर सलाहना के काबिल है तो वो है, सिफत के काबिल है तो वो है। बाहर की सिफत में भी इसको काफी रिद्धियां-सिद्धियां आ जाती हैं, इसको पता नहीं। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि एक मुसलमान था। उसने एक छोटा सा लेला (बकरी का बच्चा) रखा हुआ था। रात को उसने क्या करना, लेले को ले लेना, मालिक के आगे विनती करनी कि ऐ मालिक! ये कूले कूले (नरम-नरम) बाल कैसे बनाये, ये काला रंग कैसे बनाया, ये सफेद कैसे बनाया, ये मुंह केसे बनाया, ये पैर कैसे बनाये। जो पड़ोसी थे उन्होंने कहा कि ये सारी रात ऐसे ही ख़राब करता है, सोने भी नहीं देता। उन्होंने लेला कत्ल कर दिया। शाम को लेले की ज़रूरत पड़ी। उसने कहा 'लेला'। लेले को पुकारा तो लेला आ गया। इतनी ताकत आ गई बाहर की सिफत में भी। अगर ठीक उसका सिमरण हो, उसको प्रकट करने का यत्न हो तो पता नहीं क्या हासिल करें। सोचो! अगर सिफत के काबिल है तो वो है। यही मस्ताना जी फरमाया करते थे कि देखो भई सिफत के काबिल है तो यह (फूल की तरफ इशारा) है। देखो कैसे फूलों में रंग भरता है। इसके गुण तो किसी ने न गाये। फलाना शख्स तारों पर चढ़ गया, चांद पर चढ़ गया; उसकी तो सिफत की। अगर उसके अन्दर से निकल जाता तो कैसे चढ़ता,

बोलो! सिफत के काबिल है तो ये है। जो गुरमुख हैं वो सदा सच्चे सतगुरु, जिन्दाराम कहो उसकी सिफत करते हैं, उसके गुण गाते हैं, उसको अन्दर प्रकट करने का यत्न करते हैं। अगर दुनिया में सलाहना के काबिल हैं तो वो फकीर हैं। वो फकीर हें जो उसके गुण गाते हैं। यही कबीर साहब ने कहा है–

सेवा को दोनों भले, एक सन्त एक राम।
राम जो दाता मुक्ति के, सन्त जपावे नाम॥

वो खुद प्रकट करते हैं, हमें प्रकट करना सिखाते हैं। यही गुरु अमरदास जी ने एक जगह और लिखा है–

गुरमुखि सिउ करि दोसती सतिगुर सिउ लाइ चितु॥
जनण मरण का मूलु कटीऐ तां सुख होवै मितु॥

कि गुरमुखों से प्यार करके अन्दर सतगुरु से प्रीत कर सकते हैं। उनके ज़रिये ही जा सकते हैं और कोई तरीका ही नहीं। यही गुरु नानक साहब जी ने लिखा है एक जगह–

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥

उनके ज़रिये भक्ति कर सकते हैं और कोई तरीका ही नहीं। वो बता सकते हैं भक्ति का असली रास्ता, बाकी किसी को पता नहीं। ऐसे दुनिया बाहर की बाहर फिर रही है। यही एक मुसलमान फकीर ने लिखा है :

हर के ख्वाही हम नशींनी वा खुदा।
गो नशीं अन्दर हजूरे औलिया॥

कि ''अगर तू खुदा के पास बैठना चाहता है तो किसी सन्त महात्मा के पास बैठ।''

हम नशीनी सायते व औलिया।
बेहतर अज़ सद साला तायते बे रया॥

कि ''उसकी एक घड़ी की सोहबत बाहर की सौ साल की बन्दग़ी से अच्छी है क्योंकि ख़्याल उसकी तरफ रहेगा।''

चूं शबी दूर अज़ हजुरे औलिया।
दर हकीकत दूर गशताए अज़ खुदा॥

''जब तू उसकी सोहबत से परे हो गया समझो खुदा से परे हो गया।'' यही महात्मा चरणदास ने लिखा है–

तप के बरस हज़ार हों सत्संग घड़ी एक॥
तो भी सरबर न करे सुखदेव किया बिबेक॥

जो गुरमुख है वो सदा चलते-फिरते, उठते-बैठते मालिक की ही सिफत करते हैं, उसके ही गुण गाते हैं, उसका ही सिमरण करते हैं।

पाठी– दुनिया केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि॥
जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं जो मनमुख हैं उनका प्यार मनमुखों के साथ है, दुनियादारों के साथ है। सारी दुनिया काम, क्रोध के आधीन है, मन के मुतहत (मातहत) है। दरअसल दुनिया मालिक की पूजा नहीं करती, मन की पूजा करती है। कहते हैं कि हम मालिक की पूजा करते हैं लेकिन करते मन की हैं, सब मन के मतैत हैं, मन के कहने पर चलते हैं–

मन अंतरि बौलै सभु कोई ॥ मन मारे बिनु भगति न होई ॥

जब तक मन नहीं मरता, कोई भक्ति कबूल नही मालिक की दरगाह में। मन की पूजा ही करते हैं। फकीरों का कहा तो मानता ही कोई नहीं। अगर फकीर कहे फलाने वक्त बैठ, उस वक्त आधा घंटा नहीं बैठेगा। मन के कहने से 2 घंटे बैठ जायेगा। उनका कहना मानने ही नहीं देता, यह ऐसी बला है। इसका कहना मानते हैं, बाकी किसी का कहना नहीं मानते। सारी दुनिया इसके मुतहत है। उनका प्यार मनमुखों के साथ है। उन्होंने क्या किया फिर मन के कहने से? नेकियां-बदियां कमाईं, बाहर के जप-तप किये, बाहर के साधनों में रहे, कर्मों-धर्मों में रहे। उसका फल क्या है? चौरासी! अच्छे कर्म किये तो अच्छी जूनियों में गया, स्वर्गों में गया; बुरे किये तो नरकों में गया, गन्दी जूनियों में गया। छुटकारा दोनों में ही नहीं। उनका छुटकारा न हुआ, चौरासी न खत्म हुई।

पाठी– गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि॥
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– अब मनमुखों का हाल कहकर गुरमुखों की तरफ आते हैं। गुरमुख कौन हैं? मनमुख कौन हैं? हमें पता ही नहीं। हम तो हर एक को कह देते हैं यह बड़ा गुरमुख है। मनमुख वो हैं :

से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥

जिन्होंने अन्दर शब्द से, नाम से ताल्लुक नहीं जोड़ा, उसका रस नहीं लिया वो मनमुख हैं। गुरमुख कौन हैं? जिन्होंने शब्द का रस लिया जो शब्द में समा

गये, उसका रूप बन गये। उनके ज़रिये हम मालिक को प्रकट करना सीख सकते हैं—

गुरमुखि जाता करमि विधाता॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता॥
गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे॥

जो शब्द में समा गये, उनका नाम गुरमुख है। कब समाता है यह : आत्मा तीन शरीरों में कैद है। पहला कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है—उसके ऊपर यह स्थूल शरीर है। अनेकों बन्धन और हैं। पहले बाहर के बन्धन तोड़े स्थूल तन का प्यार छोड़े, विषय विकार छोड़े। मां-बाप, बहन-भाई इनमें गुज़ारे लेकिन मोहब्बत न हो। न इसके देश हैं, न कौमें हैं। सारे ताल्लुक तोड़े। लोक लाज वगैरह ये सारे तोड़े, स्थूल देह से निकले, ज़िन्दा मरे फिर सूक्ष्म मण्डलों में जाता है। यहाँ सूक्ष्म बन्धन हैं, फिर कारण बन्धन हैं। आगे जाकर फिर अमृतसर में नहाये वहाँ रूह साफ होती है, वहाँ आत्मा के प्रकाश का पता चलता है।

आतम रामु प्रगासिआ॥
वहाँ जाकर इसकी अपनी रोशनी बारह सूरज की है।
बारसि बारह उगवै सूर॥ अहिनिसि बाजे अनहद तूर॥

फिर आत्मा का पता चलता है, फिर आगे जा सकता है सहज अवस्था में—

आतम रामु प्रगासिआ सहजै सुखि रहंनि॥

सहज अवस्था कहां है? त्रिलोकी से पार चौथे लोक में। यहाँ से तो शुरू होती है। यहाँ से तो शुरू होती है सहज अवस्था, नीचे नहीं। यहाँ से सच्चा नाम शुरू होता है, यहाँ से सच्चा शब्द शुरू होता है, यहाँ से सच्चा सतगुरु शुरू होता है।

इड़ा पिंगला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई॥

यहाँ नहाये आत्मा, यहाँ अमृतसर है, यहाँ मान सरोवर है, यहीं सच्चा सरोवर है—

सुखमना ईड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलख लखाए॥
नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतगुर सबदि समाए॥

वो शब्द रूप है, यहाँ से शुरू होती है सहज अवस्था। फिर मालिक की दरगाह में जा सकता है। फिर गुरु अमर दास की तरह कह सकता है :

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाइआ॥
राग रतन परिवार परीआ सबद गावण आईआ॥ (मः 3/917)

कि मैंने ऐसा आनंद हासिल किया है, अन्दर सतगुरु को पा लिया है। कहां? सहज अवस्था में जो त्रिलोकी से पार है। वहाँ परियां नाच रही हैं, राग हो रहे हैं, कीर्तन हो रहे हैं, बाजे बज रहे हैं। यह काम करना था आकर इसने। हाँ जी–

पाठी– गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि॥
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– अब मनमुखों की सोहबत में चौरासी है, गुरमुखों की सोहबत में छुटकारा है। उनका अपना छुटकारा हुआ है, वो हमारा भी करवा सकते हैं। दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। इसीलिए कहा है–

भगता तै सैसारीआ जोडु कदे न आइआ॥

इनका कभी मेल नहीं हुआ, रास्ते जो अलग हुये। यह कैसे जा सकता है? एक फकीर ने लिखा है :

साची भगति गोपाल की मेरा मन माना।
मनसा वाचा करमना सुनउ संत सुजाना।

कि मेरा दिल मालिक की भक्ति में लगा है। उनका मन, वचन, कर्म लगा है। क्या?

लंगड़ा लुंज्जा होये रहो बहरा और काना।
राम नाम से खेल है दीजै तन दाना॥

कि दुनिया की तरफ से लंगड़ा हो जा, उस तरफ कदम ही न उठा! लुज्जाँ हो जा उस तरफ हाथ ही न उठा। बहरा हो जा, उनकी बात ही न सुन। उन्होंने उल्टा ही रास्ता बताना है, सोच लो! गुज़ारना तो पड़ता है पर ज़्यादा फंसे न उनकी बातों में, सोच लो! उनको देख ही न। यह तन का भी ख़्याल न कर 'राम नाम से खेल है दीजै तन दाना'। तन का भी ख़्याल न कर, इसकी भी परवाह न कर :

भक्ति हेतू गृह छोड़िये तज गरभ गुमाना।

भक्ति के लिए कौन सा घर छोड़ना है? यह घर (शरीर) छोड़ना है। बाहर छोड़ने से कुछ नहीं बनता। यह घर (शरीर) छोड़ना है, इससे निकलना है।

जन बुल्ला पाइउ वाक है सिमरो भगवाना॥

ऐसा सिमरण कर कि इस देह से निकल जा। जो गुरमुख हैं, जो गुरमुखता

का कोर्स करते हैं उनका काम दिन और रात क्या है– मालिक का नाम सिमरणा, उठते बैठते लगे रहना।

से-साबत इशक ते कदम अगेरे ताहीं रब लभीवे हू॥
लूं लूं दे विच ज़िकर अल्ला दा हर दम पया पढ़ीवे हू॥

एक मिनट नहीं छोड़ते :

जो दम गाफल सो दम काफिर सानू मुर्शद इह फरमाया हू।

कि जो गाफल हो गया मालिक की तरफों, सिमरण ही छोड़ दिया, समझो काफिर बन गया, सोचो! इसका नाम काफिर है। सिमरण छोड़ने का, मालिक का नाम छोड़ने का, इसका नाम काफिर है, और नहीं। हमने तो जातें-पातें ही बना लीं काफिर। जो मालिक का नाम नहीं सिमरता उसका नाम काफिर है। लेकिन है यह मुश्किल। हम सोसाइटी में बंधे पड़े हैं, उनका संग नहीं छोड़ते, पुरानी रीतें नहीं छोड़ते, बार-बार उनमें फंसते हैं। पलटू साहब ने एक जगह लिखा है :

तीन लोक पेरा गया बिना विचार विवेक॥
देखा देखी पड़ै आपु से आप पेरावै॥
पेरे से जो बचै ताहि को हंसी लगावै॥

कि सारे पीड़े जा रहे हैं एक दूसरे के पीछे लगे हुए हैं; यह रीत है वो रीत है। वो उसके पीछे है वो उसके पीछे है, हमारी कोई सुनता ही नहीं। त्रिलोकी में सारे जीव हैं जितने, सारे पीड़े जा रहे हैं। एक दूसरे के पीछे लगे हैं, हमारी कोई सुनता ही नहीं। यही गुरु नानक साहब ने लिखा है कि यह पुरानी रीतों में ऐसा फंसा है कि छोड़ता ही नहीं। नाम लेकर भी नहीं छोड़ता।

इतु मोहि डूबा संसारु॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि॥
इतु मोहि फिरि जूनी पाहि॥ मोहे लागा जमपुरि जाहि॥
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि॥ ना मोहू तूटै न थाई पाहि॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ॥

ये पुरानी रीतों में, पुराने वहमों में इतना फंसा पड़ा है, इसको छोड़ता ही नहीं। छोड़े तो आगे चले। ये और बन्धन हैं, ये भी बन्धन। हैं ये सारे बन्धन तोड़े तब जा सकता है। हाँ जी :

पाठी– गुर का सबदु विसारिया दूजै भाए रचनि॥
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरनि॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– किसी को शांती है? शांती इसके अन्दर है। बाहर कहीं शांती

नहीं। हर एक आदमी; चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिख है, चाहे ईसाई है, चाहे कर्मी-धर्मी है, चाहे कसाई है, चाहे अमरीका का है, चाहे अफ्रीका का है, चाहे पाकिस्तान का है, चाहे हिन्दुस्तान का है, किसी मुल्क का है, किसी कौम का है सब के अन्दर भूख को मिटाने वाला सच्चा नाम कहो, सच्ची वाणी कहो, सच्चा सबद कहो, सबके अन्दर है।

साचा नामु मेरा आधारो ॥

साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥

वो सबके अन्दर है। मीरां ने देखा है वो कहती है मेरी भूखें मिट गईं।

पाइयो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो।
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समाइयो।
जिसकी चोरी कबहु न होवै ऐसो धन मैंने पाइयो।
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो।

कि मैंने ऐसा ख़ज़ाना हासिल किया है जिसको न चोर चुरा सकते हैं, न डाकू खोस सकते हैं, न यमदूत ले सकते हैं। कर्म-धर्म वगैरह तो यमदूत सब लूट लेते हैं लेकिन यह नहीं। वो ऐसा ख़ज़ाना है सब भूखें मिटा दे, वो कभी खत्म नहीं होता। कहते हैं जिनको ऐसा गुरमुख नहीं मिला जो इस नाम से ताल्लुक जुड़वा दे या मिला है तो इसने मेहनत नहीं की, दुनिया की सोसायटी नहीं छोड़ी। वो इसी तरह धक्के खाते रहे। दुनिया की आशा तृष्णा में जलते रहे, देख लो! किसी को शांती है? सारी दुनिया सड़ रही है। जब तक अन्दर नाम नहीं प्रकट करते तब तक अन्दर शांती नहीं आती। शांती इसके अन्दर है। हाँ जी :

पाठी– दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि॥
आपे डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– कि जो मनमुख है उनका प्यार मनमुखों के साथ है, दुष्टों के साथ है। वो गुरमुखों में दुश्मनी रखते हैं। ऐसे आदमी खुद भी बर्बाद हो गये, अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर गये, 'कीमती जन्म था' अपनी कुलों को भी ख़राब कर गये। यहूदी एक कौम है उन्होंने ईसा को सूली पर चढ़ाया। उनका सब मुल्कों पर राज था, उसका नतीजा क्या हुआ; हर जगह से धक्के पड़े। कृष्ण भगवान यादव कुल से थे। उस कुल के लड़कों को कोई शरारत सूझी। दुर्वासा ऋषि के पास गये। एक लड़के के पेट से बाटी बांध दी और बीबी के कपड़े पहना दिये। जाकर पूछा कि महात्मा जी इस बीबी के पेट से लड़का होगा या लड़की। वो था तो कमाई वाला

लेकिन क्रोधी था। उसने कहा इसके पेट से वो पैदा होगा जो तुम्हारी कुल का नाश कर देगा। उन्होंने कहा कि अब क्या करें ये तो श्राप हो गया। अब बाटी उतारें तो उतरे न। फिर दरिया पर गये, वहाँ जाकर उस बाटी को ऐसा घिसाया, उसकी लुक सी बना दी। कहते हैं उस लुक से ऐसा घास पैदा हुआ जिसकी धार ऐसी तेज थी तलवार जैसी। कोई मेला लगा था सब इकट्ठे हुये, आपस में लड़ पड़े। एक दूसरे को कत्ल कर दिया, सब खत्म हो गये। ये नतीजा है फकीरों के साथ दुश्मनी करने का। बादशाह शाहजहां को एक फकीर मिला। किसी बात पर उसने उसको (बादशाह को) ताड़ा (डांटा) फकीर ने। उसने कहा कोई शहंशाह को भी कुछ कर सकता है, कोई शहंशाह को भी कर सकता है कुछ। उसने कहा वो तो बैल की तरह चने चरवा दे। जैसे हरा खाता है, घास खाता है ऐसे घास खिलवा दे। वो हंस कर परे हो गया आखिर नतीजा क्या हुआ, नतीजा उसका क्या हुआ? उसके बेटे औरंगजेब ने उसे कैद कर लिया। एक दफा बाहर गया ऊँट पर सवार था, साथ आदमी था, कैदी तो था ही। हाथ बंधे हुये थे, पांव बंधे हुए थे, चने का खेत था। उस का दिल किया कि मैं चने खाऊं हरे। उसने उसको कहा कि चने ला दे। अब वो डरता था औरंगजेब का सख़्त हुक्म था। उसने इनकार कर दिया कि मुझे तो डर लगता है अगर पता लग गया तो पता नहीं क्या करेगा ये। आखिर यहाँ तक बात आ गई कि मैं चने के खेत में ऊंट बिठा देता हूँ फिर तू खुद ही खा लेना। जब ऊंट बिठाया अब हाथ बंधे हुये थे क्या करे, ऐसे करके मुंह से खाये। फिर उसको याद आया फकीर ने ये कहा था कि बैल की तरह घास खिलवा दे फकीर, फिर उसको याद आया। ये है फकीरों से दुश्मनी करने का नतीजा।

भगति जना सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावौगे।
जो ज़िन्दा दुसट करे भगता की हरनाखस जीउ पचि जावौगे॥

एक लकड़वाली का आदमी था शुरू शुरू में याद नहीं, पता नहीं कौन था? वो सच्चे सौदे के पास से गया निन्दा करता चला गया। गाडे से गिरा टांग टूट गई फिर आकर माफी मांगी। तो इसी तरह सारी दुनिया बर्बाद हो गई निन्दा, चुगली में।

पाठी– निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥
मुंह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि बुरे से बुरे आदमी की भी निंदा न करो। भले की तो है ही बुरी। एक फकीर ने लिखा है :–

मत देख पराये औगुण। क्यों पाप बढ़ाये दिन दिन॥

हम अवगुण उठाते हैं, उनसे गुण नहीं उठाते किसी से, सोच लो! मस्ताना जी फरमाया करते थे कि सारी दुनिया अवगुण उठाती है, गुण कोई नहीं उठाता। जो गुण उठाये उस पर मस्ताना कुर्बान है। कोई गुण नहीं उठाता, सब अवगुण उठाते हैं। दूसरों की निन्दा करते हैं। निन्दा कर करके अन्दर से काली हुई पड़ी है सारी दुनिया। साधुओं के पास तो हथियार ही यही रह गया बस निन्दिया। एक कौम दूसरे की, एक मज़हब दूसरे की, एक साधू दूसरे की सब निन्दिया ही निन्दिया लगी पड़ी है। किसी ने उसतत भी की किसी की? सोचो! गुण भी उठाया किसी से कि इसमें ये गुण है! अवगुण उठाये। सोचो! जितने अवगुण उठाते हैं उतने ही ख़्याल हमारे गन्दे होते हैं, उतना ही ये मैला होता है अन्दर से।

तब ही काला होत है हरि बिना चितवत आन।
कया कहिऐ समझै नहीं दादू सिखवत ज्ञान॥

अन्दर सिमरण कर करके मालिक का, अन्दर मालिक बिठाना था, निन्दिया कर करके दूसरे को बिठा लिया, निंदक को बिठा लिया। वो ही सामने आयेगा और क्या सामने आयेगा? सोचो! बाहर किसी की उसतत करो, निन्दिया करो वही सामने है। अगर मालिक की करो तो वो सामने है, बात तो यही है। कहते हैं निंदक का कभी भला नहीं वो सीधा नरकों को जाता है। ये फैसला है।

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि।

रविदास ने लिखा है–

जे उहु अठिसठि तीरथ नावै॥
जे उहु दुआदस सिला पूजावै॥
जो उहु ग्रहन करै कुलखेति॥ अरपै नारि सीगार समेति॥

बड़ा सारा लिखा है, आखीर क्या लिखता है :

निंदकु सोधि साधि बीचारिआ॥
कहु रविदासु पापी नरकि सिधारिआ॥

आखिर सीधा नरकों में, सोच लो! सब नरकों का सामान बना रहे हैं। गुण कोई नहीं उठाता किसी से, अवगुण अवगुण उठाते हैं। जितने अवगुण हम उठाते हैं उतने इसके गुण अन्दर से निकल जाते हैं वो उसकी तरफ चले जाते हैं; बदला ज़रूर है। शेख सादी ने लिखा है कि अगर मैं निन्दा करूं तो अपने मां-बाप की करूं,

गुण घर में तो रह जायें और किसी की करूं नहीं। हाँ जी :

पाठी– ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ॥

आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू ना जाइ॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– जैसे हम कर्म करते हैं वैसे फल भोगते हैं। शेख सादी ने लिखा है :

करदने खुद पेश में आयद, फलम राह तोहमद असत॥

हर चे अन्दाजी मिआने आसिआं आयद बरूं॥

कि जैसे आदमी कर्म करता है उसका वैसे ही फल है। और प्रारब्ध क्या है? जो कर्म किये हैं वही प्रारब्ध है।

अपना किया आप ही पावै। प्रालब्ध वो नाम कहावै॥

कर्म का फल ज़रूर भोगना पड़ता है, याद रखो–

कर्म गत टारै न टरै।

राम ने बाली को मारा। उसी बाली ने भील का रूप धार कर कृष्ण को मारा न मारा, सोच लो! जो पाप करता है वो अपनी गर्दन अपनी छुरी से ही काटता है, याद रखो यह। उस वक्त तो पता नहीं चलता, अपनी गर्दन अपनी छुरी से काटता है। क्यों? पाप का बदला तो ज़रूर देना पड़ेगा। 'जैसा करेगा वैसा भरेगा' वो अपने वास्ते ज़ुल्म करता है, अपनी आत्मा का घात कर रहा है :

आतम घाती महा पापी॥

सोच लो! दया क्या है? नाम जपणा। अपनी दया ये है, नाम जपणा। अपने अन्दर सतगुरु को प्रकट करना, चौरासी खत्म करना। ख़्याल निकाले तो चौरासी खत्म हो।

अपने जीव की कुछ दया पालो। चौरासी का फेर बचा लो॥

यह दया है। हमने तो खाना पीना ही दया समझ रखा है। ये दया है जो चौरासी मुकाये, खत्म करे। हाँ जी :

पाठी– महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ॥

ओए अंम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाए॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं उसके लिए क्या कर? सन्तों महात्माओं की सोहबत कर, गुरमुखों की सोहबत कर। वो हमें सच्ची अकल देते हैं, सच्चा ज्ञान देते हैं, सच्चा रास्ता बताते हैं। उनके वचन अमृत से भरे हुये होते हैं जो हमारे गन्दे मन्दे ख़्याल निकालते हैं। उनसे जाकर रास्ता पूछे, उनसे नाम लेकर जपे, फिर छुटकारा है। वो

हमारी बे-गर्ज़ होकर सेवा करते हैं, कोई गर्ज़ नहीं रखते; जो गर्ज़ रखता है वो फकीर नहीं।

दादू साध परीखिये अन्तरि आत्म देख।
मन माहि माया रहे या आपे आप अलेख॥

उसके अन्दर मालिक ही मालिक है या क्या है! वो अपनी रोजी आप कमाते हैं।

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ॥

वो क्या उपदेश देते हैं हमें :

सति संगति मिलि मति बुधि पाई हउ छुटे ममता जाल॥
हरिनामा हरि मीठ लगाना गुरि कीये सबदि निहाल॥

वो क्या कहते हैं हमें! ये देश तेरे देश नहीं, ये कौमें तेरी कौमें नहीं, यार दोस्त तेरे यार दोस्त नहीं, ये मां बाप तेरे मां बाप नहीं। ये सब लेने देने के सम्बन्ध से इकट्ठे हुये हैं; ये तन भी तेरा नहीं।

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संग न होइआ॥

इसने भी साथ नहीं जाना। फिर कहता मेरा एक सतगुरु है। फिर लग सकता है, ऐसे नहीं। उनकी सोहबत में जाकर ये ज्ञान आता है। प्रैक्टिकली पता लग जाता है कि कोई इसका नहीं।

पाठी– गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि।
से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– वो महात्मा गुणों के ख़ज़ाने हैं, भजन सिमरण के ख़ज़ाने हैं। उनके वचन गुणकारी, क्या? हमारे अन्दर मालिक का शौक पैदा करते हैं–

महा पवित्र साध का संगु॥ जिस भेटत लागै प्रभ रंगु॥

उनकी सोहबत में जाकर मालिक ही मालिक याद रहता है और कोई चीज़ नहीं। बाकी सब भूल जाते हैं।

कबीर संगत साध की साहिब आवे याद।

उनकी सोहबत में याद आता है, ऐसे नहीं। जितनी सोहबत करो उतना दुनिया का रंग उतरेगा, मालिक का रंग चढ़ेगा। इसीलिए कहा है–

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥

यह आत्मा सूखी पड़ी है। इसको प्रेम की खुराक नहीं मिलती, नाम की

खुराक नहीं मिलती। जैसे बाहर खड़ सुक दरखत है। पानी न मिलने के कारण सूख जाते हैं। अगर पानी मिलने लग जाये तो हरे होने लग जाते हैं। पत्ते निकलने लगते हैं। टहनियां निकल आती हैं, फूल लग आते हैं, फल लगने लग जाते हैं। इसी तरह उनकी सोहबत में जाकर आत्मा भी हरी होने लग जाती है। ये सूखी पड़ी है। काम क्रोध की अग्नि बुझने लग जाती है उसकी बजाये शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी के फल और फूल निकलने लग जाते हैं। ये उनकी सोहबत का फल है।

पाठी– देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी॥
ऐको है दातार सचा आपि धणी॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि दुनिया का प्यार छोड़ के, उसका प्यार छोड़ के, मालिक के साथ प्यार कर जिसने सारी दुनिया बनाई है। जो सब जीवों को जहां-जहां कोई बैठा है सबको रिज़क पहुँचा रहा है। पत्थर में कीड़े को भी दे रहा है। हम एक दफा सच्चे सौदे में मिट्टी खुदवा रहे थे। एक अण्डा सा मिट्टी का बना हुआ निकला, इतना बड़ा पेड़ा सा। फिर एक और कस्सी मारी एक और निकल आया। फिर एक और निकल आया, फिर और निकल आया। हम उसको अन्दर ले गये, तोड़ा। ऊपर से बिल्कुल साफ है। जब तोड़ा तो अन्दर भी साफ है बिल्कुल। तीन तहें हैं जैसे थ्री-प्लाई की लकड़ होती है। उसके अन्दर क्या देखा? अंगूठे जितना मोटा सुण्ड (कीड़ा)! सोचो! उसको खुराक कहां से मिलती है? कहीं हवा को जगह नहीं, सोचो! देता है न वह सबको देता है। मस्ताना जी ने लिखवाया था दीवारों पर, मलूक दास का वचन :

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम॥

अजगर एक सांप है। वो चल फिर नहीं सकता। मालिक वहीं खुराक पहुँचाता है। वो अपने हिसाब से खींचता है उसको ताकत ही ऐसी दी है। मालिक सबको रोज़ी दे रहा है। राबिया बसरी के पास आकर किसी ने उसकी हालत देखी (फकीर तो रहते ही गरीबी की हालत में हैं, अकेली रहती थी) और कहा तुम्हारी हालत बड़ी ख़राब है। अगर तू कहे तो मैं किसी से कहकर तुम्हारे कपड़े व और- और चीज़ें बनवा दूं? वो कहने लगी महात्मा तू तो ज्ञानी है, वो अपने निन्दकों को जो उसकी निन्दा करते हैं उनको रोटी देता है तो मुझे नहीं देगा। मैं तो उसकी दासी हूँ, उसकी मौज़ में हूँ। ईसा ने लिखा है : हाँ पढ़ भई :

सुनो कीमती बात है मालिक पर तो किसी को इतबार ही नहीं; भई देगा, अपने पर है कि मैं नहीं करूंगा तो फिर कहां से आएगा। भई मैं ही करने वाला हूँ। इस 'मैं' ने सबको खत्म कर दिया। हाँ जीः

पाठी– हज़रत मसीह–''इस वास्ते मैं कहता हूँ, कभी फिक्र न करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पीओगे और नहीं कि तुम शरीर पर क्या पहनोगे। जंगल के पक्षियों की तरफ देखो! न ही कुछ बीजते हैं, न ही कुछ काटते हैं और न ही कुछ इकट्ठा करके संभालते हैं, तो फिर तुम्हारा सच्चा पिता उनको खुराक देता है; क्या तुम पक्षियों से ज़्यादा कारआमद नहीं :

मैनेजर साहिब जी– कारआमद नहीं, सोचो। जब पक्षियों को देता है तो तुम्हें नहीं देगा?

पाठी– और कपड़े संबंधी भी तुम चिन्ता मत करो? कुदरती फूलों की तरफ देखो, न ही मेहनत करते हैं, न ही कातते हैं, तो भी मैं तुम्हें बताता हूँ कि हज़रत सुलेमान (वह बहुत शौकीन था) की पोशाक अपनी सारी शानो-शैकत समेत इन फूलों में से किसी एक जैसी भी नहीं।''

मैनेजर साहिब जी– कोई पोशाक ऐसी है? बोलो! किसी की पोशाक ऐसी है? सोच लो! इनको भी पोशाक दी है न, सबको तैयार है, देने को, उसका कोई बनता नहीं। नामदेव को घर वाले तंग करने लगे। रात को औरत कहे तू कमा कर तो लाता नहीं। कहने लगा आज एक मोहरों की तौड़ी मिली थी, हाँडी मिली थी; मैं तो वैसे ही छोड़ आया हूँ। क्यों छोड़ आया? मैंने कहा कि अगर उसने देनी है तो आप खुद देगा। कहती कहां थी? कि फलानी जगह पड़ी थी। कि मैं सबेरे जाकर ले आऊंगी कोई उठा न ले। ऊपर थे चोर, चोरों ने सुन लिया। उन्होंने कहा अब देखेंगे कि इसको देता है कि हम को देता है। वो वहाँ गये हाँडी उठाई, उसमें देखा बिच्छू ही बिच्छू हैं। कहने लगे उसने ठगी की है हमारे साथ। उसको हमारा पता लग गया तो बिच्छुओं की तौड़ी के पास हमें भेज दिया। ये उसी के घर में फेंकें। जब उसके घर में फेंकी तो वहाँ मोहरें ही मोहरें खण-खण हो गईं। उसको देने में तो देर नहीं वो सबका दाता है, सबको देता है, हमें इतबार नहीं। हाँ जी :

पाठी– सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि॥
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– कि वो सच्चा मालिक जिसने सारी दुनिया बनाई, जो सब जीवों को जहां-जहां कोई बैठा है रिज़क पहुँचा रहा है, हमारी हर करतूत देखता है। वो

है कहां? कहते हैं तेरे अन्दर है। सबके अन्दर है वो। हम कहां ढूंढ़ते हैं? बाहर।

काइआ नगरि बसत हरि सुआमी,
हरि निरभउ निरवैर निरंकारा॥

वो इसके अन्दर है। हम ढूंढ़ते हैं बाहर मन्दिरों में, मस्जिदों में, तीर्थों में, उजाड़ों में, पहाड़ों में, जंगलों में। फिर कैसे मिले? कबीर साहब ने लिखा है :

मुझको कहां ढूंढे तूं बन्दे मैं हूँ तेरे पास में।
न मन्दिर में न मस्जिद में न काशी कैलाश में।
न तीरथ में न मूरत में न एकान्त निवास में।
खोजी होये तुरन्त मिल जाऊं पल भर की तलाश में।
कहें कबीर सुनों हो साधो मैं तो हूँ विश्वास में।

इसको विश्वास आता ही नहीं अन्दर। अगर विश्वास करे तो अन्दर मिले, नहीं कैसे मिले। कहते हैं उसको कौन देखता है? गुरमुख—जो अन्दर जाते हैं। अगर तू गुरमुखों से पूछ कर अन्दर जाये, सिमरण करे तो वो तुम्हें संभाल लेगा, अपने साथ मिला लेगा। वो दूर नहीं तेरे अन्दर ही है। अन्दर जाने का तो इसको ख़्याल ही नहीं। बाहर तो कहीं भगा लो इसको। बद्रीनाथ चला जायेगा, केदारनाथ चला जायेगा, और-और जगह चला जायेगा, तकलीफें भी उठायेगा, पैसे भी खर्चेगा, अगर कहो अन्दर बैठ तो अन्दर नहीं बैठ सकता। अन्दर बैठना इसके लिए मुश्किल है बस। जब भी मिला किसी को अन्दर से मिला है। बाहर से किसी को नहीं मिला।

पाठी– मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिया जाइ॥
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जब वो मालिक अन्दर है तो फिर मिलता क्यों नहीं? कि हमारा मन मैला है, दुनिया के ख़्यालों से, विषय विकारों से भरा हुआ है, पापों से भरा हुआ है। वो मालिक अति पवित्र है। दोनों का मेल कैसे हो? कुत्ता भी पूंछ मार कर बैठता है। क्या हम कहीं गन्दी जगह पर बैठते हैं? तो वो मालिक कैसे बैठे? सोचो! उसके लिए साफ हिरदा चाहिए। यही तुलसी साहब ने लिखा है—

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए॥

अगर तू मालिक से मिलना चाहता है तो ये दिल की कोठी को, दिल के हुजरे को साफ कर। सारे ख़्याल निकाल दे दुनिया के, 'ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए'। सब ख़्याल निकाल दे दुनिया के। नामदेव से पूछा गया तेरा बेढी कब

आता है। तो उसने फरमाया :

लोग कुटुम्ब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवे हो॥

जब सारे ख़्याल निकाले तब आता है, ऐसे नहीं।

चश्मे दिल से देख यहाँ जो जो तमाशे हो रहे।
दिलस्तां क्या क्या हैं तेरे दिल सताने के लिए॥

कि दिल की आंख खोल कर देख ये जो तमाशे हो रहे हैं, ये तेरे दिल को सताने के लिए हैं, क्या? मालिक से दूर करने के लिए हैं, सोचो!

एक दिल लाखों तमन्ना उस पे और ज़्यादा हवस।
फिर ठिकाना है कहां उसके बिठाने के लिए॥

एक दिल है लाखों ख्वाहिशें हैं फिर उसके आगे तृष्णाएं हैं। कहते कहां बैठे, मालिक कहां बैठे? मालिक को तो इसने ऐसे निकाल दिया है घर से। मस्ताना जी फरमाया करते थे, बुड्ढे को जैसे कह देते हैं बैठ जा दरवाज़े पर। ये हाल है इसका, सोच लो! एक था सुथरा उसने मकान बनाया। (उन दिनों कच्चे मकान थे, लकड़ी की छतें) उसने पूछा कि छत कैसे मजबूत हो? किसी ने कहा कि थम्मियां दे तब ठीक हो। वो थम्मीं देने लगा, थम्मी पर थम्मी, थम्मी पर थम्मी। सारा मकान ही थम्मियों से भर दिया। अब आप भी बाहर सामान भी बाहर। किसी ने कहा अन्दर नहीं जाता? कि अगर अन्दर जगह होती तो थम्मी और न दे देता। सोचो! ये दुनिया चलानी थी। इसके लिए रोटी भी चाहिए, सब कुछ चाहिए। परन्तु ऐसा फंसा है मालिक ही विसार दिया। अन्दर दुनिया ही दुनिया रख ली। मालिक छोड़ ही दिया। दुनिया ही दुनिया रख ली मालिक छोड़ ही दिया। बाहर ही बाहर फिर रहा है, अन्दर जाता ही नहीं। सोच लो! गन्द से भर दिया इसने—विषय विकारों के ख़्यालों से, कौमों के ख़्यालों से, मज़हबों के ख़्यालों से, देशों के ख़्यालों से, अन्दर मालिक को निकाल ही दिया बाहर। ये हाल हमारा है। जब तक अन्दर साफ नहीं होता तब तक मालिक नहीं मिलता। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है :

रविश ब चश्मे पाक दीद चूं हलाल।
हर दीदा जाये जलवा-ए आं मां पारा नेस्त॥

क्या? कि जैसे हम ईद का चांद देखते हैं तो हाथ मुंह धोकर देखते हैं। सोचो! हाथ मुंह धोकर देखते हैं, इसी तरह मालिक भी हाथ मुंह धोकर, क्या? दिल की सफाई से मिलता है। हर एक आंख उसके देखने के काबिल नहीं, कोई विरली है, हर कोई नहीं देख सकता। जो उसको साफ करे वो देख सकती है, दूसरी नहीं। एक

और मुसलमान फकीर ने लिखा है कि जैसे यह शीशा जितना साफ होगा उतना चेहरा साफ दिखाई देगा। इसी तरह अगर शीशा साफ है दिल का, फिर तो मालिक दिखाई देगा। अफसोस तो यह है कि हमारे दिल के शीशे पर जंग लगा है। जंग से भरा पड़ा है। दुनिया के ख़्यालों से भरा पड़ा है। ये जंग है और क्या है? मालिक तो दूर नहीं। जंग ही जंग है बाहर और कुछ भी नहीं। ये जंग उठाये तो मालिक सामने है। सबसे बड़ी भक्ति क्या है? मालिक को हाज़र नाज़र समझना पहला ये कदम है। जो हाज़र नाज़र समझता है वह कोई ऐब पाप नहीं करता। सोच लो! जो हाज़िर नाज़िर समझता है, हर वक्त यही ख़्याल रखता है कि मालिक साथ है वह ऐब नहीं करेगा। बच्चा पास खड़ा होता है, हम कोई ऐब पाप नहीं करते, उससे भी डरते हैं। अगर मालिक को हाज़र नाज़र समझें, उसको हर वक्त साथ समझें फिर ऐब पाप करेगा कोई? एक फकीर के पास दो आदमी नाम लेने के लिए आए। उसने उनको दो बटेर दे दिये कि वहाँ कोह (काट) लाओ जहां कोई न देखे। एक तो गया झाड़ियों के पीछे होकर कोह कर ले आया। अब दूसरा गया कई जगह गया, जहां जाये वो देखता था कि एक तो मैं देखता हूँ इसको, यह मुझे देखता है। ऊपर अल्ला देखता है, कहां मारूं? वो उसी तरह आ गया। कहने लगे तूने नहीं कोहा? कहने लगा जी मुझे तो कोई जगह नहीं मिली। क्यों? जहां जाता था ये मुझे देखता था मैं इसे देखता था, ऊपर अल्ला देखता था। कहता तुम्हें नाम दूंगा इसको नहीं देता। चला जा तू भई सोचो! और ऊपर सबसे बड़ी मैल क्या है? हउमै की। ये सबसे मैली है।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ।
हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ॥

ये सबसे बड़ी मैल है। यही चौरासी में लिए फिर रही है। जितने काम कर रहे हैं हऊमैं के वश में होकर कर रहे हैं। हऊमैं सब खा जाती है। ये सबसे बड़ी मैल है, ये बड़ा परदा है।

धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी॥

ये बड़ी दीवार है, ये सबको खा गई।

तीरथ बरत अरु दान करि मन मह धरै गुमानु।
नानक निहफल जात है तिहि जिउ कुंचर इसनानु॥

सोचो! सब खत्म—

कीआ कराइआ सभ गिआ जब आइआ हंकार॥

ये तब निकलती है जब अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करे। ऐसे तो हर एक कह देता है मैं नहीं, मैं नहीं, ऐसे नहीं। तसल्ली तब है जब अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करता है, नाम को। फिर देखता है सबके अन्दर वो ताकत काम कर रही है। फिर निकलती है हउमै। फिर देखता है वो ताकत काम कर रही है मैं नहीं कर रहा। आंखों से तसल्ली हो गई, देख लिया।

पाठी– सो सहु सचा वीसरै ध्रिग जीवणु संसारि॥
नदरि करे न वीसरै गुरमती विचारि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– वो सच्चा मालिक जिसने सारी दुनिया बनाई, सबको रोज़ी पहुँचा रहा है। हर एक करततू हमारी देख रहा है। उसको बिसारें, हमारे लिए धृग है, लानत है। हमें ज़िन्दगी और ताकत वही दे रहा है। अगर निकल जावे तो बस खत्म :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलै रे॥

उसको छोड़े बैठे हैं जो ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। सोच लो! बाहर अनाज के लिए, माया के लिए, और और चीज़ों के लिए तो लड़ लड़ कर मरता है, सोच लो! उसका तो ख़्याल है कि यही जिस्म को पालेगा; जो अन्दर चला रहा है, उसका किसी को ख़्याल ही नहीं, सोचो! उसका तो किसी को ख़्याल ही नहीं है। अगर वो निकल जाये तो बस। ये स्विच बन्द कर दो पंखे खत्म हो गये। अगर वो स्विच बन्द कर दे, बस गया। उसका ख़्याल ही नहीं किसी को?

पाठी– सतिगुर मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि॥
मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं मालिक के मिलने के लिए खास चीज़ की ज़रूरत है–दिल की सच्चाई की, सच्ची तड़प की, सच्ची लगन की।

हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥

वहाँ दिल की सच्चाई की कदर है, तड़प की कदर है।

सांईं आगे सांच हो, सांईं सांच सुहाय।
भावें लम्बे केश कर भावें घोट मुंडाये॥

सब मज़हबों की एक ही तालीम है। यही ईसा ने लिखा है :

Bless are the pure in heart for they shall enter into the kongdom of Heaven.

''कि वो हिरदे जो साफ हैं, सच्चे हैं वो मुबारिक हैं। उनके अन्दर मालिक प्रकट हो सकता है, दूसरे के नहीं। वो मालिक की दरगाह में जा सकते हैं।''

यहाँ कौम, मज़हब का सवाल नहीं, न डालने का है, न नये बनाने का है, न तोड़ने का है, कोई सवाल नहीं। यहाँ दिल की सच्चाई का है। भीलनी का दिल सच्चा था। जब उसकी शादी करने लगे तो शादी के लिए हज़ारों बकरे लाये। उसने कहा ये क्यों लाये हैं? कि इनके खाने के लिए। उसने कहा ऐसी मैं शादी नहीं करवाती। रात को चोरी निकल गयी, जंगलों में चली गई कि मैं ऐसा पाप क्यों करूं? वहाँ सफाई करे जंगल की, कांटे वगैरह उठाए ऋषि मुनी वगैरह जहां से निकलते थे। उसकी सेवा देखकर मातंग ऋषि ने कहा कि रामचन्द्र जी तेरे घर खुद आयेंगे। मालिक मेहर करता है। वो इसी इन्तजार में रहीं। उनके लिए रोज़ बेर उठाये, कभी कुछ लाये, कभी कुछ लाये; भई ये खिलाऊंगी, ये खिलाऊंगी। अन्दर साफ हो गया, इसी ख़्याल में रह गयी। अन्दर यही रहा कि कब आयेंगे? कब आयेंगे? तड़प लगी रही। रामचन्द्र जी सीधे उसके पास आये। जब रामचन्द्र जी वहाँ आ गये तो ऋषि मुनि सारे इकट्ठे हो गये कि आप इस भीलनी के घर आ गये, हमें छोड़ आये। वो हंस पड़े, कहने लगे इन कर्मों-धर्मों से कुछ नहीं बनता, ये तो दिल की सच्चाई की चीज़ है। फिर उन्होंने शिकायत की, क्या? कि सरोवर में कीड़े पड़े हैं, पानी से बड़े तंग हैं। वो कहने लगे क्यों? फिर आप ही बताया कि भीलनी सच्चे दिल से तुम्हारी सेवा करती थी, तुम इससे परहेज़ करते थे वो फिर भी छुपती थी, परे रहती थी। एक दिन कुछ अन्धेरा था वो सफाई कर रही थी। सफाई करते उधर से एक ऋषि आ गया। ये छुपी लेकिन उसका कपड़ा ज़रा सा लग गया उसके साथ। वो गालियां निकालता चला गया, मैं भ्रष्ट हो गया, ये हो गया, वो हो गया। उसी दिन से कीड़े पड़ गये। अब इसका इलाज क्या है? इलाज यह है कि भीलनी के चरण धोकर उसमें डालो, बस यह इलाज है। सोच लो! दिल की सच्चाई की कदर हुई कि कर्मों-धर्मों की? किस की कदर हुई? दिल सच्चा हो चाहे उल्टे रस्ते पड़ा है फिर भी मालिक सीधे रास्ते ले आता है। दिल की तड़प पर है, सच्चाई पर है, लगन पर है। मीरां भागती दौड़ती फिर रही थी मालिक की तलाश में, कभी कहीं, कभी कहीं, जंगलों में, पहाड़ों में, इधर-उधर। कभी मन्दिरों में, कभी कहीं, कभी कहीं। मालिक ने मेहर की रविदास मिल गया। फिर उसने मेहनत की, फिर क्या लिखती है? यह दिल की सच्चाई पर है, सच्चाई वाला मेहनत करता है, दूसरा कर ही नहीं सकता। हम दो दिन में घबरा जाते हैं, वो घबरायी नहीं, लगी रही।

सांकड़ी गली में मेरा सतिगुरु मिलिआ किस विधि फिरुं अपुठी॥

देह से निकली, सारे ताल्लुक तोड़े, सारे ख़्याल छोड़ दिये; राजे को भी कह दिया राणा तेरी मेरी न सरी। सोचो! तब आया कि ऐसे आया मालिक! ये सारे ख़्यालात निकाले तब है। फिर अन्दर सतगुरु आया। ये दिल की सच्चाई पर है सब कुछ।

पाठी– पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि॥

मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि॥ (मः 3/755)

मैनेजर साहिब जी– रूह का पति सतगुरु कह लो, अकाल पुरुष कह लो, वो इसके अन्दर है। जुगों जुग से एक ही कमरे में, एक ही शरीर में दोनों इकट्ठे रहते आये हैं लेकिन दोनों का मिलाप नहीं हुआ? क्यों? क्यों मिलाप नहीं हुआ एक कमरे में रहते हुये? इसकी तलाश गलत है। ये बाहर ढूंढ़ती है वो इसके अन्दर है। दूसरा ये नालायक हो चुकी है। अपने पति सतगुरु को, अकाल पुरुष को छोड़कर मन के साथ प्यार डाल लिया है, उसको पति बना लिया है। इसके जो साथी हैं, इसके जो रिश्तेदार हैं, कौन से हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, विषय, इन्द्रियां इनसे प्यार डाल लिया है। ये अन्दर जाने नहीं देते, ये उलझाये रखते हैं। यही हमारे दुश्मन हैं। अगर इनका प्यार छोड़े, विषय छोड़े; ये विषय ही हैं जो इसको पकड़े रखते हैं। लोग कहते हैं हमारा गुज़ारा नहीं चलता। गुज़ारे सबके चलते हैं, रोटी, पानी, कपड़ा सबका चलता है। ये विषय नहीं चलते, सोच लो! ये नहीं चलते, विषय नहीं चलते, गुज़ारे सबके हैं ये विषय पकड़े बैठे हैं। विषयों के लिए फिर माया की ज़रूरत है। माया के लिए फिर भाग दौड़, चोरी ठगी सौ सियापे करता है। सोचो! ये विषय पकड़े बैठे हैं। ये विषयों का प्यार छोड़े :

दस इन्द्री करि राखै वासि॥ ता कै आतमै होई परगासु॥

यही मुसलमान फकीर ने लिखा है एक ने :

चूं ज़े हिस बैरूं ने आमद आदमी।
बाशिद अज़ तसवीरे गैवी आज़मी॥

कि जब तक तेरा मन खाने पीने की चीज़ों की तरफ, इन्द्रियों की तरफ रहेगा तू गैब की तस्वीर को, मालिक को, नहीं देख सकता। ये ही पकड़े बैठे हैं और कोई चीज़ नहीं। सोच लो! ये ही पकड़े बैठे हैं और क्या है? गुज़ारे सबके हैं। कोई कहता है मेरी इज़्ज़त जाती है, कोई कहता कुछ है, कोई कुछ कहता है। इसी में बंधा पड़ा है, बस ये बंधन हैं और कुछ भी नहीं। गुज़ारे

सबके हैं। अगर ये ख़्याल छोड़े, अन्दर प्रकाश हो जाये, मालिक के पास पहुँच जाये, सोभावंती बन जाये, सुहागिन बन जाये। हाँ जी :

पाठी– मनमुख मन न भिजई अति मैले चिति कठोर॥

सपै दुधु पीआइऐ अंदरि विसु निकोर॥ **(मः 3/755)**

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं हमारे मन मैले हैं, मनमुख हैं। हमारे मनमुखों के मन मैले हैं, अति मैले हैं। उनके पास यहाँ तक आने ही नहीं देते, भक्ति तक आने ही नहीं देते। विषय विकारों के ख़्याल, पापों के ख़्याल इसको अन्दर जाने ही नहीं देते। उसका ख़्याल करने ही नहीं देते। गुरु नानक साहब ने लिखा है।

पाप बुरा पापी को प्यारा। पाप लदे पापे पसारा॥

कि जो पापी लोग हैं, उनसे दुनिया के झगड़े, कजीए कसाले कितने ही करवा लो लेकिन भक्ति नहीं करने देता। भक्ति की तरफ ख़्याल ही नहीं आता उनका। यही कबीर साहब ने लिखा है :

पापी भगति न भावई हर पूजा न सुहाये।
माखी चन्दन परहरे जहां दुर्गन्ध तहां जाये॥

कि जैसे एक मक्खी है। गन्द पर सारा दिन भिन्न-भिन्न करती फिर रही है लेकिन अम्बर, खुशबूदार चीज़ों से, मुशक कपूर पर, चन्दन पर वहाँ नहीं बैठती। ये हमारा हाल है, ये हमारा हाल है। दुनिया के विषय विकारों में, ख़्यालों में इधर-उधर भागता दौड़ता है लेकिन भक्ति नहीं करता। इस तरफ आने को तो इसको मौत पड़ती है। मौलवी रूम ने एक बहुत अच्छी मिसाल दी है। कोई चमड़ा रंगने वाला था वो एक दफा गांधियों के बाजार में चला गया। गांधी कहते हैं जो इत्र बेचते हैं। वहाँ की खुशबू बर्दाश्त न कर सका, धड़ाम से नीचे गिरा। लोग इकट्ठे हो गये। किसी ने कहा हार्ट फेल हो गया, किसी ने कहा मिर्गी आ गई, कोई पंखा करे, कोई पानी पिलाये, कोई कुछ करे, कोई कुछ करे। पता किया कौन है ये? कहां का रहने वाला है? पता चला फलाने मौहल्ले का चमार है। वहाँ ख़बर की, चमार इकट्ठे होकर आ गये। उनमें एक सयाणा था वो फौरन पीछे हटा। कुत्ते की टट्टी उठा लाया और उसके नाक को सुंघाई, फौरन उठ खड़ा। नाक गन्द से भरा पड़ा था खुशबू बर्दाश्त न हो सकी। यही हाल हमारा है। इतने गन्दे हुए पड़े हैं भक्ति की तरफ आते ही नहीं।

चितवत पाप न आलकु आवै॥
बेसुआ भजत किछु नह सरभावै॥

सारो निसु मजूरी करै॥

हरि सिमरण की बेला बजर सिरि परै॥1॥

कि पाप करता है वहाँ आलस नहीं करता। मजदूरी के लिए आलस नहीं करता। लेकिन भजन सिमरण के लिए बस इसको मौत पड़ गई। सोच लो! ये हाल है सारी दुनिया का। यही नहीं करने देते, विषय विकार नहीं करने देते। कौन नहीं करने देते? हमारे पाप नहीं करने देते, इस तरफ आने नहीं देते, ये अन्दर नहीं जाने देते। कहते हैं इन पापियों को अगर कोई समझाये उल्टा अपना नुकसान करता है, उल्टा लड़ाई करते हैं।

जो कोई उनको जाये समझायी। उल्टा माने करें लड़ाई॥

कबीर ने लिखा है :

कल खोटा जग आन्ध्रा शब्द न माने कोये।

कि जो कलयुग है बड़ा खोटा है, सारी दुनिया अन्धी है, कोई मानता नहीं।

जाको कहुं हित स्वार्थी सो उठ बैरी होये॥

वही बैरी बनता है। उसको भी नहीं करने देता अगर उसको समझाओ उसको भी ख़राब करेगा। उसके भजन में भी खलल डालेगा। दादू साहब ने एक मिसाल लिखी है कि मान सरोवर के पास जंगल में एक तरफ आग लग गई। वहाँ एक चूहा जल रहा था। हंस को दया आयी। उसने अपने पंखों (परों) पर बिठा के उसको भई मान सरोवर के पार ले जाता हूँ कि बच जायेगा बेचारा। उसने तो भला किया। अब चूहे का काम क्या है? काटना टिक-टिक करना और तो कोई काम नहीं। उसके भी पंख काटने लगा, दोनों का ही बेड़ा गरक। उसको भी ले मरा, हाल ये है। दुनिया को समझाओ तो उल्टा ऐसे हैं कि सांप को दूध पिलाओगे तो उसने जहर ही बनना है। किसी को समझाने की ज़रूरत ही नहीं, अपना करो, बस। अपना करो। हम दुनिया के लिए फिरते हैं, अपने लिए कोई नहीं करता।

पाठी– आपि करै किसु आखीऐ आपे बखसणहारु॥

गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि ये किसी के बस की बात भी नहीं, खेल भी मालिक ने आप ही डाला है, भुलाया भी आप ही है।

जिसु आपि भुलाये सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा॥

खेल भी आप ही डाला है, काल के हाथ भी आप ही दिया है। उसने विषय विकार लगाकर इसको भुला दिया है। जिसको अपने संग मिलाना चाहता है, उसको

गुरमुखों के साथ मिलाता है। बगैर गुरमुखों के सही रास्ता नहीं मिलता। उसको गुरमुखता का कोर्स करवाता है। जिसको नहीं मिलना चाहता उसको पापों में प्रवृत्त हुआ रहने देता है। यह उसके अपने अख्तियार है। लेकिन जब भी मिलायेगा गुरमुखों के ज़रिये, हिरदे को साफ करके। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि जब मालिक देखता है कि इस बाडी में काम करूंगा तो उसको पहले साफ करता है। जैसे कबीर साहब की, गुरु नानक साहब की, गुरु अंगद साहब की, गुरु अमरदास की; सोच लो! उसको पकड़ा न गुरु अंगद साहब को, उनकी बाडी साफ हुई तब आया अन्दर। फिर गुरु अमर दास को पकड़ा उनकी बाडी साफ हुई तब बैठा कि ऐसे; जब सारे ख़्याल निकले। खड्डे में गिर गये सोचो! खड्डे में गिर गये, गागर नहीं गिरने दी, चोट का ख़्याल नहीं किया। खड़का हुआ जुलाहा उठा जुलाठी उठी। जुलाहे ने पूछा ये क्या खड़का हुआ है कोई मकान वगैरह तो नहीं गिर गया? कि मकान ने क्या गिरना था अमरु नथावां होगा, पराये टुकड़ों पर पड़ा है कुड़मों के। इतना सुन भी लिया लेकिन दिल में ख़्याल ही नहीं लाए। इतना हिरदा साफ किया। सारे ख़्याल निकाले सोचो! तब आती है चीज़ ऐसे नहीं आती। मस्ताना जी फरमाया करते थे देखो भई! कच्चा चमड़ा है, अभी जानवर मरा, उसका चमड़ा उतारते हैं न, उसका उसी वक्त कोई जूता बनाकर पहनता है? अगर चमड़े को साफ करें फिर उसका जूता बनाएँ फिर पहनते हैं। इसी तरह मालिक भी गन्दे चोले में नहीं आता, जब साफ होता है तब आता है, ऐसे नहीं। इसको साफ करने के लिए पहले सिमरण है। मुकम्मल साफ तब होता है जब नाम के तीरथ में नहाये।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥

शब्द का तीरथ कहो, नाम का तीरथ कहो, उसमें नहाने से साफ होता है। फिर मालिक बसता है इसमें, ऐसे नहीं।

पाठी– सचा साहु सचे बणजारे ओथै कूड़ै न टिकंनि॥

ओना सचु न भावई दुख ही मांहि पचंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– मालिक के दरबार में सच्चाई और प्रेम की कदर है। वहाँ सच का सौदा है। उसके लिए सच की रकम चाहिए, दिल में सच्चाई चाहिए, लगन चाहिए, तड़प चाहिए। सारी दुनिया कूड़ का सौदा करती है। रोज़ हम पढ़ते हैं :

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥

नानकु बखाणै बेनती तुधु बाझहु कूड़ो कूड़ु॥

सारी दुनिया कूड़ का सौदा करती है। कूड़ कूड़ में पूरों के पूर खत्म हो गये। अगर फकीर के पास आते भी हैं तब भी कूड़ के साथ, माया के लिए, बाल-बच्चों के लिए, तन के दुख की निवृत्ति के लिए। ये चीज़ें लाती हैं, अगर ये पूरी नहीं होतीं तो कहते हैं यहाँ क्या रखा है, फिर बस! जितनी देर खुशी मिली, जितने दिन इज़्ज़त मिली, जितने दिल माया मिली, फिर तो आते हैं, नहीं तो बस भागो भई यहाँ क्या रखा है? बस यही चाहिए दुनिया को तो।

भगती भाव भादों नदी सभी चले गहराये।
सरिता सोई जानिये जो जेठ मास ठहराये॥

जेठ के महीने में पानी की कमी हो जाती है न। सारी नदियां खड़ (रुक) जाती हैं। इसी तरह कोई चीज़ न मिले, कोई इच्छा पूरी न हो, दुख भी हो फिर भी न छोड़े, इसका नाम भक्ति है।

हर्ष बढ़ाई देख कर भगति करे संसार।
जब कुछ दीसे हीनता औगुण धरे गंवार॥

फिर निन्दा करने लग जाता है, बस। ये तब हासिल कर सकता है जब सब ख़्याल निकाल दे। कुछ हो : सुख हो, दुख हो जैसे मालिक रखेः

जिउ भावै तिउ राखि लै।
जे सुख देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई॥

सुख हो, दुख हो बस मालिक की रज़ा में रहे। नाम जपना इसका फर्ज़ है बस, जैसे रखे, वो हासिल कर सकता है। माया के ख़्याल वालों को, दुनिया के ख़्याल वालों को, विषय विकारों के ख़्याल वालों को, मालिक का नाम नज़दीक ही नहीं फटकता। ये ज़िन्दा मरने का सवाल है, देह से निकलने का सवाल है। ज़िन्दा-मरना क्या है? जब मरता है क्या होता है? देशों के ख़्याल निकल गये, कौमों के निकल गये, यारों दोस्तों के निकल गये, मां-बाप बहन भाई के निकल गये, ये देह से भी निकल गया, ये भी छोड़ गया तब ज़िन्दा मर सकता है, सोच लो। तब हासिल कर सकता है, ऐसे नहीं। इसलिए बारह-बारह साल पानी ढोया है उन्होंने, सारे ख़्याल निकालने के लिए। जल्दी का काम नहीं है। हम दो दिन बैठ कर थक जाते हैं। ये लगा रहे। मजूरी मालिक देता है, हमें पता नहीं लगता। कई शिकायतें आती हैं, चिट्ठियां आती हैं, क्या? कि जी मन नहीं लगता। मन ने तो लगना ही नहीं, ये हमारा दुश्मन है।

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ॥

इसके साथ लड़ाई करनी पड़ती है। इसके साथ लड़ाई करना, इसके साथ मुकाबला रखना यही भजन है पहले। मुकाबला रखेगा फिर ये भी सीधा हो जाता है। मस्ताना जी तो प्रैक्टिकली हमें सिखाते, क्या? कई दफा कुश्तियां करवाते; जो हार जाता उसको कई दफा डबल ईनाम देते भई इसने इतने मजबूत आदमी से, तगड़े आदमी से मुकाबला रखा भई इसकी दूनी मजूरी दो, सोचो! जो मन से मुकाबला रखे उसकी मजूरी देता है। फिर ये भी लिख देते हैं वो कि मन नहीं लगता। कईयों की चिट्ठी जाती है कि जी मन नहीं लगता, मेरे अन्दर ऐसी आवाज़ आने लगी, ऐसी धुन आने लगी; कोई मजूरी मिली तब आयी कि ऐसे आयी, सोचो! कोई चीज़ आयी आखिर कोई मजूरी मिली तभी। ये जितना मुकाबला रखता है उतना ही भजन है बस। मन लगे न लगे ये बैठा रहे। मस्ताना जी फरमाया करते थे नौकर दुकान पर बैठा है, ग्राहक कोई आये न आये उसकी तनख्वाह तो खरी है। तुम हुकम मानकर बैठो देखो मालिक मजूरी देता है कि नहीं देता। ये बैठे। इसका फर्ज़ है बैठना। ज़रूर बिठावे मन को कुछ भी हो। लगे या न लगे। हाँ जी :

पाठी– हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार॥

पइऐ किरति कमावणा कोए न मेटणहार॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया को ही ये हउमै की तपेदिक लगी हुई है। तपेदिक ऐसी बीमारी है जो जिस्म को अन्दर ही अन्दर खा जाती है, पता नहीं लगता बाहर। ये कौन सी है? हउमै की।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ।

हउ विचि जँमिआ हउ विचि मुआ॥

ये मीठी तपेदिक है जो सबको लगी हुई है। जितने कर्म करता है हउमै के वश में करता है।

हउमै करम कमावदे जम डंडु लगै तिन आइ॥

सोचो! जितने कर्म करता है हउमै के वश में होकर, वो सारी खा जाती है। बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने हउमै के वश में कर्म किये आखिर मारे गये। इसका भजन क्यों नहीं तरक्की करता? यह कहता है मैं इतनी देर बैठा, बस वो 'मैं' ने मार दिया। ये समझ मैंने तो ये काम करना है, मालिक के हुकम से बस, हुकम मानना है और कुछ नहीं। उसकी मर्ज़ी है दे या न दे। ये इवज़ाना मांगता

है! कुछ करके मांगा, कुछ बना तभी मांगा कि मैंने कुछ किया। इवज़ाना न मांगे फिर है, फिर मालिक भी देता है।

पाठी– संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु॥

सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– इन बन्धनों को तोड़ने के लिए क्या करे फिर? गुरमुखों की सोहबत करे, सन्तों की सोहबत में रहे। जितनी सोहबत ज़्यादा करेगा उतना ही रंग चढ़ेगा। उनकी सोहबत में जाकर जब हम उनसे सत्संग सुनते हैं, बातें सुनते हैं तो क्या होता है? हमारे दिल में भी शौक पैदा होता है कि हम भी भक्ति करें। फिर ये ख़्याल करता है कि रोटी चल जाये तो मैं भक्ति करूं। जैसे उसने धन्ने ने लिखा है। कबीर ने लिखा है दो सेर आटा, इतना नमक, इतनी चीनी, इतना गुड़, एक लवेरी, एक घोड़ी, एक ये, एक वो, एक रजाई, एक तलाई दे मालिका! मैं तेरा भजन करूं। जब फिर करता है फिर देखता है ये भी बन्धन है। फिर कहता है ये काम हो जाये। चाय के लिए दूध खरीद लाया करूंगा ये बन्धन तो छूट जायेगा। फिर देखता है आगे से आगे दुनिया से नफरत पैदा होने लग जाती है, मालिक का प्यार बढ़ जाता है। फिर कहता है मालिक! रोज़ की रोटी दे दे, इतना ही काफी है।

सांई इतना दीजिए जा में कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं साध भी भूखा न जाय॥

फिर कहता है भई ये भी नहीं ये भी दे न दे मुझे तू ही चाहिए, बस। जब ये आया ख़्याल, सारे ख़्याल निकल गये। फिर कहता है सिर्फ मालिक, फिर मालिक आ गया। ये सोहबत करते करते रंग चढ़ता है, ऐसे जल्दी का काम नहीं। जल्दी दुनिया से नफरत नहीं आती। यह ही नहीं फिर इसको यह भी पता लगने लग जाता है कि जो कुछ कर रहा है सतगुरु कर रहा है, मैं नहीं। इसको तसल्ली मिलने लग जाती है। फिर यह बेफिक्र हो जाता है। फिर कहता है मैं भजन ही करूंगा और कुछ भी नहीं। ये करे तो सही, उस पर छोड़े फिर इसको तसल्ली पूरी मिलती है कि जो करता है सतगुरु करता है। ठीक कर रहा है जो कुछ कर रहा है। अब तो बातें ही बातें हैं फिर प्रैक्टिकली तसल्ली हो जाती है मन को कि वाक्या ही ठीक है, जो करता है सतगुरु करता है। हाँ जी–

पाठी– गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ॥

हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– अब फरमाते हैं सतगुरु का उपदेश क्या है, क्या मत है? कि उठते-बैठते, चलते-फिरते बस सिमरण करता रह, नाम जपता रह। लेकिन इस ख़्याल से नहीं कि मैं कर रहा हूँ, जो करवा रहा है सतगुरु। बैठे, सतगुरु तूं करायेगा तो मैं कर सकता हूँ। उठे, सतगुरु तेरी मेहर से हुआ। अगर 'मैं' आयी तो :

कीआ कराइआ सभ गिया जब आइआ हंकार॥

सोचो! अगर वो हाथ न दे तो हम हाथों से सेवा कैसे करें। पांव न दे साध-संगत में चलकर कैसे जायें। आंखें न दे हम कैसे दर्शन करें। ज़ुबान न दे हम कैसे जप करें, सोचो। गुरु अमरदास ने इसके मुतल्लक बहुत अच्छा लिखा है।

किआ कोई तेरा सेवा करे किआ कोई करे अभिमाना॥
जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी
तब कोई करउ दिखा बखिआना॥

अगर वो जोत खींच ले अन्दर से फिर हाथ भी रह जायें, पांव भी रह जायेंगे, आंखें भी रह जायेंगी। क्या करेगा फिर ये, बोलो! वही करा रहा है। वो न हो तो कैसे करे। ये अहंकार निकाले कि मैं नहीं कर रहा जो कर रहा है वो ही कर रहा है। पहले तो ऐसे कोर्स पकाना पड़ता है, क्या? कि जो करता है सतगुरु, जो करता है सतगुरु। फिर जब भजन सिमरण बनने लग जाता है, अन्दर जाता है फिर देखता है वाक्या ही वो कर रहा है। जब तक हम तन से नहीं निकलते उस वक्त तक तो यही समझते हैं कि हाथ ही काम करते हैं, पैर ही काम करते हैं, आंखें ही देखती हैं। जब अन्दर जाता है फिर देखता है कि ये तन तो एक औज़ार है जो करता है मन करता है, मन की शक्ति करवा रही है। जब आगे जाता है फिर देखता है ये मन भी एक औजार है जो करवा रही है आत्मा करवा रही है। उससे आगे जाता है फिर देखता है आत्मा भी एक ज़र्रा है जो करवा रहा है सतपुरुष ही करवा रहा है आत्मा तो एक औज़ार मामूली सा है। उसका फिर पता चलता है 'करे करावे आप' फिर कहता है यह। हाँ जी :

पाठी– गुर सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ॥

तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कहता अगर अपने छुटकारे का बन्दोबस्त करना है तो क्या करो? कि उन गुरमुखों के पास, उन सन्तों के पास जो सतगुरु की भक्ति करते

हैं, उससे प्यार करते हैं, उसको अन्दर जाकर मिलते हैं, उनकी सोहबत करो, उन पर कुर्बान हो जाओ। तन मन धन सब कुछ का ख़्याल निकाल दो। उनको ही सौंप दो सब कुछ। उनके हुकम में चलो फिर तू जा सकता है। यह जल्दी का मार्ग नहीं है।

तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ॥
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ॥
संतन बिनु अवर न दाता बीआ॥
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ॥

उन्होंने तन, मन, धन उन्हीं के हवाले कर दिया जब गये हैं, ऐसे नहीं। हाँ पढ़ भई।

पाठी– ''गुरु नानक साहब अति निर्बलता नाल सतगुरु दे चरणा विच सेवक नू पेश होणा सिखाउंदे हन। फरमांउदे हन कि मैं गुरु दा खरीदिआ होया गुलाम हां।

मैंनेजर साहिब जी : खरीदया होया गुलाम, सोचो! बै खरीद, गुलाम हाँ, बैखरीद लाला गोला।

पाठी– मैं गुरु दा खरीदिआ होया गुलाम हाँ, फिर भी अपने आप नू किसमत वाला समझदा हाँ। मैं गुरु दे हुकम नाल हट्टो हट विकण नू तैयार हाँ यानी जिस कम ते लाउण ओही करन नू तैयार हाँ। ऐना करदे होये वी फिर फरमौंदे हन कि ऐ गुरु! तेरे गुलाम विच की चतुराई है, इसनू तां तेरा हुकम वी मनना नहीं आउंदा। फरमांदे हन, मेरी मां यानी माया, पिऊ यानी मन ते अहंकार यानी अक्ल ते दलील सब तेरे अगे पेश हन। एह सब तेरे गुलाम हन। मैंनू सिर्फ तेरी भक्ति दी लोड़ है। मैं इहना सबना दा ख़्याल छड के तेरे दर ते आटा पीहण नू तैयार हाँ। साध संगत दे पीण वास्ते पानी लऔण, उन्हां नूं पखा करन, अते उन्हां दे चरण धोण नू हाज़िर हाँ अते आप दा नाम जपदा रहांगा। ऐना हुन्दे होये वी फरमांदे हन :

मैनेजर साहिब जी– सोचो! इतना होते हुए भी क्या कहते हैं वो? कमाल की बात तो ये है, सुनो :

पाठी– ऐना हुन्दे होये वी फरमांदे हन कि फिर वी तेरा नमक हराम गुलाम हां।

मैनेजर साहिब जी– फिर भी तेरा नमक हराम गुलाम हूँ, बोलो!

पाठी– जे मैंनू बख़्श लवोगे तां तुहाडी ही महिमा है।

मैनेजर साहिब जी– अगर ज़रा भी हउमैं आई तो बस गया।

दादू हौं को भय घणा नाहि को कुछ नाँहि।
दादू नाँहि हो रहो अपने साहिब मांहि॥

पाठी– तुहाडी मेहर दे बिना मेरा छुटकारा नहीं हो सकदा।

मैनेजर साहिब जी– बार-बार क्या उपदेश है 'विचहु आपु गवाई' अपनी हस्ती को, हउमै को मारो। बड़ी बीमारी ये है। हाँ जी :

पाठी– खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ॥
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– 'खिचो ताणि' क्या? बाहर की खिच क्या? कर्म-धर्म, जप-तप, मन्दिर-मस्जिद, ये सारों का ख़्याल छोड़ के 'एकसु सिउ लिव लाइ', 'एकसु' कौन सा? वो सच्चा नाम, सच्चा सतगुरु वो एक ही सतगुरु है। सतगुरु एक ही है जो मुक्ति का दाता है।

जुगा जुगन्तर सतगुरु दूसर होआ न होए।
चौरासी जामे पहन के पाछे हुआ आलोप।
चौहतर जामे भगत जन दस हैं सतिगुर राए।
गुरमुखि होइ सो मिल रहे मनमुख मिलहि सजाइ।
भर बेड़े लै जायेंगे सँत जना के पूर।
बेमुख तुटे तुट मुए मनमुख न भये कबूल॥

एक ही सतगुरु है वो मुक्ति का दाता है; उसको जिन्दाराम कहो, सतगुरु कहो। उसका रूप क्या है शब्द। शब्द कहो, नाम कहो, वो शब्द रूप में सब जगह व्यापक है। वो इस करंट की तरह है बिजली की, सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। उसकी भक्ति असली भक्ति है।

सोधत सोधत ततु बीचारिउ भगति सरेसट पूरी॥
कहु नानक इक राम नामु बिनु अवर सगल बिधि ऊरी॥

बाकी सब नीचे दर्जे की हैं।

चार वेद किये व्यास ने, अर्थ विचार विचार।
ता में निकसी भगती ही राम नाम ततसार॥

कौन सी भक्ति? रमे हुए नाम की। ये करंट आ रही है; इससे आप पंखे चला लो, सुख ले लो, टयूबें जला लो, सुख ले लो, बल्ब जला लो सुख ले लो, कारखाने चला लो, किसी किस्म का कोई काम ले लो। अगर हाथ लगाओ सड़ भी जाओगे, सोच लो! हम सड़ क्यों रहे हैं? क्यों अशांती में हैं? हमने इस करंट

को काम, क्रोध पर लगाया है। अगर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी पर लगायें, अन्दर शांती आ जाये। फिर जैसी भगती करे। कृष्ण भगवान ने लिखा है जो भूतों की पूजा करता है वो भूतों के पास जाता है (करंट तो वही काम कर रही है) पितरों की करो पितरों के पास, देवी-देवता की करोगे तो देवी-देवताओं के पास, छुटकारा तो न हुआ। अगर उस नाम को पकड़ कर उस करंट को पकड़ ले, उसकी भक्ति करे, उसको पकड़े, ये सीधा मालिक की दरगाह में चला जाये। जैसे कोई बाहर करंट को पकड़ा दे हमें, जिस तरफ से वह आ रही है बिजली हम चले जायें। चलते-चलते कहां जायेंगे? भाखड़ा पहुँच जायेंगे हैड क्वार्टर पर। बस जिसने उस नाम से ताल्लुक जोड़ लिया, कोई ऐसा फकीर मिल जाये, नाम से जोड़ना सिखा दे, ये नाम से जुड़ जाये वो सीधी सड़क है जरनैली सड़क है।

गुरमुखां नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ॥
हरिनामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ॥

इसी के मुतल्लक गुरु गोबिन्द सिंह ने लिखा है।

जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आने॥

वो जागती जोत सबके अन्दर काम कर रही है, उसके सिवा किसी को न माने। वो राम नाम की जोत सबके अन्दर है।

'राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै॥'
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मढ़ी मठ भूलि न मानै॥
तीरथि दान दइआ तप संजम एक बिना नहिं एक पछानै॥

सब खण्डन कर दिये, सबको छोड़ दिया :

पूर्ण जोत जगै घट मैं तब खालसा ताहि नखालस जानै॥

तब खालसा बनता है, फिर सनातनी बनता है, फिर ये आर्य बनता है फिर नामधारी बनता है, यहाँ से सच्चा सौदा शुरू होता है, फिर मालिक की दरगाह में जा सकता है। ये है जिसे कहते हैं :

एकुं छोड़ि दूजै लगै डूबे से बजारिया॥

इसको तो सब छोड़े बैठे हैं :

पाठी– सतिगुरु नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि॥
सचि मिले से न बिछुड़हि दरि सचै दिसंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं दुनिया में पवित्र कौन है? पाक कौन है? जिसने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट किया।

'सतिगुरु नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लंगनि॥

जिसने अन्दर शब्द गुरु को प्रकट कर लिया वो पवित्र और पाक है बाकी कोई नहीं। शब्द ही मैलें धोने वाला है, नाम का तीर्थ है वो मैलें धोने वाला है।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलबिख काटणहारा ॥

हम नहा-नहा कर थके बाहर, किसी की मैलें साफ हुईं? सोचो! काम घटा (कम हुआ), क्रोध घटा, लोभ घटा, मोह घटा, सोचो! आशा तृष्णा कम हुई। अगर नाम के तीरथ में नहाये सब मैलें साफ हो जायें। वो पवित्र है, वो पाक है, अगर एक दफा नाम से ताल्लुक जुड़ जाये तो सीधा मालिक की दरगाह में जाये, कोई रोकने वाला नहीं इसको।

पाठी– से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि॥

अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं हमारे रिश्तेदार कौन हैं, भाई-बहन कौन हैं? दोस्त कौन हैं? जो सतगुरु की सेवा, क्या? अन्दर सतगुरु को प्रकट करते हैं वो आगे भी सहाई हैं।

नानक कचड़िआं सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओई जीवंदे बिछुड़हि ओई मुइआ न जाही छोड़ि॥
सजण सेई नालि मैं चलदिया नालि चलंन्हि॥
जिथै लेखा मंगीए तिथे खड़े दिसंन्हि॥

ये बहन भाई, रिश्तेदार, जितने भी हैं कौम, मज़हब, ये तो उतनी देर हैं जितनी देर शरीर है। जब शरीर गया तो बस खत्म। वो सच्चे रिश्तेदार हैं।

पाठी– से भाई से सजणा जो सच्चा सेवंनि॥

अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंनि॥

मैनेजर साहिब जी– ये तो गुण उठाने का सवाल है, अवगुण निकालने का है, अन्दर शब्द गुरु को प्रकट करने का है, सोचो! यहाँ कौमों, मज़हबों का सवाल नहीं। ये तो गुण लेने से ताल्लुक है। हम डाक्टर के पास जाते हैं। वहाँ से डाक्टरी का गुण ले सकते हैं। इंजीनियर के पास इंजीनियरिंग का सोचो! भाई-बहन से तो नहीं ले सकते। सोचो! ये तो नहीं इलाज कर सकते, वो कर सकते हैं उनसे गुण लेना पड़ेगा, उनसे सीखना पड़ेगा।

पाठी– गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि॥

सचु बंणजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– ये तो गुण उठाने का सवाल है, औगुण निकालने का है, अन्दर शब्द को प्रकट करने का है, मालिक की दरगाह में जाने का है। फकीर, न हिन्दू होते हैं न मुसलमान। उनका कोई ताल्लुक नहीं वो सहेलियां हैं जो जाये उनसे फायदा उठा ले। गुरु अंगद साहब का मीयां मीर से प्यार था। यहाँ कोई कौम मज़हब का सवाल है? कबीर साहब जुलाहे थे, राजा बीर सिंह, भगेल सिंह क्षत्रिय राजपूत थे वो फायदा उठा गये। रविदास चमार था, मेवाड़ की राणी राजपूत थी, पीपा राजपूत था वो फायदा उठा गया। यहाँ कोई सवाल नहीं। कौम, मज़हब का सवाल नहीं। जात-पांत का सवाल नहीं। हमारे मास्टर हिन्दू भी होते हैं, मुसलमान भी होते हैं, ईसाई भी होते हैं; हमने इल्म लेना है कि कौम मज़हब का सवाल है?

जात न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो मियान॥

चीज़ से ताल्लुक है :

पाठी– सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि॥

विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि सोना-चांदी, हीरे-मोती, जवाहरात कहीं से मिल जायें किसी कौम वाले से मिल जायें, यहाँ कोई ख़्याल नहीं। महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान पर सत्तरह (17) हमले किये। हिन्दुस्तान का सारा माल लूट कर ले गया। जब मौत आई तो उसने कहा कि मैंने माल लूटा है वो दिखाओ। अब सामान लेकर बाहर रखा गया। मीलों तक बाजार लग गया। पालकी में बैठा, हाथ बाहर निकाल लिए खाली, कहने लगा देखो भाई, इस माया के लिए, इस सामान के लिए, मैंने हज़ारों औरतें विधवा कीं, हज़ारों लड़के यतीम कराये, हज़ारों पाप किये, आज मेरे साथ नहीं जाता। कहता ये सोना-चांदी कहीं से मिले इसके लिए कौम मज़हब के असूल भी छोड़ देते हैं। चोरियां ठगियां भी करने लग जाते हैं। इसका ख़्याल नहीं। लेकिन अगर नाम जपणा है जो साथ जाने वाली चीज़ है (ये तो यहीं रह जाने हैं सोच लो! ये तो यहीं रह जाने हैं) नाम जपने का सवाल जहां आता है, मालिक के मिलने का, वहाँ कौम मज़हब के ठेके ले लेता है ये। सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है काल ने। वहाँ कौम मज़हब का सवाल उठा लेता है। मस्ताना जी कहा करते थे कि हमारे पास एक मुसलमान

आया करता था। उसका भाई उसको तंग करता था कि तू हिन्दू के पास क्यों जाता है, किसी मुसलमान के पास जा फकीर के। अब जिसको जहां से मज़ा आये। अब वो बेचारा रोया करे। मस्ताना जी ने फरमाया कि क्यों रोता है? यूं कर उसके लड़के को कहना कि फलाने हिन्दू की दुकान से मिठाई ले आ। फिर खाना फिर उससे पूछना कि तू हिन्दू की मिठाई क्यों खाता है? उसने ऐसे ही किया। भाई के लड़के को कहा कि तू मिठाई ले आ। वो ले आया। खाने लगे तो उसने कहा, कहां से लाया है भई। फलानी दुकान से। ओहो! हम हिन्दू की मिठाई क्यों खाएं? कहता इसका क्या हर्ज है? फिर नाम जपने में ही हर्ज है! सोचो! नाम जपने में ही हर्ज है। बस ऐसे ही दुनिया ख़राब हुई है। हाँ जी–

पाठी– मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि॥

एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं हिरदे में संभाल कर रखने वाली बात कौन सी है कि मौत के वक्त अगर किसी चीज़ ने साथ जाना है तो नाम की भक्ति ने जाना है। अगर काम देना है उस वक्त तो इसने देना है और किसी चीज़ ने नहीं जाना। अगर साथ जाने वाली है तो ये है। ये हिरदे में डालने वाली बात है। अगर हमने कहीं जाना होता है तो कई दिन पहले ही तैयारी कर लेते हैं। फलानी चीज़ चाहिए, फलानी चीज़ चाहिए। मौत आनी है, जरूरी आनी है। साथ कौन सी चीज़ जायेगी? सतगुरु का नाम। उसका कभी ख़्याल ही नहीं, सोच लो! उसका कभी ख़्याल ही नहीं। ये संभाल कर रखने वाली चीज़ है, ये याद रखने वाली बात है, इसी ने साथ जाना है, बाकी किसी चीज़ ने नहीं। बाकी यहीं छोड़ जानी हैं, सोच लो! कितना लूटा महमूद गजनवी ने, हिन्दुस्तान पर सतारां(17) हमले किये। मन्दिरों तक का माल लूटकर ले गया। कौन सी चीज़ साथ गई? रोता गया। औरों का हाल देख लो। पिछली हिस्ट्री जब पढ़ते हैं, बड़े-बड़े ख़ज़ानों के मालिक सब कुछ यहीं छोड़ गये। जो चीज़ साथ जानी थी उसका ख़्याल ही किसी को नहीं। ये ऐसा ख़ज़ाना है जिसको न चोर चुरा सकते हैं, न डाकू लूट सकते हैं, न ही पानी गला सकता है, न ही यमदूत खोस सकते हैं। जो कर्म धर्म वगैरह हैं वो तो रस्ते में यमदूत ही खोस लेते हैं, इसको पता नहीं। ये तो समझता है कि मेरे छुटकारे वाले हैं, वो तो रास्ते में ही छीने जाते हैं।

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै॥

निरबाण कीरतन कहो, शब्द गुरु कहो, सच्चा कीर्तन कहो, इस भक्ति को नहीं छीन सकते, बाकी सब छीन लेते हैं। कर्म धर्म तो रास्ते में ही लूट लेते हैं। मीरां कहती है :

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो।
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समायो।
जिसकी चोरी कबहुं न होवै ऐसो धन मैंने पायो।
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवायो।

ये खुटने वाला ख़ज़ाना ही नहीं, न कोई इसको छीन सकता है।

पाठी– ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ॥
एहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– पहले तो हिरदे में संभाल कर रखे, क्या? अगर साथ जाना है तो सतगुरु और नाम ने, बाकी किसी चीज़ ने साथ नहीं जाना। अब मन को कहते हैं कि ऐ मन! सारी दुनिया भूली है, उल्टे रस्ते जा रही है। 'पति गवाइ', क्या? यमदूतों के हाथ चढ़ेगी तू, तो न भूल।

ऐ मनु मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ॥
एहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ॥ (मः 3/756)

कि सारी दुनिया भूली है, उल्टे रस्ते पड़ी हुई है। यमदूतों के हाथ चढ़ेगी, पति गवायेगी, तू तो न भूल; तू तो गुरमत अख्तियार कर।

गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ॥

उठते-बैठते, चलते-फिरते नाम जप, अन्दर नाम का ख़ज़ाना इकट्ठा कर जो साथ जाने वाला है, तू तो न भूल। तू गुरमुखता अख्तियार कर, अन्दर नाम जप, सतगुरु को प्रकट कर। वो सच्चा साथी है। नहीं तो तू भी पत गवायेगा। हाँ जी :

पाठी– हरि की कीमति न पवै हरि जसु लिखणु न जाइ॥
गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं दुनिया में सोना, चांदी, हीरे, मोती, जवाहरात सब चीज़ों की कीमत पड़ सकती है, सबकी कीमत है। मगर नाम की कोई कीमत नहीं। अमोलक चीज़ है। वो इस दुनिया की चीज़ ही नहीं।

इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ॥

वो अन्दर जाकर मिलता है। असली जो नाम है वो त्रिलोकी के पार है।

कहें कबीर जन गाइके सुनहो संत ये ज्ञान।
नीचे त्रिलोकी रहे ऊपर सतगुरु नाम॥

त्रिलोकी से पार है वो जो सच्चा नाम है। जो सच्चा साथी है वो त्रिलोकी के पार है। उसकी कीमत को कोई नहीं जान सकता। वो अमूल्य है। रिद्धियां-सिद्धियां वाले जितने हैं, उनके पास भी नाम नहीं। रोज़ पढ़ते हैं हमः

पंखी होइकै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवउ ना किछु पीआ न खाउ॥
भी तेरी कीमति न पवै हउ केवडु आखा नाउ॥

कि पक्षी होकर सारे आसमानों की ख़बर ले आये, बगैर खाये पीये ज़िन्दा रह सके, तब भी न समझो कि उसके पास नाम आ गया। वो इतनी ऊंची से ऊंची चीज़ है। कबीर साहब का शब्द है :

पाखंड में कुछ नाहीं रे साधो पाखंड में कुछ नाहीं रे।
पाखंडीआ नर भोगे चौरासी, खोज करो घट माही रे॥

कहते हैं देह बदल कर आ जावे। देह बदल कर तब भी न मानो कि वहाँ पर नाम है। चिता में बैठ जाये, जलता दिखाई दे, जले न, तो भी न मानो कि वहाँ नाम आ गया। वो इतनी ऊंची चीज़ है। वो बड़ी ऊंची चीज़ है। गुरु तेग बहादुर का सत्संग लगा था आगरा में। वहाँ एक मुसलमान अफसर आ गया। उन्होंने उठकर गले मिल कर साथ बिठा लिया। सिखों को बहुत बुरा महसूस हुआ कि गुरु साहब एक पवित्र आत्मा एक मुसलमान को गले मिले हैं, अब वो (गुरु साहब) भी समझ गये। जब वो चला गया, कहने लगे कि भाई तुम जानते हो कौन है? कहने लगे कि जी नहीं। कि पिछले जन्म में ये लाहौर का सूबा था। इसकी सेज ऊपर की मंजिल पर फूलों से बिछायी जाती थी। एक बार एक जोगी उड़ता-उड़ता आ गया। अब सेज खाली पड़ी थी, ये (सूबा) अभी गया नहीं था। योगी ने सेज देखी वहाँ वो थका दो मिनट आराम करने लगा। फूलों की खुशबू से उसे नींद आ गई। इतने में सूबा भी वहाँ चला गया। उसने देखा कि योगी है चलो इसको क्या उठाना है और आधा घंटा आराम कर लेगा, उठ जायेगा और अपने आप चला जायेगा। अब योगी जब उड़ते हैं तो एक गुटका होता है मुंह में रखते हैं वो। वह गुटका उसका गिर गया, मुंह से निकल गया। सूबे ने उठा लिया और जेब में डाल लिया। अब जब वह जागा तो देखा कि सूबा पास बैठा है, हैरान हुआ डर गया। इधर-उधर देखे कि मैं जल्दी से उड़ जाऊं लेकिन वो गुटका न मिले। थोड़ी देर बाद जब तलाश करके तंग आ

गया तो सूबा कहने लगा कि कैसे, क्या ढूंढ रहे हो? जेब से निकाल कर गुटका बोला कि यही है? कि हाँ जी। उसने मुंह में डाला और उड़ गया। अपने मुर्शद के पास गया, बताया कि मेरे साथ तो ऐसे-ऐसे हुई है। अगर मरवाता तो मरवा सकता था। वो शुक्राने के लिए आये; साथ कुछ तो रसायन ले आये, कुछ गुटके ले आये वो। उसके पास आकर कहने लगे हम तेरा बहुत शुक्राना करते हैं और ये दो गुटके हैं जिस तरफ मर्ज़ी तू चला जा उड़ कर। ये रसायण है जितना मर्ज़ी सोचा चांदी बना ले। ये आपको हम भेंट करते हैं। वो कहने लगा जोगी बात यह है कि जिस वक्त मैं जाता हूँ मेरे साथ लौ लश्कर बहुत होता है और मैं कांवों इल्लों की तरह उड़ता फिरूं ये मेरे किस काम? कौन मुझको भला-मानुष कहेगा? मेरे साथ लौ लश्कर है मुझे कौन सी चीज़ का डर है? फिर मेरे पास ख़ज़ाने भरे पड़े हैं जितना मर्ज़ी खर्च करूं। मैं सुनियारों-मुन्यारों का काम करूं रसायण लेकर तो मेरे कौन से काम है? हाँ अगर नाम की दौलत है तो मुझे दे दे। सो नाम की दौलत इतनी ऊंची चीज़ है। हम इन्हीं में फंसे पड़े हैं, वो पहचानते ही नहीं। वो बड़ी ऊंची चीज़ है। वो ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी न खत्म हो। यहाँ भी शांती, आगे भी शांती। यहाँ भी इज़्ज़त, मालिक की दरगाह में भी इज़्ज़त, सोच लो! उन फकीरों की इज़्ज़त है जिन्होंने नाम का ख़ज़ाना अन्दर निकाला है।

जात भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा किसब हमारा।
नीच से प्रभ ऊंच किया कहे रविदास चमारा॥

कहते हैं हूँ तो मैं चमार परन्तु नाम की लज़्ज़त ली है, उसका ख़ज़ाना इकट्ठा किया है, उसकी इज़्ज़त है और किसकी इज़्ज़त है? जो भक्ति करे उसकी इज़्ज़त है मालिक की दरगाह में; यहाँ भी और वहाँ भी, इस दौलत को इकट्ठी करने के लिए आया था ये। ये जन्म इसी वास्ते मिला है कि यहाँ भी शांती और दरगाह में भी शान्ति। यहाँ भी इज़्ज़त और दरगाह में भी इज़्ज़त। आप भी तर जाये और कुलों को भी तार कर ले जावे।

आपि तरै जनु पितरा तारे॥ संगति मुकति सु पारि उतारे॥

पाठी– सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ॥
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ॥ **(मः 3/756)**

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कैसे मिलता है? कहते वो सतगुरु रंगरेज़ हे?, ललारी है। ललारी कब रंगता है जब साफ करके कपड़ा उसको दें। स्त्री कब सुहागन होती है जब आपा भाव छोड़ के अपने आप को पति के हवाले करे। इसी तरह

ये विषय, विकार छोड़कर, दुनिया के ख़्याल छोड़ कर, अपने आपको सतगुरु के हवाले करे, भजन सिमरण करे, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, यहाँ सतगुरु खड़ा है। इसको ऐसा रंग चढ़ा दे कि कभी उतरे ही न। सिमरण जो है वो सफाई के लिए है, ये मैलें धोने के लिए है, ख़्यालों की मैलें। ख़्यालों को निकालने के लिए सिमरण कर करके अपने आप को पाक कर ले और कोई चीज़ नहीं जो साफ करने वाली है, अन्दर।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥
अम्रितु नामु रिद माहि समाइ॥

अगर सिमरण कर करके हिरदे को साफ कर ले, सतगुरु खड़ा है। इसको ऐसा रंग चढ़ा दे कि कभी उतरे ही न। कौन सा रंग चढ़ाता है वो? सहज अवस्था का। वो है कहां? त्रिलोकी के पार चौथे लोक में।

त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ॥
पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुढहु घुथा जाइ॥
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ॥
पाठी– चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि।
अंतरि नव निधि नामु है
खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– पता नहीं कब से मालिक से हम बिछुड़े हैं। मालिक की प्राप्ति नहीं हुई, घर नहीं पहुँचे। कहते हैं कौन पहुँचा है? 'जो सतिगुर सेवंनि' सतगुरु की सेवा क्या? उसको अन्दर प्रकट करते हैं, जैसे मीरां ने किया। क्या?

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया किस विधि फिरूं अपुठी।

फिर वो ऐसा ख़ज़ाना बख़्श देता है जिसमें कभी कोई कमी नहीं आती। जो न चोर चुरा सकते हैं, न यमदूत खोस सकते हैं, वो ऐसा ख़ज़ाना है।

पाठी– ना ओए जनमहि ना मरहि ना ओए दुख सहंनि।
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– कर्म-धर्म का फल है; ये नहीं कि फल नहीं है, अच्छी जूनी मिल जायेगी, सुरगों (स्वर्गों) तक पहुँच जायेगा लेकिन जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। जन्म-मरण के बन्धन उसके छूटते हैं जो अन्दर सच्चे नाम को प्रकट करते हैं, शब्द गुरु को प्रकट करते हैं।

पाठी– सजण मिले न बिछुडहि जि अनदिनु मिले रहंनि।
इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि॥ (मः 3/756)

मैनेजर साहिब जी– अगर एक दफा परदा खुल जाये तो फिर मालिक बिछोड़ता नहीं। लेकिन ऐसा कोई विरला ही है जो इस जन्म में भक्ति करता है।

कहु नानक कोटनि में कोऊ जो भजन राम को पावै॥
कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी॥

बिउहारी-बिउहारी तो सब हैं लेकिन कोई बिरला है जो अन्दर मालिक को प्रकट करता है, सतगुरु को प्रकट करता है, नाम से ताल्लुक जोड़ता है।

कौन है माफी वाला? (किसी सत्संगी ने असूल तोड़ लिये वो सत्संग में खड़ा होकर माफी मांग रहा है) जिस वक्त नाम देते हैं उस वक्त कह देते हैं कि देखो सतगुरु अन्दर ही बैठा है, अन्दर से ही पीड़ेगा। असूल तोड़े हैं, पूछो इससे कितनी तकलीफ आ रही है। देख लो! जपना तो क्या असूल भी ठीक नहीं रखते। सोच लो! उसका गुनाह किया हमारा तो कोई नहीं किया या अपना कुछ बिगाड़ा है। अन्दर से ही पकड़ता है, बस! उसके आगे विनती कर, दो-दो, चार-चार घंटे भजन कर, सुबह-शाम, चलता-फिरता लगा रहो। अगर सच्चे दिल से करेगा तो शायद माफी कर दे, नहीं तो कोई ठगी का माल नहीं। अगर नाम नहीं जपते, कोई माफी नहीं। साफ, मस्ताना जी ने कहा, सुनो! कपड़े खुद ही मैले करते हैं खुद ही धोने पड़ते हैं।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'अलह अगम खुदाई बन्दे'

सत्संग के वचन

पाठी– अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि खिआल दुनीआं के धंधे॥
होइ पै खाक फकीर मुसाफिर इहु दरबेसु कबूलु दरा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि ऐ खुदा के मुतलाशी, ऐ मालिक से मिलने की चाह रखने वाले, अल्लाह जो है, खुदा जो है, वाहेगुरु जो है, वो मन बुद्धि की गमता से परे है। वो ख्वासे खसमा कहते हैं, हम मन बुद्धि कह देते हैं, वहाँ ये अकलें काम नहीं देतीं, इन्द्रियां काम नहीं देतीं, इन आंखों से देखा नहीं जाता, इन कानों से उसकी आवाज़ सुनी नहीं जाती।

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा जिउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

इसके लिए क्या कर? 'छोडि खिआल दुनीआं के धंधे' दुनिया के सारे ख़्याल निकाल दे अन्दर से। जब तक ख़्याल नहीं निकलते, मालिक की प्राप्ति नहीं हो सकती। ये लेने देने भी खत्म करने हैं। ये आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होते हैं, जल्दी का काम नहीं। लेकिन जब तक खत्म नहीं होते, अच्छे बुरे ख़्याल जितने हैं सब रूह पे पर्दे हैं। लाईट है उस पर आप टाट डालते जाओ अन्धेरा हो जायेगा, उठाते जाओ तो फिर रोशनी खिलती जायेगी। जब सारे टाट उतर गए तो पूरी रोशनी हो गई। इसी तरह रेशमी कपड़े डालते जाओ फिर भी बन्द हो जायेगी, उठाते जाओ फिर रोशनी हो जायेगी। इसी तरह चाहे अच्छे ख़्याल हैं, चाहे बुरे ख़्याल हैं, ये सारे निकाल। इसके लिए क्या कर? 'होइ पै खाक फकीर मुसाफिर' उस साधू की, उस सन्त की शरण में जा; 'मुसाफिर' क्या? जो रूहानी मन्जिलों पे सफर करता है, अन्दर जाता है वो तुम्हें रास्ता बतायेगा।

उनकी सोहबत में।

हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा॥

संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा॥

बात एक ही है।

हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई॥

इहु मनु तेरा भाई॥

जैसे संत कहें उनके हुक्म के मुताबिक भजन सिमरण करें, फिर जा सकता है, ऐसे नहीं। चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिक्ख है, चाहे ईसाई है, जब तक ख़्याल नहीं निकलते, मालिक की प्राप्ति नहीं हो सकती, अन्दर दर्शन नहीं हो सकते, अन्दर शांती नहीं आ सकती। हाँ जी–

पाठी– सचु निवाज यकीन मुसल्ला॥ मनसा मारि निवारिहु आसा॥

मैनेजर साहिब जी– वो जो तरीका बताएं, जो सिमरण बताएं, इसीलिए कहा है :–

संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए॥

किसी विरले के हिस्से में आता है यह। कि जो तरीका बताएं वो सिमरण कर। यह लफ्ज़ नहीं, लफ्ज़ तो बदलते रहे हैं, बदलते रहेंगे मौके-मौके पर। कितने लफ्ज़ हो गए मालिक के। मौके-मौके, मुनासिब समझते हैं जैसे, फकीर रख लेते हैं। यह बदलते रहे हैं। दुनिया बदलती है तो उसके साथ ये भी बदल जाते हैं। इसी तरह जब फकीर आते हैं इस दुनिया में, मौके-मौके पर उसी हिसाब से समझाते हैं हमें। वो पढ़ 'यकीन मुसल्ला', मुसलमान कहां निवाज़ पढ़ते हैं? मुसल्ले पर बैठ के, सफ पर बैठ के, पूरा भरोसा रख फकीर के वचनों पर, फिर वो सिमरण कर। जब तू सिमरण करेगा भरोसा रख के, 'मनसा मारि निवारिहु आसा' दुनिया के ख़्याल निकलते जायेंगे, आशा तृष्णा खत्म होती जायेगी, तुम्हें रास्ता मिल जायेगा। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है :–

चूं शवी खाली कि अज़ ज़िकरे खुदा॥

राहयाबी दर हरीमे किबरीआ॥

''जब तू मालिक को याद कर करके सारे ख़्याल निकाल लेगा, मालिक के रास्ते का दरवाज़ा मिल जायेगा।'' सारे ख़्याल निकाल। कहां पढ़ते हैं निवाज़ वो? कौन पढ़ाता है? हाँ सुनो :

पाठी– देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा॥

मैनेजर साहिब जी– कहां पढ़ते हैं नमाज़ वो? मसीतों में। कौन पढ़ाता है? मौलवी। यह मसीत है (देह की तरफ इशारा)

हरि मंदरु इहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥

Body is the temple of God.

जिसको मिला अन्दर से मिला, बाहर से किसी को नहीं मिला।

मुझको कहां ढूंढे तूं बन्दे मैं हूँ तेरे पास में।
न मन्दिर में न मस्जिद में न काशी कैलाश में।
न तीर्थ में न मूर्त में न एकान्त निवास में।
खोजी होय तुरन्त मिल जाऊं पल भर की तलाश में।
कहें कबीर सुनो भई साधो मैं तो हूँ विश्वास में।

इसको विश्वास आता ही नहीं भई मेरे अन्दर है। सब कुछ इसके अन्दर रखा है। इसमें बैठके नमाज़ पढ़। कौन पढ़ाता है? मौलवी, मुल्ला, 'देह मसीति मन मउलाणा' यह मन को लगाकर, मन से सिमरण कर, ख़्याल रख के। मन इधर-उधर न जाने दे। जैसे मसीत को मुल्ला साफ रखता है, देख लो। मसीत को साफ रखता है, बुरे कर्मों से बचाता है, खुद भी बचता है। अगर उसके अन्दर बुरे ख़्याल हों, सफाई न करे तो कोई रखता है? कहां मालिक आए, कहां बैठे? इसको साफ कर। जब तू साफ कर देगा, 'कलम खुदाई पाकु खरा' वो कलमा, वो बांग, वे वर्ड (Word) जिसको हम नाम कहते हैं, शब्द गुरु कहते हैं, 'शब्द' वो तुम्हारे अन्दर आने लग जायेगा, सुनाई देने लग जायेगा; यही तुम्हारे घर का रास्ता है।

''सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥''

सुरत शब्द में राखिए तब पहुँचे दरबार।
कहें कबीर तहा देखिए बैठा पुरुष हमार॥
शब्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाय।
द्वार न पावे शब्द का फिर फिर भटका खाय॥

फिर तुम्हारा ताल्लुक कलमे से, नाम से, बांग से (सबके अन्दर बांग आ रही है, नाम आ रहा है) पड़ जायेगा। यह असली सतगुरु की सेवा है जिसको हम रोज़ पढ़ते हैं, क्या?

सतिगुरु की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥

कौन सी? यह बाहर वाली अपनी हद में ठीक है। या तो तन का ही

काम हुआ या मन खुश हो गया; आत्मा का क्या बना? सोच लो!

सतिगुरु की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥

क्या?

बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ॥

अनेकों बन्धनों में फंसा पड़ा है।

बंधन मात पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥

बंधन करम धरम हउ कीआ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥

बंधन बेदु बादु अहंकार॥

कौमों के, मज़हबों के, देशों के, सोचो! इनमें बंधा पड़ा है। यह बंधन तोड़। फिर, जब बंधन तोड़ेगा,

इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि बसै मनि आइ॥

वो इस दुनिया की चीज़ नहीं, सूक्ष्म मण्डलों में मिलता है वो नाम। वो कलमा कह लो, नाम कह लो। इसी के लिए गुरु अमरदास साहब ने फरमाया है।

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥

ओथे अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

इस मन्दिर के, इस काया के नौ दरवाज़े बाहर हैं। दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुंह का, एक-एक टट्टी पेशाब के, इनको बन्द कर। 'नउ दर ठाके धावतु रहाए'। जब बन्द करोगे तो मन फिर भागता दौड़ता है, इसको रोक। दसवां खोल, यहाँ टिका। जब तू यहाँ टिकायेगा; 'ओथे अनहद सबद वजहि दिनु राती'॥ दिन पर रात मालिक की दरगाह से आवाज़ आ रही है कि आ बच्चा तुझे ले चलूं। 'गुरमती सबदु सुणावणिआ'। कौन सुन सकता है? जिसको कोई गुरमुख मिले, जिसने अन्दर सतगुरु को प्रकट किया है, वो हमें सिखा सकता है। उससे रास्ता लेकर फिर कर, ऐसे नहीं जा सकता। मेन दरवाज़े तीन हैं; आंखें, कान और मुंह जिनसे हम ज़्यादा संस्कार लेते हैं। इसलिए कबीर साहब ने कहा है :

आंख कान मुख बन्द कराउ॥ अनहद झींगा सबद सुनाऊं॥

यही मुसलमान फकीर कहते हें।

चश्म बन्दो, गोश बन्दो लव बबन्द॥

गर न बीनी सरे हक्क बर मन बखन्द॥

कि ''आंखें बन्द कर ले, मुंह बन्द कर ले, कान बन्द कर ले, फिर अगर

तेरे पर मालिक का राज़ न खुले तो मुझे आ पकड़।'' ये बन्द करे, ये ख़्याल निकाले तब सुने, नहीं कैसे सुने। फकीरों का किसी से ताल्लुक नहीं होता। बाहर की गवर्नमेंट छावनी बनाती है, काम लिया, परे। फकीर चले गए, बाद में ऐसे ही है। बाद में ऐसे ही मत्थे टेकने रह जाते हैं, बस चीज़ ही खत्म हो जाती है। फकीर के साथ-साथ ही तालीम है, बस। उनका कोई मतलब नहीं इनसे। उन्होंने तो काम लिया है इनसे। अगर जगह न हो तो कैसे बैठें, कहां बैठें? अगर आराम न मिले, कैसे रात को ठहरें? इसलिए होते हैं सारे काम। धर्मशाला वगैरह जितने हैं मन्दिर, मस्जिद, इसलिए हैं। हाँ जी :

पाठी– सरा सरीअति ले कंमावहु॥ तरीकति तरक खोजि टोलावहु॥
मारफति मनु मारहु अबदाला
मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा॥

मैनेजर साहिब जी– मुसलमान सूफियों के चार दर्जे हैं। शरीयत, तरीकत, मारफत और हकीकत। बुल्ले शाह ने कहा है :

शरीयत साडी दाई है। तरीकत साडी माई है।
अगों हक हकीकत आई है ते मारफतों कुछ पाया है।

शरीयत का काम क्या है जैसे दाई का काम है। बच्चा तो मां के पेट से निकलता है, पलता मां के दूध से है लेकिन शरीयत दाई का काम करती है और कोई काम नहीं। आगे फिर जब बच्चा पलता है, खुराक मिलती है तो तरीकत खुलती है। पर कब? विवेक विचार से, मन को मारने से। यह जो बाहरली शरीयत है नहाने धोने की, यह तो उन्होंने बनाई है जगह के लिहाज़ से। यू. पी. में बहुत पानी है, पंजाब में बहुत पानी है। वो कहते हैं नहा के भजन सिमरण करो भई। बागड़ में जाओ वो कहते हैं दो सेर पानी से ज़्यादा लगाया तो बस पाप है। मुसलमानों के उधर (अरब मुल्कों में) पानी नहीं मिलता था वो कहते थे वजू कर लो मिट्टी से। टट्टी वाले हाथ भी मिट्टी से धो लो, साफ कर लो। यह ऐसे हैं। असली शरीयत क्या है? जो फकीर सिमरण करते हैं, वो तरीका क्या है? मन इन्द्रियों को वश में करे, मन को मारे, 'मन अबदाला' जो मिनट मिनट पे बदलता है।

मन इन्द्रियों के वश भयो, होय रहयो बे ढंग।
आपा बिसरे जग रल्यो होयो नाना रंग॥
कबहूं यह मन होवै गिरही। कबहूं यह मन होवै बिरही॥

कबहूं यह मन हौवे रोगी। कबहूं यह मन होवै सोगी॥
कबहूं यह मन डौरा डोले। कबहूं यह मन टेढ़ा बोले॥
कबहूं यह मन दुंद मचावे। कबहूं शील खिमा धरावे॥

कभी कहता है मैं यूं कर दूंगा। फिर कहता है मैं क्या कर सकता हूँ? देख लो। पहले कहता है चलो मैं भजन करूंगा। गृहस्थ छोड़ के चला गया। फिर कहता है रोटी हक हलाल की, फिर वापिस आता है। इसी तरह बदलता रहता है। इस बदलने वाले को रोको। जैसे गुरु अमरदास ने कहा है 'नउ दर ठाके धावतु रहाए'। यह भागता दौड़ता है इसको रोको, इसको मारो। इसके मारने से हकीकत खुलती है। फिर सच्चाई का पता चलता है, फिर नाम से ताल्लुक पड़ता है, फिर शब्द से ताल्लुक पड़ता है। जब शब्द से ताल्लुक पड़ा, नाम से ताल्लुक पड़ा; इसके नज़दीक यमदूत नहीं आते। यह भक्ति ऐसी है। वैसे मुसलमान सूफियों के पांच दर्जे हैं—वली, गौंस, कुतब, अबदाल और कलन्दर। लेकिन यह अबदाल है कि बदलता है मन, इसको रोक। हाँ जी :

पाठी– मारफति मनु मारहु अबदाला
मिलहु, हकीकति जितु फिरि न मरा॥
कुराणु कतेब दिल माहि कमाही॥
दस अउरात रखहु बद राही॥

मैनेजर साहिब जी– सब ग्रन्थों का निचोड़ क्या है? कि अगर कोई कामिल फकीर मिल जाए, वो रास्ता बताए, बस वो कर बाकी खत्म। महात्मा चरनदास कहते हैं:

पढ़हूं न गीता वेद पुरान। एक ही सिमरूं श्री भगवान॥

गल खत्म, बस खत्म है। बाकी तो समझाने के लिए है। 'कुराणु कतेब' क्या? यही किताब पढ़, सिमरण कर। 'दस अउरात रखहु बद राही' यह कहते हैं मुसलमान कि दस औरतें एक आदमी रख सकता है, इसको काबू में रखो। यह दस इन्द्रियां हैं, इसको काबू में रख।

दस इंद्री करि राखै वासि॥ ताकै आतमै होइ परगासु॥
चूं ज़े हिस्स बैरूं ने आमद आदमी।
बाशद अज़ तस्वीरे गैवी आज़मी। (मौलवी रूम)

कि "जब तक इन्दियों के भोगों से परे नहीं होता, तूं गैब की तस्वीर को नहीं देख सकता।" पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं, पांच कर्म इन्द्रियां हैं, इनको वश में कर, इनका ख़्याल छोड़। जब तक विषयों में ख़्याल है, अन्दर जा ही नहीं सकता।

जब तलक विषयों से यह मन दूर हो जाता नहीं।
तब तलक साधक विचारा सच्चा सुख पाता नहीं।

इन इन्द्रियों को काबू में कर।

दस इंद्री करि राखै वासि॥ ताकै आतमै होइ परगासु॥

इनको काबू कर, ये खींचे फिर रही हैं। आंखों की इन्द्री अच्छे-अच्छे रूप देखकर उधर को खींचे फिर रही है। कानों की इन्द्री अच्छे-अच्छे राग सुनकर, निंदा चुगली सुनकर उधर को खींचे फिर रही है। ज़ुबान की इन्द्री खट्टे-मीठे रस लेकर उधर को खींचे फिर रही है। मिट्टी पलीत कर दी सारी दुनिया की। सब फकीरों की मिट्टी पलीत कर दी इसने। हाँ जी :

पाठी– कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही॥
पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा॥

मैनेजर साहिब जी– इन इन्द्रियों के अलावा पांच मरद तुम्हारी मिट्टी पलीत कर रहे हैं। इनको काबू कर। कौन से? ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।

जिन मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसा कौन बली रे॥

कबीर साहब ने लिखा है, बाणी में आता है। ये मारे तब है। कभी काम ने पकड़ लिया, कभी क्रोध ने पकड़ लिया, कभी लोभ ने पकड़ लिया, कभी मोह ने पकड़ लिया, कभी अहंकार ने पकड़ लिया। काम कहता है चल मेरा काम कर, क्रोध कहता है मार डंडा, यह तो चाहता है न मारूं, जेलों में जाऊंगा, फांसियों पे चढ़ूंगा परन्तु ज़बरदस्ती मरवाता है, देख लो। लोभ कहता है चल पैसे कमा, चोरियां ठगियां करवाता है; यह तो चाहता है न करूं, ज़बरदस्ती करवाता है। इनको काबू करे तब है। ये हैं पंच शूरवीर। इनको काबू करे।

पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा॥

क्या?

यह जल्दी का काम नहीं इनको काबू करना। मालिक से खैर मांग, दुआ मांग। मालिक तूं ही वश में करे तो करे। सबर से काम ले, यह जल्दी का काम नहीं, जल्दी काबू नहीं आते। हाँ जी :

पाठी– मका मेहर रोजा पे खाका॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि आप मक्के में जाते हो, वहाँ सिजदे करते हो, दुआएं मांगते हो। असली मक्का तुम्हारे अन्दर है। मालिक तुम्हारे सब कुछ देखता है, उस से दुआ मांग। रोज़े रखते हो, तन को तकलीफ देते हो, क्या

बना? भूखे रहते हो। क्या करो? जो फकीर वचन करते हैं, उनके हुक्म मुताबिक चलो, यह तकलीफ दो। वो हमारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार वश में करने के लिए हैं। इनको काबू करने के लिए हैं। उनके वचनों पे चलो। उनके वचनों से परे काल ही काल है।

सतिगुरु शब्द अलंघ कर, जन कोई सिख जाई।
दादू पग पग काल है, जहां जाई तहां खाई॥
सतगुरु बरजे शिश करे, क्यों कर बंचे काल।
दहदिश देखत बह गया, पानी फोड़ी पाल॥

कि इनसे परे कर, उनके वचनों पे चल, यह तकलीफ काट, यह रोज़ा रख। हाँ जी :

पाठी– हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा॥

मैनेजर साहिब जी– मुसलमान चिल्ला काटते हैं, गुफा में जाकर। ये 'आला हुजरा', क्या? आंखों के पीछे यहाँ ख़्याल रख के सिमरण कर। जब यहाँ सिमरण करेगा, तुम्हारे अन्दर से ख़्याल निकलते जाएंगे। जिन हूरों की तलाश में है (हैं तो ये धोखे) वो सामने आएंगीं, अन्दर नूर आएंगे, खूबसूरत बीबियां आएंगी, तुम्हें रुकावटें डालेंगी, उनसे परे रह।

अन्दर बूटी मुशक मचाया जां फुलण ते आई हू॥

जैसे यह बीज डाला, सूई (तूई) निकल आई। फिर थोड़ा सा पेड़ बन गया, फिर बड़ा हो गया, फिर फूल बन गया। अब आंखों को खूबसूरती देता है। अगर उसका फल हो तो ज़ुबान को लज़्ज़त देता है, ताकत देता है। इसी तरह तुम्हारे अन्दर भी यह खुशबू आने लगेगी, तुम्हारे अन्दर भी बूटा बनने लगेगा। हाँ जी :

पाठी– हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा॥
सचु कमावै सोई काज़ी॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी॥

मैनेजर साहिब जी– ''सचु कमावै सोई काज़ी''। 'सच' सच्च बोलना नहीं, ये लफज़ तो फनाह है बल्कि अनहद शब्द भी फनाह है। सच किसे कहते हैं?

नानक साचे कउ सचु जाणु॥

वो सच्चा मालिक ही सच है।

आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

उसमें कोई तबदीली नहीं आई। उसको कमा, क्या? वो मेहनत कर कि

वो कलमा,(जो सत् ताकत है) तुम्हारे अन्दर है सच्चा शब्द, तुम्हारे अन्दर प्रकट हो जाए। 'सचु कमावै सोई काज़ी', वो काज़ी है। 'जो दिलु सोधै सोई हाजी' जिसने मन इनिद्रयों को वश में किया, दिल को साफ किया, वो हाजी है। बाहर हज्ज को गये, तीर्थों पर गये, क्या बना? मुसलमानों के आता है एक जनीक बगदादी सूफी हुआ है। वो हज्ज को जा रहा था। रास्ते में एक कुत्ता पड़ा था। वो गाड़ी के नीचे आ गया था और टांगें टूट गई थीं। खून बह रहा था। अब उसने सोचा कि यह पलीत जानवर है, क्या करूं? अब छोड़ भी नहीं सकता। छोड़ूं तो इसका कौन है यहाँ? उसने उठाया कि देखा जाएगा भई! उठाया, आगे ले गया। कुआं आया। कुएं पर जाकर डूना बनाया, फिर पगड़ी उतारी, पूरी न आई, फिर कमीज उतारी, पूरी न आई, इधर उधर देखा कि कोई आदमी नहीं, सलवार उतार ली। बांधी, पानी पिलाया। कुछ होश न आया, आगे ले चला। रास्ते में मसीत (मस्जिद) आई। मसीत के मुलां को कहने लगा, भई देखो! मैंने जाना है हज्ज पे, अगर तू कुछ दिन इसे संभाल ले तो तेरी मेहरबानी होगी। मैं वापसी पे ले जाऊंगा। रात को उसको बुशरात हुई कि तू हज्ज पे जा या ना जा। तूने मेरे बच्चे पे रहम किया है, तेरा हज्ज कबूल। सोचो! इसका नाम हज्ज है। एक फकीर अबदुल्ला हज्ज को गया। मक्के के आगे पड़ा था। रात को सपना आया कि फरिश्ते आए। बातें कर रहे हैं कि कितनों ने हज्ज किया है? कि चार लाख ने। कि कितनों का कबूल हुआ है? कि किसी का भी नहीं। कहने लगा इतनी बड़ी दूर से आए, इतने पैसे खर्चे, इतनी तकलीफ उठाई, किसी का हज्ज कबूल नहीं हुआ। लेकिन एक चमार है दमिशक में। आया नहीं। उसका हज्ज कबूल है। वो वहाँ गया उसके पास। उससे पूछा। वो रो पड़ा कहने लगा मैं बीस साल से यह ख़्याल कर रहा था कि मैं हज्ज पे जाऊंगा। पैसे इकट्ठे किये, सब कुछ कर लिया, तैयारी हो गई। मेरी औरत हामला थी। पास में पड़ोसियों के कोई छौंक लगा सब्जी का। वो कहने लगी वो मुझे लाकर दे, मुझे वो खाना है। कहने लगा मैं वहाँ गया। पूछा क्या बनाया है? कहने लगी चार दिन से भूखे हैं। यह जानवर की सिरी (सिर) मिली है, इसको पका के खा रहे हैं। उसने सोचा ऐसे हज्ज को क्या करेंगे? फिर कभी देखा जायेगा। जो पैसा था उनको दे दिया। उसका हज्ज कबूल है। इसका नाम हज्ज है। जिसका ऐसा दिल है, रहम दिल है, वो ही अन्दर जा सकता है, दूसरा जा ही नहीं सकता। वो जा सकता है अन्दर जिसका दिल साफ है। वो अन्दर नाम जप सकता है। वो अन्दर

जाकर अमृतसर में नहा सकता है, प्रयाग में नहा सकता है। मानसरोवर में नहा सकता है। हौज़े कौसर में नहा सकता है। वो इसके अन्दर है। बाकी कोई नहीं नहा सकता। उसका नाम हाजी है, इसका नाम हज्ज करना है। कैसे भई! ठीक है। इसका नाम हज्ज है। तीर्थों पे नहा-नहा के आये, बना क्या?

अठसठ तीर्थ तो बिखे, बाहर क्यों भटकाये।
चरनदास यूं कहत है, उल्टा होये घट आये॥
अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥

वो मैलें साफ करने वाला है।

अंतरु निरमलु अमृतसरी नाए॥ सदा सूचे साचि समाए॥

वो प्रयाग इसके अन्दर है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बेणी संगमु तह प्रयाग मनु मजनु करे तिथाई॥

बाहर नहा-नहा के थके प्रयाग पे, क्या बना? क्या है वहाँ? तीन नदियों का संगम। यह नमूना बनाया था, नमूना बताया था कि ऐसे प्रयाग है तुम्हारे अन्दर। यह असली इसके अन्दर है, ये तो किसी ने सिखाया ही न देख लो! किसी ने सिखाया ही न। ये हज्ज तो किसी ने सिखाया ही न। बाहर के सारे सिखाये बस मत्था टेको, हो गया। हाँ जी :

पाठी– सचु कमावै सोई काज़ी॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी॥
सो मुला मलऊन निवारै सो दरबेसु जिसु सिफति धरा॥

मैनेजर साहिब जी– मुलां कौन है? जो मन को मारे, इसको साफ करे। जैसे मसीत को साफ रखता है, इस मन को साफ रखे, विषय विकारों में आने न दे। उसका नाम मुलां है। 'मलऊन निवारै', इसको मारे, विषय विकारों में न फंसने दे। जो हर वक्त उठता-बैठता, चलता-फिरता सिमरण करता है, उसका नाम दरवेश है, बाकी का नहीं। हाँ जी :

पाठी– सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा॥
सभे बखत सभे करि बेला॥ खालकु यादि दिलै महि मउला॥

मैनेजर साहिब जी– कि किस वक्त निमाज पढ़े, किस वक्त बन्दग़ी करे? कि सारे ही वक्त मालिक के हैं।

साई घड़ी सुलखणी जि सहु नालि विहावै॥
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

वो कहते हैं पचास साल का वक़्फा पड़ गया, गुरु अर्जुन साहब कहते हैं।

जो दम गाफिल सो दम काफिर सांनू मुर्शद एह फरमाया हू॥

कि जब बन्दग़ी से रह गया, सिमरण से रह गया, मैं काफिर बन गया। सोच लो! हमारा क्या हाल? कि मैं काफिर बन गया उस वक्त। मूसा को अहंकार हो गया कि मैं बड़ा भजनीक हूँ। मालिक के पास गया कि मेरे से ज़्यादा भी कोई भजनीक है। कहने लगे मूसा! आदमी तो क्या बड़े-बड़े जानवर पड़े हैं। कि जी दिखाओ। कि फलाने जंगल में फलाने दरखत पे एक जानवर बैठा है, उसके पास जा। जब उसके पास गया कहने लगा मैं उसकी बोली कैसे समझूंगा? कि मैं तुम्हें ताकत देता हूँ, तू उसकी बोली समझ लेगा। जब उसके पास गया, कहने लगा, सुना भई! क्या हाल है? कहने लगा तेरे से बात तो नहीं करनी थी। क्योंकि मालिक का हुक्म है इसलिए बात कर रहा हूँ। क्यों? कि मुझे फुरसत ही नहीं। क्यों क्या काम है? कि सिमरण करता हूँ। कोई सेवा? कहने लगा सेवा ये है कि यह जो जोहड़ (तालाब) है न, यहाँ ला दे, अगर हो सकता है। कि क्यों। कि जब मैं पानी पीने जाता हूँ, मुझे तकलीफ होती है, सिमरण छूट जाता है। कि यह कोई दूर है? कि तेरे लिए दूर नहीं, मेरे लिए दूर है।

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि॥

एक मिनट न छोड़े, लगा रहे। इसका नाम है 'सभे बखत सभी करि बेला' हर वक्त याद रख। हाँ जी :

पाठी– सभे बखत सभे करि बेला ॥ खालकु यादि दिलै महि मउला॥
तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बरा॥

मैनेजर साहिब जी– तसबी कह लो, माला कह लो। फकीर माला नहीं लेते। कबीर साहब कहते हैं :

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं।
मनवा तो दहदिसि फिरे, यह तो सिमरण नाहिं॥

माला का मनका फेरा, क्या फायदा हुआ? ख़्याल बाहर है। हम पढ़ते थे। एक हमारे खानदान में था। उसके पास माला थी। जब चलता, बातें भी करता रहता और ऐसे ऐसे माला भी फेरता रहता। माला क्या है?

सिमरण सुरत लगाये के, मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देकर, अन्तर के पट खोल॥

सारे ख़्याल निकाल दे, इसका नाम सिमरण है। उसी तरफ लगन लगी रहे। 'दस मरदनु', क्या? इन्द्रियों को वश में कर इनको, ऐसी माला फेर कि इस तरफ ख़्याल ही न जाये। 'सुंनति' क्या? सुन्नत करते हैं न। असली सुन्नत क्या है? काम को वश में करना इसका नाम सुन्नत है।

जहां काम है तहां नाम नहीं, नहीं काम तहां नाम।
दोनो कबहूं न मिलें, रवि रजनी इक ठाम॥
कामी कबहूं न गुरु भजे, मिटे न शन्शे सूल।
और गुनाह सब बख्शियो, कामी डार न मूल॥

पराई स्त्री की तरफ देखना तो गुनाह ऐसा है जिसका कोई ठिकाना ही नहीं। काम को वश में कर। यह है शील। फरीद साहब का एक शिष्य था। वो कहने लगा, जी मेरी तम्बी फट गई। कहने लगे मेरे पास एक फालतू है, इसको ले ले। परन्तु ऐसी बांधना खोलना न सारी उमर। वो समझदार था, समझ गया। सारी उमर जत सत में रहा। इसका नाम है सुन्नत।

तरक शहवत कुन गर ख्वाही तू होश।
जां आं कि शहवत बाज बन्दों चश्मो गोश॥

मौलवी रूम लिखते हैं कि ''काम को परे कर, इससे दूर रह। जो कामी पुरुष है उसके अन्दर के कान, आंखें बन्द हो जाती हैं। अन्दर की आवाज़ सुन नहीं सकता। अन्दर मालिक का परदा नहीं खुल सकता।'' इसका नाम सुन्नत है। गुरु नानक साहब ने भी यही लिखा है एक जगह, अगर तूने मालिक के पास जाना है, वो रस लेना है तो क्या कर?

कामु क्रोधु पर हरपरु निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भरम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

काम छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, लोभ छोड़ दे, पराई निंदा छोड़ दे 'भरम का संगल तोड़ि निराला' बाहर सारा भ्रम है। 'जो दीसै सो सगल बिनासै'। न इसकी कौम है, न इसके मज़हब हैं, न इसके देश हैं, कौन सी चीज़ है इसकी? न बाप, न मां। इसका तन भी नहीं जो साथ लाए हैं, इसका तो यह भी नहीं, सोच लो! इसका सबका प्यार छोड़ दे। 'काम क्रोध परहरू पर निंदा', पराई निंदा छोड़ दे, निंदा करके दुनिया काली हुई पड़ी है। अन्दर मालिक बसाना था। निंदा कर करके जो बुरा है उसको बसा लिया अन्दर।

कामु क्रोध पर हरपरु निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भरम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

सारे ख़्याल निकाल दे बाहर के, फिर तुम्हें अन्दर रस आने लग जायेगा। यही उन्होंने कहा है, 'छोड़ि खिआल दुनिआं के धंधे'। यह ख़्याल निकालने थे, उल्टा डालते जा रहे हैं हम आगे से आगे, आगे से आगे। अगर ऐसा करे; यह जल्दी का काम नहीं, देर भी लगती है, रुकावटें भी पड़ती हैं, अनेक रुकावटें हैं। जो भजन करता है उसके पीछे काल पड़ता है, करने ही नहीं देता। बुल्ले को तकलीफ देते थे। उसने कहा भई ऐसे तो नहीं। उसने खोतियां रख लीं। सारे उसकी निंदा करने लग गए, वो अलग हो गया। फिर कैसी ताकत हासिल की उसने? एक हिन्दू की कोई मुसलमान अफसर बीवी ले गया। उसने ज़ोर लगाया पर कुछ न बना। तो उसको किसी ने सलाह दी कि तू बुल्ले के पास जा, वो रहम करे तो करे। वो बुल्ले के पास गया। वो कहने लगा, मेरा की मतलब? खैर मिन्नत करने लगा। कि अच्छा भई देख कहीं कोई नाच हो रहा है, बाजे बज रहे हैं, ढोल बज रहे हैं। देख के आया, एक जगह खुसरे नाच रहे हैं। वहाँ गया। वहाँ जाकर नाचने लग गया। किसी ने शिकायत की बाप को कि पहले तो खोतियां रखीं थीं अब खुसरों के साथ नाच कर रहा है। वो दौड़ा डंडा लेकर, हाथ में माला थी। इधर इसने बोला :

अम्बां वाली बगीची खज्जी वाला बाग।
खोतियां वाले सद बुलाई सुती है तां जाग।

फौरन बीवी आ गई। इतनी ताकत आ गई। फिर देखा बाप आ रहा है। उस तरफ तवज्जो फैंकी। यह सिमरण की ताकत पर है। क्या?

लोकां दे हत्थ मालियां बाबे दे हत्थ माल।
सारी उमर सिजदा कीता खुस न सकिआ इक बाल।
चीणा इयों छड़ींदा यार।

उसका परदा खोल दिया। बाप कहने लगा :

पुत्र जिन्हां दे रंग रंगीले मापिआं नू दिंदे तार
चीणा इयों छड़ींदा यार।

इसका नाम है सिमरण। यह करे। ये दीवारों पर भी लिखवाया था मस्ताना जी ने, वैसे भी सुनाया करते थे। कोई करम हो तो ऐसी कोई बात है, वरना...सुनो सिमरण में कितनी ताकत है।

पाठी– हज़रत बाईजीद बुस्तामी जी रब्ब दी याद विच इतने मगन हो गए कि वह अपने आपनूं भुल गए। जद अपने अन्दर झाती मारी तां सिवाये रब्ब दे

होर कुछ न भासिआ। मस्ती दी हालत विच कह उठे कि मैं ही रब्ब हाँ! मैं ही रब्ब हाँ!! मैं ही रब्ब हाँ!!1 मुरीद पास बैठे सुन, सुन के हैरान होये। फिर जद पीर नाल गल्लां करन दा समां मिलिआ तां पुछिआ, हज़रत तुसीं तां कहिंदे सी कि रब्ब वजूद विच नहीं आउंदा पर हुण कह रहे हो कि मैं ही रब्ब हाँ? कि तुसीं बजूद नहीं? तां पीर जी ने किहा कि एह गल किसे होर ने कही है, मैं नहीं कही। जेकर मैं हुण कहां तां तुसीं शरीयत दा दंड मैनूं लगा देना। दो चार दिनां मगरों पीर जी उसे हालत विच आउण ते ओही कह उठे, मैं रब्ब हाँ! मैं रब्ब हाँ!! मैं रब्ब हाँ!!! मुरीद इह सुन के छुरियां ते तलवारां आदि लै के दौड़े अते पीर नू कत्ल करना चाहिआ। मसनवी मौलवी रूम विच लिखिआ है कि जिन्हां मुरीदां ने सिर ते वार कीता, उन्हां दे अपने सिर कट्टे गये, जिन्हां ने हत्थां ते वार कीता, उन्हों दे अपने हत्थ कट्टे गये। गल्ल की जिन्हां ने पीर दा जेहड़ा अंग कटना चाहिआ, उन्हां दा अपना ओही अंग कटिआ गया।

मैनेजर साहिब जी– यह किसी किसी मौके पर है वरना फकीरों ने दिखाई नहीं करामात। उनमें इतनी ताकत है। गुरु अर्जुन साहब के तत्ती (गरम) रेत डाल दी, देख लो। सब कुछ कर सकते थे। हज़रत मुहम्मद के दांत तोड़ दिये। मक्के से मदीने भेज दिया, देख लो! ईसा को सूली पे चढ़ा दिया। उन्होंने सब बर्दाश्त किया। वो कहते हैं भई ये सब भूले हुए हैं, क्या करें। मनसूर को सूली पे चढ़ाने लगे। पहले उसके हाथ काटे। कहने लगा जो हाथ मालिक की दरगाह में जाते हैं उनको कौन काटेगा? फिर पैर काटे। कहने लगा जो पांव मालिक की दरगाह में जाते हैं उनको कौन काटेगा? फिर आंखें निकालीं, कहने लगा जो आंखें मालिक को देखती हैं, उनको कौन निकालेगा? फिर ज़ुबान काटने लगे। कहने लगा जल्लादो एक मिनट ठहर जाओ। कहने लगा ऐ मालिक! जिन्होंने मुझे इतनी पीड़ा पहुँचाई है इनको कुछ न कहना। मैं, पता नहीं कब तेरे पास आता। अब मेरी मंजिल आसान हो गई है। मैं एक मिनट में तेरे पास आ जाऊंगा। ये है फकीरों की तालीम। हाँ जी :

पाठी– गल्ल की जिन्हां ने पीर दा जेहड़ा अंग कटणा चाहिआ, उन्हां दा ओही अंग अपना कटिआ गया ते पीर जी मस्त हाथी दी तरां झूमदे होए कहंदे रहे, मैं रब्ब हाँ! मैं रब्ब हाँ!!

मैनेजर साहिब जी– किसी-किसी मौके छुप के कहा भी है, फकीरों ने। गुरु अर्जन साहब कहते हैं, 'अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥' कि मैं इक अजीब पदवी पा

ली है। पलटू ने कहा है :

कोटिन युग परलय गई हम ही करने हार।

हाँ जी :

पाठी– तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बरा।

दिल महि जानहु सभ फिलहाला॥

खिलखाना बिरादर हमू जंजाला॥

मैनेजर साहिब जी– दिल में यह ख़्याल करो कि कोई चीज़ मेरे नाल नहीं जानी–सब फनाह है। न कौमों ने, न मज़हबों ने, न देशों ने, न यारों ने, न दोस्तों ने, न मां ने, न बाप ने, न बहन ने, न भाई ने, न रिश्तेदारों ने, इस तन ने भी नहीं जाना। सारा फनाह है। किसी चीज़ ने नहीं जाना। आगे क्या कहते हैं? हाँ जी :

पाठी– मीर मलक उमरे फानाइआ, एक मुकाम खुदाइ दरा॥

मैनेजर साहिब जी– ये बादशाहिआं, अमीरियां, गरीबियां, जमीनां, जायदादां, कोई चीज़ साथ नहीं जायेगी। सब फनाह है। एक खुदा ने साथ जाना है। मालिक ने साथ जाना है, बाकी कोई नहीं साथी इसका। बस यह जान लो पक्का। हाँ जी :

पाठी– अवलि सिफति दूजी साबूरी॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी॥

मैनेजर साहिब जी– हम भी पढ़ते हैं पांच बाणिआं। मुसलमान भी पढ़ते हैं पांच नमाजें। चीज़ तो कोई और थी। चीज़ कोई और थी। क्या कहते हैं? जो पांच नमाजें पढ़ते हैं वो कौन सी हैं? 'अवलि सिफति', क्या? सिमरण, लगा रह। 'दूजी साबूरी'। जल्दी नहीं, बूटा बनने में कितनी देर लगती है, सोचो! तब फल लगता है। इसी तरह यह जल्दी का काम नहीं।

सदा रहे सन्तोष में धर्म आप दृड़ धार।

आस एक गुरदेव की और न चित्त विचार॥

मालिक की याद में लगा रह, बस। सब्र रख। 'तीजै हलेमी', क्या? गरीबी कह लो, दीनता कह लोः

गरीबी गदा हमारी॥ खंना सगल रेनु छारी॥

इसु आगै को न टिकै विकारी॥ गुर पूरे एह गल सारी॥

सबकी चरण धूल बन। मौलवी रूम ने लिखा है कि मैं ऐसी कीड़ी बन गया हूँ कि लोग मुझे पांव के नीचे रौंद सकते हैं। मैं भिरंड़ नहीं जो किसी के डंक लगाऊं। जब तक इतनी हस्ती नहीं मिटाता, मालिक के पास नहीं जा सकता।

पहले भी अर्ज़ करते हैं कि किसी चीज़ का रूप बनने के लिए वो गुण चाहिएं जो उसके लिए ज़रूरी हैं। मालिक का रूप बनने के लिए हमारे अन्दर वो गुण चाहिएं जो मालिक के लिए ज़रूरी हैं। कबीर साहब कहते हैं, इसके लिए :

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु॥
ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु॥

कि तू रास्ते का रोड़ा हो जा, हर एक की ठोकर खा। फिर कहते हैं, ये भी नहीं, रोड़े से किसी को ठोकर लगेगी। कहते खेह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं, खेह से किसी के कपड़े ख़राब होंगे, हाथ पांव ख़राब होंगे। साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं ये भी नहीं।

कबीर पानी हुआ त किया भइआ सीरा ताता होइ॥
हरिजनु ऐसा चाहिए जैसा हरि ही होइ॥

गर्म की ज़रूरत है ठण्डा मिल गया, दुःख। ठण्डे की ज़रूरत है गर्म मिल गया वो भी दुःख। अपनी हस्ती को इतना मिटा जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। क्या? वो सबका मालिक है, कोई निशानी है उसकी? कोई गाली निकाले, किसी की रोटी बंद की? इतनी हस्ती को मिटाये तब मालिक का रूप बन सकता है। इसका नाम है हलेमी, इसका नाम है नम्रता। यही ईसा ने लिखा है, जब तक तुम इस गरीब की तरह इतने गरीब नहीं बनते तब तक मालिक की दरगाह में नहीं जा सकते। सूली पे चढ़ गया, परवाह नहीं की, देख लो! तब जा सकता है, ऐसे नहीं। 'चउथै खैरी', क्या? आप भी भजन कर, दूसरे को भी करा।

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥
औरन को उपेदश कर भजन करे निष्काम।
चरणदास वो हरिजन पहुँचे हरि के धाम॥
आपन भजन करे नहीं औरन मना करे।
चरणदास वो दुष्ट नर घोर नरक परे॥

आप भी जप, दूसरे को भी जपा। चार तो ये हुईं। पांचवीं? पहले ये है फिर पांचवीं शुरू होती है, क्या? जब तक ये नहीं, सिमरण नहीं करता, सब्र नहीं, जल्दी चाहता है, नम्रता नहीं। तब तक अन्दर जा नहीं सकता। हाँ जी :

पाठी– पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपर परा ॥

मैनेजर साहिब जी– फिर पांचवीं निमाज शुरू होती है, क्या? इसके अन्दर कुदरती

धार आ रही है। उसमें तरह-तरह की आवाज़ें हैं। है तो एक ही। जैसे अलग बोलो तो और है, उसमें और तरह की आवाज़ हो जाती है। आगे जाकर उसकी और हो जाती है। इसी तरह वो देशों देशों में निकल के। जब तू यहाँ ये करेगा तो ख़्याल आंखों के पीछे इकट्ठा हो जायेगा। यहाँ से शुरू होता है। है तो एक ही शब्दः

एक सबद मेरे प्राण बसत है बहुड़ि जनम न आवा॥
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबद नीसाणु॥

पढ़ते भी हैं लेकिन उसकी पांच शक्लें हो जाती हैं।

''खामोश पंज नौबत बिशनौ जे आसमाने।''

शम्मश तबरेज़ ने लिखा है, क्या? ''कि चुप करके सुन, तुम्हारे अन्दर पांच नौबतें बज रही हैं, पांच आवाज़ें आ रही हैं, पांच बाजे बज रहे हैं।'' ये सुनना था आकर। यह है पांचवीं निमाज़। हाँ जी :

पाठी– पंजबै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि बखत तेरे अपर परा॥
सगली जानि करहु मउदीफा॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा॥

मैनेजर साहिब जी– ईसा ने कहा है,

'Peace be unto all the world.'

नानक नाम चढ़दी कला॥ तेरे भाणै सरबत का भला॥

सबका भला चाहो, बुरे का, भले का। उन्होंने तो दुश्मन का भी भला चाहा है। इब्राहिम ने बारह साल टट्टी उठाई है कबीर साहब के पास, तब कोई चीज़ हासिल की। एक दफा जहाज़ में जा रहा था। पास एक साहूकार बैठा था। उसक साथ मसखरे थे। उसको खुश करने के लिए अब क्या करें? वो एक कोने में बैठा था। उसके साथ मसखरी करने लग गए। मालिक ने हुक्म दिया, इब्राहिम जहाज़ डूबो दूं! कहने लगा कि जहाज़ क्यों डुबोता है, इनको मत ही क्यों नहीं दे देता! यह है फकीरों की तालीम कि इनको मत ही क्यों नहीं दे देता, सोचो! यह है। हाँ जी :

पाठी– सगलो जानि करहु मउदीफा॥
बद अमल छोडि करहु हथि कूजा॥

मैनेजर साहिब जी– सबका भला चाहो, दोस्त और दुश्मन का अन्दर से। और क्या करो? बद अमलियां छोड़ो, विषय विकार छोड़ो, ईर्ष्या, द्वैत छोड़ो। ये बड़ी बीमारियां हैं। जिसके अन्दर अभी तक ईर्ष्या, द्वैत, वैर-विरोध है, वो फकीर ही

नहीं। उसके अन्दर कुछ भी नहीं आया। इन बीमारियों का किसी को पता ही नहीं। तन की बीमारियों का पता है। इनका पता ही कोई नहीं। मूल जड़ ये हैं, सबकी। हाँ जीः

पाठी– निंदा या चुगली ईर्ष्या वगैरह रूह के मर्ज़ हैं। अगर मरीज़ बीमार है तो वह शारीरिक सेहत से कोसों दूर है। जिसमें अब तक रूहानी मर्ज़ मौजूद है, उसे रूहानी सेहत कैसे नसीब हो सकती है।

मैनेजर साहिब जी– कैसे नसीब हो सकती है, सोचो! यही फकीर छुड़ाने आते हैं। निंदा वगैरह छोड़ दे, अन्दर एक सतगुरु-सतगुरु रख, बाकी कोई चीज़ न रख। हाँ जी :

पाठी– सगली जानि करहु मउदीफा॥
बद अमल छोड़ि करहु हथि कूजा॥

मैनेजर साहिब जी– 'करहु हथि कूजा', कूजा क्या? बस ठूठा फड़ ले, बाकी चीज़ का सब ख़्याल निकाल दे। एक ठूठा पकड़ ले बाकी सब ख़्याल निकाल दे। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है कि जब तक तू दुनिया से हाथ न धो ले, तू मालिक को याद ही न कर। क्यों? कि शरीयत के अन्दर बज़ू किये बगैर निमाज़ अदा नहीं की जाती। ये वज़ू है असली। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है :

निमाज़े ज़ाहिदां सिजदा सजूद अस्त।
निमाज़े आशिकां तरके वजूद अस्त।

कि ''ज़ाहिदों की निमाज़ तो सिजदा वगैरह करना है। आशिकों की क्या है? इस वजूद से निकलना है'', जड़ चेतन की गांठ खोलना है, ज़िन्दा मरना है। जब तक ज़िन्दा नहीं मरता, अन्दर कुछ हासिल नहीं कर सकता।

''जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतर पाए।''
''दादू पहले मर रहयो, पाछे मरे सब कोये।''

ज़िन्दा मरना ये नहीं भई कब्रों में चला जाना है। मरते वक्त क्या होता है? देशों के ताल्लुक टूट गए, कौमों के टूट गए, यारों दोस्तों के टूट गए। मां, बाप, बहन, भाई के टूट गए। इस तन से भी निकल गया। यह हालत प्राप्त करनी थी ज़िन्दगी में–जब मर्ज़ी इसमें आ जाए, जब मर्ज़ी चला जाए; इसको कहते हैं ज़िन्दा मरना। हाँ जी :

पाठी– खुदाइ एकु बुझि देवहु वांगा बुरगू बरखुरदार खरा॥

मैनेजर साहिब जी– कि तू वहाँ बांगें दे रहा है सारा दिन, वो सब सुनता है।

ज़्यादा कहने की क्या ज़रूरत है। वो भी तेरे अन्दर बांगे दे रहा है। तुम्हें बुला रहा है, (सबके अन्दर आवाज़ें दे रहा है) आ बच्चा तुझे ले चलूं। मुहम्मद साहब ने लिखा है :

गुफ्त पैगम्बर के आवाज़े खुदा।
में रसद दर गोशे मन हम चूं सदा।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि ''खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है।

मोहर बर गोशे शुमां बनिहाद हक्क।
ता बा आवाज़े खुदा नारद सबक।

कि तुम्हारे कानों पे मोहरें लगी हुई हैं इसलिए नहीं सुन सकते।'' ये मोहरें खोले तब है। अभी सुनाया था :

अखी बाझहु वेखणा विणु कनां सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणिकै तउ खसमै मिलणा॥

यह ज़िन्दा मरे तब सुन सकता है, सारे ख़्याल निकाले तब सुन सकता है। वो सबके अन्दर बांगें दे रहा है। यही गुरुनानक साहब ने काज़ी रुकनदीन को कहा था :

ऊपर खासे महल दे देवे बांग खुदाये॥
सुत्ते बांग न सुन सकन रिहा खुदा जगाये॥

कि वो बांगें दे रहा है तेरे अन्दर, उसको सुन :

सुती पई निभाग सब सुने न बांगां कोये।
जो जागे सोई सुने सांईं संदी सोये॥

कोई भागों वाला सुने तो सुने। जो सुनता है, वो खुदा का बेटा है, बर्खुरदार बेटा है, वो असली बेटा है, वो असली सिक्ख है, वो असली मुसलमान है। जब वो सुनता है तो सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। सब पाप निकल जाते हैं अन्दर से ईर्ष्या, द्वैत वगैरह। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है।

नगम हा नेक सुनीदम व निदाहाए वाफर।
काबा ब बुत्तखाना ब निज़दम हर दो शुद काफर॥

''जब मैंने अन्दर के राग रागनियां सुनीं तो काबा और बुत्तखाना मुझे दोनों

काफर लगने लग गए''। सब झगड़े मिट गए। मौलवी रूम ने लिखा है कि ''मैंने कुरान के मगज़ को निकाल लिया है। कलमें को पकड़ लिया है। जो हड्डियां थीं वो शरीयत वालों के आगे फैंक दीं, लड़ो और मरो।'' यही गुरु तेग बहादुर साहब ने लिखा है :–

माई मै धनु पाइओ हरि नामु॥
मन मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु॥
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान॥ (मः 9/1186)

अन्दर शांती आ गई। ये तब हासिल होता है जब सारे ख़्याल निकाले, सिमरण करे। सिमरण तो कोई करता नहीं। ऐसे झगड़ों में पड़ी है दुनिया। दुनिया में झगड़े नहीं तो और क्या है? यही झगड़े हैं दुनिया में और क्या; मन बुद्धि के। वो कहता ये ठीक है, वो कहता है ये ठीक है, बस। हाँ जीः

पाठी– खुदाई एकु बुझि देवहु बाँगा बुरगु बरखुरदार खरा॥

मैनेजर साहिब जी– जो ये सुन लेता है, जो इसके ग्राहक हैं, उसके पास ज़रूर खिंचे आयेंगे। ग्राहक-ग्राहक आयेंगे, दूसरा नहीं। दुनिया सड़ती रहती है फिर। जहां खुशबू होगी आप दौड़े जाओगे। बदबू होगी वहाँ से भागोगे। बस यही हाल है। बदबू के पास तो बदबू वाला ही जायेगा। हाँ जी :

पाठी– हकु हलालु बखोरहु खाणा॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ, ये तब हासिल कर सकते हैं, हक हलाल की रोटी खा के। पराई खा के किसी ने भजन नहीं किया। पराई खा के अन्दर पाप ही आयेंगे।

जैसा भोजन खाइए तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए तैसी बाणी सोय ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

हक्क हलाल का खाके फिर, यही बू-अली कलंदर ने लिखा है :–

बहर तायत लुकमा याबद जे हलाल।
ता ने फज़ामद तुरा रंजो मलाल।

कि ''बन्दग़ी के लिए हलाल की रोटी चाहिए ताकि तुम्हारे दिल में कोई रंज और दुःख न आए।''

लुकमाए शुबा चो उफतद दर शिकम।
कुवत्ते ओ मेकुनद सर रिश्ता कम।

''जब हराम का लुकमा अन्दर जाता है, बंदगी की ताकत कम हो जती है। अगर तू हलाल के एक ही लुकमे पे सब्र करे तो तेरा दिल नूर-नूर हो जाए।'' सिमरण के लिए हक्क हलाल की ज़रूरी है। एक महात्मा था। वो जब सफर करता तो उसके घर रोटी खाता जो हक्क हलाल की हो। एक गांव में गया, शाम हो गई। पूछा यहाँ कोई हक्क हलाल की कमाई खाने वाला है? कहने लगे जी एक माई है, बूढ़ी है। वो सूत कात कर उसको बेच के खाती है। उसके पास गया, रहा; खाना खाया, शांती रही। कहने लगी जी एक दो दिन ठहरो। कि अच्छा भई। अगले दिन पड़ोस में कोई कंजरियों का नाच था। उस पर गैस जल रहा था। वो सूत कातती-कातती ने दीवा बुझा दिया कि चलो रोशनी तो है। महात्मा ने देख लिया। सुबह उठ कर चलने लगा। कि महात्मा जी आपने कहा था दो दिन ठहरेंगे। कहने लगा माता! कंजरी के गैस में कता हुआ सूत हक्क हलाल का नहीं। बोलो! फकीरों ने इतनी परहेजगारी रखी है। इसके लिए हक्क हलाल की रोज़ी चाहिए।

गृही का टुकड़ा बुरा नौ नौ उंगल दांत।
भजन करे तां उभरे नातर काड़े आंत॥

आजकल तो पराया खाना भी हलाल में है। हाँ जी :

पाठी– हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा॥
पीर पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा॥

मैनेजर साहिब जी– जो पीर के हुक्म में चलता है, सन्तों के हुक्म में चलता है, उनके वचनों पे चलता हे, वो वहिश्त को जाता है, वो मालिक की दरगाह में जाता है। उसके नज़दीक यमदूत नहीं आते, काल नहीं आता। फकीर की कोई निशानी नहीं। एक ही निशानी है खास, क्या? कि जो उसके चिताए हुए जीव हैं, कि थोड़ा भी भजन करते हैं, आराम से जायेंगे। कह के जायेंगे। उनका चेहरा पहले से अच्छा होगा। अगर अच्छी तरह करे तो उस जैसी तो कोई बात ही नहीं। मरते वक्त उसको कोई तकलीफ नहीं होती। दुनिया को मरते देखो? कृष्ण भगवान ने लिखा है उस वक्त इतनी तकलीफ होती है जैसे एक हज़ार बिच्छू इकट्ठा डंक मारें। मुसलमानों की किताबों में आया है कि जैसे कीकर की झाड़ी गुदा के रास्ते डालकर मुंह के रास्ते निकाले, इतनी तकलीफ होती है। देखो! टट्टी पेशाब निकल जाता है। बुरा हाल हो जाता है। चेहरा काल पड़ जाता है। जिस्म अकड़ जाता है। लेकिन जो कामिल फकीरों के चिताए हैं, चाहे

थोड़ा ही भजन है क्या? उसका जिस्म नहीं जल्दी अकड़ेगा। या तो बता के जायेगा। नहीं भी बताता, उसका चेहरा पहले से अच्छा होगा। कई देखे हैं, वो कहते हैं कि ऐसा चेहरा था कि जवानी में भी नहीं था उसका। ये निशानी है और कोई निशानी नहीं फकीर की खास। भक्ति भी वही है जो मौत के वक्त संभाल करे, बाकी क्या! कैसे भई! कक्कड़ साहब ने बताया न। चेहरा देखा बीवी का। हालांकि एक्सीडेंट में मरी है, देख लो चेहरा! सबको मिलकर गई है। यह है सच्ची भक्ति मालिक के हुक्म वाली। हाँ जी :

पाठी– काइआ किरदार अउरत यकीना॥ रंग तमासे माणि हकीना॥

मैनेजर साहिब जी– कि जो ये सब रूहें हैं सब एक मालिक की ही हैं। मालिक ही पति है एक। जो पतिव्रता स्त्री है वह पति की रज़ा में रहती है। जैसे रखे; दुःख में रखे, सुख में रखे, थोड़ा दे, ज़्यादा दे, वो है। उसका नाम पतिव्रता है। इसी तरह मालिक की रज़ा में रहे। दुःख में रखे, सुख में रखे, जैसे वो करे। बाकी सब फनाह। जैसे रखे, बस एक ही पकड़ ले बस फिर। वो असली है, वो पतिव्रता है जो रज़ा में रहती है। रोज़ पढ़ते हैं : जिउ भावै तिउ राखि लै ॥

पर रहता कोई नहीं। यह असली तालीम है फकीरों की, जैसे रखे। दुनिया की किसी चीज़ की इच्छा न रखे। एक पुरानी कहानी आती है। कोई बादशाह बाहर गया। उसके सात रानिणां थीं। जब वापस आना था तो उसने ख़त भेजा सबको, कि किसी ने कोई चीज़ मंगानी है तो मंगवा लो। सबने लिख दिया, बाकी ने कुछ, किसी ने कुछ। जो छोटी थी जिसको कमली कहते थे, पागल कहते थे, उसने लिखा मुझे तो किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, तेरी ज़रूरत है। सारी चीज़ें उनको दे दीं लाकर। आप उसके पास चला गया। उसके पास सब कुछ आ गया। उसको मांगे तो सब कुछ है। उसकी रज़ा में रहे तो सब कुछ है। हाँ जी :

पाठी– काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना॥
नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा॥

मैनेजर साहिब जी– मुसलमानों के हदीस रब्बी शराह की किताब है। असली हदीस क्या है? इसको पाक कर सब ख़्यालों से। जिसने इसको पाक कर लिया वो साबत पगड़ी ले गया। मालिक की दरगाह में पहुँच गया। वो पहुँच गया जिसने इसको पाक कर लिया, मन को मार लिया, इन्द्रियों को वश कर लिया। ये असली हदीस है। सबका मुद्दा इतना ही है। वो साबत पगड़ी ले गया बाकी

इसी तरह बर्बाद करके चले गए जन्म। हाँ जी :

पाठी– मुसलमाणु मोम दिलि होवै॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै॥

मैनेजर साहिब जी– यह है मुसलमान की निशानी 'मोम दिल'। ज़रा सी बात पर दिल पिघल जाए रहम में। इसका नाम मुसलमान है। सब फकीरों की एक ही तालीम है। इसका नाम है मुसलमान बनना। और फकीरों ने भी लिखा है। दादू ने भी लिखा है मुसलमान के मुतल्लक। कबीर ने भी लिखा है, पलटू ने भी लिखा है। खुदी वगैरह छोड़े, मोम दिल बने तब मुसलमान बनता है; तभी खालसा बनता है, तभी सनातनी बनता है, तभी आर्य बनता है। हाँ जी :

पाठी– दुनिआ रंग न आवे नेड़ै जिउ कुसुम पाटु घिउ पाकु हरा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं यह रेशम, फूल, घी, मृगशाला ये मैलीं नहीं होतीं। इस तरह चाहे वो बादशाहों में भी है उन चीज़ों का कोई असर नहीं होता, दुनिया की चीज़ों का। जो ऐसा मुसलमान है, कोई असर नहीं पड़ता। बादशाही में रहता हुआ त्यागी है। जैसे राजा जनक था। इसका नाम त्याग है। सुखदेव गया राजा जनक के पास। (पहले तो जाता नहीं था) अब उसको समझाने के लिए उसने क्या खेल किया? एक आदमी आया कि जी फलां जगह आग लग गई। कि हरी इच्छा! अब फलाने बाजार में आ गई; कि हरी इच्छा! अब फलाने बाजार में आ गई; कि हरी इच्छा! महलों के नज़दीक आ गई; कि हरी इच्छा! कि साथ कमरे में आ गई; कि हरी इच्छा! सुखदेव कहने लगा हरी इच्छा! हरी इच्छा! करे जा रहा है, करता तो कुछ है नहीं। उसने झोली डंडा उठाया (उसको अहंकार था कि मैं त्यागी हूँ) उठ कर चलने लगा तो उसने बाज़ू से पकड़ लिया कि तू तो त्यागी है, मेरे सारे महल फुंक गये। इसका नाम त्याग है। हाँ जीः

पाठी– जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना॥

मैनेजर साहिब जी– जो ऐसा कर लिया जिसने, वो मर्द है बाकी सब नामर्द हैं। ये जिस पर मालिक मेहर करे वो हासिल करता है। वो दुनियां में जीत जाता है, वो बहादुर है। हाँ जी :

पाठी– सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा॥

मैनेजर साहिब जी– वही शेख है, वही मशायक है, वही हाजी है, वही काज़ी है। सब कुछ फिर तो बन गया। हाँ जी :

पाठी– कुदरति कादर करण करीमा॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा॥
हकु हुकमु सचु खुदाइआ बूझि नानक बंदि खलास तरा॥

मैनेजर साहिब जी– कि मालिक अथाह है,

केवडु ऊचा होवै कोइ॥ तिसु ऊचे को जाणे सोइ॥

अथाह समुद्र है। इतना बड़ा हो, इतना प्रेम हो, तब वहाँ पहुँचता है। जल्दी का काम नहीं। ये आहिस्ता-आहिस्ता जागता है। पहले फकीरों के संग में आता है। कहता है भजन तो मैं करूं अगर घर का गुज़ारा चलता रहे। इतना आटा हो, इतनी दाल हो, इतना घी हो, रजाई हो, लवेरी हो, घोड़ी हो चढ़ने को। फिर मैं भजन करता रहूँ। पहले तो ये ख्वाहिश होती है। फिर ख़्याल करता है कि ये भी झंझट है भैंस का भी और भी। दूध ले लिया करेंगे कौन झंझट में पड़े। प्रेम में खलल पड़ता है। फिर ख्वाहिशें कम होती जाती हैं। मालिक का प्रेम बढ़ता जाता है। आहिस्ता-आहिस्ता, दुनियां में वैराग पैदा होता जाता है। फिर कहता है रोज़ की रोटी मिल जाए। फिर कहता है रोटी मिले न मिले, मालिक तू चाहिए। बस खत्म; फिर मालिक आ गया। इतने प्रेम की ज़रूरत है, सारे त्याग की। हाँ जी :

पाठी– हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा॥
अलह अगम खुराई बंदे॥ छोडि खिआल दुनिआं के धंधे॥
होइ पै खाक फकीर मुसाफर इहु दरवेसु कबूल दरा॥

मैनेजर साहिब जी– चलो भई बस करो।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।